अंगिका साहित्य

केरों इतिहास

डॉ० डोमन साहु 'समीर'

डॉ० तेजनारायण कुशवाहा : डॉ० अमरेन्द्र

हिंदी अकादमी हैदराबाद

१९९८ ई०

अंगिका साहित्य केरों इतिहास

❑ लेखक
डॉ० डोमन साहु 'समीर'
डॉ० तेजनारायण कुशवाहा : डॉ० अमरेन्द्र

हिंदी अकादमी हैदराबाद,
१२०/ए, नेहरू नगर पूर्व, सिकन्दराबाद
(आ० प्र०) - ५०००२६.

१९९८ ई०

अंगिका साहित्य केरों इतिहास

लेखक : डॉ० डोमन साहु समीर (आमुख)
डॉ० तेजनारायण कुशवाहा (पद्य–खंड)
डॉ० अमरेन्द्र (गद्य–खंड)

प्रकाशक : **श्री विनोद कुमार चतुर्वेदी**
महामंत्री, हिंदी अकादमी हैदराबाद,
१२०/ए, नेहरू नगर पूर्व, सिकन्दराबाद,
(आ० प्र०) – ५०००२६.

प्रथम संस्करण : श्रावणी पूर्णिमा, १९९८ ई० : १००० प्रतियाँ।

मूल्य : एक सौ पच्चीस रुपये मात्र।

© : लेखकत्रय।

प्राप्ति स्थान/वितरक :

१. महामंत्री, हिंदी अकादमी हैदराबाद,
१२०/ए, नेहरू नगर पूर्व, सिकन्दराबाद (आ० प्र०) – ५०००२६.
२. अभिराम प्रकाश,
समीर कुटीर, टी–विलासी, देवघर (बिहार) – ८१४११७.
३. डॉ० तेजनारायण कुशवाहा,
गान्धीनगर, ईशीपुर (भागलपुर, बिहार) – ८१३२०६.
४. डॉ० अमरेन्द्र, अंगिका संसद, ज्ञानेन्द्रनाथ मुखर्जी पथ,
भीखनपुर, भागलपुर (बिहार) – ८१२००१.

कम्पोजिंग एवं मुद्रण :
स्वर्ण कम्प्यूटर प्रेस,
टावर चौक, देवघर – ८१४११२ फोन : २५३३२

समर्पण

उद्योगवीर, धर्मवीर, दानवीर, पद्मश्री

डॉ० बी० वी० राजू

के कर—कमलों में,

जिनमें बिहारी ग्रामीण जनता

के लिए अपार स्नेह और सहानुभूति है

तथा

जिनका कला और साहित्य—प्रेम अतुलनीय है,

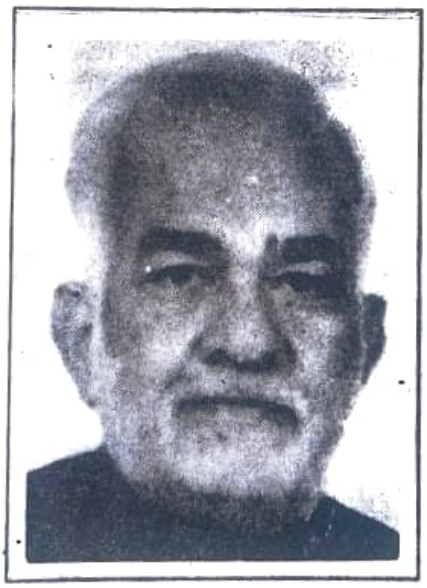

यह पुस्तक सादर समर्पित है।

— *डॉ० समीर, डॉ० कुशवाहा, डॉ० अमरेन्द्र*

प्रकाशकीय

आरण्यक संवादों से लेकर बौद्ध–धर्म के सूत्रों तक लोकायत स्तर पर अंगिका का अपना महत्वपूर्ण स्थान रहा है। अथर्ववेद, शक्तिसंगमतंत्र, बौद्ध–ग्रथ अंगुत्तरनिकाय, जैन–ग्रथ भगवतीसूत्र, लौकिक संस्कृत के कथासारित्सागर आदि प्राचीनतम ग्रंथों में जिन सोलह महाजनपदों का उल्लेख है उनमें एक समृद्ध महाजनपद के रूप में अंग भी है। बौद्धकालीन महाजनपदों में गांगेय संस्कृति के इतिहास में भी अंग का विशेष महत्व रहा है।

मौर्य–गुप्त–काल के पश्चात् पालवंश के उत्कर्ष–काल में जब बौद्ध विश्वविद्यालय विक्रमशिला की स्थापना हुई तब से अंग भाषा की प्राचीन गरिमा जाग गई। बौद्ध आचार्यों ने अपने धर्म के जिस विशिष्ट वाङ्मय को सुदूर दक्षिण–पूर्व तथा तिब्बत–चीन तक पहुँचाया उसका माध्यम अंगिका ही था। अंगिका, निःसन्देह बिहार की लोकाश्रित बोली है जिसकी सुमधुर भाव–भंगिमा, शब्द–निधि और शाश्वती ललित पदावली इतनी अभिव्यक्ति–समर्थ रही है कि देश–काल के प्रभावों से मुक्त उसने अपने आद्य रूपों, विंबों और प्रतीकों को सहज ही अक्षुण्ण रखा है। उसकी साहित्यिक परंपरा में युगानुकूल जीवन–पद्धति, सामाजिक मूल्यों की प्रतिष्ठा और व्यापक मानवीय प्रवृत्तियों की आग्रह–प्रीति उसके अविच्छिन्न इतिहास की परंपरा बन गई है।

पूर्ववर्ती बौद्धकालीन अंगिका दर्शन और चिंतन की सशक्त वाहिका थी , किंतु, देश–काल की प्रवृत्ति के अनुकूल आज के नव्य–प्राचीन संघर्ष में, वह अधुनातन आकांक्षाओं के प्रति सहज संवेदनशील भी हो उठी है। उसके स्वातंत्र्योत्तर–साहित्य में प्रगतिशील विचारधाराओं का भी प्रतिविंबन हुआ है। साहित्य की हर विधा में संप्रति अंगिका एक गहन त्वरा और जागरूकता के साथ भारतीय संस्कृति के गौरवशाली स्वरों को दिगन्तव्यापी बनाने में संलग्न है।

हिंदी अकादमी हैदराबाद (आ० प्र०) के अध्यक्ष डॉ० बैजनाथ चतुर्वेदी ने, जिन्होंने बिहार की अन्यान्य बोलियों के व्याकरण, साहित्य और इतिहास को अपनी पत्रिका 'संकल्प' में अन्योन्याश्रित संबल दिया, लोकाश्रित बोलियों को भाषायी चेतना के साथ नवनिर्माण के लिए प्रश्रय दिया तथा

उनके मूल्य–समर्थन के साथ–साथ विकास–प्रक्रिया को भी प्रेरित किया है. अंगिका से संबंधित अपनी सहधर्मिणी दिवंगता चतुर्वेदी प्रतिभा मिश्र की आकांक्षा–पूर्ति में विशेष अभिरुचि का परिचय दिया है। तदनुसार, उनके आग्रह पर डॉ० डोमन साहु 'समीर', डॉ० तेजनारायण कुशवाहा और डॉ० अमरेन्द्र ने प्रस्तुत 'अंगिका साहित्य केरौं इतिहास' के प्रणयन में अपना अमूल्य योगदान किया है। यह ग्रंथ अंगिका–साहित्य का प्रथम प्रामाणिक इतिहास है। भारतीय साहित्येतिहासों में यह ग्रंथ एक अमूल्य उपलब्धि है।

'अंगिका–हिंदी–शब्दकोश' और 'अंगिका–व्याकरण' के बाद यह ग्रंथ अंगिका के क्षेत्र में हिंदी अकादमी, हैदराबाद (आ० प्र०) का तीसरा प्रकाशन–पुष्प है जिसके प्रकाशन में पद्मश्री डॉ० बी० वी० राजू (आ० प्र०) की उदार दानशीलता अविस्मरणीय है।

गन्धमादन,
१७–६–१७६/ए,
कूर्मागुड़ा, हैदराबाद,
(आ.प्र.) – ५०००५६.

डॉ० वसंत चक्रवर्ती
उपाध्यक्ष, हिंदी अकादमी हैदराबाद।
(पूर्व–अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
उस्मानिया विश्वविद्यालय)

प्राक्कथन

हिंदी प्रचार सभा, हैदराबाद कें हीरक जयन्ती कें समापन कें दोसरों दिन २६ अगस्त, १९९६ कें डॉ० बजरंग बाँगरे 'कार' लै कें हमरा कन काकतीय होटल, नामपल्ली (हैदराबाद) ऐलात आरो हमरा लै कें प्रो० डॉ० वसंत चक्रवर्ती सें मिलैतें होलों प्रो० डॉ० बैजनाथ चतुर्वेदी कें सिकन्दराबाद-स्थित आवास पर उतारलकात। डॉ० चतुर्वेदी महाभागें हमरा लै लें गाड़ी भेजने छेलात। वै दिन डॉ० चतुर्वेदी महोदय नें आपनों साध्वी धर्मपत्नी महाप्राण वाणीमुक्ता चतुर्वेदी प्रतिभा मिश्र (दिवंगता) कें अंतिम इच्छा, कि अंगिका साहित्य कें अध्ययन लेली एक ऐहनों ग्रंथ कें निर्माण करलों जाय जै में अंगिका साहित्य केरों इतिहास कें समीकृत समग्र सामग्री, साहित्य केरों परंपरा आरो प्रवृत्ति-आर कें वर्णन कुछू विस्तार सें रहें, कें चर्चा करलकात। हुनी दिवंगता वाणीमुक्ता जी कें मनसा पूरा करै लेली अंगिका साहित्य केरों इतिहास-लेखन कें भार हमरा आरो डॉ० अमरेन्द्र पर आरो संगें-संग अंगिका-व्याकरण-लेखन कें भार डॉ० डोमन साहु 'समीर' पर देलकात। तखनी 'समीर' जी कें 'अंगिका-हिंदी-शब्दकोश' छपै कें प्रक्रिया में रहै। तदनुसार, ऊ शब्दकोशों कें लोकार्पण कें दिन (१४ अप्रिल, १९९७ ई. कें) हमरासिनी तीन्हू देवघर में मिललाँ आरो के की लिखतै, एकरों निर्णय लेलाँ।

फरू, श्रद्धेय चतुर्वेदी जी नें हमरासिनी तीन्हू कें संबोधित आपनों २२ अक्टूबर, १९९७ कें चिट्ठी में ऊ इतिहास-लेखन जल्दी-सें-जल्दी पूरा करी दै कें आग्रह करलकात। बीचों-बीचों में हिंदी अकादमी हैदराबाद कें प्रकाशन-मंत्री श्रीमती रेखा पाण्डेय कें चिट्ठीयो ऐतें रहलै, जें हमरासिनी कें झकझोरी कें जगैतें रहलै। आखिर, १५ दिसंबर, १९९७ कें अपेक्षित इतिहास-लेखन पूरा करी कें हम्में आरो अमरेन्द्र जीं, टंकण, संयोजन, मुद्रण आरो प्रकाशन लेली, डॉ० समीर कें दै ऐलियै।

आभी ताँय अंगिका साहित्यों कें कुछेक विधा पर कयेक-टा छोटों-बड़ों लेख 'नवकल्प', 'अंगप्रिया', 'आंगी', 'वाङ्मयी' -आर पत्र-पत्रिका अथवा 'भारतीय जनपदीय साहित्य' (डॉ० रमण शाण्डिल्य-संपादित), 'गीत-गंगा' (डॉ० अमरेन्द्र-संपादित), 'अंगिका गद्य-संग्रह' (डॉ० विनोबाला सिंह-संपादित) ओगैरह एक-आध संकलनों में छपलों मिलै छै। डॉ० अभयकान्त चौधरी आरो डॉ० नरेश पाण्डेय 'चकोर' कें 'अंगिका साहित्य कें इतिहास' आरो ईसिनी पंक्ति कें लेखक (डॉ० कुशवाहा) कें 'अंगिका : संपूर्ण भाषा, संपूर्ण साहित्य' प्रकाशित

होलों छै। ई दोन्हू कृति हिंदी में छै। अंगिका साहित्यों कें अध्ययन संपूर्ण रूपों से करै लेली ई-सब पर्याप्त नै मानलों जाय पारें।

यै लेली हमरासिनीं वैज्ञानिक ढंगों सें अंगिका साहित्य केरों शृंखलाबद्ध इतिहास लिखै कें प्रयास करने छियै। यै में शुरू सें लै कें आय तलुक कें अंगिका साहित्यों कें सब्भे मुख्य साहित्यिक विषय, परंपरा आरो प्रवृत्ति, प्रतिनिधि कवि-लेखक आरो हुनकासिनी कें प्रतिनिधि कृति पर प्रकाश डाललों गेलों छै। आयकों अंगिका-साहित्य कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, निबंध, समीक्षा, संस्मरण, जीवनी, साहित्यशास्त्र, शब्दकोश, व्याकरण, शोध़कार्य, अनुवाद, पत्रकारिता आरनी कत्तें नी दिशा में विकसित होय कें प्रगति-पथ पर बढ़ी रहलों छै। यै लेली सब्भे अंगों कें क्रमिक विकास आरो विशेषता कें विवेचन जरूरी समझलों गेलों छै।

लिखित या नागर (तथाकथित शिष्ट) साहित्यों कें अलावा अंगिका कें लोक-साहित्यों कें विवेचनों ई इतिहास-ग्रंथों कें विशेषता मानलों जाय पारें। शुरू सें अंगिका भाषा कें अस्मिता आरो पहचान कें उजागर करै लेली बहुभाषाविद् डॉ० समीर कें 'आमुख' एकरा में छै।

ई इतिहास-ग्रंथें महासाध्वी महाप्राण वाणीमुक्ता चतुर्वेदी प्रतिभा मिश्र कें लालसा पूरा करै छै। हुनी अंग-सवासिन छेली, जिनकों असामयिक निधन ई ग्रंथ देखी लै कें पहिन्हैं (१६ जनवरी, १९९६ ई० कें) होय गेलै। विश्वास छै कि है ग्रंथों कें प्रकाशन सें हुनकों आत्मा कें शान्ति मिलतै। हुनकों प्रति हम्में तमाम अंगिका-भाषी, अंगिका-प्रेमी आरो अपना ओरी सें हार्दिक आभार प्रगट करै छियै।

सबसें बड़ों बात ई कि वाणीमुक्ता प्रतिभा देवी कें जे इच्छा भाव-जगतों कें अमूर्त संपत्ति रहै ओकरा हुनकों श्रद्धेय पतिदेव प्रो० डॉ० बैजनाथ चतुर्वेदी महाभाग नें रूप दै लेली हमरासिनी कें उत्प्रेरित करी कें है काम पूरा करवैलकात। यै लेली चतुर्वेदी जी कें प्रति जत्तो आभार प्रगट करलों जाय, कम्मे होतै। हिनकों आदर्श अनुकरणीय छै।

है इतिहास-ग्रंथों कें प्रकाशन लेली प्रख्यात उद्योगपति पद्मश्री डॉ० बी० वी० राजू (आन्ध्र प्रदेश) नें आपनों साहित्य-प्रेम आरो दानशीलता में हम-सब कें उपकृत करने छोंत, जेकरों लेल हम-सब हुनका प्रति कृतज्ञ छियै आरो ई ग्रंथ हुनके समर्पित करी रहलों छियै। हुनकों संक्षिप्त जीवनवृत्त यै ग्रंथों कें आवरण-पृष्ठों पर प्रकाशित करतें हुए हम-सब कें बड्डी आनन्द होय रहलों छै। अंगिका कें विकास आरो संवर्द्धन में हुनकों महती भूमिका सदाय याद करलों जैतै, एकरा में कोय दू बात नैं छै।

है ग्रंथों कें गद्य-खंड लिखै में अंगिका सामग्री-संकलन सें लै कें विषय-विवेचन, कृतित्व-विश्लेषण ओगैरह में डॉ० अमरेन्द्र नें आपनों अपूर्व अध्यवसाय, कौशल आरो श्रमशीलता कें जे परिचय देनें छै ऊ अकथनीय छै। ई बात दोसरों छेकै कि परिस्थितिवश ई 'प्राक्कथन' हमरै लिखै लें पड़लों छेलै, मतरकि अमरेन्द्र जी कें लिखलों गद्य-खंड है इतिहासों कें अविच्छिन्न अंग छेकै जेकरों संपूर्ण श्रेय कें अधिकारी हिनीयें छोंत। हिनी तें एकरों भागीदारे छेकात।

है ग्रंथों कें शुरू में अंगिका भाषा आरो व्याकरण पर डॉ० समीर कें लिखलों 'आमुख' लागलों छै, जेकरा सें है ग्रंथों कें महत्ता आरो उपादेयता बढ़ी गेलों छै। एतने नैं, है ग्रंथों कें सजावै-सँवारै आरो छपावै में हिनके हाथ रहलों छै। हिनका प्रति कृतज्ञता की ज्ञापित करलों जाय, हिनी तें अंगिका कें प्रति समर्पित छोंत।

सब तें सब, मतुर है ग्रंथों कें प्रकाशक जों हिंदी अकादमी हैदराबाद नैं होतियै तें सब लिखलका धरले रही जैतियै। अंगिका भाषा-साहित्यों कें महती सेवा लेली हम-सब हौ हिंदी अकादमी आरो वै सें जुड़लों सब्भे लोगों कें प्रति कृतज्ञ छियै।

हुएँ सकै छै कि कुछेक रचनाकारों कें प्रकाशित पुस्तक या स्फुट रचना उपलब्ध नैं रहला कें कारणें हुनका आरो हुनकों कृति पर अपेक्षित प्रकाश यै ग्रंथों में नैं पड़लों रहें। वै लेली हुनका-सब सें हमरों विनम्र क्षमा-याचना छै। साथें-साथ, है ग्रंथों कें निर्माण में जे-सब इतिहासकार आरो रचनाकारों कें रचना सें सहयोग आरो सहायता मिललों छै हुनकासिनी कें प्रति हम्में आभार स्वीकार करै छियै।

आखिर में, है ग्रंथों कें मुद्रक स्वर्ण कम्प्यूटर प्रेस, देवघर (बिहार) कें हार्दिक धन्यवाद देबों हम्में आपनों कर्त्तव्य समझै छियै। वै प्रेसों कें स्वत्वाधिकारी श्री आलोक कुमार मल्लिक कें सहयोगिता आरो सक्रियता कें बिना एतें जल्दी आरो एतें सुचारुतापूर्वक एकरों मुद्रण-प्रकाशन होबों संभव नैं रहै। साधुवाद।

तेजनारायण कुशवाहा
कुलसचिव,
विक्रमशिला हिंदी विद्यापीठ।

गान्धीनगर, ईशीपुर
(भागलपुर, बिहार) - ८१३२०६
१५ दिसंबर, १९९७ ई०

विषय-सूची

आमुख
(डॉ० डोमन साहु 'समीर')

१. अंगिका भाषा आरो व्याकरण केरों रूपरेखा — 1-13
-अंग-लिपि आरो अंगिका भाषा ; ध्वनितित्व, रूपतत्व ; शब्द-भंडार।

अंगिका साहित्य केरों इतिहास
खंड-१ : पद्य
(डॉ० तेजनारायण कुशवाहा).

काल-विभाजन :

१. **प्रारंभिक युग** (५००-१२२० ई०) — 16-35
सहजयानी कविता : सिद्ध-साहित्य ;
नाथ-पंथ आरो अंगिका कें नाथ-पंथी कविता ;
अंगिका केरों गीति-गाथा-प्रबंध काव्य ;
अंगिका केरों लोकोक्ति कविता।

२. **अंगिका साहित्यों कें मध्य-युग (१२२०-१८५० ई०)** — 35-49
१. पूर्व-मध्य-युग (१२२०-१६५० ई०) ;
२. उत्तर-मध्य-युग (१६५०-१८५० ई०) ;
३. अंगिका कें साधु-पंथी कविता ;
४. मध्ययुगीन अंगिका गीति-गाथा-प्रबंध ;
५. अंगिका लोक-नृत्य।

३. **अंगिका साहित्यों कें आधुनिक युग (१८५० ई० सें)** — 49-62
क. मंच-पूर्व-युग (१८५०-१९५० ई०) ;
ख. मंच-युग (१९५०-१९८५ ई०) ;
ग. मंचोत्तर-युग (१९८५ ई० सें आय ताँय)।

४. आधुनिक युगों कें कवि आरो कविता केरों संक्षिप्त परिचय 62-141

५. अंगिका काव्य-संसार 141

६. निष्कर्ष 143

खंड-२ : गद्य
(डॉ० अमरेन्द्र, संपादक, "आंगी")

१. अंग-जनपदों के पिछलका स्थिति-परिस्थिति। 149

२. अंगिका-साहित्यों कें काल-निर्धारण आरो नामकरण। 163

३. कथा-साहित्य (कहानी-सामान्य, व्यंग्य-कथा, अणु-कथा)। 166

४. उपन्यास (नया सूरज नया चान, छाहुर, सुभद्रांगी, परबतिया, अन्तहीन वैतरणी, भाग्यरेखा, तुलसी मंजरी, जटायु, हम सुरमुखदास नैं छिकियै, गुलबिया, मरगांग, पियावासा, केन्द्रावती)।

५. नाटक (रेडियो नाटक, रंगमंचीय गद्य-नाटक)। 207

६. आत्मपरक (आत्ममूलक) साहित्य (आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण)। 215

७. निबंध (शब्दचित्र/रेखाचित्र, साक्षात्कार)। 222

८. आलोचना (समीक्षा)। 228

९. लोक-साहित्य (गद्य) : (लोक-कथा, लोकोक्ति-मुहावरा)। 236

१०. अभिज्ञान-साहित्य (इतिहास-भूगोल, भाषा-लिपि-व्याकरण, शब्दार्थ-संचयन आरो शब्दकोश)। 241

११. पत्र-साहित्य। 250

१२. पत्र-पत्रिका-साहित्य। 252

१३. उपसंहार। 259

जीवनवृत्त

नाम – डोमन साहु 'समीर'।

जन्म – ३० जून, १९२४ ई०, पन्दाहा (गोड्डा, बिहार)।

माता-पिता – पियासी देवी (स्व०)/दयाल साहु (स्व०)।

शिक्षा – बी० ए० (ऑनर्स), एम० ए० (हिंदी), डी० लिट्० ; बी० एल० ; विशारद।

मानद उपाधियाँ – विद्यासागर ; काव्य-शास्त्री ; अंग-आदर्श ; भोजपुरी-भारती ; गुरु गोमके (आचार्य)।

सम्मान पुरस्कार – राजभाषा विभाग (बिहार सरकार) ; जन-जातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग (राँची विश्वविद्यालय, राँची) ; नागरी लिपि परिषद् (नई दिल्ली) ; साहित्य अकादमी (नई दिल्ली) ; विक्रमशिला हिंदी विद्यापीठ (ईशीपुर, भागलपुर) ; हिंदी अकादमी हैदराबाद (सिकन्दराबाद, आं० प्र०) · अ० भा० भोजपुरी परिषद् (लखनऊ) ; साहित्यकार-संसद् (समस्तीपुर/देवघर) ; संताली साहित्य परिषद् (दुमका) ; जिला संताली साहित्य परिषद् (पुरुलिया, प० बं०) ; अ० भा० संताली लेखक-संघ (जमशेदपुर) ; बिरसा मेमोरियल सोसाइटी (जमशेदपुर) ; समय-साहित्य-सम्मेलन (पुनसिया, बाँका) आदि द्वारा।

प्रकाशित ग्रंथ – अंगिका-हिंदी-शब्दकोश ; अंगिका-व्याकरण ; समीक्षात्मक निबंध (अंगिका) ; हिंदी-संताली-शब्दकोश ; हिंदी और संताली : तुलनात्मक अध्ययन (शोध) ; संताली-प्रवेशिका ; संताली-प्रकाशिका ; संताली भाषा और साहित्य : उद्भव और विकास ; एक दीप मेरा भी (हिंदी कविता-संकलन) ; सेताक् (संताली कविता-संकलन), माताल (संताली कहानी-संग्रह) आदि, करीब एकावन-टा।

संपादन – 'होड़ सोम्बाद' (प्रथम संताली साप्ताहिक पत्र : जून, १९४७ सें जून, १९८३ ई० ताँय) ; 'स्मारिका' (जिला सांस्कृतिक परिषद्, देवघर)।

प्रसारण – आकाशवाणी पटना, राँची आरो भागलपुरों सें समय-समय पर।

अन्यान्य लेखन – हिंदी, संताली आरो अंगिका कें पत्र-पत्रिकासिनी में तीन सौ सें बेसी लेख, कविता आदि प्रकाशित आरो आकाशवाणी सें प्रसारित।

संस्थासिनी सें संबद्धता – अध्यक्ष, भारतीय संताली साहित्य परिषद् (देवघर) ; अध्यक्ष, उदित अंगिका साहित्य परिषद् (देवघर) ; उपाध्यक्ष, हिंदी अकादमी हैदराबाद (सिकन्दराबाद) ; उपाध्यक्ष, साहित्यकार-संसद् (समस्तीपुर/देवघर) ; सचिव, सं० प० हिंदी साहित्य सम्मेलन (दुमका/देवघर) ; आजीवन सदस्य, नागरी लिपि परिषद् (नई दिल्ली) आदि।

संपर्क – समीर कुटीर, टी-विलासी (देवघर, बिहार) – ८१४११७.
फोन – ०६४३२/२२१९६.

आमुख

अंगिका भाषा आरो व्याकरण केरों रूपरेखा

अंगिका भारतवर्ष केरों प्राचीन अंग-महाजनपद आरो आधुनिक बिहार राज्य केरो भागलपुर, बाँका, मुंगेर, सहरसा, कटिहार, अररिया, किशनगंज, पूर्णिया, साहेबगंज, गोड्डा, पाकुड़, दुमका, देवघर, जमुई आरो बेगूसराय जिला केरों अधिकांश लोगों कें मातृभाषा आरो यै क्षेत्रों कें एकटा मुख्य जन-भाषा छेकै। अंग-महाजनपद केरों नाम यै देशों कें प्राचीन ग्रंथ अथर्ववेद, रामायण, महाभारत, वायु पुराण, ब्रह्म पुराण, विष्णु पुराण, मत्स्य पुराण, शिव पुराण, कथासरित्सागर, शक्ति-संगम-तंत्र, भगवती-सूत्र, कल्पसूत्र, अंगुत्तरनिकाय आरनी में ऐलों छै। जैन-ग्रंथ भगवती-सूत्रों में यै देशों कें जोनसिनी सोलहटा महाजनपदों कें नाम ऐलों छै वैसिनी में एक नाम अंग-महाजनपदो कें छै। रामायण आरो महाभारत-कालहौ में अनेक प्रसंगों में अंग-राज्य केरों चर्चा भेलों छै। महाभारत-कालों में तें अंग एकटा प्रसिद्ध राज्ये छेलै, जेकरों राजधानी राजा चम्प द्वारा स्थापित चम्पा नगरी में छेलै। हुनके वंशज राजा अधिरथ नें कुन्ती-पुत्र कर्ण केरों लालन-पालन करने रहै, जिनका कौरव-युवराज दुर्योधन नें अंग देशों कें राजा घोषित कैने रहै। रणवीर आरो दानवीर कें रूपों में राजा कर्ण केरों प्रसिद्धि इतिहासों में छै। कहलों जाय छै कि वर्तमान भागलुपर शहरों सें सटले चम्पा नगरों में जोंन कर्णगढ़ केरों खंडहर छै ऊ राजा कर्ण कें गढ़ (किला) छेलै। मतलब ई कि अंग-जनपदों कें प्राचीनता आरो प्रसिद्धि इतिहासों सें प्रमाणित छै।

अंग-लिपि आरो अंगिका भाषा

(२) अंग-महाजनपदे नाखी अंग-लिपि आरो अंगिका भाषा, जेकरों पुरानों नाम 'आंगी' रहै, इतिहास-प्रसिद्ध छै। बौद्ध-ग्रंथ 'ललितविस्तर' (ई.पू. छठी-पाँचमी शती) में यै देशों कें जेसिनी ६४ लिपियों कें नाम ऐलों छै वैसिनी में ब्राह्मी, खरोष्ठी आरो पुष्करसारी कें बाद चौथों स्थानों में अंग-लिपि केरों नाम छै। तात्पर्य ई कि ब्राह्मी आरो खरोष्ठी - जेन्हों यै देशों कें पुरानों लिपि नाखी अंग-लिपियो सुप्रसिद्ध छेलै। बहुत संभव छै कि बादों में मिथिलाक्षर, बंगलिपि आरो असमिया लिपि केरों विकास अंग-लिपिये सें भेलों रहें। कैथी लिपियो कें विकास अंग-लिपिये सें होलों रहें तें कोय आश्चर्य नै। बादों में कैथी लिपि केरों

प्रचार-प्रसार सौंसे बिहार प्रदेशों में भेलों रहै। आय-काल अंगिका भाषा लेली नागरी लिपि केरों प्रयोग होय रहलों छै जे कि समयों कें तकाजा कें अनुसार बिल्कुल उपयुक्त छै।

(३) यै देशों कें पुरानों साहित्यों में इहाँकरों भाषासिनी केरों भौगोलिक नाम प्राच्या, प्रतीच्या, उदीच्या आरो दाक्षिणात्या कें रूपों में ऐलों छै आरो प्राच्या कें अंतर्गत 'आंगी' भाषा केरों उल्लेख होलों छै -- 'आंगी वांगी पांचाली वैदर्भी मागधी एते प्राच्या:'। वेहें 'आंगी' आयकों 'अंगिका' भाषा छेकै, जे कि बोलचाल कें रूपों में 'छिका-छिकी' कहावै रहै। आबें 'अंगिका' नाम सुप्रचलित होय गेलों छै। भिन्न-भिन्न क्षेत्रों कें भाषा कें रूपों मे वज्जिका आरो मल्लिका (भोजपुरी) कें साथें 'अंगिका' महापंडित राहुल सांकृत्यायन द्वारा देलों नाम छेकै, जेकरों विकास मध्य-कालीन भारतीय आर्य-भाषा 'अर्द्धमागधी' सें भेलों छै आरो जेकरों उत्स प्राच्या 'आंगी' (भाषा) छेकै। कालक्रमों में पुरानों 'वांगी' केरों विकास तें 'बँगला' भाषा कें रूपों में होय गेलै, मतरकि 'आंगी'- भाषीसिनीं शिक्षा-दीक्षा में हिंदी भाषा अपनाय लेलकै। बीचों में ईस्वी सन् केरों ८-मीं सें १२-मीं शती ताँय विक्रमशिला महाविहार अंग-जनपदों कें सुप्रसिद्ध विश्वविद्यालय छेलै, जहाँ सरहपा, कण्हपा, लुइपा, ढेण्ढणपा आदि सिद्ध-कविसिनी नें कर्त्तें नी चर्यापदों कें रचना करनें छै। वैसिनी चर्यापदों में अंगिका भाषा केरों स्वरूप सुरक्षित छै -- 'चीअ थिर करि धरहु रे नाइ : आन उपाये पार ण जाइ' (सरहपा), 'बलद बिआअल गबिआ बाँझे : पिटा दुहिअइ ए तिणा साँझे' (ढिण्ढणपा) ओगैरह।

(४) यै समयों में जोंन अंगिका यै जनपदों में प्रचलित छै ऊ यै क्षेत्रों कें दू करोड़ों सें बेसी लोगों कें मातृभाषा छेकै, जेकरा में लोक-गीत, लोक-कथा, लोकोक्ति, बुझौवल, फेंकड़ा ओगैरह कें रूपों में प्रचुर लोक-साहित्य विद्यमान छै आरो आबें तथाकथित शिष्ट साहित्यो काफी लिखाय गेलों/लिखाय रहलों छै। एतना दिन तें राजनीतिक प्रपंचों कें चलतें अंगिका केरों उपेक्षा होतें रहलै, मतरकि आबें अंगिका-भाषी लोगों में जागृति आबी गेलों छै जेकरों फलस्वरूप अंगिका भाषा-साहित्यो कें विश्वविद्यालयों में स्थान मिली गेलों छै। आकाशवाणी केरों भागलपुर केन्द्रों सें तें अंगिका भाषा में कयेक तरहों कें प्रसारणों होय रहलों छै।

ध्वनितत्व

(५) अंगिका भाषा नागरी लिपि में लिखलों-पढ़लों जाय रहलों छै। यै लिपि केरों ऋ, ण, श आरो ष वर्णों कें छोड़ी कें आरोसिनी वर्ण अंगिका बास्तें बिल्कुल उपयुक्त छै ; मतरकि यै भाषा केरों दुइटा विशिष्ट ध्वनि बास्तें दुइ ठो लब्बों लिपि-चिन्हों कें जरूरत होय छै। वै दुहू कें बास्तें प्रसृत ए-कार = ऍं (ॅ) आरो प्रसृत अ-कार = ऑं (ॉ) केरों प्रयोग करलों जाय रहलों छै ; जेना कि -- लें, दें, जें, तबें, आबें आदि में प्रसृत ए-कार आरो आबों, बैठों, पढ़ों, लिखों, हमरों, तोरों आदि में प्रसृत अ-कार (ऑं-कार)। वैज्ञानिक दृष्टि सें सामान्य ए-कार आरो प्रसृत ऍं-कार तथा सामान्य ओ-कार आरो प्रसृत ऑंकार में स्पष्ट अन्तर छै, जेकरों चलतें शब्दार्थ बदली जाय छै ; जेना कि -- ले, दे आदि (अवज्ञार्थक), मतरकि लें, दें आदि आदरार्थक तथा हमरो, एकरो आदि (समावेशी), मतरकि हमरों, एकरों आदि (संबंधार्थक) इत्यादि। संस्कृत केरों जेसिनी तत्सम शब्द अंगिका में प्रयोगों में आबै छै वैसिनी में ऋ, ण, श आरो ष केरों प्रयोग करलों जाय छै आरो करना चाहियों ; जेना कि -- ॠण, शेष, ऋषि, शंकर इत्यादि। अंगिका में न्, म्, य्, र् आरो ल् केरों महाप्राण ध्वनियो छै ; जेना कि -- कैन्हें, नान्हों, हम्हैं, ठाम्हें, ऐय्हों, करिय्हों, तोर्हे, ओकर्है, कल्हे, बल्हों इत्यादि में। 'एकरों', 'ओकरों' -जेन्हों शब्दों में 'ए' आरो 'ओ' केरों उच्चारण ह्रस्व (एकमात्रिक) होय छै, मतुर यै दुहू लेली कोनो विशिष्ट लिपि-चिन्ह प्रयोगों में नैं आबी रहलों छै।

रूपतत्व

(६) आरो-आरो भाषा नाखी अंगिकाओ में शब्दों कें संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया-विशेषण, संबंधसूचक (अनुसर्ग/परसर्ग), समुच्चयबोधक आरो विस्मयादिबोधक शब्दों कें रूपों में पद-विभाजन छै। इहाँ वैसिनी कें विस्तारों में नै जाय कें संक्षेपे में वैसिनी केरों विशेषता कें बारे में नीचें बात करलों जाय रहलों छै।

(७) संज्ञा -- अंगिका में संज्ञा केरों दू रूप होय छै -- सामान्य आरो विशिष्ट अर्थात् सामान्यार्थक आरो निश्चयार्थक ; जेना कि -- गाय, लोटा, धोती, बुतरू-आर सामान्यार्थक आरो गैया, लोटवा, धोतिया, बुतरुआ -आर निश्चयार्थक। विशिष्ट याने निश्चयार्थक संज्ञापदों सें ऐन्हों संज्ञा- शब्दों कें बोध होय छै जेकरों

बारे मे पहिन्है मे कुच्छ-ने-कुच्छ जानलों-सुनलों रहै छै -- गैया, लोटवा, धोतिया आरो बुतरुआ याने अमुक गाय, अमुक लोटा, अमुक धोती आरो अमुक बुतरू, जबें कि गाय लोटा, धोती आरो बुतरू याने कोय गाय, कोय लोटा, कोय धोती आरो कोय बुतरू। स्पष्ट छै कि सामान्यार्थक संज्ञापदों में '-आ' केरों याग होला पर ऊ संज्ञापद विशिष्ट याने निश्चयार्थक बनै छै ; मतुर ओकरों पहिनें इ/ई-कार आरो ए/ऐ-कार रहला पर हौ '-आ' केरों जग्घों पर '-या' तथा आ-कार, उ/ऊ-कार आरो ओ-औ-कार रहला पर हौ '-आ' केरों जग्घों पर '-वा' होय जाय छै। एतनै नै, हौ '-आ' कें चलतें पूर्ववर्ती दीर्घ स्वर ह्रस्व होय जाय छै और संयुक्त वर्ण सरल होय जाय छै ; उदाहरण -- काड़ा = कड़वा, गाडी = गडिया, रोटी = रोटिया, लेरू = लेरुआ/लेरुवा, कोदो = कोदवा आरो सुग्गा = सुगवा, कुत्ता = कुतवा इत्यादि।

(८) कारक -- कर्ता कारकों में संज्ञापदों कें रूप अकर्मक क्रिया कें साथें अविकारी रहै छै ; मतुर सकर्मक क्रिया कें साथें विकारी होय जाय छै ; जेना -- बरदा चरै छै (अकर्मक), मतुर बरदाँ खैलकै (सकर्मक)। स्पष्ट छै कि अकर्मक क्रिया 'चरै छै' कें साथें कर्ता 'बरदा' केरों रूप अविकारी छै, मतरकि सकर्मक क्रिया 'खैलकै' कें साथें कर्ता 'बरदाँ' केरों रूप विकारी होय गेलों छै अर्थात् ओकरा में अनुस्वार लागी गेलों छै। है अनुस्वार काँहीं-काँहीं 'नें' कें रूपो में आबै छै। आरोसिनी (तिर्यक्) कारकों में यैसिनी कारक-चिन्ह प्रयोगों में आबै छै ; कर्म -- कें ; करण -- सें ; सम्प्रदान -- लें, लेल, लेली, बास्तें ; अपादान -- सें, संबंध -- कें, केरों, रों, -कों ; अधिकरण -- में, पर आरो संबोधन -- हे हो ! (पुल्लिंग, आदरार्थक), हे रे ! (पुल्लिंग, अवज्ञार्थक), हे हे ! (स्त्रीलिंग, समतार्थक या आदरार्थक), हे गे ! (स्त्रीलिंग, अवज्ञार्थक) इत्यादि।

(९) वचन -- अंगिका में वचन दुइटा छै -- एकवचन आरो बहुवचन। बहुवचन केरों प्रत्यय (चिन्ह) छेकै -- -सनी, -सिनी, -सब ; जेना कि -- बुतरू (ए व), बुतरूसनी/बुतरूसिनी (ब व) ; नुँगा (ए व), नुँगा-सब (ब व) इत्यादि।

(१०) लिंग-भेद -- पुल्लिंग आरो स्त्रीलिंग अंगिका केरों लिंग-भेद छेकै। पुल्लिंग आरो स्त्रीलिंग रूप प्रायः दोसरों-दोसरों शब्दों सें प्रगट करलों जाय छै ; जेना कि -- पुल्लिंग में बाप, भाय, बरोंद, काड़ा ओगैरह आरो स्त्रीलिंग में क्रमशः

माय, बहिन, गाय, भैंस ओगैरह ; मतरकि कहीं-कहीं -ई, -इन, -नी, -आइन, -ऐन आदि प्रत्ययों कें गोगो सें पुंल्लिंग सें स्त्रीलिंग शब्द बनै छै ; जेना कि -- बाछा, बाघ, मोर, ओझा, जोल्हा आदि (पुं) सें क्रमशः बाछी, बाघिन, मोरनी, ओझाइन, जोल्हैन आदि (स्त्रीलिंग)।

(११) सर्वनाम -- एकवचन/बहुवचनों कें क्रम सें अंगिका केरों सर्वनाम नीचें लिखलों जाय रहलों छै --

(क) पुरुषवाचक -- हम, हमे, हम्में/हमरासिनी (उत्तम पुरुष) ; तों, तोंय/तोरासिनी (मध्यम पुरुष, समतार्थक/अवज्ञार्थक), आपनें/आपनेंसिनी (मध्यम पुरुष, आदरार्थक) ; ऊ/ओकरासिनी (अन्य पुरुष, समतार्थक/अवज्ञार्थक), हुनी/हुनकासिनी (अन्य पुरुष, आदरार्थक)।

(ख) निश्चयवाचक -- ई/यैसिनी, एकरासिनी, ईसिनी ; है/हैसिनी, हेकरासिनी (निकटवर्ती) ; ऊ/वैसिनी, ओकरासिनी (दूरवर्ती) ; हौ/हौसिनी (बेसी दूरवर्ती) ; इनी, हिनी/इनकासिनी, हिनकासिनी (निकटवर्ती, आदरार्थक), उनी, हुनी/उनकासिनी, हुनकासिनी (दूरवर्ती, आदरार्थक)।

(ग) अनिश्चयवाचक -- कोय/कोय-कोय (व्यक्तिवाचक) ; कुछू, कुच्छू/ कुछू-कुछू, कुच्छू-कुच्छू (वस्तुवाचक)।

(घ) प्रश्नवाचक -- के ?/के-के ? (व्यक्तिवाचक) ; की ?/की-की ? (वस्तुवाचक)।

(ङ) संबंधवाचक -- जे/जे-जे, से/से-से ; जौंन/जौंन-जौंन, तौंन/तौंन-तौंन।

(च) निजवाचक -- आपने।

(११.१) अंगिका केरों सर्वनामों में लिंग-भेद नैं होय छै ; मतरकि समतार्थक या अवज्ञार्थक आरो आदरार्थक या सम्मानार्थक केरों भेद होय छै, जेना कि ऊपरों में देखैलों गेलों छै, आरो ओकरों चलतें क्रियापदों में रूपान्तरो होय छै ; जेना कि -- तों (तोंय) जाय छें (समतार्थक/अवज्ञार्थक), तोहें जाय छों/आपने जाय छियै (आदरार्थक) ; ऊ आबै छै (समतार्थक/अवज्ञार्थक), हुनी आबै छौंथ/आबै छथिन (आदरार्थक) इत्यादि।

(११.२) उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष आरो अन्य पुरुष सर्वनामों के रूप

निश्चयार्थक रूपों में क्रमश: हमरहै, तोरहै आरो ओकरहै तथा समावेशी रूपों में हमरहौ, तोरहौ ओरा ओकरहौ (जोर दै में) होय छै।

(११.३) अंगिका में सर्वनाममनी रों रूप एकवचन कर्ता कारकों में 'हम, हमें, हम्में' (उ. पु.), 'तों, तोंय, तोहें (म. पु.), 'ऊ, हुनी' (अ. पु.), 'ई, हिनी' (नि. वा.), 'कोय' (अनि. वा.), 'के ?, की ?' (प्र. वा.) आरो 'जे, से' तथा तिर्यक् कारक (कर्म, करण, संप्रदान आदि) में 'हमरा/हमरों', 'तोरा/तोरों', 'ओकरा/ओकरों', 'हुनेका/हुनकों', 'एकरा/एकरों', 'हिनका/हिनकों', 'केकरा', 'केकरो/केकरों', 'किनका/किनकों', 'जेकरा/जेकरों', 'तेकरा/तेकरों' आदि होय छै।

(१२) विशेषण -- अंगिका में विशेषणों कें रूपों में प्राय: नीचें लिखलों शब्द प्रयोगों में आबै छै :--

क. गुणवाचक विशेषण -- अच्छा, खराप, बढ़ियाँ, घटिया, बड़ों, छोटों, लाल, कारों, लब्बों, पुरानों, हलुक, भारी, नम्मा, खाँटों, उजरों, हरियरों, बलगरों, बुधगरों, तेजाल, बुड़बक, सोझों, टेढ़ों, कुबड़ों, चालाँक ओगैरह।

ख. परिमाणवाचक विशेषण -- एतना, कतना, जतना, ततना, ओतना, एत्तें, कत्तें, जत्तें, तत्तें, ओत्तें, थोड़ों, बेसी, ढेरी, कनीटा, तनीटा, जरीटा, तनटा, कम, बहुत, कुच्छू ओगैरह।

ग. संख्यावाचक विशेषण -- एक, दू, तीन, चार, पाँच, छों, सात, आठ, नों, दस, गारों, बारों, ... बीस, तीस, चालीस, पचास, एकौन, साठ, सत्तर, अस्सी, नब्बे, सों, हजार, लाख, करोड़ ; ...पहिलों, दोसरों, तेसरों, चौथों, पाँचमों, ...एक्के, दुय्यो, तीनों ओगैरह।

घ. सार्वनामिक विशेषण -- ई, ऊ ऐन्हों, कैन्हों, जेन्हों, तेन्हों, वोन्हों, हमरों, तोरों, एकरों, केकरों, ओकरों, किनकों, जिनकों ओगैरह।

ङ. कृदन्त विशेषण -- आबी रहलों, लिखलों, पढ़लों, ऐलों ओगैरह।

(१२.१) लिंग-भेदों कें चलतें अंगिका में काँहीं-काँहीं रूपान्तर होय छै ; जेना कि -- बड़का बाबू (पुं.), बड़की माय (स्त्री.), कारों कुकुर (पुं.), कारी कुतिया (स्त्री.) ओगैरह।

(१२.२) अंगिका विशेषणों कें एकटा विशेषता ई छेकै कि निर्दिष्ट याने

निर्वाचक रूपों में विशेषण-पदों में प्राय: पुंल्लिंग में '-का' आरो स्त्रीलिंग में '-की' प्रत्यय के रूपों में लागी जाय छै, जेकरों कारणें पूर्ववर्ती दीर्घ स्वर प्राय: ह्रस्व होय जाय छै अथवा हटी जाय छै ; जेना कि -- पुंल्लिंगों में लाल (सामान्य), ललका (निर्दिष्ट), बड़ों (सामान्य), बड़का (निर्दिष्ट) आरो स्त्रीलिंगों में लाल = ललकी, बड़ों = बड़की ओगैरह। निर्दिष्ट अथवा निर्वाचक रूपों में प्रयोगों में ऐलों विशेषणों सें कोनो खास याने निश्चित विशेष्यों कें बोध होय छै -- ललका नुँगवा, करकी गैया ओगैरह।

(१३) क्रिया -- अंगिका में क्रिया केरों साधारण रूप धातु में '-बों' प्रत्यय जोड़ला सें बने छै ; जेना कि -- धातु लिख्, पढ़्, उठ्, सुत् सें क्रिया केरों साधारण रूप (तुमन्त) होय छै क्रमश: लिखबों, पढ़बों, उठबों, बैठबों आरो सुतबों।

(१३०.१) अंगिका केरों मूल क्रिया (भर्ब सब्सटेण्टिभ) दुइ रकमों कें छै -- अस्तित्व (सत्ता) -सूचक 'छै' आरो विकारसूचक 'छेकै' ; जेना कि -- 'एकरा में पानी छै' (अस्तित्वसूचक) आरो 'ऊ पानी छेकै' (विकारसूचक)। हिंदी में यै दुहू कें जग्घों पर 'पानी है' केरों प्रयोग होय छै, जेकरा सें अस्तित्वमूलक आरो विकारमूलक अर्थ स्पष्ट नैं होय छै। भूत कालों में 'छै' आरो 'छेकै' दुहू केरों रूप 'छेलै' बनै छै -- 'एकरा में पानी छेलै' आरो 'ऊ पानी छेलै'।

(१३.२) 'छै' (भूत कालों में 'छेलै') केरों प्रयोग दुइ तरहों सें होय छै -- १. स्वतंत्र क्रिया कें रूपों में -- 'ओकरा पैसा नैं छै' (भूत कालों में -- 'ओकरा पैसा नैं छेलै') आरो २. सहायक क्रिया कें रूपों मे -- 'ऊ आबै छै', 'ई बैठलों छै' (भूत कालों में -- 'ऊ आबै छेलै', 'ई बैठलों छेलै') ओगैरह।

(१३.३) उत्तम, मध्यम आरो अन्य पुरुषों में 'छै' केरों रूप छीं, छियै ; छें, छों ; छै, छोंथ (आदरार्थक) -आर होय छै (भूत कालों में -- छेलाँ, छेलियै ; छलें/छेलें, छेल्हों ; छलै/छेलै, छेलात/छेलाथ) ओगैरह।

(१३.४) अंगिका में अकर्मक-सकर्मक अथवा एकवचन-बहुवचनों कें कारणें क्रियापदों में कोय खास रूपान्तर नैं होय छै, मतरकि लिंग-भेदों कें कारणें काँहीं-काँहीं किंचित् रूपान्तर होय छै ; जेना कि -- हम्में ऐलियै/हमरासिनी

ऐलियै (अकर्मक, ए.व./ब.व.) ; के देखलकै ?/के-के देखलकै ? (सकर्मक, ए.व/ब.व.) ; मतरकि 'ऊ ऐलों छै' (पुं.), 'ऊ ऐली छै' (स्त्री.) इत्यादि।

(१३.५) धातु में '-आवै' प्रत्ययों कें योगों सें अंगिका में अकर्मकों सें सकर्मक आरो सकर्मकों सें द्विकर्मक तथा '-वावै' प्रत्ययों कें योगों सें अकर्मक या सकर्मकों सें प्रेरणार्थक क्रिया बने छै ; जेना कि -- बैठे छै (अकर्मक), बैठावै छै (सकर्मक), बैठवावै छै (प्रेरणार्थक) आरो पढ़े छै (सकर्मक), पढ़ावै छै (द्विकर्मक), पढ़वावै छै (प्रेरणार्थक) ओगैरह।

टिप्पणी -- क्रिया केरों साधारण रूपों (तुमन्तो) में '-आवै' आरो '-वावै' प्रत्यय क्रमशः '-ऐबों 'आरो '-वैबों' कें रूपों में रहै छै -- चलबों (अकर्मक), चलैबों (सकर्मक), चलवैबों (प्रेरणार्थक) आरो सुनबों (सकर्मक), सुनैबों (द्विकर्मक), सुनवैबों (प्रेरणार्थक)।

(१३.६) क्रिया केरों रूपावली -- अंगिका में क्रिया केरों अकर्मक आरो सकर्मक रूपावली सब्भे कालों में लगभग एक्के प्रक्रिया सें बनै छै। इहाँ एक-एक ठो अकर्मक आरो सकर्मक क्रिया केरों रूपावली देलों जाय रहलों छै :--

(क) कर्ता उ.पु. (ए.व.) : अकर्मक क्रिया- 'ऐबों' : सकर्मक क्रिया- 'सुनबों'।

(काल)	(रूपावली)	(रूपावली)
१. सामान्य वर्तमान	आबै छीं ; आबै छियै।	सुनै छीं ; सुनै छियै।
२. तात्कालिक वर्तमान	आबी रहलों छीं ; आबी रहलों छियै।	सुनी रहलों छीं, सुनी रहलों छियै।
३. संदिग्ध वर्तमान	ऐतें होबों ; ऐतें होबै।	सुनतें होबों, सुनतें होबै।
४. सामान्य भूत	ऐलाँ ; ऐलियै।	सुनलाँ, सुनलियै।
५. आसन्न भूत	ऐलों छीं ; ऐलों छियै।	सुनलें छीं ; सुनलें छियै।
६. पूर्ण भूत	ऐलों छेलाँ ; ऐलों छेलियै।	सुनलें छेलाँ ; सुनलें छेलियै।
७. अपूर्ण भूत	आबै छेलाँ ; आबै छेलियै।	सुनै छेलाँ ; सुनै छेलियै।
८. अपूर्ण तात्कालिक भूत	आबी रहलों छेलाँ ; आबी रहलों छेलियै।	सुनी रहलों छेलाँ, सुनी रहलों छेलियै।
९. संदिग्ध भूत	ऐलों होबों; ऐलों होबै।	सुनलें होबों ; सुनलें होबै।
१०. हेतुहेतुमद्भूत	ऐतियाँ ; ऐतियै।	सुनतियाँ ; सुनतियै।

११. सामान्य भविष्यत्	ऐबों ; ऐबै।	सुनबों ; सुनबै।
१२. संभाव्य भविष्यत्	आबों।	सुनों।

टिप्पणी -- आबै छीं, आबी रहलों छीं, ऐतें होबों, ऐलाँ, ऐलों छीं ओगैरह रूपावली आत्मनेपदी नाखी आरो आबै छियै, आबी रहलों छियै, ऐतें होबै, ऐलियै, ऐलों छियै ओगैरह परस्मैपदी नाखी प्रयोगों में आबै छै। येंहें रङ सकर्मक क्रियाओ कें बारे में जानलों जाय।

(ख)कर्ता म.पु.(ए.व.)अकर्मक क्रिया-'जैबों' : कर्ता अ.पु.(ए.व.)अकर्मक क्रिया-'सुतबों'

१. सामान्य वर्तमान	जाय छें ; जाय छों।	सुतै छै ; सुतै छोंथ(छथिन्)।
२. तात्कालिक वर्तमान काल	जाय रहलों छें ; / जाय रहलों छों।	सुती रहलों छै ; / सुती रहलों छोंत (छथिन्)।
३. संदिग्ध वर्तमान	जैतें होबे ; जैतें होभें।	सुततें होतै; सुततें होतात(होथिन्)।
४. सामान्य भूत	गेले ; गेल्हें/गेल्हौ।	सुतलै; सुतलात/सुतलाथ।
५. आसन्न भूत	ऐलों छें ; ऐलों छों।	सुतलों छै; सुतलों छोंत(छथिन्)।
६. पूर्ण भूत	ऐलों छेल्हैं; ऐलों छैल्हों।	सुतलों छेलै; सुतलों छेलात(छल्थिन्)।
७. अपूर्ण भूत	जाय छेल्हें; जाय छेल्हों।	सुतै छेलै; सुतै छेलात(छल्थिन्)।
८. अपूर्ण तात्कालिक भूत	जाय रहलों छेल्हैं ; / जाय रहलों छेल्हों।	सुती रहलों छेलै, / सुती रहलों छेलात (छल्थिन्)।
९. संदिग्ध भूत	गेलों होबे (होभैं) ; / गेलों होभें (होभो)।	सुतलों होतै ; सुतलों होतात(थ)।
१०. हेतुहेतुमद्भूत	जैतियहें ; जैतियहौ।	सुततियै ; सुततियात (थ)।
११. सामान्य भविष्यत्	जैबे ; जैभें।	सुततै ; सुततात (थ)।
१२. संभाव्य भविष्त्	जो ; जा।	जाय ; जात (थ)।

टिप्पणी -- (१) यैसिनी रूपावली में जाय छें, जाय रहलों छें, जैतें होबे, गेले, गेलो छें (म.पु.) आरो सुतें छै, सुती रहलों छै, सुततें होतै, सुतलै, सुतलों छै (अ.पु.) ओगैरह समतार्थक/अवज्ञार्थक तथा जाय छों, जाय रहलों छों, जैतें होभें, गेल्हें, गेलों छों (म. पु.) आरो सुतै छोंत(थ), सुती रहलों छोंत(थ), सुततें होतात, सुतलात(थ), सुतलों छोंत(थ)/छथिन् (अ. पु.) ओगैरह आदरार्थक (रूपावली) छेकै।

टिप्पणी -- (२) अकर्मके नाखी लगभग सकर्मको केरों रूपावली होय छै। वही सें इहाँ ओकरों विस्तारों में जाय केरों जरूरत नैं समझलों जाय छै।

(१३.७) अंगिका केरों एकटा महत्वपूर्ण विशेषता ई छेकै कि समापक क्रियापदों कें सर्वनामीकरण होय जा छै ; तात्पर्य ई कि (क) कर्ता आरो कर्म कें रूपों में आरो (ख) संबोधी आरो संबंधी कें रूपों में क्रियापदों में सर्वनाम मिललों रहै छै ; जेना कि -- (क) देखलियो = हम्में (कर्ता) तोरा (कर्म) देखलियौ आरो (ख) ऐल्हौं = ऊ, जे कि तोरों/आपने कें कोय छेक्हौं, ऐल्हौं। संक्षेपों में ये रकमों कें रूपावली नीचें देलों जाय रहलों छै :--

(क) कर्ता-कर्म कें रूपों में --

१. कर्ता उ. पु., कर्म म. पु. (समतार्थक/अवज्ञार्थक) -- देखैछियो, देखी रहलों छियो, देखतें होबो ; देखलियो, देखलें छियो, देखलें छेलियो, देखै छेलियो, देखी रहलों छेलियो, देखलें होबौ, देखतियो ; देखबौ ओगैरह।

२. कर्ता उ. पु., कर्म म.पु. (आदरार्थक) -- देखैछियौहौं, देखी रहलों छियौहौं, देखतें होभों ; देखलियौहौं, देखलें छियौहौं, देखलें छेलियौहौं, देखी रहलों छेलियौहौं, देखलें होभौं, देखतियौहौं ; देखभौं ओगैरह।

३. कर्ता उ. पु., कर्म अ.पु. (समतार्थक/अवज्ञार्थक) -- देखै छियै, देखी रहलों छियै, देखतें होबै ; देखलियै, देखलें छियै, देखलें छेलियै, देखै छलियै, देखी रहलों छेलियै, देखलें होबै, देखतियै ; देखबै ओगैरह।

४. कर्ता उ. पु., कर्म अ. पु. (आदरार्थक) -- देखै छियैन्ह, देखी रहलों छियैन्ह, देखतें होभैन्ह ; देखलियैन्ह, देखलें छियैन्ह, देखलें छेलियैन्ह, देखै छेलियैन्ह, देखी रहलों छेलियैन्ह, देखलें होभैन्ह, देखतियैन्ह ; देखभैन्ह ओगैरह।

टिप्पणी -- 'छियैन्ह', 'लियैन्ह' -आर केरों 'न्ह' कें जग्घों पर 'न्' -ओ चलै छै।

(ख) संबोधी आरो संबंधी कें रूपों में --

१. संबोधी म.पु. (समतार्थक/अवज्ञार्थक)/संबंधी अ.पु. (समतार्थक/अवज्ञार्थक या आदरार्थक) -- आबै छो, आबी रहलों छो, ऐतें होतौ ; ऐलो, ऐलों छो, ऐलों छेलौ, आबै छेलौ, आबी रहलों छेलौ, ऐलों होतौ, ऐतियौ ; ऐतौ ओगैरह।

२. संबोधी म.पु. (आदरार्थक)/संबंधी अ. पु. (समतार्थक/अवज्ञार्थक या आदरार्थक) -- आबै छौं, आबी रहलों छौं, ऐतें होत्हौं ; ऐल्हौं, ऐलों छौं, ऐलों छेल्हौं, आबै छेल्हौं, आबी रहलों छेल्हौं, ऐलों होत्हौं, ऐतियौहौं ; ऐत्हौं ओगैरह।

३. संबोधी आरो संबंधी अ.पु. (समतार्थक/अवज्ञार्थक) -- आबै छै, आबी रहलों छै, ऐतें होतै ; ऐलै, ऐलों छै, ऐलों छेलै, आबै छेलै, आबी रहलों छेलै, ऐलों

होतै, ऐतियै ; ऐतै ओगैरह।

४ संबोधी अ. पु. (आदरार्थक)/संबंधी अ. पु. (समतार्थक/अवज्ञार्थक या आदरार्थक) -- आबै छैन्ह, आबी रहलों छैन्ह, ऐतें होतैन्ह ; ऐलैन्ह, ऐलों छैन्ह, ऐलों छेलैन्ह, आबै छेलैन्ह, आबी रहलों छेलैन्ह, ऐलों होतैन्ह, ऐतियैन्ह, ऐतैन्ह ओगैरह।

(१३.८) ऐन्हों सर्वनामीकरणों सें एक्के क्रियापदों में एकटा सौंसे वाक्य समैलों रहै छै ; मतरकि कर्ता, कर्म आरो संबंधी केरों कोन-कोन अंश क्रियापदों में मिललों रहै छै वैसिनी कें बिलगैबों सहज नैं होय छै, मतलब कि क्रियापदों में सार्वनामिक अंश नीर-क्षीर नाखी समैलों रहै छै, तिल-तंडुल नाखी नैं। स्पष्ट छै कि क्रियापदों कें सर्वनामीकरण अंगिका केरों एकटा विशेषता छेकै, जे कि हिंदी में नैं होय छै।

(१३.९) विधि क्रिया -- 'ऐबों' क्रिया केरों प्रत्यक्ष विधि अंगिका में (क) समतार्थक/अवज्ञार्थक 'आव' आरो 'आवें/आबें' तथा (ख) आदरार्थक 'आबों' आरो 'आबियै' होय छै। वेंहें रङ समतार्थक/अवज्ञार्थक परोक्ष विधि 'आबियैहें' तथा आदरार्थक 'आबियैहौ' आरो 'ऐलों जाय' होय छै।

(१३.१०) पूर्वकालिक क्रिया -- धातु में '-ई कें' केरों योग करला सें अंगिका में पूर्वकालिक क्रिया बनै छै ; जेना कि -- आबी कें, बैठी कें, देखी कें, सुनी कें इत्यादि।

(१३.११) संयुक्त क्रिया -- एकों सें बेसी याने दू-तीन क्रिया एक्के साथें प्रयोगों में ऐला पर संयुक्त क्रियापद बनै छै ; जेना कि -- आबी रहलों छै, आबी जैतै, गिरी पड़लै, देखी लेलकै, जाय लागलै, ऐलों करै छै, लिखें पड़त्हौं इत्यादि।

(१३.१२) क्रियार्थक संज्ञा -- जबें कोय क्रिया संज्ञा नाखी प्रयोगों में आबै छै तबें ओकरा क्रियार्थक संज्ञा कहलों जाय छै ; जेना कि -- गुलाब फूल देखै में बड्डी अच्छा लागै छै, सुतला पर आराम मिलै छै, हौ रङ करबों उचित नैं छेकै इत्यादि। हैसिनी वाक्यों में 'देखै', 'सुतला' आरो 'करबों' क्रियार्थ संज्ञा छेकै।

(१३.१३) कृदन्त विशेषण -- वर्तमानकालिक आरो भूतकालिक क्रियापद काहीं-काहीं विशेषण नाखी प्रयोगों में आबे छै ; जेना कि -- सड़कों पर खेली रहलों बच्चा, ओकरों पढ़लों किताब, गाछों सें गिरलों आम इत्यादि। इहाँ 'खेली रहलो', 'पढ़लों' आरो 'गिरलों' क्रियापद क्रमशः 'बच्चा', 'किताब' आरो 'आम' केरों कृदन्त विशेषण छेकै।

(१४) क्रिया-विशेषण -- अंगिका में प्रायः नीचें लिखलों क्रिया-विशेषण (क्रिया केरों विशेषतासूचक शब्द) प्रयोगों में आबै छै :--

१. कालवाचक -- आय, काल, परसू, तरसू, नरसू, ऐसकाँ, पोरकाँ, आबें, तबें, जबें, अखनी/एखनी, कखनी, जखनी, तखनी, कहिया, जहिया, तहिया, बिहाने, साँझें, रातीं, दिनें, कखनूँ, कहियो इत्यादि।

टिप्पणी -- एखनी, कखनी, जखनी, तखनी सें 'समय' केरों, मतरकि कहिया, जहिया, तहिया, कहियो, सें 'दिन' केरों बोध होय छै।

२. स्थानवाचक -- इहाँ/यहाँ, उहाँ/वहाँ, जहाँ, तहाँ, कहाँ, कन्ने, जन्ने, तन्ने, हिन्ने, हुन्ने, उपरें, नीचें, कन, लग/लुग, ठियाँ, तरें, हेंठें, ताँय इत्यादि।

३. परिमाणवाचक -- एत्तें, कत्तें, जत्तें, तत्तें, ओत्तें, एतना/एतने, कतना, जतना, ततना, ओतना/ओतने, खूब, बेसी, थोड़ों-टा, जरी-टा, तनी-टा, ढेरी, बहुत इत्यादि।

४. रीतिवाचक -- कलें-कलें, धीरें-धीरें, धीरें-सुस्तें, हबर-हबर, धथर-पथर, मार-मार, ठीकों सें, कोनो रङ, ऐन्हें, ऐन्हों, कैन्हें, जेन्हें, तेन्हें, केना कें, काहे, कथी लें, की रङ, रसें-रसें, ओरियाय कें, इत्यादि।

(१५) संबंधसूचक शब्द (अनुसर्ग/परसर्ग) -- नें, कें, सें, लें, लेल, लेली, कें, केरों, रों, -कों, में, पर, ऊपर, हेंठें, नीचें, माझें, धारें आदि अंगिका केरों संबंधसूचक शब्द (अनुसर्ग या परसर्ग) छेकै।

(१६) समुच्चयबोधक शब्द -- कयेक-टा शब्दों या वाक्यों कें जोड़ैवाला शब्दों कें समुच्चयबोधक शब्द कहलों जाय छै। अंगिका में नीचें लिखलों समुच्चयबोधक शब्द प्रयोगों में आबै छै -- आर, आरो, तथा, मतुर, मतरकि, मजकि, बलुक, जों, जदियो, तैय्यो, लेकिन, आकि, या, अथवा, कि, जे, जे कि, इत्यादि।

(१७) विस्मयादिबोधक शब्द -- जौंनसिनी शब्दों सें अतरज, खुशी, अफसोच ओगैरह केरों बोध होय छै वैसिनी शब्दों कें विस्मयादिबोधक शब्द कहलों जाय छै ; जेना कि -- एह !, अरे !, इस्स !, उह !, ओह !, हाय !, हाय-हाय !, हे हो !, हे रे !, हे हे !, हे गे !, बाह !, अच्छा ! इत्यादि।

(१८) निपात -- तें, नी आदि अंगिका केरों निपात छेकै ; ऊ तें बैठलें छै, ऊ उहाँ जाय तबें नी, इत्यादि। हिंदी केरों 'ही' बास्तें अंगिका में शब्दों कें आखेरिसों में '-ए' अथवा '-है' आरो 'भी' बास्तें '-ओ' अथवा '-हौ' निपात प्रत्ययों कें रूपों में आबै छै। उदाहरण -- 'ई' सें 'एकरे', 'एकरहै' ; 'राम' सें 'रामे', 'राम्है'(कें) आरो 'ऊ' सें 'ओकरो', 'ओकरहौ' ; 'राम' सें 'रामो', 'राम्हौ'(कें) इत्यादि। 'हम' सें 'हम्हीं(ही) आरो 'हम्हूँ' (भी) तथा 'तों/तोंय' सें 'तोहीं'(ही) आरो 'तोंहूँ' (भी) रूप बनै छै।

शब्द-भंडार

(१९) अंगिका में संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिंदी -आर स्वदेशी आरो अरबी, फारसी, अँग्रेजी, तुर्की -आर विदेशी भाषासिनी सें ऐलों, मतुर आपनों ध्वनि-प्रक्रिया कें अनुरूप बदललों शब्द प्रयोगों में आबै छै। साथें-साथ आपनों ठेठ शब्दो यै भाषा में काफी छै। दिन, देह, देवता, शब्द, क्रिया, केश इत्यादि संस्कृत केरों (तत्सम) शब्द, रात, दाँत, हाथ, आगिन, सुरुज, चाँद (चान) इत्यादि संस्कृत केरों रात्रि, दन्त, हस्त, अग्नि, सूर्य आरो चन्द्र सें बनलों (तद्भव) शब्द, अकिल, अरज, करजा, लहास, जरिबाना इत्यादि अरबी-फारसी केरों अक़्ल, अर्ज़, कर्ज़, लाश आरो जुर्मान: सें बनलों आरो लुटिस, लोट, पुलिस, पाकिट इत्यादि अँग्रेजी केरों नोटिस, नोट, पोलिस आरो पॉकेट सें बनलों शब्द छेकै, जे कि अंगिका में प्रयोगों में आबै छै ; मतरकि लेरू, पठरू, बुतरू, ढेंकी, गोड़, घेंचों, ढढ़नचों, हुरकुच्चा, सुरफुरैबों, ओरियैबों इत्यादि अंगिका केरों आपनों अथवा यै देशों कें आरो-आरो भाषासिनी सें ऐलों (देशज) शब्द छेकै। संक्षेपों में, सर्वनाम, क्रियारूप, अनुसर्ग ओगैरह अंगिका केरों आपनों ढंगों कें छै, जौंनसिनी सें यै भाषा केरों आपनों पहचान बनै छै।

★★★

अंगिका साहित्य केरों इतिहास

(खंड - १ : पद्य)

डॉ० तेजनारायण कुशवाहा

कुलसचिव, विक्रमशिला हिंदी विद्यापीठ

गाँधीनगर, ईशीपुर (भागलपुर, बिहार) - ८१३२०६.

जीवनवृत

नाम तेजनारायण कुशवाहा।

जन्म २४ अप्रिल, १९३३ ई० ; सिंघाड़ी (गोड्डा ; ननिहाल में) ;
आपनों गाँव- भंगावान (भागलपुर, बिहार)।

माता/पिता दासमती देवी (स्व०)/ब्रजनन्दन सिंह ;
धर्मपत्नी - वदमावती कुशवाहा (श्रीमती)।

शिक्षा एम० ए० (संस्कृत/हिंदी), पी-एच० डी०, डिप-इन-एड; साहित्यालंकार, आयुर्वेदाचार्य।

मानद उपाधि हिंदीरत्न, साहित्य-वाचस्पति (त्रय), विद्यावाचस्पति, काव्य-शास्त्री, भारतीय भाषा-भूषण इत्यादि।

भाषा-ज्ञान हिंदी, संस्कृत, अँग्रेजी, बँगला, मराठी, गुजराती, नेपाली (न्यूनाधिक), भोजपुरी, अंगिका इत्यादि।

लेखन/प्रसारण हिंदी, अंगिका आरो भोजपुरी में करीब दू दर्जन किताब आरो कत्तेंनी लेख, वार्ता, कविता-आर पत्र-पत्रिकासिनी में प्रकाशित आरो आकाशवाणी/दूरदर्शन के भागलपुर आरो पटना केन्द्रों सें प्रसारित।

ग्रंथ-प्रकाशन (क) अंगिका में - सवर्णा, अंग-दर्शन, अंगिका कें महायात्रा-गीत, महर्षि मेंहीं सें मिलों ;
(ख) भोजपुरी में - गीत चिरई के ; (ग) हिंदी में - श्री भद्रेश्वर माहात्म्य, प्राच्य-दर्शन, ओमा आदि।

सम्मान/पुरस्कार कर्ण-पुरस्कार, भवप्रीता-पुरस्कार, बलिनारायण-पुरस्कार, अनूप-पुरस्कार, ग्रियर्सन-पुरस्कार, डॉ० अम्बेदकर राष्ट्रीय सेवा-पुरस्कार आदि - क्रमशः समय साहित्य सम्मेलन (पुनसिया), अ० भा० अंगिका साहित्य-कला-मंच (भागलपुर), भाषा-संगम (दुमका), साहित्य-कुंज (फलका, कटिहार), बिहार-सरकार (पटना) आदि सें।

संपादन 'हिम शिखर', 'जन-स्वास्थ्य', 'अंग-धारा', 'वाङमयी' आदि।

संस्थासिनी सें संबद्धता कुलसचिव, विक्रमशिला हिंदी विद्यापीठ (गान्धीनगर, ईशीपुर, भागलपुर) ; अध्यक्ष, अ० भा० अंगिका साहित्य कला-मंच (भागलपुर); संस्थापक महासचिव, अ० भा० अंगिका भाषा सैम्मेलन ओगैरह करीब दू दर्जन संस्थासिनी सें।

संपर्क कुलसचिव, विक्रमशिला हिंदी विद्यापीठ, गान्धीनगर, ईशीपुर (भागलपुर, बिहार) - ८१३२०६.

(१) अंगिका साहित्यों कें प्रारंभिक युग

(५००-१२२० ई.)

१. अंगिका साहित्यों कें इतिहास कबें सें शुरू भेलै, ई सुनिश्चित करबों आसान तें नैं छै, तबें अंगिका भाषा केरों पूर्व-रूप (तखनकों 'आंगी') संहिताकालीन ग्रंथ आरनी में मिलै छै। अंग-जनपदों के दीर्घतमस्, कक्षीवत, घोषा आरनी कवि-कवयित्रीसिनी कें कविता ऋग्वेदादि ग्रंथों में संपादित छै। यै लेली हुनका आरनी कें कविता में स्थानीय भाषा 'आंगी' कें शब्दों के रहबों स्वाभाविक छै। ऋनू, महर्षि ऋष्यशृंग, अष्टावक्र, कहोल प्रभृति ऋषि कें दार्शनिक भाषा में आरो पालकव्य मुनि कें हस्त्यायुर्वेदों में 'आंगी' (अंगिका) केरों प्रारंभिक प्रवृत्ति कें दर्शन होय छै। ओकरों हौ रूपों कें श्री परशुराम ठाकुर ब्रह्मवादी नें 'अंगिका कें उद्भव आरो विकास' में उजागर करने छोंत। संस्कृत साहित्यों कें एक दोसरों विद्वान् डॉ० श्रीधर मिश्र 'विनोद'-हों वेदों में अंगिका कें देखैने छैन्।

जैन आरो बौद्ध साहित्यों कें बहुत बड़ों अंश अंगिका केरों पूर्व-रूप 'आंगी' अपभ्रंश में लिखलों गेलों छै। विशाल ग्रंथ 'मज्झिम निकाय' कें पोतलिय सुतंत, लकुटिकोपम सुतंत आरो सेलि सुतंत आंगी अप्रभंश कें ग्रंथ छेकै। 'अंगुत्तर निकाय' कें कयेक भागों कें संपादन अंग-क्षेत्रे कें चम्पा, भद्दिय, अस्सपुर आरो आपण में भेलों रहै। काव्य कें दृष्टि सें तें नैं, भाषा कें दृष्टि सें तथा दार्शनिक भाव आरो विचारों कें दृष्टि सें यैसिनी ग्रंथ आगका केरों पंथों कें साफ-सुथरा बनावै छै।

आगू कें परंपरा में जिनदत्त चरिउ, सुदंशन चरिउ, काकंड चरिउ आदि में आंगी अपभ्रंश काव्य-कृतियों कें काव्यात्मकता असंदिग्ध छै। सुदंशन चरिउ (१.३.४-८) में अंगदेशों कें सुषमा कें वर्णन में आंगिक संस्कृति झलक मारै छै --

"अंखड भूमि रयणयं णिहाणु रयणयरोव्व सोहाय भाणु,
एत्थत्थि खणउ अंगेदेसु महिमहि लइंणकिउ दिव्व वेसु ;
जहिं सरवरि उग्गय एक या इणं अधिरणि वयणि गयणुल्लाइं,
जहिं हालणि एवणिवद्धे णह सल्लहिं जकखन दिव्व देह ;
जहिं बाल हिरक्खिय सालिखेत मोहेविनु जीयएं हरिण खंत खत।"

२. सहजयानी कविता : सिद्ध-साहित्य

महायानें बोधिसत्व केरों अर्थ बोधि चित्त कें पावैवाला जीव आरो शून्य केरों अर्थ निरात्मा करने छै। निरात्मा (एक) देवी मानली गेली छै। बोधिसत्व निरात्मा देवी कें आलिंगन करी कें अनन्त सुख - महासुख -- पावै छै।

वही महासुखवादों कें फोंल वज्रयान कहलैलै, जै में कोय तरहों कें भोजन-पान अभक्ष्य नैं रहलै ; मांस, मदिरा, मत्स्य, मैथुन आरो मुद्रा (पंचमकारों) कें निषेधो नैं।

वज्रयान-पंथों में कुच्छू ऐह्नों संत होलै जिनका आपनों-आपनों साधना में सफलता मिललैन्। वैसिनी सफल वज्रयानी साधक 'सिद्ध' कहलैलै। मंत्रयान आरो वज्रयान सें आपनों संबंध-विच्छेद करी कें कयेक सिद्ध महायान दिस बढ़लै। सिद्ध आरनी नें साधना केरों हौ सचकरुओं सरूपों कें 'सहज' कहलकै, जेकरा सें 'सहजयान' पंथ चललै। सहजयानों में जीवनों कें परिष्कार पर विशेष बोंल देलों गेलै। सिद्धसिनी के नामों कें पीछू में जुड़लों 'पाद' शब्द हुनकासिनी कें सम्मान कें सूचक छेकै आरो ओकरै विकसित रूप भेलों छै -- 'पा' (सरहपा, शबरपा आरनी में)।

सिद्ध कविसिनी कोनो एक स्थानों कें नैं रहै। हुनकासिनी कें काँहीं कोनो स्थायी निवास या आश्रमों नैं छेलै ; बलुक हुनकासिनी कें साधना-स्थली मुख्य रूपों सें आन्ध्र प्रदेश-स्थित श्रीपर्वत तथा अंग-क्षेत्र-स्थित विक्रमशिला, मगध क्षेत्र-स्थित नालन्दा आरो बंगाल-स्थित पहाड़पुर (राजशाही) महाविहार छेलै। कुल सिद्ध ८४ ठो छेलात। ईस्वी सन् केरों आठमी शती कें उत्तरार्ध सें बारहमी शती कें मध्य-काल ताँय हुनकासिनी कें समय छेलै। वैसिनी में अनेक सिद्ध अच्छा कवियो छेलात। वैसिनी में सरहपा, मेकोपा, धर्मपा, वेलुकपा, जयानन्तपा, पुत्तलिपा, चम्पकपा, लुचिकपा -आर १३ क्षेत्रीय सिद्ध कविसिनी कें सीधा संबंध विक्रमशिला सें जुड़लों छेलै, मतुर आरोसिनी सिद्ध-कवियो विक्रमशिला महाविहारों सें संबद्ध छेलात। हुनकासिनी विक्रमशिला में रही कें सहजयानी कविता करने छेलात। वैसिनी में सरहपा, शबरपा, लुइपा, दारिकपा, कण्हपा, धर्मपा, नारोपा, शान्तिपा, ढेण्ढणपा आरनी विशेष रूपों सें उल्लेख्य छोंत।

"सहजे सहजहु बूझै जब्बे, अंतराल गति टूटै तब्बें।
जब्बे मणु अंथु मणु जाइ, तनु टुट्टइ बन्धन ;
तब्बै समरसहि मज्झे ना सुद्द ना ब्राह्मण।"

ई कविता छेकै सरहपा कें। हुनी आदि- सिद्ध कवि छेलात।

सरहपा

सिद्ध सरहपा केरों जन्म-स्थान आरो जन्म-काल केरों बात विवादों सें भरलों छै। डॉ० विनय घोष भट्टाचार्यें हुनकों जन्म-काल सं.६९० वि. मानलें छै,

मतुर महापंडित राहुल सांकृत्यायनें ७६० ई. मानलें छै। सरहपा केरों इतिहास बंगाल कें पालवंशी राजा धर्मपाल सें कुच्छू जुड़लों होलों छै। धर्मपाल केरों शासन-काल ७६९-८०९ ई. छेलै। लुइपा हुनकों राज्य-सचिव रहै, जे कि पीछूं सरहपा कें शिष्य शबरपा कें शिष्य बनलै। लुइपाँ ८०० ई. में सिद्ध कविसिनी में सब्भै सें ऊँचों स्थान पाबी चुकलों छेलै। यै सें लागै छै कि ८०० ई. कें पहिन्हें सरहपा नें संसार छोड़ी चुकलों रहै। यै तरहें हुनकों समय आठमी शती कें पूर्वार्ध मानलों जाय पारै छै। मगही अकादमी, गया (बिहार) आरो विक्रमशिला हिंदी विद्यापीठ, ईशीपुर (भागलपुर) नें सरहपा कें जन्म-तिथि १० जुलाई, ७३३ ई. निश्चित करने छै।

सरहपा केरों जन्म 'भंगल' (अखनीकों भागलपुर) -क्षेत्रों कें एक गाँव 'राज्ञी' बतैलों गेलों छै। लागै छै, 'राज्ञी' (गाँव) विक्रमशिला महाविहार सें लगभग सटले 'रानी' दीरा (गाँव) छेलै, जे कि गंगा नदी कें कटाव सें हिन्ने-हुन्ने होतें रहै छै। कुछ विद्वानें 'राज्ञी' केरों अवस्थिति 'भंगल' (भागलपुर), 'वारेन्द्र' (आधुनिक नाम 'राजशाही') आरो 'पुण्ड्रवर्द्धन' (उत्तरी बंगाल) कें सीमा पर मानै छोंत ; मतुर, सच कहलों जाय तें, आभीं 'राज्ञी' केरों पहचान ठीक-ठीक नैं होलों छै। डॉ० डोमन साहु 'समीर' केरों अनुमान छै कि 'बरारी' पहिलकों 'राज्ञी'-ये हुएँ पारै छै।

सरहपा केरों पहिलकों नाम 'राहुल' रहै। हुनकों शिक्षा-दीक्षा विक्रमशिला आरो नालन्दा में होलों रहै। हरिभद्र हुनकों एक शिक्षक छेलात। हुनी विक्रमशिला कें शान्तरक्षित केरों चेला छेलात। शान्तरक्षित नें जबें तिब्बत केरों यात्रा करने रहै तबें हरिभद्रे दर्शन-विभागों कें अध्यक्ष बनलों रहोंत। कहलों जाय छै कि हुनीयें 'राहुल' कें आगूँ 'भद्र' शब्द जोड़लें छेलै। जबें राहुलभद्र तंतर-मंतर सें प्रभावित भेलै तबें राहुलभद्र 'सरोजभद्र' कें नामों सें जानलों गेलै। हुनी नालन्दा महाविहार छोड़ी कें शबर आरनी के बस्ती में रहें लागलात। वाहीं हुनी एक 'शर' (वाण, काँड़) बनावैवाला कें बेटी पर मोहाय गेलात आरो ओकरे संगें 'शर' बनावें लागलात। हुनी शबर कें गीत गावै : शबर कें बेटी वै में सुर दै। हौ शबर-कन्या कें संग सरोजभद्र केरों बढ़लों प्रेम आरो ओकरों परिणति बीहा में देखी कें लोगें ओकरों पक्ष आरो विपक्षों में चर्चा करें लागलै। केकरहौ नीकों लागै, केकरहौ नैं।

सरोजभद्रें बौद्ध धर्मो में घुसलों ढकोसला कें खिल्ली उड़ावें लागलै; लोगों कें सहज मार्ग सुझावें लागलें। विरोधीसिनीं हुनका 'सरहा' (सर = वाण, हा =

बनावैवाला) आरो अनुयायीसिनीं 'सरहपाद' कहें लागलै। 'पाद' सम्मानसूचक शब्द छेकै। 'सरहपा' वेहें 'सरहपाद' केरों संक्षिप्त रूप छेकै।

सिद्ध सरहपा केरों कविता पुरानों 'आंगी' (आयकों अंगिका) में फुटलों छै। यै देशों कें कयेक ठो आधुनिक भाषासिनीं हुनका आपनों कवि मानै छै। बँगलां कहै छै कि सरहपा हमरों आदि-कवि छेकै। वेहें रङ असमियां, उड़ियां, मैथिलीं आरो भोजपुरीं हुनका आपनों आदि-कवि मानै छै। हिन्नें मगहीं आरो अंगिकाँ आपनों दावा हुनका पर पेश करै छै। सच पूछलों जाय तें हुनका पर अंगिका आरो मगही केरों दावा ज्यादा सही छै। सरहपा भागलपुरों में या भागलपुरहै कें कोनो गाँवों में भेलों छेलात। हुनकों समय विक्रमशिला आरो नालन्दा महाविहारों में बितलों छेलैन्। यै लेली हुनकों रचना में अंग आरो मगध कें तखनीकों बोली कें पुट छै। खाली सरहपाये नैं, आरोसिनी सिद्ध-कविने जोंन कविता करने छै वैसिनी में अंग आरो मगध कें भाषा केरों स्पष्ट छाप छै। निश्चित छै कि सिद्ध-कविसिनी कें भाषा पर पूरब कें जोंन भाषासिनीं आपनों प्रभाव डाललें छै वैसिनी भाषा में अंगिका आरो मगही पहिलों स्थानों पर छै। ओकरहौ में अंगिका पहिने आबै छै। यै विचारों से अंगिका रों आदि-युग सिद्ध-साहित्यों सें शुरू होय छै आरो ओकरों आदि-कवि केरों विशेषण सरहपा कें संग लागै छै।

महापंडित राहुल सांकृत्यायन नें सरहपा कें लिखलों सात-टा संस्कृत ग्रंथों कें उल्लेख कैने छै। भोटिया देश (तिब्बत) केरों 'तन्जुर' में सरहपा रों रचनासिनी कें रूपान्तर मिलै छै। मूल रूपों में हौ-सब पुरानों आंगी में वज्रयान पर लिखलों गेलों छै। वै-सब में एक-टा 'दोहाकोश' -गीति आपनों मूल रूपों में मिलै छै। हुनकों आरो -सब रचना छेकै -- कायाकोश, अमृतवज्रगीति, डाकिनी गुह्य वज्रगीति, दोहाकोश, उपदेशगीति, महामुद्रोपदेश दोहाकोश, वसंततिलका दोहाकोशगीति, तत्वोपदेश शिखर दोहा गीतिका, चर्यागीति दोहाकोश, सरहपाद गीतिका, भावनाफल दृष्टिचर्या दोहाकोश आदि।

सरहपा नें परममहासुख पावै लेली जोंन मार्ग देखैलें छै ऊ परममहासुख मोक्ष छेकै। एनाकें तें हमरा-आर जानै छियै कि एकरा में गुरु कें स्थान पहिलों होय छै। वहीं संत-महात्मा आरो भक्त लोगों कें दुआर खोलै छै। सरहपाओं गुरु कें महिमा बतैने छै। गुरु कें परमेश्वर मानलों गेलों छै। हुनीयें साधकों कें समुन्दर सें पार उतारै छै ; जहाँ परम महासुख छै। साधक लेली खटिया डँसाय (पारी) कें राखै छै --

"णदह विन्दुह अन्तरे जो जाणंइ तिय भेऊ।
सो परमेश्वर परम गुरु उत्तारई तइ लोऊ।।"

गुरु केरों वचनों पर भक्तों कें बड़ा विश्वास रहै छै; जीवन सहजें हुलसित होय छै --

"गुरु वयणे दिढ़ भक्ति करु, होइअहि सहज उलास।
गुरु वयण संसिद्ध जब्बे, इन्दिजाल सब तुट्टइ तब्बे।"

सरहपा सहज पंथ कें संस्थापक छेकै। ऊ सहज पंथ सहज जीवन आरो सहजं समाधि कें दू रूपों में बँटलों होलों छै। सहज जीवन बाल-जीवन छेकै, प्रकृति-जीवन छेकै। सहज समाधि देहों कें भीतरी आरो बाहरी शक्ति कें साधना छेकै। सरहें पहिली कें सुरुज आरो दोसरी कें चान केरों साधना कें रूपों में वर्णन करने छै --

"चन्द सुज्ज घलि घालइ घोट्टइ, सो आणुत्तर रत्थु पइट्ठइ।
अध-उद्ध मागवरें पइसरेइ, चन्द-सुज्ज वेइ पडि हरेइ।।"

सरहपा कें परवर्ती संतसिनीं ओकरे इड़ा आरो पिंगला कें साधना कहने छै। आयकों भाषा में ओकरा 'धनात्मक शक्ति' (पॉज़िटिव पावर) आरो 'ऋणात्मक शक्ति' (नेगटिव पावर) कहलों जाय छै। पहिलकी साधना में अंतराल कें गतिभंग होय छै। मोंन 'अत्थुमणु' (स्थाणु/उन्मन) स्थिति में पहुँची जाय छै।

सहजावस्था कें अगलका सोपान छेकै समरसता कें। समरस स्थिति केरों वर्णन सरहें है रङ करै छै --

"सहजे सहजउ बूझै जब्बें, अंतराल गति टूटै तब्बें।
जब्बें मणु अन्थमणु जाइ, तनु टुट्टइ बन्धन।
तब्बें समरसहि मज्झे ना सुद्द ना ब्राह्मण।।"

ई समरसता कें स्थिति हिंदी कें महाकवि जयशंकर प्रसाद कें 'कामायनी' में रूपक कें भाषा में अभिव्यक्त होलों छै।

सरहपा कें नजरी में परम महासुख कें स्थिति में जबें साधक-मोंन निरन्तर सहज कें पाय लै छै तबें सांसारिक विषयों लें ओकरों ललक जैतें रहै छै, साधक संसारों कें आवागमनों सें मुक्त होय जाय छै --

"जइ मण सहज निरन्तरे पावइ, इन्दी विसअहि खनवि न धावइ।
जइ पुणु अहणिसि सहज पइट्ठइ, अमण-गमण ने तेहिणे वाट्टइ।"

सरहपा कें विचारों में 'सुण्ण निरंजन परमपउ' -- परमपद/मोक्ष --

शून्य आरो निरंजन छेकै। ऊ समरस छै। जीवात्माओ समरस 'स्थिति' के पाबी लै छै।

है संसारों सें अलगे एक दोसरो संसार छै, जहाँ शून्य निरंजन-स्वरूप ख-सम बसै छै। सरहें आपनों निरंजनों कें शून्य कहै छै ; अप्पा कें शून्य कहै छै ; संसारों कें शून्य कहै छै --

"सुन्न निरंजन परमपउ, सुइणे भाअ सहाण।
सुन्नवि अप्पा सुण्ण जगु, घरे-घरेहु अक्खाण।।"

सरहपा कें कविता केरों मुख्य विषय छेकै सहज पंथ -- सहजवाद। हुनी सहज-पंथ कें प्रतिपादन लेली मंतर-तंतर, कर्मकाण्ड, देवता-पितर आरनी कें बेकार बतैलें छै। रहस्यवाद योग सें निर्वाण कें पैबों, गुरु महिमा जेन्हों विषयो सरहपा कें कविता कें विषय छेकै। कर्मकाण्ड पर चोट करलों गेलों छै --

"बह्मणहि म जाणन्तहि भेउ, एवइ पढिअउ ए चउ बेउ।
महिपाणि कुस लइ पठन्त, घरहि वइसी अग्गि हुणन्त।।'

वेहें रङ, तंत्र-मंत्रो कें व्यर्थ बतैने छै --

"मन्त ण तन्त ण धेअ ण धारण।
सब्ब विरे बढ़ विब्भम कारण।।"

काया कें वैंनें एक-टा महान् तीर्थ मानने छै --

"एत्थु से सुरसरि जमुणा, एत्थु से गंगा साअरु।
एत्थु पआग वणारसि, एत्थु से चन्द दिवाअरु।।
खेतु पीठ उपपीठ, एत्थु मइँ भमइ परिट्ठ ओ।
देहा सरिसउ तित्थ मइँ सुह अप्पा ण दिट्ठओ।।"

सरहपा युगान्तरकारी कवि रहै। आइयो हुनकों कविता प्रासंगिक छै। हुनकों कविता में अंगिका केरों रूपरेखा सुस्पष्ट छै।

शबरपा

शबरपा, सरहपा कें शिष्य रहै। शबर या कोल-भील आरनी कें नाखी रहन-सहन कें कारणें ऊ 'शबरपा' कहैलै। ओकरों बेसी समय विक्रमशिला में बितलों छेलै। वाँहीं रही कें वें २६-टा किताब लिखलें रहै। ओकरों रचना में चित गुह्य गंभीरार्थ गीति आरो महामुद्रवज्र गीति मुख्य छै। महासुख केरों स्थिति बतैतें हुएँ कविं कहै छै --

"मेरुदंड केरों सब्भै सें ऊँचों चोटी पर स्थित त्रिधातु कें खटिया पर

बिछ्लों महासुख कें बिछौना पर नैरात्मारूपी दारिका लेटली छै। ओकारों अंग मोरपंखी सें सोहै छै। गला में गुंजा कें माला छै। शबरपा ओकरा पावै लेली पागल होय रहलों छै। ऊ वहाँ पहुँची कें ओकरा संगें विहार करै छै।''

लुइपा

लुइपा शबरपा कें शिष्य छेलै। ऊ राजा धर्मपाल कें आश्रित कायस्थ-लेखक छेलै। कुच्छू दिनों कें बाद ऊ शबरपा कें चेला होय कें विक्रमशिला में रहें लागलै। विक्रमशिला कें कविसिनी में लुइपा कें बड़ा महत्व छेलै। 'तन्जूर' में अनूदित ओकरों ग्रंथों कें संख्या सात-टा बतैलों गेलों छै। ओकरों कविता में गुरु-महिमा आरो चित्तवृत्ति कें निरोध कें उपाय बतैलों गेलों छै।

दारिकपा/डेंगिपा

दारिकपा आरो डेंगिपा उड़ीसा कें छेलै। वै दुहू में एक तें राजा छेलै, दोसरों मंत्री। जबें लुइपा धर्म-प्रचार लेली उड़ीसा गेलों रहै, दारिकपा ओकरा सें प्रभावित होलै आरो आपनों मंत्री (डेंगिपा) कें संगें लुइपा कें शिष्य बनी गेलै। गुरु कें आदेशों सें दारिकपा कांचीपुरी जाय कें, कयेक बरिस ताँय वहाँ रही कें, एक गणिका कें सेवा कैलकै। सिद्धि मिलला पर ओकरों नाम दारिकपा होलै। बादों में दारिकपा आरो डेंगिपा विक्रमशिला में रही कें कविता कैने छेलै। दारिकपा कें कविता कें नमूना लियै --

"राआ राआ राआ रे, अवर राअ मोहे रे वाधा।
लुइपा ऊ परा दारिक द्वादश भुअणे लाधा।।''

कण्हपा

कण्हपा कर्नाटक-निवासी रहै। ओकरों रूप-रंग करिया रहै ; ओही सें ऊ 'कृष्ण-पाद' (कण्हपा) कहैलै।

राजा देवपाल-कालीन कण्हपा पहिने सोमपुरी विहारों में रहै छेलै। पीछूँ जालन्धरपा कें शिष्य बनलै आरो सिद्ध-समागम लेली विक्रमशिला ऐलों छेलै।

कण्हपाँ सिद्ध-कविसिनी में बड्डी मान पावै रहै। सात ठो सिद्ध-कवि ओकरों शिष्य होलों रहै। राहुल जी नें कण्हपा कें दर्शन संबंधी छौं-टा. आरो तंत्रों पर लिखलों ७४-टा ग्रंथों कें उल्लेख करने छै। कण्हपाँ दोहा छंद आरो कर्तें नी राग-रागिनी में रचलों आपनों कविता में सहज मार्ग पकड़ै कें उपदेश

देलें छै। वेद, पुराण, आगम आरो पंडितसिनी कें निन्दाओ करने छै --

"आगम वेद पुराणे रही पंडिअ भाण वहन्ति।
पक्व सिरी फले अलिअ जिअ बाहेरीअ भमन्ति।।"

तिलोपा

राजकुलों में उत्पन्न भेलों तिलोपा भृगुनगरों कें निवासी रहै। विरक्ति होला पर विक्रमशिला में पहिन्हैं सें रहैवाला विजयपा कें शिष्यत्व ग्रहण करी कें सिद्ध बनलै। ओकरे शिष्य नारोपा छेलै, जे कि बहुत बड़ों कवि आरो गंभीर विद्वान् रहै। हौ विक्रमशिला कें पूरबी दुआरों कें 'द्वारपंडित', फनू वहें महाविहारों कें 'कुलपति' होलों छेलै।

शान्तिपा

सिद्ध आरनी में सबसें बेसी विद्वान् कवि शान्तिपा छेलै। ऊ 'कलिकाल-सर्वज्ञ' विशेषणों सें विभूषित रहै आरो विक्रमशिला कें सर्वोच्च प्रशासको छेलै। ओकरों यात्रा उदन्तपुरी, सोमपुरी, मालवा आरो सिंहल तक भेलों रहै धर्म-प्रचार लेली। शान्तिपा नें सहज मार्गो कें स्वसंवेदन आरो स्वानुभूति कें मार्ग कहने छै --

"सहज मार्ग माया-मोह कें सागरों में जलयान छेकै जौनी पर चढ़ी कें हौ पार उतरलों जाय छै।"

भावों कें खुलासा करै में शान्तिपा कें कविता में रूपक केरों योजना देखतहैं बनै छै। रूओं धुनै कें एक-टा रूपक देखियै --

"भव निर्वाणे पड़ह मादला, मन पवन वेणि करण्ड कशाला।
जअ जअ दुन्दुहि साद उछलिला, कान्ह डोम्बी विवाहे चलिला।।
डोम्बी बिवाहिआ आहारिउ जाम, जाउतुके किउ आणुतु धाम।
अहनिसि सुरअ पलंगे जाअ, जोइणि जाले रअणि पोआअ।।
डोम्बीएर संगे जो-जोइ रत्तो, खणइ न छाडअ सहज उन्मत्तो।"

कुक्कुरीपा, भूसुकपा, कंबलपा, गुंडरीपा, कंकणपा, विरूपा, डोम्बिपा, गोरक्षपा, तंतिपा, महीपा, धर्मपा आरनी सिद्ध-कवियों कें आंगी कविता भुलैलों नैं जाय पारें।

सिद्ध-कविसिनी कें रचना केरों वर्ण्य विषय तंत्र-मंत्र, कर्मकाण्डों कें खंडन आरो धार्मिक मत-तत्वादि कें प्रतिपादन छेकै। हुनकासिनी कें कविता अध्यात्म आरो उपदेश कें कविता छेकै। रूपक-योजना, रहस्यमयी भाषा कें प्रयोग, दोहा

आरो मुक्तक गीतिशैली हुनकासिनी कें लब्बों देन छेकै। वैसिनी सिद्ध-कवि कें प्रवृत्ति बादों में कबीरदास आरो हुनकों अनुगामी संत-कविसिनी कें निर्गुण ब्रह्मोपासना पद्धति, रहस्यवादी भावना, रूपक-योजना, तंत्र-मंत्रादि के खंडन, जाति-पाँति कें विरोध, गुरु-महिमा, शान्त रस आरो हृद्गत भावों कें अभिव्यक्ति लेली दोहा आरो पदों कें उपयोग आदि में परिलक्षित होय छै। कबीरदासों कें उलटबाँसी आरो सूरदासों कें कूटपदों पर सिद्ध-कविता कें प्रभाव मानलों जाय पारें। खाली हिंदीये नैं, बँगला, उड़िया आरो असमिया काव्यधारा ताँय सिद्ध-कविसिनी कें भाव-संपदा आरो गीति-परंपरा सें जुड़लों छै। अंगिका कें लोकै-गीति-गाथा परंपराओ पर सिद्ध-कविसिनी कें रचना कें प्रभाव पड़लों छै, जेकरों बारे में आगू में लिखलों गेलों छै।

सरहपा नें तखनीकों आंगी (भाषा) कें, जे कि यै जनपदों कें जन-भाषा कें रूपों में रहै, आपनों अभिव्यक्ति आरो संप्रेषणों कें माध्यम बनैलें छेलै। ओकरा लेली नया-नया छंदों कें प्रयोगो करने रहै। वैसिनी सें साहित्यों कें विचार-धारा बदललै, जेकरा कि सरहपा कें समकालीन आरो उत्तरकालीन कविसिनीं अपनैलकै।

सिद्ध-कविसिनीं कें रचना 'चर्यागीत' या 'चर्यापद' कहावै छै। वैसिनी कें रचना में अंगिका कें स्वरूपों पर डॉ० डोमन साहु 'समीर' नें 'सम्मेलन-पत्रिका' (भाग-८१ : संख्या-४ ; आश्विन-मार्गशीर्ष, १९१८ शक ; पृ. १-१४) इलाहाबाद (उ.प्र.) में छपलों आपनों 'सिद्ध-साहित्य, अंग-जनपद और अंगिका भाषा' शीर्षक निबंधों में विस्तार सें प्रकाश डालने छै।

३. नाथ-पंथ आरो अंगिका कें नाथ-पंथी कविता

सहजयानी सिद्ध-कविसिनी कें बाद नाथ-पंथ कें साहित्यों में अंगिका कें स्वरूप-दर्शन होय छै। नाथ-पंथी अंगिका कविताँ पहिलकों सहजयानी सिद्ध-कविता आरो ओकरों बादों कें अज्ञातनाम कविसिनी कें रचलों गीति-गाथा आरो कबीरदास आरनी संतसिनी कें कविता कें जोड़ै छै।

वज्रयानों कें सहज साधना आरो शैव साधना सें विकसित होलों नाथ-पंथों कें योगीसिनी कें 'कनफटा जोगी' या 'दर्शनी साधु'-ओ कहलों जाय छै। नाथ-पंथों कें कत्तें नीं परंपरा चललै, जेकरों विशेष अध्ययन डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदीं आपनों 'नाथ-संप्रदाय' नामों कें ग्रंथों में करने छोंत। वै संप्रदायों में गोरखनाथ, जालन्धरनाथ, नागार्जुन, सहस्रार्जुन, दत्तात्रेय, देवदत्त, जड़भरत,

आदिनाथ आरो मत्स्येन्द्रनाथ भेलों छोंत जिनकासिनी कें क्रमों में भिन्नता पैलों जाय छै।

डॉ० द्विवेदी जी नें गोरखनाथ केरों आविर्भाव-काल विक्रम-संवतों कें दसमी शती स्थिर करने छोंत आरो हुनकों कविता कें भाषा कें लोक-भाषा बतैलें छोंत। हुनी लिखलें छोंत --

"यद्यपि उपलब्ध सामग्री से यह निर्णय करना बड़ा कठिन है कि इनकी भाषा का विशुद्ध रूप क्या था तथापि इसमें संदेह नहीं कि इन्होंने अपने उपदेश भोजपुरी में प्रचारित किये थे।"

हमरों देखला में गोरखनाथ जी कें काव्य-भाषा जत्तें भोजपुरी कें नगीच छै ओकरा सें काहीं बेसी अंगिका कें नगीच छै : जेना कि --

"हसिबा, खेलिबा, धरिबा ध्यान, अहनिसि करिबा ब्रह्मा गियान।
हँसै, खेलै, न करै मन भंग, ते निहचय सदा नाथ के संग।।"

गोरखनाथ जी कें वै कविता केरों रूप आयकों अंगिका में है रङ होय छै --

"हँसबों, खेलबों, धरबों धियान, निसिदिन करबों ब्रह्मा गियान।
हँसै, खेलै, नैं करै मन भंग, ते निहचय सदा नाथ कें संग।"

स्पष्ट छै कि भाषिक आरो व्याकरणिक दृष्टि सें ई विशुद्ध अंगिका केरों उदाहरण छेकै। नाथ-पंथों के आरोसिनी कवियों कें रचना तखनकों अंगिका सें सजलों-सँवरलों छै।

नाथ-पंथी अंगिका काव्य में भाषा तें बड़ा सहज आरो लोक-रीति कें अनुकूल छै, लेकिन दर्शन कें भाषा में सामान्य पाठक लेली ओत्तें संप्रेषणीय नैं छै। भाव-तत्व चिंतन में खपैलों गेलों छै। आपनों मान्यता आरो स्थापना कें व्यावहारिक रूप दै में उपमानों कें प्रयोगो पैलों जाय छै। जे हुएँ, नाथ-पंथी कविता अंगिका कें प्राचीन कविता छेकै जे कि भाव, योग आरो दर्शन सें भरलों-पुरलों छै आरो भाषा में अंगिका केरों पुट सुस्पष्ट छै।

४. अंगिका केरों गीति-गाथा-प्रबंध काव्य

वहें युगों में आल्हा-ऊदल, लोरकैन, सोरठी-बृजभार, कुँवर विजयमल, शोभा नायक बनजारा, राजा भरथरी, राजा माणिकचंद, राजा गोपीचंद आदि आरोसिनी गीति-गाथा-काव्य लोक-भाषा में प्रचलित भेलै। हौसिनी

गाथा-काव्य अज्ञातनाम कविसिनीं दसमी शती कें उत्तरार्ध सें लै कें तेरमी शती कें मध्य-काल ताँय लिखने छै। यहाँ कुछेक लोकगीति-गाथा-प्रबंधों कें बारे में लिखलों जाय रहलों छै।

आल्हा-ऊदल

'आल्हा' वीरगाथा प्रबंध-काव्य छेकै। पहिने यै में अठारों ठो लड़ाय कें वर्णन छेलै, मतुर पीछूँ ऊ संख्या में हरे-फेर होय गेलै।

आल्हा केरों कथा महोबा राजों सें जुड़लों छै। महोबा उत्तर प्रदेशों कें हमीर जनपदों में पड़ै छै। ऊ छोटकासिनी राजों में अगुवा बनी गेलों रहै। पृथ्वीराजों कें समकालीन परमाल महोबा कें शासक छेलै। कन्नौज कें राजा जयचंद सें ओकरों गाढ़ों दोस्ती रहै। आल्हा आरो ऊदल राजा परमाल कें सेनापति रहै। राजा परमालों कें पत्नी रानी मल्हान (मल्हना) कें आदेशों सें आल्हा-ऊदल नें ढेरसिनी लड़ाय लड़लों रहै जेकरों वर्णन ई गीति-गाथा-प्रबंधों में बड्डी मौलिक आरो प्रभावकारी ढंगों में छै।

कयेक इतिहासकारें जगनिक कें ई गाथा-काव्यों कें रचयिता मानलें छै, जबें कि सौंसे गाथा में काँहीं जगनिक केरों कोय चर्चा नैं भेलों छै। आल्हा गाथा-काव्यों कें मूल-भाषा चाहे जे रहलों रहें, लेकिन सौंसे उत्तर भारतों में कत्तें नी क्षेत्रीय भाषा में ई गाथा मिलै छै। डॉ० ग्रियर्सन ने लिखलें छै -- "ई गाथा-काव्यों कें पूर्वी पाठान्तर खाली देश-दुनिया घुरै-फिरैवालासिनी कें कंठों में आजो विद्यमान छै आरो बिहार कें बोली में गैलों जाय छै।" (इंडियन एण्टिक्वैरी, भाग-१४ ; १८८५, पृ. २०९)।

लोरिकैन

ऐतिहासिक आरो तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था कें नजरी सें, लागै छै कि, लोरिकैन कें रचना १२-मी सें १४-मी शती कें बीचों में होलों रहें। 'लोरिकैन' गीति-गाथा केरों एक-टा विशाल महाकाव्य छेकै। ई चार खंडों में बाँटलों छै। पहिलका खंडों में 'समरू' कें बीहा, दोसरका में लोरिक-मंजरी कें बीहा, तेसरका में लोरिक-चनमा कें बीहा आरो चौथका में लोरिक-जमुनी कें बीहा केरों वर्णन छै। लोक-परंपरा में लोरिक-मंजरी आरो लोरिक-चनमा कें प्रसंग बेसी प्रचारों में छै। लोरिक-चनमा कें कथा 'चनमा कें उद्धार' कें नामों सें ख्याति में छै। लोरिक केरों कर्म-स्थान सुपौल जिला मुख्यालय

सें सटले हरदी गाँव रहै।

स्व० रासबिहारी पाण्डेय नें 'लोरिकैन' कें जातीय काव्य कहने छेंत। हुनकों कहनाम छै कि खाली भोजपुरी क्षेत्रे में नैं, उत्तर भारतों कें आरो कत्तें नी क्षेत्रों में एकरा अपना दिगिर में माँगलिक आरो शुभ संस्कारों कें समय बड़ा प्रेम, उत्साह आरो श्रद्धा सें अहीर लोगें गावै छै। ('भोजपुरी भाषा का इतिहास', पृ. ३५)।

लोरिकैन कें विषय-वस्तु कोय सहृदय कें सहजें प्रभावित करैवाला छै। ई वीररस-प्रधान महाकाव्य छेकै, मतुर आरोसिनी रसों कें उदाहरणों एकरा में मिलै छै।

"तोहें हमरा जबें कादाँ दाबिये नें देल्हे हो,
हे गे मैयो दुरगा, कादाँ जबें दाबिये देल्हें रे सोढ़रा,
तिरिया तोरों देखी होतौ मनझमान भाय रे।" ('लोरिकैन', 'चकोर')।

शोभा नायक बनजारा

'शोभा नायक बनजारा' एक-टा बड़ों-रङ गीति-गाथा-प्रबंध काव्य छेकै। एकरों रचयिता कें नाम अज्ञात छै। ई गाथा-काव्यों कें रचना-काल १२-मी शती कें अंतिम दू दशक मानलों जाय पारै छै।

शोभा नायक (नयका) केरों बीहा 'बारी' (कन्या) सें होलों रहै। गौना कें बाद बारी जोंन दिना ससुराल ऐली वहें दिना शोभा बनिजों लेली मोरंग पयान कैलकों रहै ; रात होला पर रस्ते में एक-टा गाछी तर सूती रहलै। वै गाछी पर एक जोड़ा पंछी रहै। वै दुहू कें बातों सें शोभा कें मालूम होलै कि आयकों रातीं जें आपनों पत्नी सें सहवास करतै वें बड़ा गुनी बेटा पैतै।

हौ बात जानी कें शोभा उठलै आरो आपनों घोंर घुरी चललै। आपनों पत्नी कें साथें सहवासों कें बाद, ओकरों पहिचान लेली कि ऊ आपनी पत्नी भिरी ऐलों रहै, वें एकटा औंगठी ओकरा दै कें रातिये मोरंग चललों गेलै, आरो वहाँ बारों बरिस ताँय व्यापार करी कें ढेरसिनी सौंर-सामान लै कें घोंर घुरलै। हुन्ने ओकरों पत्नी बारी कें पाँव भारी होलों देखी कें ओकरा पर लोकापवादों कें प्रहार हुएँ लागलै। भारी यातना दै कें ओकरा ओकरों सास-ससुरें घरों सें निकाली देलकै। बारी कें दियोरों कें हौसिनी बात कुच्छू-कुच्छू मालूम रहै। वें बारी कें अपना'हाँ राखी लेलकै।

शोभा कें घोंर घुरला पर ओकरा सब-टा खिस्सा मालूम होलै। दुन्नों

पति-पत्नी खुशी सें खाय-पीयें आरों रहें लागलै।

डॉ० ग्रियर्सन नें एक-टा पत्रिका जेड. डी. एम. जी. में 'द सिलेक्टेड स्पेसिमेन्स ऑफ द बिहार लैंग्वेज -- द गीत नयका बनजरवा' नामों सें आपनों आलेख छपवैने रहै। ऊ गीत ६२९ पाँती में छै। यहाँ 'बारी' कें विरह देखलों जाय --

"रामा देखल रहतै मोरंग शहर भला रे ना ;
रामा असकर लगीच सामी कें जैतियै रे ना।
रामा केना कें खेंपब दिन-रात भला रे ना ?
रामा केकरा सें भेजब संवाद भला रे ना !
रामा सामी कें करबै खबर भला रे ना ;
रामा जहर - माहुर खाय कें मरबै रे ना।
रामा डूबी जैबै कुइआ ते पोखर भला रे ना।" ('भोजपुरी भाषा का इतिहास' : स्व० रासबिहारी पाण्डेय)।

स्पष्ट छै कि एकरा में अंगिका भाषा भरलों-पुरलों छै, जबें कि एकरों रचना-काल आय सें कयेक सौ बरिस पहिलकों छेकै।

सोरठी बृजाभार

'सोरठी बृजाभार' नाथ-संप्रदायों कें समय लिखलों एक-टा बृहद् गीति-गाथा -प्रबंध काव्य छेकै। एकरों रचयिता कें नाम अज्ञात छै। यै में सोरठी (नायिका) आरो बृजाभार (नायक) केरों कथा छै।

'सोरठी-बृजाभार' केरों वर्ण्य-विषय गुरु गोरखनाथ-प्रतिपादित यौगिक चमत्कार आरो हुनकों समयों कें कत्तें नी मान्यता छेकै। यै में वज्रयानी विचार आरो मान्यता पर गुरु गोरखनाथों कें ज्ञान-मार्गों कें चमत्कारिक घटना कें विजय देखैलों गेलों छै। जादू-टोना, तंतर-मंतर कें जरिया सें बृजाभार कें मार्ग में नाना रकमों कें बिधिन-बाधा खाड़ों करलों गेलों छै, जेसिनी कें गुरु गोरखनाथों कें कृपा सें काटतें हुएँ ऊ आगू बढ़लों गेलों छै।

ई काव्यों कें नायिका सोरठी साध्य छेकै। ओकरा लेली साधक बृजाभारें यात्रा करै छै। रस्ता में हौ योगीं कत्तें नीं नायिका आरनी कें उद्धार करै छै।

यै में बृजाभार कें ब्रह्मचर्य-व्रत-धारण आरो ओकरों बिहैली पत्नी हेमन्ती कें पातिव्रत-धर्म कें दरसैलों गेलों छै।

कुँवर विजयमल

'कुँवर विजयमल' अंगिका कें एक-टा प्रतिशोधात्मक गीति-गाथा काव्य छेकै। एकरों मूल प्रति नैं मिलै छै आरो नैं तें एकरों रचयिता रों नामे मिलै छै।

एकरों कथा-वस्तु में राजपूतकालीन मान्यता लौकै छै। यै सें लागै छै कि ई काव्य राजपूत-कालों में लिखलों गेलों छेलै। कथा-वस्तु में मुरार खाँ पठान कें नाँव आवै छै। यै आधारों पर एकरों रचना पठान-कालों में होवै कें संभावना बुझाय छै।

विजयमल गाथा अंगिका कें अलावा आरो कयेक-टा क्षेत्रीय भाषाओ में गैलों जाय छै। डॉ० ग्रियर्सन नें शाहाबाद (आयकों भोजपुर, रोहतास, बक्सर आरो कैमूर) जिला में वहाँकों भाषा में प्रचलित विजयमलों कें गीत संकलित करी कें एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्ता कें पत्रिका-५३, भाग-१, १८४ ई. में 'द साँग ऑफ विजयमल' कें शीर्षकों सें छपैने छेलै जें कि ११२८ पाँती में छै। वें ओकरा पूर्वी भोजपुरी कें श्रेष्ठ उदाहरण मानने छै। है बात निश्चित छै कि ग्रियर्सन भागलपुरों कें कलक्टर रहतियै तें यहाँकों भाषा में प्रचलित विजयमल कें गीतों कें बतैतियै जे कि, सच पूछों तें, अंगिका छेकै।

है गाथा-काव्यों में विजयमल नें आपनों ससुर आरो साला सें आपनों माय-बापों कें बदला लेने छै। ई गीति-गाथा लोक-लय आरो सुरों में छै। छंदों मे मात्रा-दोष मिलै छै।

राजा भरथरी

'राजा भरथरी' कें रचना-काल १२-मी शती छेकै। एकरा में गोरखपंथी योगी-आर सारंगी पर गीत गावै छै आरो भीखों में गुदड़ी माँगै छै। ई गीत बिहार कें जौनी-जौनी भाषा में गैलों जाय छै तौनी-तौनी भाषा कें रूपो एकरा मे मिलै छै।

'राजा-भरथरी' गाथा में दुइ-टा कथा आवै छै। एकों में राजा भरथरी (भर्तृहरि) वैराग्य लै कें चलै लें चाहै छै ; मतुर पत्नी सामदेई मना करै छै। वै पर रानी पिंगलाँ सामदेई कें पहिलों जनमों कें कहानी सुनावै छै। दोसरों कथा छै कि राजा भरथरी शिकार लेली बोंन जाय छै। वाहीं हुनका वैराग्य होय जाय छै आरो हुनी बाबा गोरखनाथों सें दीक्षित होय जाय छै।

सामदेई राजा भरथरी कें पत्नी रहै। हुनकरी एक बहिन रहै मैनावती,

जेकरा सें गोपीचंदों के जनम भेलों छेलै। राजा भरथरी कें गुरु गोरखनाथों कें शिष्यत्व ग्रहण करी लेबों आरो आपनी पत्नी सामदेई कें 'माय' कही कें भीख माँगबों ई गीति-गाथा-प्रबंधों कें मुख्य घटना छेकै। सामदेई आरो भरथरी कें संवाद बड्डी मर्मस्पर्शी छै।

मानिकचंद

'मानिकचंद' गीति-गाथा-प्रबंध काव्य छेकै, जे कि अंग, बंग, मगध आदि कें जनपदीय भाषा•में प्रचलित छै। एकरो नैं तें मूल प्रतिये मिलै छै आरो नैं तें कवि रों नामे उपलब्ध छै। डॉ० ग्रियर्सन नें एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्ता कें पत्रिका-१३, १८७८ ई. में 'द साँग ऑफ मानिकचंद' कें नामों सें एक-टा लंबा लेख लिखलें छै। मूल गीतों कें शुरू में वैनें १४ पन्ना में मानिकचंद कें जन्म, जन्म-स्थान, वै समयों कें बात, पत्नी मैनावती आरो बेटा गोपीचंद कें बारे में बहुते जानकारी देने छै।

मानिकचंद केरों गीत अंग क्षेत्रीय योगी आरनी कें कंठों में आइयो सुरक्षित छै।

गोपीचंद

गोपीचंद गीति-गाथा-प्रबंध नाथपंथी योगी कें सारंगी पर उतरैवाला एक दोसरों ढंगों कें मार्मिक गाथा छेकै, जै में गोपीचंद आपनों राजपाट आरो धोंन-दौलत छोड़ी कें गृह-त्याग करै छै। हौ समय माय मैनावती रों पुत्र-प्रेम आरो बहिन वीरम रों भ्रातृ-प्रेम हृदयों कें झकझोरी दै छै ; लेकिन गोपीचंद पर ओकरों कोय असर नैं पड़ै छै, ऊ वैराग्य-पंथों सें जरियो-टा विचलित नैं होय छै।

गोपीचंद गीति-प्रबंधों कें रचना १२-मी शती में भेलों रहै। हिंदी कें विद्वान् डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी नें लिखलें छै कि, "गोपीचंद्र बंगाल कें राजा मानिकचंद कें बेटा रहै। मानिकचंदों कें संबंध पालवंशों सें बतैलों जाय छै, जे कि १०९५ ई. ताँय शासनारूढ़ रहै। एकरा बाद हुनकासिनी पूरब दिस हटै लें वाध्य होलै। कयेक पंडितें यै पर अनुमान करने छै कि हुनी ११-मी शती कें शुरू में भेलों छेलात। हम्में मत्स्येन्द्र नाथों कें समय निर्धारित करै कें प्रसंगों में तिरुमलय सें मिललों शैल-लिपि सें गोपीचंदों कें समय ११-मी शती कें आस-पास होबों अनुमान करने छियै।

डॉ० ग्रियर्सन नें कलकत्ता कें एशियाटिक सोसाइटी पत्रिका संख्या-५४ १८८५ ई. में 'टू वर्सन्स ऑफ द साँग ऑफ गोपीचंद विथ ट्रान्सलेशन' छपवैनें छेलै। भोजपुरी आरो मगही क्षेत्रों में प्रचलित गोपीचंद संबंधी गीतों कें भिन्न-भिन्न पाठ एके पन्ना पर आमने-सामने देलों गेलों छै। वै सें पता चलै छै कि गोपीचंदों कें गीतों कें विभिन्न पाठ अलग-अलग क्षेत्रों कें भाषा में प्रचलित छेलै आरो ओकरा में अंगिका पाठो अंग-जनपदों कें योगी आरो नाथ-पंथीसिनी कें कंठों पर छेलै जे कि आभियों वर्तमान छै।

•गोपीचंद गाथा-काव्य एक-टा संवेदनशील महाकाव्य छेकै। वै में भाव-पक्ष आरो कला-पक्षों कें बढ़िया संयोजन छै। अंगिका गीति-गाथा-प्रबंधों कें पाठ करला पर नीचूँ लिखलों तथ्य मिलै छै --

१. अंगिका कें पूर्व-मध्य युगों कें है-सब गाथा कें काव्य-रूप प्रबंध-काव्यों कें छेकै, जेकरा मे महाकाव्यों कें संख्या बेसी छै।

२. रचना ११०० ई. सें लै कें १४०० ई. ताँय भेलों छै। एकरों पुष्टि गीति-प्रबंधों में वर्णित तखनीकों ऐतिहासिक, सामाजिक आरो धार्मिक स्थिति सें होय छै।

३. नाथ-पंथों कें मान्यता कें व्यावहारिक रूप देबों गीति-गाथा-प्रबंधों कें दृष्टि रहलों छै।

४. प्राय: सब्भे-टा गीति-गाथा-प्रबंधों कें शुरुआत देवी-देवता कें मनौन सें होलों छै।

५. सब्भे गीति-प्रबंधों कें रचयितासिनी अज्ञात छै।

६. लगभग सब्भे गाथा विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न भाषिक पाठों में प्रचलित छै।

७. गीति-गाथा-प्रबंधों कें मौखिक परंपरा चललों आबी रहलों छै।

८. सब्भे-टा छंदबद्ध छै। कंठ-परंपरा कें कारणें छंदों में त्रुटि आबी गेलों छै, जेकरा लय आरो सुरें भरै छै।

९. गीति-प्रबंधों कें संरचना में लोक-तत्वों कें समावेशों पर रचनाकारों कें नजर रहलों छै।

१०. गीति-गाथा-प्रबंधसिनी सें तत्कालीन ज्ञात-अज्ञात ऐतिहासिक तथ्य आरो सामाजिक, आर्थिक आरो राजनैतिक स्थिति पर प्रकाश पड़ै छै।

५. अंगिका केरों लोकोक्ति-कविता

उत्तर-मध्य युगों में कविता कें रूपों में लोकोक्ति, या कहों, कहावतो लिखलों गेलै। लोकोक्ति अज्ञातनामा लोक-कवियों कें होय छै ; मतुर अंगिका लोकोक्ति-काव्यों कें रचयिता घाघ, भड्डुरी आरो डाक केरों नाम, अनेक लोकोक्तियों में लागलों भोग (भणिता) सें ज्ञात होय छै।.हिनकासिनी कें लोकोक्ति खास करी कें कृषि, भूगोल अथवा समाजों सें संबंधित होला कें कारणें देश-भरी में प्रचलित छै आरो वैसिनी लोकोक्ति कें भिन्न-भिन्न संस्करण या पाठो निकललों छै।

घाघ

घाघ बादशाह अकबर (१५४८-१६०५ ई.) कें समकालीन छेलै। भड्डुरी आरो डाक घाघ केरों समसामयिक रहै। घाघ केरों जन्म-स्थान, माय-बाप आरो परिवारों कें बारे में विद्वानसिनी में मतभे. छै। पं० रामनरेश त्रिपाठी नें घाघ कें जन्म छपरा जिला में काँहीं भेलों बतैलें छै जबें कि घाघ भागलपुर जिला के घोघा कें निवासी छेलै।

घाघ केरों जन्म एक कनौजिया ब्राह्मण परिवारों में भेलों रहै। हौ दिल्ली दरबारों में रहै छेलै। बादशाह अकबरें 'घोघा' जागिरों में घाघ कें देने रहै। घाघें कहलगाँव में आपनों घोंर बसैनें रहै। ओकरा गंगा जी रों महालो मिललों छेलै। घाघ कें उत्तराधिकारी चौधरी कहैलै। आइयो कहलगाँवों कें चौधरी टोला आरो वहाँकरों चौधरी लोग घाघ केरों स्मृति कें उजागर करै छोंत। डॉ० ग्रियर्सन नें आपनों 'पीजेण्ट्स लाइफ. ... ' में घाघ कें लोकोक्ति कें स्थान देनें छै।

भड्डुरी आरो डाक

यै दुहू कें जन्म-कथा एक्के रङ कें मिलै छै। वै सें लागै छै कि डाक आरो भड्डुरी कें चिन्है में विद्वानसिनीं कुच्छू भूल कैने छै। डाक केरों लोकोक्ति में 'भल्लरी' संबोधनों मिलै छै। वेहें 'भल्लरी' असल में 'भड्डुरी' छेकै। हिनकासिनी कें लोकोक्ति कें भाषा अंगिका छेकै। यै दुहू अंग-जनपदे में काँहीं निवास करै छेलात। श्री कपिलेश्वर शर्मा (शुभंकरपुर, दरभंगा) नें आपनों 'डाक वचनावली' (१९४२ ई.) कें लोकोक्ति में किंचित् मैथिली कें पुट भरै कें चेष्टा करने छोंत, जबें कि डॉ० ग्रियर्सन नें आपनों 'पीजेण्ट्स लाइफ' में उद्धृत डाक कें कहावतों

कें भोजपुरी सें प्रभावित मानने छै।

घाघ, भड्डरी आरो डाक कें कहावतसनी सें अंगिका धन्य होलो छै। हिनकासिनी तीन्हू खास करी कें कृषि-वैज्ञानिक आरो ज्योतिर्विदो छेलात। हिनकासिनी कें कहावतों में काव्य-सौंदर्य ओत्तें तें नैं मिलै छै तैयो वैसनी में कुच्छू ऐहिनों तत्व छै जे कि विशेष रूपों सें मुखर छै। छंद कें दृष्टि सें हिनकासिनी कें लोकोक्ति-काव्यें दोहा आरो चौपाई कें परिधान धारण करने छै। कुछेक उदाहरण लेलों जांय --

- एक बून जों चैत में परें, सहस बून सावन में हरें।
- कच्चा खेंत नैं जोतें कोय, नाहीं बीज में अंकुर होय।
- खाद परें तें खेत, नैं तें कूड़ों रेत।
- चमकै पच्छिम-उत्तर ओर, तब जानों पानी कें जोर।
- ढेला ऊपर चील्ह जों बोलै, गली-गली में पानी डोलै।
- पूरब धनुही पच्छिम भान, कहै घाघ बरसा नियरान।
- तितिर पाँख मेघा उड़ै, ओ विधवा मुसुकाय ;
  कहै डाक सुनु डाकिनी, ऊ बरसै ई जाय।
- कातिक सुदी एकादसी, बादल बिजली होय ;
  तो अखाड़ में भड्डरी, बरखा चोखी होय।

फेंकड़ा आरो लोरी

फेंकड़ा आरो लोरी छोटों-छोटों बच्चा-बुतरू कें खिलावै, पिलावै आरो सुतावै में अथवा कोनो क्रिया या कामों में रिझावै लेली सुनैलों जाय छै। फेंकड़ा केरों विस्तार ढेरसिनी काम-धंधा में छै जबें कि लोरी बच्चा-बुतरू कें सुतावै कें गीत छेकै। लोरी केरों सीमा माय-बाप, भाय-बहिन या सगा-संबंधी द्वारा बच्चा-बुतरू कें सुतावै तके छै जबें कि फेंकड़ा बच्चोसिनीं पढ़ै छै।

फेंकड़ा आरो लोरी हमरासिनी कें सास्कृतिक धरोहर छेकै। वैसिनी में हमरासिनी कें जीवनों कें सौंसे इतिहास, भूगोल, खगोल आरो समाज झलक मारै छै। फेंकड़ा बच्चा-बुतरू लेली मनोरंजनों कें साधन होय छै। ओकरों लय आरो धुन कुच्छू-कुच्छू अपने ढंगों कें रहै छै।

फेंकड़ा आरो लोरी लोक-जीवनों कें उद्घाटित करै छै। वैसिनी सें कविता सुनै आरो पढ़ै कें आनन्द आवै छै। वैसिनी में स्थानीय रंजन होय छै। बच्चों पाकलों आम देखी कें कहै छै -- 'कौआ रे कक्का, आम दे पक्का।' लुक्खी-बिलैया

(गिलहरी) कें हेरी कें पढ़ै छै -- 'लुखी-बिलैया दाल-भात खो ; सैंयाँ बोलैलको, पटना जो।'

लोरी में जे संगीतों कें आनन्द आवै छै वै सें बच्चा-बुतरू कें नीन जल्दी आबो जाय छै। माय-बहिनों कें लोरी -- 'आबें गे निनिया निनान बोंन सें, ...', 'सुतों-सुतों रे बाल बलना ; माय-बाप गेलों छो चिचोर कोड़ना' -आर में यहें गुण देखलों जाय छै।

(२) अंगिका साहित्यों कें मध्य युग

(१२२० ई. सें १८१० ई. ताँय)

१. ऐतिहासिक दृष्टि सें अंगिका साहित्यों कें मध्य युगों कें दू भागों में बाँटलों जाय छै --

(क) पूर्व-मध्य युग (१२२० सें १६५० ई. ताँय) आरो --

(ख) उत्तर-मध्य युग (१६५० सें १८५० ई. ताँय)

पूर्व-मध्य युगों में अंगिका आपनों पुरानों रूप 'आंगी' सें क्रमशः आधुनिक स्वरूप (अंगिका) कें पकड़ै छै, जेकरों दर्शन साधु-संतों कें धार्मिक भजनों में या हुनकासिनी कें लोक-प्रचलित सूक्ति-आर में होय छै। ई लेली पूर्व-मध्य युगों कें 'साधु-संत-कालो' कहलों जावें पारै छै। वै काल-खंडों में भक्ति-भाव कें भीतर श्रृंगार सें भरलों गाथा-गीतों कें परंपरा चललै। परम तत्व या प्रकृति/ब्रह्म कें संख्या आरो स्वरूपों कें निरूपण होलै। निर्गुण आरो सगुण ब्रह्म कें पाबै लेली ज्ञान आरो भक्ति कें माध्यमों कें स्थापना भेलै। गीत आरो गाथा कें विषय-वस्तु में बदलाव ऐलै। साधु-संतसिनीं सहजयानी सिद्ध आरो नाथपंथी योगीसिनी सें अलग हटी कें निर्गुण आरो सगुण ईश्वरों कें लीलोपासना आरो गुणानुवादों कें, पुराकथा कें आधार-भूमि बनाय कें, करबों शुरू कैलकै।

पूर्व-मध्य युगों कें प्रवृत्ति उत्तर-मध्य युगों में बनलों रहलै। यहाँ संक्षेपों में वै मध्य युगों कें साहित्यिक विशेषता प्रस्तुत करी रहलों छियै। सबसें पहिनें महाकवि विद्यापति कें लेलों जाय।

विद्यापति

विद्यापति कहियो बँगला भाषा कें कवि मानलों जाय रहोंत। हिंदीं मानै छै कि हुनी हमरों कवि छथिन। मैथिलीं यै सबसें फरके हुनका पर आपनों अधिकार

जमावै छै। सच पुछलों या कहलों जाय तें विद्यापति आंगी = अंगिका कें कवि छथिन। हिंदी कें एक विद्वानें कहै छोंत -- "बँगला से अधिक पूर्वी हिंदी अथवा अवधी और बैसवाड़ी इत्यादि से उनकी (विद्यापति की) पदावली की भाषा का सादृश्य है।" हुनीं यहो मानै छोंत कि, 'पदावली की भाषा का जितना मेल अवधी से है उतना बँगला से नहीं। विद्यापति की भाषा का शरीर हिंदी है, परिधान बँगला है।' एतना सच छै कि आधुनिक मैथिली कें पूर्व-रूप आंगी रहै। विद्यापतिं हौ आंगी कें 'देसिल बअना' नाम देने छथिन ; 'कीर्तिलता' में हुनी लिखलें छथिन -- "सैक्कय वैाणी बहुअ न भावइ, पाउँअ रस को मम्म न पावइ ; देसिल बअना सब जन मिट्ठा, तें तैसन जम्पओ अवहट्ठा।" तखनी ताँय भाषा कें अर्थ में नैं तें 'मैथिली' शब्द प्रचलित छेलै आरो नैं तें 'अंगिका' शब्द प्रचलम में ऐलों छेलै ; मतुर ई तें स्पष्टे छै कि हुनी 'देसिल बअना' कें नामों सें तखनकों अंगिकाये में कविता करने रहथिन।

विद्यापति कें जन्म, डॉ० उमेश मिश्र कें अनुसार, सं. १४२५ वि. ठहरै छै। हुनकों पिताश्री पं० गणपति ठाकुरनें 'गंगा-भक्ति-तरंगिणी' लिखने छोंत। विद्यापति कयेक राजा कें आश्रित छेलात। सन् १४०० ई. में राजा शिवसिंहें ताम्रपत्र कें जरिया सें उपहारस्वरूप विसफी गाम आरो मानद उपाधि 'अभिनव जयदेव' विद्यापति कें देने रहै।

विद्यापति संस्कृत, अवहट्ठ आरो प्राचीन अंगिका भाषा में रचना करने छोंत। 'पदावली' हुनकों कोय स्वतंत्र ग्रंथ नैं छेकैन्ह ; आपनों जीवन-कालों में समय-समय पर हुनी जेसिनी पद रचने छोंत वेहेंसिनी पदों कें संग्रह बादों में करी कें 'पदावली' नाम देलों गेलों छै। 'विद्यापति' नामों एक्के नैं, अनेक कवियों कें मिलै छै। यै लेली ई कहबों मोस्किल छै कि 'पदावली' केरों कोन ठो रचना कोन 'विद्यापति' कें रचलों छेकैन्ह। जे हुएँ, विद्यापति कें पद तीन तरहों कें मिलै छै -- (क) शृंगार संबंधी, (ख) भक्ति संबंधी आरो (ग) समय संबंधी।

शृंगार संबंधी पदों में राधा-कृष्ण कें प्रेम-प्रसंग संबंधी पद आवै छै। संस्कृत गीतकार महाकवि जयदेव सें प्रभावित विद्यापति कें कविता में वयः-संधि, नख-शिख, अभिसार, मान, विरह आदि कें वर्णन भेलों छै।

भक्ति संबंधी पदों में गंगा, शिव, माय भैरवी आरनी कें मनौन आरो भक्ति-परक पद आवै छै। हुनकों लिखलों शिव जी कें नचारी उत्तरी अंग-क्षेत्रों में आइयो प्रचलित छैन्। गंगा जी कें मनौन में हुनी कहै छोंत --

"कत सुख-सार पाओल तुअ तीरे,
छोड़इत निकट नयन बहु नीरे।
कर जोड़ि बिनमओं विमल तरंगे।
पुन दरसन होए पुनमित गंगे।।"

काल (समय) संबंधी पदों में तखनकों परिस्थिति कें चित्र मिलै छै।

विद्यापति कें कविता गीति-काव्यों कें अंतर्गत आवै छै। अलंकार स्वाभाविक रूपों में प्रयुक्त छै। अंगें विद्यापति कें आपनों अंगों सें लगैने छै।

२. अंगिका कें साधु-पंथी कविता

है युगों कें कविसिनी में निर्गुण पंथों कें अंतर्गत ज्ञानमार्गी संत कवि आरो सगुण पंथों कें अंतर्गत राम आरो कृष्ण कें चरित-गायक भक्त कवि आवै छोंत। निर्गुण-सगुण पंथों कें संगें-संग सरभंग (औघड़) पंथ, सखी पंथ, शिवनारायणी पंथ, बावरी पंथ -आर पनपलै। निर्गुण पंथों में कबीरदास कें नामों पर कबीर-पंथ, संत दरिया साहेब कें नामों पर दरिया-पंथ, दादूदयाल कें नामों पर दादू-पंथ आदि कें परंपरा विकसित होलै। आगू चली कें संत-परंपरा में संतमत-सत्संग कें आविर्भाव होलै, जेकरों प्रवर्त्तक संत देवी साहेब आरो उन्नायक महर्षि मेंहीं परमहंस जी महाराज भेलात। आय हुनके आसन संतश्री शाही बाबा आरो संतश्री संतसेवी बाबानें लेने होलों छोथ। हिनकासिनी में महर्षि मेंहीं आरो संत शाही बाबा नें अंगिका में पद आरो भजन लिखने छोंथ।

यहाँ जे-सब पंथ आरो संतों कें चर्चा होलै वै-सब में संत कबीरदास, संत दादू, संत दरिया, संत पलटूदास, संत रैदास, सहजोबाई, दयाबाई, बाबा कीनाराम, झीकनराम आरनी कवियो छेलात। हिनकासिनी कें कविता कें भाषा तखनकों विकसित भाषा केरों मिललों-जुललों रूप छेकै ; मतुर वै पर बेसी अधिकार बनै छै पूरबी जनपदों कें। कबीरदासें साफ-साफ कहने छै --

"भाषा हमरी पूरबी, हमको लखै न कोय।
हमको तो सोई लखै, जो पूरब का होय।।"

कबीरदासों कें सधुक्कड़ी भाषा में पूरब केरों भाषासिनी कें सम्मिश्रण होलों छै। कोय भाषा कें पहिचानै में ओकरों क्रियापदों कें खास भूमिका रहै छै। अंगिका कें क्रियापदों कें उपयोग कबीरदास जी कें कविता में देखलों जाय पारें ; जेना कि --

" जागै (छै), तानै (छै), देखै (छै), लाबै (छै), राखै (छै), आवै (छै), लाँघै (छै), व्यापै (छै), डूबै (छै), मिटै (छै), तजै (छै), कहै (छै) -जैन्हों सैकड़ों वर्तमान अपूर्ण निश्चयार्थक (घटमान वर्तमान) क्रियापद प्रयुक्त होलों छै। ऐन्हों प्रयोग आरो कत्तें नी मिलै छै। यही भाव-धारा में रचलों दरिया साहेब आरो दोसरोंसिनी संत-कवियों कें कविता में अंगिका भाषा केरों शब्द-संभार मिलै छै।

कबीरदासों कें जीवन-चरितों कें पक्का पता तें नैं चलै छै, मतरकि बेसी विद्वानों कें मतों सें हुनकों जन्म १४५६ ई. आरो मृत्यु १५७५ ई. में होलों मानलों जाय छै। हुनी अंगिका कें ज्ञानमार्गी शाखा कें पहिलों कवि छेकात। 'बीजक' हुनकों प्रामाणिक ग्रंथ छेकै। हुनकों 'वाणी' कें चार भागों में राखलों गेलों छै :- बीजक, शबद, साखी आरो रमैणी। हुनी एक सुधारक कवि छेलात। खाली धर्म-सुधारके कें रूपें नैं, समाज-सुधारकों कें रूपों में हुनी आपनों कवित करने छोंथ। जात-पाँत, छुआछूत, ऊँच-नीच, बाहरी आडंबर, ढकोसला, पूजा-पाठ -आर कें हुनी खंडन करने छोंथ। कबीरदासों पर सिद्ध-कवि सरहपा कें स्पष्ट छाप पड़लों छै। लागै छै कि कबीरदास सरहपा कें औतार छेलात। हुनके नाखी कबीरदासनें रहस्य केरों बात करने छै। अंगिका साहित्यों में रहस्यवादी कविता कें पहिलों कवि कबीरदासे कें मानलों जाय पारै छै। जानलों बात छेकै कि हुनी कविताये लेली कविता नैं करलें छोंथ, बल्कि हुनकों कविता ह कें उद्गार छेकै, जें हृदयों कें छुवै छै, झकझोरबो करै छै। कविता करै के ऊँचाई हुनकों भावों में मिलै छै। हुनकों उलटबाँसी में कुच्छू-कुच्छू जटिलताओ छै।

कबीरदास जीं प्राचीन आंगी अपभ्रंश भाषा में प्रचलित दोहा छंदों कें महत्व देने छै। हुनकों 'साखी' दोहे छंदों में लिखलों गेलों छै। हुनकों रचनासनी लय-सुरों में बँधलों छै आरो अलंकार सहज रूपें ऐलों छै। हुनकों एक-टा अंगिका-पद उदाहरणस्वरूप यहाँ प्रस्तुत छै --

"हंसा ई पिंजरा नैं तोरों।
कंकड़ चुनी-चुनी महल बनैलों, लोगें कहै घर मोरों।
नैं घर मोरों, नैं घर तोरों, चिड़िया रैन बसेरों।
बाबा दादा भाय-भतीजा कोय नैं चलै संग तोरों।
माता-पिता स्वारथ कें भागी करै रे मोरों-मोरों।
कहै कबीर सुनों भाय संतो, एक दिन जंगल डेरों।।"

-- 'अंगिका कें महायात्रा गीत' सें।

मध्य कालों कें सगुण-भक्तिपंथी कविसिनी में सूरदास, नंददास, मीराँबाई आदि कृष्ण-भक्ति-धारा में आरो तुलसीदास, केशवदास आदि राम-भक्ति-धारा मे होलों छोंथ। तुलसीदासों कें छोड़ी कें आरोसिनी भक्त-कविं आपनों काव्य-भाषा में ब्रजभाषा कें अलावे अवधी, बुंदेलखंडी, भोजपुरी कें संगें-संग अंगिका-जैसनों सहेली भाषा कें शब्दों कें उपयोग करने छै। तुलसीदासों कें भाषा एनाकें तें अवधी आरो भोजपुरी-प्रधान छैन्, तैयो काँहीं-काँहीं अंगिकाओ मिलै छै।

मुंगेर कें कवि भृगुराम मिश्र (१४-मी शती ई.) केरों कृति 'रासबिहार' वही युगों में लिखलों गेलों छेलै। 'रासबिहार' केरों भाषा आयकों अंगिका नाखाँ लागै छै। हुनकों एक दोसरों किताब 'सुदामा-चरित' आरो तेसरों 'दानलीला' कें उल्लेखो मिलै छै, जेसिनी कें निश्चित रूपें अंगिका केरों कृति मानलों जाय पारें।

भृगुराम मिश्र पुरानीगंज (मुंगेर) में रहै रहोंत। हुनकों बारे में है जानकारी बुकानन साहेबों कें पूर्णिया जिला कें सर्वेक्षण-विवरणों में मिलै छै। बुकानन साहेबें भृगुराम मिश्रों कें रचना 'रासबिहार' कें भाषा मैथिली सें भिन्न मानने छै। 'रासबिहार' में कृष्ण कें रासलीला कें वर्णन छै। दु:खों कें बात ई कि आभी ताँय भृगुराम मिश्र कें रचना-आर नैं मिललों छै। ओकरों खोज होना चाहियों। निश्चय छै कि हुनकों रचना मिलला पर अंगिका कें क्रमिक इतिहास १४-मी शती ईस्वी सें अच्छा बनतियै।

भृगुराम मिश्र -जेन्हें सोम कवि, अचल कवि, बनवारी मिश्र, मधुसूदन -आर कत्तें नी कवियों कें उल्लेख मिलै छै, बाकिर हुनकासिनी कें नै तें जन्म-स्थानों कें पता चलै छै, नै तें समयों कें आरो नैं तें रचनासिनी कें। हुनकासिनी पर खोज होबों बहुत जरूरी छै।

३. मध्य-युगीन अंगिका गीति-गाथा-प्रबंध

हिंदी कें आदि-युगों में जे रङ वीरगाथा-कविता रचलों गेलों रहै वेहें रङ अंगिकाओ में गीति-गाथा लिखै कें परंपरा कौनी शती सें चललों रहै, ई कहबों तें कठिन छै, मतुर एतना तें कहले जाय पारै छै कि सिद्ध आरो नाथ कविसिनी कें आंगी अपभ्रंश कें रचनासनी कें बाद आल्हा, लोरिकैन, सोरठी -बृजाभार, नयका बनजारा, कुँवर विजयमल, राजा भरथरी, राजा मानिकचंद, राजा गोपीचंद -आर सें संबंधित गीति-गाथा-प्रबंधों कें परंपरा में उत्तर-मध्य युगों में कयेक-टा नें प्रेम आरो शृंगारपरक गीति-गाथा-प्रबंध अंगिका में लिखलों गेलै। हौ-सब गीति-गाथा

पौराणिक, ऐतिहासिक, जातीय, रोमांचक आदि कयेक तरहों कें मिलै छै, जौनी -सब पर विशेष खोज कें जरूरत छै।

अंगिका कें उत्तर-मध्य युग (१६५० ई. सें १८५० ई. ताँय) में लोक-तत्वों कें अंतर्गत शृंगारिक गीति-गाथा-प्रबंध रेशमा, राजा ढोलन, नेटुआ दयाल, घुघली-घटमा, सलेल भगत, सती बिहुला, बीसू राउत, जोति तपस्या आदि लिखलों गेलै। यै लेली वे युगों कें शृंगारिक प्रेम-गाथा-युगो नाम देलों जाय पारै छै।

हैसिनीं प्रेम-गाथा-प्रबंधों कें रचना-तिथि ठीक-ठीक निर्धारित नैं करलों जावें पारै छै, मतरकि हैसिनी कें वर्ण्य-विषयों कें आधारों पर ऐतना मानबों बिल्कुल ठीक बुझावै छै कि हैसिनी कें रचना मुगल-शासन-कालों में भेलों होतै। वै युगों में खाली शृंगारपरक प्रेम-गाथा-प्रबंध कें रचना नैं भेलै, बलुक बिरह, झूमर, कजरी, जँतसार, बारहमासा, चैतावर, फगुआ -आर शृंगारी गीतो कम सें रचलों गेलै। है तरहों कें रचनासिनी कें मौखिक परंपरा खूब चललै आरो आभियों चली रहलों छै।

रेशमा

'रेशमा' गीति-गाथा-प्रबंधों कें कथा-वस्तु सें प्रतीत होय छै कि एकरों रचना मुगल-कालों में भेलों छै। एकरों रचयिता केरों नाम अज्ञात छै। एकरा में रेशमा आरो चूहरमल कें कथा वर्णित छै।

अनिंद्य सुंदरी रेशमा चूहरमलों कें खूभे चाहै रहै। वैं चूहरमलों कें आगूँ आपनों प्रणय-प्रस्ताव राखलकै। चूहरमलें कहलकै कि ओकरों भाय हमरों (चूहरमलों कें) गुरु-भाय छेकै ; यै लेली हौ संबंध नैं हुऍ पारें। रेशमा भागली-भागली आपनों भाय लग ऐली आरो चूहरमलों कें बात हुनका कन राखलकी। तबें की ? रेशमा कें भाय आरो चूहरमल में लड़ाय लागी गेलै। वै में रेशमा कें भाय मारलों गेलै। हुन्ने चूहरमलें समाधि लै लेलकै। रेशमा योगिन भै गेली आरो चूहरमलों कें समाधि लगें आपनों प्राण-त्याग कै देलकी। वै घड़ीं चूहरमलों कें समाधि सें बोल निकललै -- 'बहिन रेशमा कें पूजा पहिनें करियौहौ, बादों में हमरों।' वही सें आभी ताँय रेशमा कें पूजा अंग-क्षेत्रों में पहिने होय छै, तबें चूहरमलों के।

रेशमा संयमों कें गीति-गाथा छेकै। है कथा सें वैदिक यम-यमी कें पुरा-कथा याद आबी जाय छै। वहाँ यमीं आपनों भाय यमों सें प्रणय-याचना करने रहै, जेकरा यमें ठुकराय देने रहै। ई कथाँ प्रेमों पर निछावर होय

जाय कें भावो भरै छै।

रेशमा आरो वीर चूहरमल लोक-देवता कें रूपों में प्रतिष्ठित छै। 'रेशमा' काव्यों में शृंगार रसों कें भीतर शान्त रसों कें प्रतिष्ठा भेलों मिलै छै। युद्ध-वर्णनों में वीर रसों कें दर्शन होय छै।

राजा ढोलन

राजा ढोलन अंगिका कें उत्तर-मध्य-युगों कें एक दोसरों महत्वपूर्ण गाथा-काव्य छेकै। वै में राजा ढोलन आरो मोरवा कें कथा कहलों गेलों छै। दोन्हू कें बीहा बचपन्हैं में होलों रहै, जेकरों पता हुनका-आर कें नैं छेलै। सयान होला पर जबें हौ बात मालूम होलै तबें दोन्हू एक-दोसरा सें मिलै लेली व्याकुल होय गेलै आरो मिलै कें चेष्टा करें लागलै। मिलन कें रस्ता में कत्तें नी रकमों कें विघ्न-बाधा पड़लै, लेकिन राजा ढोलन सब्भै कें काटतें हुएँ गौना कराय कें मोरवा कें आपनों घोंर लानलकै।

'राजा ढोलन' प्रेम आरो विरह कें गाथा छेकै। एक दिस जहाँ ई गीति-गाथा -प्रबंध तहियाकरों समाजों में प्रचलित बरले बीहा आरो ओकरों दुष्परिणामों कें संकेतित करै छै वाँहीं दोसरों ओर प्रगाढ़ प्रेमों दरसावै छै।

नेटुआ दयाल

'नेटुआ दयाल' कोनो अज्ञात कवि कें रचना छेकै। एकरों नायक नेटुआ दयाल आरो नायिका अमरौतिया छेकै। 'नेटुआ दयाल' प्रबंधों कें 'बहुरा गोंढ़िन' आरो 'कमला माय' कें नाम्हौ सें जानलों जाय छै।

नेटुआ जातों कें नेटुआ छेलै। दुखरन कें बेटा हौ व्यक्ति गरीब दयाल सिंह कें नामों सें जानलों जाय छेलै। ओकरों बीहा बारों बरिस पहिने बहुरा गोंढ़िन कें बेटी अमरौतिया सें भेलों रहै। अमरौतिया कें नाम काँहीं-काँहीं धनिया मिलै छै। अमरौतिया कें बीहा कें पहिने ओकरी जत्तें बहिनसनी कें बीहा होलों रहै हौसिनी कें दूल्हा कें भौंरा गोंढ़िनीं 'खाय' गेली रहै। यै लेली नेटुआ गौना लै लें नैं जाय कें कामरू-कामाख्या सिद्धि लै लें गेलै आरो सिद्धि मिलला कें बाद अमरौतिया कें विदाय कराय कें आपनों घोंर लानै लें ससुरार जाय रहलों छेलै। रस्ता में नाना रङों कें विघ्न-बाधा पड़लै, मतुर देवी माय कें कृपा सें सब विघ्न-बाधा कें काटते होलों वैं आपनों पत्नी कें घोंर लै आनलकै।

नेटुआ दयालों कें कथा-वस्तु जादू-टोना सें भरलों छै। नायक देवी मा
कें महिमा सें असकरे जादू कें लडाय में विजयी होलै। कथा-वस्तु में साम
लोक-संस्कृति कें झाँकी मिलै छै।

नेटुआ दयाल कें पाठों में नेटुआ कें पत्नी कें नाम अमरौतिया आवै छै
कुइयाँ पर पानी भरतें नेटुआ आरो अमरौतिया कें बातचीत जरा देखलों जाय--

-- किए तोरों नाम, कहाँ केरों वासी, के तोरों छेकौ रे बाप ?
काहाँ जाय छें, येहो बताय दे, काहाँ सें आवै छौ पाप ?
लगितौ पाप रे तोरा छौंड़ा, सूनों में करै छें रे बात ;
डूबै रे चललै आबें सुरुज देव, होलों जाय छै रे रात।

-- नाम नटुकवा, भदरा कें वासी, दुखरनमल हमरों बाप ,
गौना कराय लें जाय छीं हम्में कमला सुमिरि आलाप।
आपनों बताय दे नाम गे बारी, छने में भरतो गे घैलिया ;
बगलों में ठाढ़ी के छेको तोरी अँचरा ढापने बदनिया ?

-- सोनामंती भौजो हमरी, हमरों नाम अमरौतिया ;
काहाँ में पैबों पानी रे दैबा, सुन्ना भै गेलै कुइयाँ !
बारी मैयो कमला नें गे, बारी मैयो कमला नें,
एतना सुनिए मारलक बान जे रे झमकौआ ;
छने में भरी लेलकी पनिया लुँगा पेन्हीं फलकौआ ;
पेन्हीं पटोरिया छतिया सटी कें विलपै छै अमरौतिया।''

काव्य कें लक्षणों पर 'नटुआ दयाल' अंगिका कें एक-टा रत्न मानलों जाय पारै छै। एकरा में नेटुआ आरो बहुरा गोंढ़िन तें उभरले छै, दुखरनमल, भीमलमल, मानिकचंद गोंढ़ी, भागोमंता, नौकर मधुरिया आरो मैनमा कें चरित्रो खोललों गेलों छै।

घुघुली-घटमा

'घुघुली-घटमा' कें कवि कें नाम अज्ञात छै ; मतुर कंठ-परंपरा में ई आभी तांय चली रहलों छै। यै में छतरी चौहान कें शौर्यो कें वर्णन होलों छै। वही सें 'घुघुली-घटमा' काव्य 'छतरी चौहान' कें नाम्हौ सें जानलों जाय छै। संक्षेपों में, एकरों कथा है रङ छेकै --

शिशुपाल नामों कें एक राजा छेलै। ओकरों बीहा घाटमपुर कें शासकों कन होलों रहै। घाटमपुर कें कुटी केरों साला सात भाय छेलै। शिशुपाल आरो

सालासिनी में नैं पटै रहै। सालासिनीं शिशुपालों कें हत्या करी देलकै। शिशुपालों कें पत्नी कोय तरहों सें भागी निकललै। होकरों गोड़ भारी छेलै। एक बच्चाँ जनम लेलकै। नाम पड़लै छत्तरी चौहान। जबें ऊ सयानों भेलै तबें होकरा मालूम भेलै आपनों बापों कें हत्यारासिनी कें बारे में। हौ आपनों तेज सँभारें नैं पारलकै। मामासिनी कें मारी कें आपनों बापों कें हत्या कें बदला लेलकै।

'घुघुली-घटमा' में जहाँ-तहाँ साहित्यिक सौंदर्य निखरी उठलों छै। उपमा में स्थानीय रंजन देखला में आवै छै।

सती बिहुला

'सती बिहुला' अंगिका भाषा कें महत्तम उपलब्धि छेकै। कथा-वस्तु, भाव आरो भाषा कें विचारों सें ई अंगिका कें पहिलों महाकाव्य छेकै। एकरों रचयिता चम्पावासी भीमसेन कें समकालीन केशो साव अंगिका कें पहिलों महाकवि छेलात, है बात मानै में कोय आपत्ति नैं। 'सती बिहुला' महाकाव्यों कें दोसरों नाम 'बिहुला-विषहरी' छेकै। दुहू नामों सें है महाकाव्य प्रसिद्ध छै।

'बिहुला-विषहरी' महाकाव्यों कें गीति-गाथा अंग-जनपदीय सीमा सें पार सौंसे भारत देश आरो विदेशो में प्रचलित छै। ई सगठे कहलों, गैलों, सुनलों आरो गुनलों जाय छै।

'सती बिहुला' बनाम 'बिहुला विषहरी' कें रचना १७-मी शती में होलों छै। कवि केशो साव कें प्रामाणिक जीवनवृत्त आरो सती बिहुला महाकाव्यों कें रचना-तिथि पर विशेष शोध करै कें जरूरत छै।

नौ खंडों में बँटलों 'सती बिहुला' महाकाव्यों में महासती बिहुला आरो बाला लखीन्दर कें कथा कहलों गेलों छै। है कथा कें पौराणिक आख्यान 'सावित्री-सत्यवान' कें दर्जा मिललों छै। यै महाकाव्यों कें कत्तें नी संस्करण निकली गेलों छै। एकरा में नाग-पूजा, शिव-पूजा-आर कें संगें भारतीय नारी महासती बिहुला कें आदर्श चरित्र उजागर भेलों छै।

बिहुला कें गीतों में काव्य-कला आरो संगीत-कला कें मौलिक प्रयोग भेलों छै। यै गीतों में शृंगार, करुणा आरो शान्त रसों कें सुंदर समायोजन देखत्हैं बनै छै। है गाथा में मध्यकालीन समाजों कें सच कें भाषा मिललों छै। सौंसे प्रबंधों कें एकतानता निर्दोष छै। यै आधारों पर हम्में एकरा प्रबंध-प्रगीति कें कोटियो में राखै छियै।

कथा छेकै कि चाँदो सौदागर बड़ा भारी शिव-भक्त छेलात। हुनका सें

शिव जी कें मानस-पुत्री मनसा विषहरी आपनों पूजा लै लें चाहै छेलै, मतुर वै लेली चाँदो सौदागर राजी नैं छेलात। वही लेली साँपों कें देवी मनसा (विषहरी) ने चाँदो सौदागरों कें छों पुत्रों कें साँपों सें कटवाय-कटवाय कें मरवाय देनें रहै। सातमों पुत्र बाला लखीन्दरों कें बीहा बिहुला सें होला पर सोहाग रात लेली एक-टा जबरजस्त लोहाघोंर बनवैलों गेलों रहै ; मतरकि मनसा माँय वाँहूं एक मनियार साँपों कें प्रवेश करवाय कें बाला लखीन्दरों कें डँसवाय कें मरवाय देने रहै ; मजकि सती बिहुला नें आपनों सतीत्वों सें खाली आपनों पतिदेव बाला लखीन्दरे कें नैं, आपनों छवो भैंसुरो कें जीवित करवाय लेलें रहै। चाँदो सौदागरों कें आखरिसों में हारी-पारी कें मनसा माय कें पूजा गछै लें पड़लों रहै। चम्पा नगर (भागलपुर) में आइयो वहाँकरों विषहरी थानों में हर साल नागपंचमी कें औसर पर मैना विषहरी (मनसा माय) आरो महासती बिहुला केरों पूजा बड्डी धूमधामों सें होय छै।

लौह-निर्मित गेहों (घरों) में बिहुला कें नया बिहैलों बोंर बाला लखीन्दरों कें डँसै लेली जबें नाग बाबा गेलों छै तबें ऊ (नाग बाबा) ओकरों रूप देखी कें मोहाय जाय छै। तखनी नाग बाबा कें मुँहों सें बाला लखीन्दरों कें रूप-वर्णन कवि नें है रङ करवैने छै --

"होरे हमें नैं डँसइ लें चाहै छियै बाला लखीन्दर कें रे।
होरे राम जे सुमिरि नागा देह परीखै रे।
होरे केश तोरों देखौं बाला रे चौर ढरकै रे।
होरे कोन अंग डँसौं बाला रे, माया लागी जाय रे।
होरे सिर तोरों देखौं बाला रे नारियर फोंल रे।
होरे भौआँ तोरों देखौं बाला रे चढ़लों कमान रे।
होरे गला तोरों देखौं बाला रे सोबरन कलस रे।
होरे सीना तोरों देखौं बाला रे मयैन केरों पात रे।
होरे दाँत तोरों देखौं बाला रे बिजुली छटकै रे।
हारे मोंछ तोरों देखौं बाला रे भौंरा गूंजै रे।
होरे बाँह तोरों देखौं बाला रे कुन्दल-कुन्दल रे।
होरे पेट तोरों देखौं बाला रे अरथ भंडार रे।
होरे आठो अंग देखौं बाला रे अगर चंदन रे।" -- 'बिहुला-विषहरी' सें।
(कॉहीं-कॉहीं 'तोरों' कें बदला में 'तोर' शब्दों कें प्रयोग मिलै छै। -ले०)

बाला लखीन्दरों कें मृत देह लै कें प्राण-दान करावै लेली जैतें हुएँ बिहुलो कें मुँहों सें बाला कें सौंदर्य-वर्णन कवि केशो सावें है रङ करवैने छै --

"सिर तोरॉ देखौं हे सामीनाथ नारियल फल हे।
भौहाँ तोरों देखौं हे सामीनाथ भमरा कें झुंड हे।
नैना तोरों देखौं हे सामीनाथ चढ़ल कमान हे।
नाक तोरों देखौं हे सामीनाथ बरछी कें नोक हे।
मुँह तोरों देखौं हे सामीनाथ पुरनिमा कें चान हे।" इत्यादि।

येहें रङ आरो कत्तें नी प्रसंग यै महाकाव्यों में ऐलों छै -- काँहीं कारुणिक, काँहीं शान्त, काँहीं आरो कुच्छू रस।

सलेस भगत

'सलेस भगत' उत्तर-मध्य युगों कें अंगिका गीति-गाथा-प्रबंधों में सबसें बेसी लोकप्रिय छै। यै में राजा सलेस (सहलेस) कें त्याग-तपस्या आरो एक लोक-देवता कें रूपों में ओकरों प्रतिष्ठित होवै कें कथा कहलों गेलों छै। ई कथा अंग-जनपदों कें अलावा बिहार कें आरो-आरो जनपद्हो में भिन्न-भिन्न रूपों में प्रचलित छै।

'सलेस भगत' गाथा-काव्य कयेक खंडों में मिलै छै। कथा आवै छै कि पकड़िया कें राजा सलेस बारों बरसों सें आपनों नैहरा में रही रहली बिहैली जनानी कें गौना कराय कें जे दिना घोंर लानै छै वही दिना रातीं देवी माय कें सपना में मिललों एक आदेशों पर ऊ मोरंग देश.जाय छै, जहाँ पचिया धामिन आरो ओकरी सखी-सहेलीं सलेसों कें आगूँ बीहा केरों प्रस्ताव राखै छै। हौ प्रस्तावों कें ठुकराय देला पर पचियाँ सलेसों कें बेंतों सें पीटै छै आरो बाँसों कें चोंगा में बंद करी कें एक-टा पोखरी में गाड़लों लाटों कें नीचूँ गाड़ी दै छै।

ओकरों बाद माय दुर्गा सें सपना में हौ घटना कें सूचना पाबी कें सलेसों कें छोटका भाय गोपीचंद, भैगना कालीकंठ आरो छेछना डोम मोरंग जाय छै आरो सब्भे धामिनसनी कें विधवा बनाय दै छै आरो पचिया कें टुकड़ा-टुकड़ा करी कें लाटवाली दुधिया पोखरी में डाली दै छै। कालीकंठें जादू-मंतरों सें सलेसों कें चोंगा सें बाहर करै छै ; मतुर सलेस अंग-देश नैं लौटै छै, मोरंगे में रही कें विधवा धामिनसनी कें देख-भाल करै छै। ओकरा देह छोड़ला पर कालीकंठ, मोतीराम आरो छेछनाँ वाँहीं सलेसों कें पिंडी बनाय दै छै। वहाँ आइयो सलेसों कें पूजा होतें आबी रहलों छै।

अंग-मगधों कें सीमा पर सलेस भागतों कें एक-टा दोसरो गाथा प्रचलित छै, जेकरा में सलेस आरो दबना मालिनों कें खिस्सा मिलै छै।

राजा सलेस खास करी कें दलित वर्ग (पासवान जाति) कें लोक-देवता कें रूपों में पूजित छै। मनोकामना पूरै लेली लोगें मनौती मानै आरो पूजै छै।

अंगिका केरों सलेस भगत गाथा केरों भाव-संपदा, प्रकृति-चित्रण आरो भाषा-शैली काव्य-शास्त्रीय दृष्टि सें साहित्यों कें ग्राह्य छै। उपमान चुनै में स्थानीय रंजकता भरलों छै। है गीति-गाथा-प्रबंध केरों लोक-तात्विक महत्व दरसावैवाला एक स्थल यहाँ देलों जाय रहलों छै --

"छेछन पहलवानें डमरू बजैबे तें करै छै ;
कालीकंठें जादू देखैबे तें करै छै।
कखनू बानर बनैबे तें करै छै ;
कखनू बाघ बनैबे तें करै छै।
पैसा - कौड़ी झड़बे तें करै छै ;
खूब खेल देखैबे तें करै छै।"

--'सलेस भगत' : संपा. डॉ० चौधरी/डॉ० चकोर ; पृ. ३४.

बाबा बिसू रॉथ (राउत)

'बाबा बिसू रॉथ' गीति-गाथा-प्रबंधों कें रचना-काल १८-मी शती ईस्वी कें उत्तरार्ध मानलों जाय छै। डॉ० रमेश मोहन 'आत्मविशवस' नें १९९१ ई. में बाबा बिसू रॉथ कें लोक-गाथा छपैने छोंत। हुनी ई लोक-गाथा कें नायक बिसू रॉथ कें आविर्भाव-काल मुगल बादशाह मुहम्मद शाह कें शासन-काल (१७१९-१७५८ ई.) मानने छोंत। बाबा बिसू रॉथ गीति-गाथा-प्रबंधों कें कथा-सार यहाँ देलों जाय रहलों छै --

बिसू रॉथों कें पिताश्री बालजीत गोप छेलात आरो माताश्री छेलीत चम्पावती। एक बड़ी बहिन छेलीत भागोमन्ती। एक छोटों भाय रहै मन्हौना। बिसू रॉथों कें घोंर भिट्ठी चनेरी सबौर नगरी रहै। बिसू रॉथ आपनों भाय मन्हौना आरो एक दोसरों व्यक्ति नन्हुवाँ कें संगें गंगा जी कें हौ पार कोशी किनारों कें बड़ी पचरासी में बथानी पर रहै रहैं। आभीं हाले में बिसू कें गौना भेलों रहै। कनियैन कें लानिये कें ऊ फनू पचरासी चललों गेलै। वहाँ पाँच रास गोरू-माल सें नब्बे लाख गाय-गोरू बढ़ैने छेलै।

बड़ी पचरासी कें बगलों में एक दोसरों गाँव गढ़ी लोआ लगाम रहै।

जहाँकरों मँड़र छेलै मोहन। वै गामों में वें सात सौ गोंढ़ीं कें बसैलें छेलै, जेकरासिनी कें मछरी कें धंधा चलै रहै।

मोहन कें माय भौंरा मोहन आरो बिसू कें बढ़लों दोस्ती पर बड्डी खुश छेली। मोहनों कें यहाँ घघरी छौंकी जेवनार उत्सव होवैवाला छेलै। टोला-परोसा कें लोगों कें खिलावै लेली ओकरा दूधों कें जरूरत छेलै। ऊ गेलै बथानी पर। नन्हुवाँ सें दूध माँगलकै। नन्हुवाँ कहलकै कि आयकों दूध लै कें मन्हौन भिट्ठी चनेरी सबौर चललों गेलै। कहलकै -- "दूधों लेली अनचित नैं करों ; जौनारों बेरी में हमरीं गाय चरी कें लौटी जैते धने नरवे लाख हे गाय, लौटिये नी जैतै हो... भाय। सेय हो दादा मालिक ! तों दूधों कें लेली अनचित नैं करों।"

नन्हुवाँ कें वै बातों पर मोहन मँड़र खिसियाय कें भरलों-पुरलों खुट्टा पर खाली चुक्का बजारी कें चललै कि बिसूँ ओकरा पकड़ी कें मारै लें कहलकै। मोहन पिटाय गेलै। बादों में मोहन मँड़र आरो ओकरी माय भौंरा कें मनौन पर कमला माँय लिलिया बाघिनों कें बिसू कें मारै लेली भेजलकै। लिलिया बाघिनें बौरुनी गाछी तर सुतलों बिसू रॉथों पर आक्रमण कैलकै। बिसूनें माय गहेली कें सुमिरी कें आपनों प्राण तेजलकै।

हुन्ने गढ़ी लौआ लगामों में छाया कें रूपों में बिसू सात सौ बाघों कें लै कें घुसलै। सौंसे गामों में हंगामा मची गेलै। सब्भे गोंढ़ी मिली कें बिसू कें बथानी पर गेलै आरो नन्हुवाँ सें बोललै --

'हि रे भाय नन्हुवाँ ! जे भेलै से तें भेबे नी करलै,
आबें हमरा दादा भाय कें मनाय तें देबे नी करें रे... भाय।

नन्हुवाँ बाबा बिसू कें आगूँ गोंढ़ीसिनी कें गोहार सुनैलकै। बाबा बिसू सें जे सनेस मिललै ऊ नन्हुवाँ ओकरासिनी कें कहलकै --

'हि हो भाय ! तों-सब बाबा बिसूनाथों कें गहवर बनाय कें गाय कें पहिलों अमनियाँ दूध गहवर में चढ़ैबे नी करों हो.... हो भाय !''

तबें, गोंढ़ीसिनीं बाबा बिसू कें मंडप बनाय कें वही दिनों सें पूजें लागलै। "तखनीये सें सब्भे गोंढ़ीं बाबा बिसनाथों कें ऊँची पचरासी बथानी पर पैहिली गाय कें अमनियाँ दूध चढ़ावें नी लागलै रे... हो... भाय !''

'बाबा बिसू रॉथ' लोक-देवता कें प्रतिष्ठा रों काव्य छेकै। वै में बाबा बिसू रॉथों कें लोक-देवता कें रूपों में प्रतिष्ठा मिललों छै। लोक-तात्विक दृष्टि सें ई गीति-महाकाव्यों कें महत्व तें छेबे करै छै, एकरा में साहित्यिकताओ कम नैं छै।

ज्योति तपस्या

'ज्योति तपस्या' लोकदेव-प्रतिष्ठा कें एक दोसरों गीति-गाथा-प्रबंध छेकै। ज्योति तपस्या केरों जन्म धर्म-रक्षा लेली भेलों रहै। ओकरों परीक्षा लै लेली देवता लोगें ओकरा कोढ़ी कें रूप दै देलकैन्ह। देवता लोगों सें अभिशप्त कुष्ठ रोगाक्रान्त ज्योति केनुलिया बनों में जाय कें घोर तपस्या कैलकै। बारों बरिसों कें तपस्या कें बाद ओकरा सरापों सें छुटकारा मिलतै। तबें ऊ फनू धर्मों कें प्रतिष्ठा में लागी गेलै।

ज्योति एक सिद्ध-पुरुष छेलै। दलित वर्ग (पासवान जाति) कें एक प्रतिष्ठित लोक-देवता ज्योति कें गीत, राजा सलेस नाखी, नैं खाली जातीय, बलुक आरो-आरो जांति कें गीत छेकै। है गीति-प्रबंधों में झौआ बोंन, पोपीपुर, जेहुली बोंन, केनुलिया बोंन आदि बनों बारो स्थानों कें बड़ा मनोहारी वर्णन होलों छै।

अभिशप्त ज्योति कें केनुलिया जाय खिना ओकरी पत्नी कुलवन्तीं आपनों सामी सें की रङ कविता कें भाषा राखै छै, से देखलों जाय --

"आबें हम्में ऐलियै हे सामीनाथ, बिहौआ ऐलियै तोहरों रे घोंर ;
तोहें तें आबें हे सामीनाथ बिहौआ, केनुलिया बोंने हे बास।
मैया तोरी बिरधा है सामीनाथ, हम्हूँ तरुनी हे जवान ;
केनाकें हम्में खेपबै हे सामीनाथ, खेपबै जवनियाँ कें हे बैस ?"

-- 'प्रदीप प्रभात' संपादित 'ज्योति तपस्या' सें।

४. अंगिका लोक-नृत्य, लोक-गीत आदि

अंगिका लोक-नृत्यों कें साथें गाथा-गीतों कें गहिरों संबंध छै। सोरठी-बृजाभार, कमला माय आरनी गीति-गाथा-प्रबंध नाचों में अच्छा उतरै छै। संगीत आरो नाच (नृत्य) कोनो परिश्रमों कें काम करै खिना श्रम-निर्भार (परिहार) आकि परिश्रमों सें होलों थकौनी कें दूर करै कें क्रम में जन्मलों चीज छेकै। परोंब-तेवहार, उत्सव-आर कें औसरों पर हँसी-खुशी आरो उल्लास मनावै कें सुंदर माध्यमों कें रूपों में नाच-गान (नृत्य-संगीत) उभरै छै। अंगिका भाषा कें अध्ययन करला पर लागै छै कि नाच-गान अंगिका कें उत्तर मध्य युगों में बेसी करी कें रचलों गेलों होतै। वहें समय लोढ़ियारी नाच, जट-जटिन नाच, गोढ़िन नाच, करमा नाच, मालिन नारगी, नन्हीं-बिन्नी, हिरनी-बिरनी, रमखेलिया, देवलो आदि नाच-गान लिखलों गेलै। तंतर-मंतर कें परिवेशों में लोगों में देवी-देवता लेली ललक वैसें तें

अंगिका के प्रारंभिक युग (५००-१२२० ई.) में अस्तित्वों में ऐलै, बाकिर उत्तर-मध्य युग (१६५०-१८५० ई.) में कत्तें नी लोक-देवता-आर कें अवतारणा भेलै। हौ-सब तरह-तरह कें देवी-देवता कें मनौन कें नृत्य-गीत वही समयों में लोक-प्रचारों में ऐलै। हौसनी गीत मनौन गीत-गायकों कें ढोल, झाल आरो कंठ तथा ओझा-गुनी या सयाना या जौनी पर देवी-देवता कें भाव आवै छै वैसिनी कें आंगिक चेष्टा में बनलों होलों छै। पँवरिया या भाट-भाटिन कें गीतों कें जन्म-कालो येहें छेकै। बीहा, गौना आदि के औसरों पर महिलासिनी गीतों कें बोल पर नाचै छै। ऐसनों गीत-नाद वेहें युगों कें उपलब्धि छेकै। इहाँ जग्घों कें कमी कें कारणें हौसिनी नाच-गानों कें उदाहरण देबों संभव नैं छै। आबें तें हौ रङों कें ढेरेसनी प्रकाशन होय चुकलों छै। एक लोक-गीतों कें नमूना लेलों जाय --

"कोनी गलीं रोपबै ऐली-फूल-चमेली ? कोनी गलीं रोपबै अनार, सखी हे ?
कोनी गलीं रोपबै कागजी रे नेमुआं देखै में जे लागतै सोहान, सखी हे ?
बाबा गलीं रोपबै ऐली-फूल-चमेली, भैया गलीं रोपबै अनार, सखी हे ;
सामी गलीं रोपबै कागजी रे नेमुआँ, देखै में जे लागतै सोहान, सखी हे।
कोनी मोरी तोड़तै ऐली-फूल-चमेली ? कोनी मोरी तोड़तै अनार, सखी हे ?
कोने मोरा चीखतै कागजी रे नेमुआँ, देखै में जे लागतै सोहान, सखी हे ?
अम्माँ मोरी तोड़तै ऐली-फूल-चमेली, भौजी मोरी तोड़तै अनार, सखी हे ;
सामी मोरा चीखतै कागजी रे नेमुआँ, देखै में जे लागतै सोहान, सखी हे।।"

पारिवारिक-सांस्कृतिक परिवेशों में है गीतों कें भाव-सौंदर्य अनूठा छै, एकरा में दू मत नैं।

(३) अंगिका साहित्यों कें आधुनिक युग

अंगिका साहित्यों कें आधुनिक युग १८५० ई. सें आरंभ होय छै। अंगिका भाषा-साहित्यों लेली संगठित विभिन्न मंचों कें आधारों पर हम्में आधुनिक युगों कें नीचें लिखलों रूपों में विभाजित करै छियै --

(क) अंगिका साहित्यों कें मंच-पूर्व-युग (१८५० ई. सें १९५० ई. ताँय) ;
(ख) अंगिका साहित्यों कें मंच-युग (१९५० ई. सें १९८५ ई. ताँय) आरो--
(ग) अंगिका साहित्यों कें मंचोत्तर-युग (१९८५ ई. सें आय ताँय)।

(क) अंगिका साहित्यों कें मंच-पूर्व-युग

मंच-पूर्व-युगों में अंगिका कें विकसित भेलों रूप मिलै छै। श्रीमती सोफिया वर्ग कें अनुसार, लोक-वार्ता (फोकलोर) कें क्षेत्रों में तीन बात आवै छै --

(अ) लोक-साहित्य -- लोक-गीत, लोक-कथा, लोक-गाथा, लोकोक्ति (कहावत), मुहावरा, फेंकड़ा, लोरी, पिहानी (बुझौवल) आदि।

(आ) लोक-जीवनों कें रीति-रिवाज -- संस्कार, अनुष्ठान, पर्व, व्रत, उत्सव, प्रथा, परंपरा, आचार-विचार, मेला-ठेला आदि।

(इ) लोक-विश्वास आरो मान्यता -- मंत्र-तंत्र, टोना-टोटका, झाड़-फूँक, दुआ-ताबीज, भूत-प्रेत, देवी-देवता, शकुन-अशकुन, मनुष्य-निर्मित चीज, डैन-जोगिन, दिशाशूल, परी-कथा, सपना, भविष्यवाणी आदि।

अंग-क्षेत्रों में लोक-वार्ता (फोकलोर) कें जतें कुल सामग्री मिलै छै हौसिनी सें अंगिका भाषा, साहित्य आरो संस्कृति कें विशेषता आरो शब्द-संपदा उजागर होय छै। वैसिनी सामग्री में जन्म, छठियारी, मुंडन आदि संस्कारों कें गीत, फगुआ, चैतावर, कजरी, बारहमासा गीत, रोपनी, सोहनी, जँतसार आदि कें श्रम-परिहार गीत, तीज, जितिया, पिड़िया, छठ, चौकचंदा आदि पर्व-त्योहारों कें गीत, लोक-देवता संबंधी गीत, झूमर, झूमटा, झूला, डोमकच, जोगीड़ा आदि कें लीला-गीत, विरहा, पँवरिया आदि जातीय गीत, प्रभाती गीत, 'गोरे-गोर बहिंया गे लिलिया, कारे सोहो बदनमा रे' -जेन्हों गोदना-गीत, भूत-प्रेत उतारै कें गीत, बिख-माहुर झारै कें गीत, फेंकड़ा आरो लोरी गीत, क्रीड़ा-गीत, तीर्थ-यात्रा-गीत, मामा-भैगना व्रत-त्योहारों कें गीत, झिझिया, सामा-चकेवा कें गीत, गोंढ़-नृत्य-गीत, सँपेरा कें गान, सुगना, झरकी, चमाचोटी, बिखझरकी, रेहुआ, जलुआ आदि कें स्वाँग-गीत-आर आवै छै। है तरहों कें गीतसनी पूर्व-मध्य-युगों कें देन छेकै, मध्य-युगों में यैसिनी कें विकास भेलों छै। यैसिनी में काव्यों कें गुण, रस आरो वृत्ति साफ-साफ मिलै छै। अंगिका केरों अलिखित काव्य-साहित्यों कें अनमोल निधिस्वरूप हैसिनी गीतों में जन-जन कें सुर मिलै छै, युग-युगों कें रंग आरो मन-मनों कें तरंग मिलै छै।

ऐसनों गीतों में देवी-देवता कें मनौन, मंगल-कामना आरो आशीर्वादों कें उदात्त भाव मिलै छै। प्रकृति कें क्षेत्रों में बिखरलों वनस्पति-आर कें पूजा, भैरो बाबा, कारू दानो, काली माय, दुर्गा माय, भगवती देवी, वीर हलुमान ऐहनों स्थानीय देवी-देवता कें स्तुतियों मिलै छै। मनों-मनों कें कसक, टीस, प्रेम, रीति,

हास-परिहास, मनौन, अनुनय, रूप-सौंदर्य आदि कें भाव मिलै छै। इहाँ एकरों उल्लेख करी देबों अप्रासंगिक नैं होतै कि डॉ० 'समीर' नें १९४८ ई. में, आपनों गामों लग अवस्थित 'सिंहवाहिनी' थानों कें देवी कें स्तुति में २५ पदों कें 'सिंहवाहिनी-स्तुति' लिखी कें प्रकाशित कैने रहै जेकरों दोसरों संस्करण १९७१ ई. में छपलों छै। वै स्तुति कें तीन-चार पद देखलों जाय --

"अनादि अनन्त अम्ब ! अगोचर अतिशय,
महिमा अपार तोरों, देवी सिंहवाहिनी।
भगत अनेक नित, विविध कामना चित्त,
पूजत चरण तोरों, देवी सिंहवाहिनी।
करै छों पवित्र मन, आपन भगत जन,
हरै छों पातक घोर, देवी सिंहवाहिनी।
दया के भूखलों तोरो कण पियासलों हम,
कुछू तें करुणा करों, सिंहवाहिनी।
माँगत 'समीर' वर, ह[illegible] उज्जवल करों,
गावल स्तुति तोरों, देवी सिंहवाहिनी।"

-- 'श्री श्री सिंहवाहिनी-स्तु[illegible]' (डॉ० 'समीर') सें।

वै सिंहवाहिनी-थानों में हर साल चैतों में यज्ञ-संकीर्तनॉ कें आयोजन होय छै। मालूम होलों छै कि वै आस-पासों में है 'सिंहवाहिनी-स्तुति' बड्डी लोकप्रिय छै।

मंच-पूर्व-युग

है इतिहास लिखै कें पहिने हम्में 'अंगिका : संपूर्ण भाषा, संपूर्ण साहित्य' में अंगिका साहित्यों कें प्रारंभिक युग आरंभ सें १६०० ई. ताँय, मंच-पूर्व-युग १६०० ई. सें १९५० ई. ताँय, मंच-युग १९५० ई. सें १९८५ ई. ताँय आरो मंचोत्तर-युग १९८५ ई. सें आय ताँय देखैने छियै। आबें हौ काल-विभाजनों मे किंचित् संशोधन करी कें प्रारंभिक युगों कें ५०० ई. सें १२२० ई. ताँय मानलें छियै आरो १२२० ई. सें १८५० ई. ताँय कें अंगिका साहित्यों कें दू भागों में राखने छियै -- (क) पूर्व-मध्य-युग (१२२०-१६५० ई.) आरो (ख) उत्तर-मध्य-युग (१६५०-१८५० ई.) ताँय। है काल-खंडों में १८५० ई. सें आधुनिक युग शुरू होय छै। सुविधा लेली, यही वास्तें कि १८५० ई. सें १९८५ ई. ताँय जनपदीय भाषा-आन्दोलनों कें क्रम में अंगिका भाषा-साहित्यों कें विकास लेली ढेरसि

मंचों के निर्माण होलै जेसिनीं कि आपनों-आपनों स्वतंत्र कार्यक्रम लै कें अपनों उद्देश्यों कें पूरा करै लेली प्रयास कैलकै आरो करी रहलों छै, कयेक-टा बातों कें ध्यानों मे राखी कें १८५० ई. सें १९५० ई. तक कें समयों कें अंगिका साहित्य केरों मंच-पूर्व-युग आरो १९८५ ई. कें बादों कें समयों कें मंचोत्तर-युग कहलों गेलों छै। बीचों कें १९५० ई. सें १९८५ ई. कें समय मंच-युग कहलैलों छै।

मंच-पूर्व-युग

अंगिका कें मध्य-पूर्व-युग (१२२०-१८५० ई.) में अंगिका कें जौंन सोता बहै रहै ओकरों गति बादो में बनलों रहलै। १९-मी शती कें अंत होतें-होतें अंगिका कें पाँच कविरत्न होलों छौंत -- पं. काली प्रसाद पाण्डेय, पं. दर्शन दुबे, पं. बाजितलाल मिश्र, सदुपाध्याय भवप्रीतानन्द ओझा आरो पं. भुवनेश्वर चौधरी 'भुवनेश'।

पं. काली प्रसाद पाण्डेय, पं. दर्शन दुबे आरो सदुपाध्याय भवप्रीतानन्द ओझा यै तीन्हू कें कविता कें मुख्य आधार रहलै राधा-कृष्ण कें प्रेम प्रसंगों के संयोग आरो वियोग शृंगार-भाव। पाण्डेय जी कें 'बारहमासा', दुबे जी कें 'कृष्ण-लीला' आरो ओझा जी के झूमर आरो घैराँ आइयो आपनों प्रभाव राखै छै। ओझा जी द्वारा लिखलों शिव-भक्तिपरक झूमरो बड्डी लोकप्रिय छै। पं. बाजितलाल मिश्र भक्त-कवि छेलात।

पं. दर्शन दुबे (स्व.)

पं. दर्शन दुबे जी कें जन्म वर्तमान गोड्डा जिला कें वंदनवार गामों में १८७६ ई. में होलों रहै जिनको निधन १९१२ ई. में होय गेलैन्ह। हुनकों पिताश्री कें नाम पं. श्रवण दुबे आरो माताश्री कें श्रीमती चम्पा देवी छेलै। दर्शन दुबे जी कें शिक्षा तें साधारणे मिललों रहै, मतुर पं. अम्बिकादत्त व्यास-ऐन्हों आपनों शिक्षकों कें सान्निध्यों सें हुनी संस्कृत, हिंदी आरो काव्य-शास्त्रों कें अच्छा ज्ञान प्राप्त करी लेने रहौंत। हुनी आपनों जीवनों कें कम्मे समयों में हिंदी आरो संस्कृतों में १९-२० टा किताब लिखलें छौंत जे-सब अब ताँय अप्रकाशिते छैन्। एतने नैं, हुनी आपनों बोली अंगिकाओ में 'कृष्ण-लीला' नामों कें एक-टा किताब लिखलें छौंत, जेकरों प्रकाशन हुनकों अग्रज पं. महाराज दुबे कें पोता श्री गंगाधर दुबे आरो डॉ० जटाधर दुबे द्वारा जून, १९९७ ई. में करलों गेलों छै।

स्व. दर्शन दुबे-विरचित 'कृष्ण-लीला' ८-टा सवैया आरो १९-टा कवित्त याने कुल २७-टा छंदों में छै। आरंभ, मंगलाचरणस्वरूप, एक-टा 'दोहा' सें होलों छै -- 'वंदि विनायक चरण-युग, श्री शारद सिर नाय ; लिखन चहै छीं कृष्ण कें, लीला काव्य बनाय।'

'कृष्ण-लीला' कें अठमा छंदों कें छोड़ी कें बाकी सब्भे कवित्त/सवैया में कवि 'दर्शन' कें नामों कें भोग (भणिता) लागलों छै। हुनकों समयों में अंगिका नामों कें पहिचान नैं होलों रहै। यही सें हुनी आपनों 'कृष्ण-लीला' काव्यों कें 'निज बोली' कें रचना कहने छैन्। हुनकों 'कृष्ण-लीला' नें रीतिकालीन हिंदी कविता कें याद दिलावै छै। एकरा में राधा कें आलंबन बनैलों गेलों छै। राधा-कृष्णों कें प्रेम-प्रसंग, चीरहरण, वसंत-वर्णन, होली-वर्णन आदि सें लागै छै जेना दुबे जी ब्रजभाषा कें रीतिकालीन कविता कें मात करी देने छै। हुनकों होली-वर्णन पद्माकर कवि कें होली-वर्णनों कें बराबरी पर छै। पद्माकरें देखैने छै --

"फाग के भीर अभीरन में गहि गोविन्द लै गयो भीतर गोरी ;
भाय करी मन की पद्माकर ऊपर नाई अबीर के झोरी।
खोलि पीतांबर कम्मर तैं सुविदा दियो मीड़ि कपोलन रोरी ;
नैन नचाय कह्यो मुसुकाय लला फिर आइयो खेलन होरी।।"

कवि दर्शन दुबे जीं देखावै छेंत --

"कालिंदी तीर रचि होरी गोप की किसोरी
झोरी भरि रोरी पिचकारी रंग घोरी छै ;
धाय श्याम जू कें पट छीनि रंग बोरी
बरसाने बीच लायो गहि बाँह बरजोरी छै।
सारी जरि बारी कटि माँहि पहिराइ प्यारी,
माँग को सँवारि दई भाल लाल रोरी छै ;
दर्शन जू गात मली बाँह झकझोरी कहै,
खेलो श्याम होरी आज, होरी आज, होरी छै।।"

यै कविता में अनुभाव कें कत्तें सुंदर चित्र उतरलों छै। रचनाकारें ब्रज कें होरी कें बहाना सें अंग-क्षेत्रों कें होली दरसैने छै।

भाव-संपदा कें दृष्टि सें सुकवि दुबे जीं एक ओर जहाँ संभोग सिंगारों कें संयमों में राखने छै (उदाहरण ऊपरवाला कवित्त) वहाँ दोसरो ओर वियोग सिंगारों में कामिनी कें पीर उभारने छै --

"गामन मे गाँवन धमार धधकात धूम,
घूम-घूम अबीर-गुलाल रंग बरसै ;
दर्शन जू कंत बिनु कामिनी के तन्त अति,
पीर के न अंत ई वसंत जिय तरसै।''

x x x x

'विरह वियोगी तिय लैबै को मलैज पौन
चाहै तन लागै लगे दाहक विष छावै छै ;
पँचम नवल राग सरने कोक के कलान
कुंजन में पुंज-पुंज कोकिलन गावै छै।''

-- 'कृष्ण-लीला'

राधा-कृष्णों कें खिंचाव में काँहीं-काँहीं भावों में ब्रजभाषा कें प्रभाव झल छै, मतुर काव्य शुद्ध अंगिका भाषा कें छैकै।

बाजितलाल मिश्र (स्व.)

पं. बाजितलाल मिश्र कें जन्म संताल परगना (आबें गोड्डा) जिला, महागामा (आबें मेहरामा) थाना (बिहार) कें अंतर्गत प्रतापपुर गामों में १९१३ ई. में होलों रहै।

हुनी अंगिका कें विख्यात लोक-कवि छेलात। हुनकों कविता झूमर कें भिन्न-भिन्न धुनों में मिलै छै जेसनी कें विषय छेकै लोक-जीवनों कें चित्रण। कै में भक्ति आरो सिंगारों कें परिपाको भेलों छै। शिव जी कें भक्ति में लिखलों हुनकों झूमर अंग-जनपदों कें महिला-समाजों कें कंठों में लहरै छै --

"शिव जी योगी बनी ऐता हे, ई नैं जानलौं ;
भोला योगी बनी ऐता हे, ई नैं जानलौं।
शिव जी कें बीहा सुनी कें आनन्द-उछाह हे,
ब्रह्मा विष्णु इन्द्रदेव चललै बारात हे, ई नैं जानलौं।''

भवप्रीतानन्द ओझा (स्व.)

वैद्यनाथधामों कें नगीचे कुंडा गामों में १८८६ ई. में जन्मलों पं. भवप्रीतानन्द ओझा नें श्रीमती नूना देवी (माताश्री) आरो श्री त्रिपुरानन्द ओझा (पिताश्री) कें गोदी कें उजागर कैने छै। हुनकों निधन १९७० ई. में होलैन।

'झूमर' ऐन्हों गीत-विधा छेकै जे कि लोक-जीवनों सें जुड़लों रहै छै। ई

सहजे भावों सें उभरें छै। धुनों कें आधारों पर झूमरों कें कत्तें नी भेद होय छै। ओझा जी झूमर-रचना में पारंगत छेलात। वै में हुनका बराबरी करैवाला कोय नैं भेलों छै, कहियो होतै तें होतै।

हुनकों कविता कें मुख्य विषय रहलै राधा-कृष्णों कें लीला-गायन, जें कि लोक-जीवनों कें दुहू पक्षों -- सुख आरो दु:खों -- कें छूवै छै --

'विनतीं रिझावै कि पिरितीं बुझावै, निकुंज बोंने ;
साँझें मिलै लें बोलावै, निकुंज बोंने।''

हुनकों गीतों में स्थानीय भाव अनुरंजित छै। जे कुछू हुनका आगूँ ऐलै वहें-सब गीतों कें अंग बनी गेलै। प्रकृति कें जत्तें रूप होना चाहियों, सब्भे हुनकों गीतों में उतरलों छै। वहें रङ, नारी-मनों कें जत्तें दशा हुएँ पारें, वोहो-सब हुनकों झूमर-गीतों में उभरलों छै। हुनकों झूमर-काव्यों सें क्रिया कें आधारों पर जों नायिका कें भेद-प्रभेद करलों जाय तें ऊ पचासों सें ऊपरे होतै। खूबी ई कि सिंगारों कें बीचें कवि ओझा जी भक्ति में विभोर आरो तन्मय होय गेलों छोंत--

"सपना सगुन देखी, हरखी उठली सखी, दूती सें कहथी बतिया ;
फरकी उठलो बाम अँखिया, आजु रे आवत कालिया।
उरेखी बाँधली जूरा, लगावली पानक बीरा,
बिछावली झारी सेजिया, जागी रहली धनी रतिया।
आजु रे आवत कालिया।।''

ओझा जी बाबा वैद्यनाथ (देवघर) कें सरदार पंडा छेलात। वही सें शिव जी लेली हुनकों समर्पण कें भावों सें भरलों कत्तें नी पद छैन् जे कि शुद्ध भक्ति-भावों कें कविता छेकैन्ह। हुनकों काव्यों में ऐलों अलंकार घिसलों-पिटलों लीकों पर नैं लौकै छै, बलुक जे कोय अलंकार मिलै छै ऊ अनायासे आबी गेलों हेनों बुझावै छै। काँहीं-काँहीं उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, समासोक्ति, लोकोक्ति आदि कें समावेशों बड़ा अच्छा भेलों छै। हाल्है में श्री शंकर मोहन झा नें ओझा जी कें काव्यों पर शोधपरक अनुशीलन करी कें भागलपुर विश्वविद्यालयों सें पी-एच.डी. डिग्री हासिल कैने छोंत।

भुवनेश्वर चौधरी 'भुवनेश' (स्व.)

पं. भुवनेश्वर चौधरी 'भुवनेश' के जन्म सुल्तानगंजों सें १० किलोमीटर दक्खिन 'बाथ' गामों में २६ नवम्बर, १८९० ई. में होलों रहै। हिंदी, संस्कृत,

बँगला भाषा कें विद्वान् कवि-भूषण 'भुवनेश' जी मारवाड़ी पाठशाला, भागलपुर में १९२० ई. सें १९६० ई. ताँय अध्यापन-सेवारत रहलात आरो हिंदी-संस्कृतों के कयेक-टा नें ग्रंथ लिखलकात। आपनों गाँव 'बाथ' में हुनी ९५१ पेजों में 'भारती' नामों कें एक-टा हस्तलिखित अंगिका-पत्रिका कें संपादन करने छौंत (१९५७ ई. में) जे कि हुनकों एक विशिष्ट उपलब्धि छेकैन्ह।

सुकवि 'भुवनेश' जीं भक्ति-काव्यों कें अंतर्गत शिव, दुर्गा, भगवती आदि कें स्तुतिपरक रचना कैने छौंत। एक रचना देखलों जाय --

"मैया कें महिमा अपार हे, कोय पारो नैं पावै ;
सब सुख-सम्पत्ति-सार हे, सुर-नर-मुनिं गावै।"

हुनकों कत्तें नी रचना गान्धी जी आरो सुराजों पर छैन्। अंगिका में बाल-साहित्य लिखैवाला पहिलों कवि छौंत हुनी। अंगिका में बुझौवल आरो अंतर्लापिका लिखै कें शुरुआत हुनीयें करने छौंत। एक अंतर्लापिका कें उदाहरण लेलों जाय जै में सात-टा प्रश्नों कें उत्तर एक्के छै --

"कौन शिवाप्रिय पुष्प कौंन मुददायक अव्यय ?
के सब जग कें नाथ क्रिया छै की निषेधमय ?
के सब जग कें प्राण कथी सें उड़ै कबूतर ?
के भारत सर्वस्व वहें वर वीर 'जवाहर'।"

स्पष्ट छै कि एकरा में एक्के शब्द 'जवाहर' में सब्भे प्रश्नों कें उत्तर छै; जेना -- 'जवा' (अढ़ौल फूल), 'वाह' (खूब !), 'हर' (महादेव), 'रह' (उल्टाय कें), 'हवा' (उल्टाय कें), 'वाज' (उल्टाय कें, एक पक्षी) आरो 'जवाहर' (पं. जवाहरलाल नेहरू)।

मंच-पूर्व-युगों में सुकवि 'भुवनेश' जी कें शास्त्रीय आरो लौकिक दोन्हू छंदों पर समान-अधिकार रहैन्। हुनकों रचना में भाव-प्रकाश यति-गति कें अनुरूप मिलै छै --

"होतै सुभग प्रभात रात बितला पर निश्चय ;
पाबी कें रवि-किरण झूलतै नलिनी निर्भय।
यहें सोचतें रहै कमल में भौंरा जखनी ,
रौंदी देलकै कमल-कुंज हाथी नें तखनी।।"

-- 'एक साहित्यकार-परिवार' : संपादक-डॉ० 'चकोर'।

उमानन्द ओझा (स्व.)

वैद्यनाथधाम (देवघर) कें पं. उमानन्द ओझा सदुपाध्याय भवप्रीतानन्द ओझा कें समकालीन सुकवि छेलात। एना तें हुनकों रचना बेसी करी कें बँगला भाषा में छैन्, मतरकि देवघरिया अंगिकाओ में हुनकों रचलों कुच्छू कविता मिलै छै ; जेना ककि --

"काहाँ सेती आयले भौंरा, काहाँ छलें रात रे ?
आरे भौंरा, आबें निशि भेलो परभात रे।
भोरे झरलो मधु, रौदें जरै गात रे,
आरे भौंरा, काहाँ छलें रात रे ?
एक तो फुटलों हमें, झड़ी कें कुसात रे,
आरे भौंरा, दोसरें निठुर तोर जात रे।
'उमानन्द' कहै भौंरा, याही सें निपात रे,
आरे भौंरा, के जोड़ें पिरीति तोर साथ रे।"

-- डॉ० मोहनानन्द मिश्र कें सौजन्यों सें।

मंच-युग

अंगिका भाषा-साहित्यों कें मंच-युग १९५० ई. सें शुरू होय छै, जेकरों सीमा १९८५ ई. ताँय निश्चित करलों गेलों छै।

अंगिका भाषा-आंदोलन

बीसमी शती (ई.) कें चौथों दशकों में पं. बनारसी दास चतुर्वेदी द्वारा प्रवर्तित आरो पं. जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी, महापंडित राहुल सांकृत्यायन, डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल, बाबू वृन्दावन दास आदि द्वारा उत्थित/उत्क्रमित जनपदीय आन्दोलनों कें भूमिका कें, अंगिका कें अस्तित्वों आरो महत्वों कें उजागर करै में, स्तुत्य मानलों जाय पारै छै। कलकत्ता सें 'विशाल भारत', टीकमगढ़ सें 'मधुकर' आरो चतुर्वेदी द्वारा स्थापित ब्रजमंडल सें 'ब्रजभारती' पत्रिका निकलै रहै। तीन्हूँ में जनपदीय आन्दोलन संबंधी निबंध छपै रहै जेसिनीं यै देशों कें दोसरों-दोसरों भाषा-भाषी आरनी कें जगैलकै। अवध, बुंदेलखंड, गढ़वाल, मिथिला, भोजपुर, मगध, अंग, बज्जि आदि सब्भे जागलै। वै स्थिति में डॉ० लक्ष्मीनारायण सुधांशु, श्री गदाधर प्रसाद अम्बष्ठ, डॉ० माहेश्वरी सिंह 'महेश' आरनी आपनों

मातृभाषा अंगिका कें संरक्षण आरो संवर्द्धन लेली आगू बढ़लात। हुनकासिनी कें पीछूँ डॉ० परमानन्द पाण्डेय, पं. जगदीश मिश्र, श्री नरेश पाण्डेय 'चकोर', श्री मेवालाल शास्त्री, पं सुरेन्द्र प्रसाद मिश्र, डॉ० तेजनारायण कुशवाहा, डॉ० भुवनेश्वर सिंह 'भुवन', श्री शारदा प्रसाद सिंह 'सैदपुरी', पं. दामोदर शास्त्री, पं. बुद्धिनाथ झा 'कैरव', बाबू सत्येन्द्र नारायण अग्रवाल आरनी कें शक्ति जुड़लै। हिंनकासिनी में, अंगिका बोली-बोली कें प्रचार-प्रसार करै में, डॉ० 'महेश' आरो 'भुवन' जी खास करी कें आगू रहलात जबें कि संगठन में अम्बष्ठ जी कें हाथ आगू रहलैन्। अम्बष्ठ जी बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् (पटना) कें एक पदाधिकारी छेलात। हुनका साथें डॉ० परमानन्द पाण्डेय वाँहीं कार्यरत छेलात। अम्बष्ठ जी कें संयोजनों में पटना में १९५६ ई. में 'अंगभाषा-परिषद्' कें स्थापना भेलै, जेकरों अध्यक्ष डॉ० सुधांशु, प्रधान मंत्री अम्बष्ठ जी, प्रकाशन-मंत्री डॉ० पाण्डेय आरो प्रचार-मंत्री 'चकोर' जी चुनलों गेलात। हम्में (डॉ० कुशवाहाँ) 'अंग प्रान्तीय साहित्य-सम्मेलन' कें नामों सें एक-टा दोसरों संस्था १९६४ ई. में स्थापित करलियै। ओकरों अध्यक्ष कविराज विद्यानारायण शास्त्री होलात। ई संस्था कें तरफों सें शिकारीपाड़ा, पथरगामा, पीरपैंती, हवेली खड़गपुर, अमरपुर, ककवारा (बाँका), बनगाँव (सहरसा), मुजवरताल (मनिहारी) आरनी स्थानों में कयेक-टा अधिवेशन होलै, जेसिनी सें अंगिका कें प्रति लोगों में रुझान पैदा होलै। वही संस्था कें एक प्रस्ताव (११ दिसंबर, १९७३ इ.) कें अनुसार 'अखिल भारतीय अंगिका भाषा सम्मेलन' स्थापित करलों गेलै जेकरों अध्यक्ष डॉ० माहेश्वरी सिंह 'महेश', उपाध्यक्ष कवितराज विद्यानारायण शास्त्री, डॉ० सत्येन्द्रनारायण अग्रवाल, डॉ० परमानन्द पाण्डेय, डॉ० नरेश पाण्डेय 'चकोर', डॉ० भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' आरो महासचिव डॉ० कुशवाहा चुनलों गेलात।

वहें रङ, १९७३ ई. में अखिल भारतीय अंगिका विकास सम्मेलन, सेमापुर (कटिहार/पूर्णिया), १९७८ ई. में अखिल भारतीय अंगिका साहित्य-कला-मंच, भागलपुर आरो अखिल भारतीय अंगिका विकास सम्मेलन नाथनगर (भागलपुर), १९८१-८२ ई. में अखिल भारतीय अंगिका विकास मंच, भागलपुर, जान्हवी अंगिका साहित्य-संस्कृति-संस्थान, सुल्तानगंज, १९८३ ई. में अंगिका सांस्कृतिक परिषद्, बोकारो (बिहार), १९८४ ई. में अंगिका साहित्य सम्मेलन, भागलपुर, समय साहित्य सम्मेलन, पुनसिया (बाँका), भाषा-संगम (दुमका), उदित अंगिका साहित्य परिषद्, देवघर आरनी संस्था आरो संगठनों कें जन्म भेलै। हैसिनी सब्भे मंचों

के कार्यक्रम सराहनीय रहलै। यै-सब सें मंच-युगों कें नामकरणों कें सार्थकता सिद्ध होय छै।

मंच-युगों कें अंगिका कविता :

मंच-युगों कें काव्य-कृति-सब में 'खोंड़-पतार' (सदानन्द मिश्र 'साहित्यक साँढ़'), 'पनसोखा' आरो 'सती-परीक्षा' (सुमन सूरो), 'माटी कें चेत', 'पंचरङ चोल', 'रौदा कें दूब', 'कानै छै लोर' (उचितलाल सिंह), 'पछिया बयार' (परमानन्द पाण्डेय), 'अंग-दर्शन' आरो 'सवर्णा' (तिजनारायण कुशवाहा), 'भोरकों लाली', 'किसान : देशों कें शान', 'अंग-लता' आरो संपादित 'अंगश्री' (नरेश पाण्डेय 'चकोर'), 'कच' (अनिल चन्द्र ठाकुर), 'लोक-गीता' (लक्ष्मणसिंह चौहान), 'गीतांगिका' (कमला प्रसाद उपाध्याय 'विनोद') 'गीत-लहरी' (परमानन्द प्रेमी), 'करिया झूमर खेलै छी' (अमरेन्द्र), 'शिव जी हीरो बनों हे' (अच्युतानन्द चौधरी 'लाल'), 'ऐंगना उतरलै चाँद' (अनिल शंकर झा आरो खुशीलाल मंजर-संपादित), 'गुमसैलों धरती' (सुरेन्द्र मिश्र 'परिमल'), 'गीत-नाद' आरो 'गीत गामों कें' (श्रीस्नेही सच्चिदानन्द), 'पछिया पुकारै छै' (खुशीलाल मंजर), 'गुमार' (गुरेश मोहन घोष 'सरल'), 'चिन्ता' (रघुनन्दन झा 'राही'), 'धैरकों' (भुवनेश्वर सिंह 'भुवन'), 'भोर भेले आबै छै' (सीताराम दास), 'प्रतिनिधि अंगिका कवि' (रघुनन्दन झा 'राही'/सुभाष चन्द्र 'भ्रमर'-संपादित), 'पुष्पहार' (नवीन चन्द्र शुक्ल) आदि प्रकाशित भेलै।

यै-सब में 'सती-परीक्षा', 'सवर्णा', 'कच' आरो 'चिन्ता' प्रबंध-काव्य छेकै। 'सवर्णा' मंच-युगों कें श्रेष्ठ महाकाव्य मानलों गेलों छै। यै में सूर्य आरो सूर्य-पत्नी संज्ञा आरो हुनकासिनी कें कथा रुपक कें भाषा में कहलों गेलों छै। ई ग्रंथ बिहार सरकारों कें राजभाषा विभागों सें पुरस्कृत होय चुकलों छै।

'सती-परीक्षा' में सीता जी कें चरित्रों कें उदात्तता, 'चिन्ता' में समकालीन विचार-धारा आरो 'कच' में कच आरो देवयानी कें मनोदशा कें अभिव्यक्ति भेलों छै। बाद-बाकी काव्य-कृति विविध छंद, शिल्प आरो शैली कें परिधानों में सामाजिक विसंगति, भ्रष्टाचार, 'सेक्स' (काम), भूख, जातिवाद, ढोंग, ढकोसला, आतंकवाद, धामिक उन्माद, नारी केरों व्यथा-कथा सें भरलों तें छेबे करै, राष्ट्रीय एकता आरो साम्प्रदायिक सद्भावों कें संदेशो दै छै। ऐन्हों रचना सें रचनाकारों कें समसामयिक प्रवृत्तियो प्रकट होय छै। श्री प्रभातरंजन सरकार 'आनन्दमूर्ति',

महर्षि मेंहीं, संत शाही, स्वामी चरणदास आरनी संतों कें अंगिका पद आरो भजन यै युगों कें विशिष्ट उपलब्धि रहलै।

मंचोत्तर-युग

अंगिका भाषा-साहित्यों कें मंचोत्तर-युग १९८५ ई. कें बाद शुरू होय छै। यै युगों में अंगिका कें दुइ-तीन ठो नया राष्ट्रीय मंच मिललै, जेना कि अखिल भारतीय अंगिका भाषा एकता परिषद्, भागलपुर ; अंगिका शोध-संस्थान, बनमनखी/सेमापुर (कटिहार) ; अखिल भारतीय अंगिका साहित्य विकास परिषद्, जयमंगल टोला, साहु परबत्ता (नौगछिया) -आर। अंगिका कें राष्ट्रीय पहिचान दै लेली सब्भे लब्बों-पुरानों संस्थानिनी कें एक-टा समेकित मंच अंगिका अभियान समितियो उभरी ऐलै, जेकरों राष्ट्रीय महाधिवेशन १० अप्रिल, १९९४ ई. कें राजधानी दिल्ली कें गान्धी शान्ति प्रतिष्ठानों में संपन्न भेलै। वै औसरों पर हौ अभियान-समिति कें संयोजक डॉ० तेजनारायण कुशवाहा नें हौ महाधिवेशनों कें उद्देश्य आरो कार्यक्रमों कें राखतें होलों कहलकै कि आंगी/मागधी प्राकृत/अपभ्रंश -जनित बँगला, असमिया, उड़िया कें स्वतंत्र भारतों में स्थान मिली गेलों छै, भोजपुरी आरो मैथिली सरकारों कें गृहमंत्रालयों सें आश्वस्त होय चुकली छै आरो अंगिका आपनों अधिकार लै लेली खाली उत्सुके नैं, प्रयत्नशीलो छै। वही लेली अंगिका केरों है अभियान दिल्ली ताँय आबी गेलों छै।

मंच-युगों में अंगिका में विविध विधाओं में साहित्य-सृजन करै कें प्रवृत्ति तें लोगों में जागबे करलै, आकाशवाणी कें प्रसारणों में अंगिका कें शामिल करै कें, विश्वविद्यालयों में आरोसिनी जनपदीय भाषा नाखी अंगिकाओ कें स्थान दिलवावै कें आरो अंगिका अकादमी कें स्थापना सरकारी स्तरों पर करवावै कें आन्दोलनों होतें रहलै। यैसिनी में पहिलका याने आकाशवाणी कें प्रसारणों में अंगिका कें शामिल करवावै में कुच्छू दूर ताँय सफलता मिललै जबें कि आकाशवाणी कें भागलपुर केन्द्रों सें अंगिकाओ में थोड़ों-बहुत प्रसारण होवें लागलै। दोसरों तरफ अंगिका भाषा-साहित्यों कें विश्वविद्यालयों में स्थान दिलवावै लें वै बीचों में विभिन्न संस्था/मंचों सें प्रस्ताव पास करी-करी कें आरो बिहार-विधान-मंडल आरो भारतीय संसदों में प्रश्न उठाय-उठाय कें सरकारों कें धेयान आकृष्ट करवैतें गेलों रहलै। वही बीचों में एक विशेष बात ई भेलै कि डॉ० माहेश्वरी सिंह 'महेश', डॉ० डोमन साहु 'समीर', डॉ० तपेश्वर नाथ, डॉ० श्याम सुंदर घोष आरो डॉ० अमरेन्द्र कें हस्ताक्षरों सें

एक-टा ज्ञापन १२ जुलाई, १९८९ ई. कें, एक 'डेपुटेशनों' कें माध्यमों सें भागलपुर विश्वविद्यालयों कें कुलपति महोदयों कें देलों गेलै आरो ओकरा कार्यरूपों में अनवावै लेली भागलपुर विश्वविद्यालय आरो बिहार अन्तर विश्वविद्यालय बोर्ड, पटना सें; खास करी कें डॉ० समीर (उदित अंगिका साहित्य परिषद्, देवघर कें अध्यक्ष) द्वारा, अपेक्षित संपर्क बरोबर राखलों गेलै। परिणामस्वरूप भागलपुर विश्वविद्यालायों कें कुलाधिपति (राज्यपाल, बिहार) कें विज्ञप्ति संख्या - बी एच यू-३/९०-१०८१/जी एस (१) ता० १९ जून, १९९५ द्वारा अंगिका भाषाओ कें त्रिवर्षीय डिग्री कोर्स (स्नातक पास/आनर्स) में शामिल करै कें मंजूरी मिली गेलै, मतुर अंगिका अकादमी कें स्थापनावाला प्रयास आभी ताँय अमलों में नैं ऐलौ छै जेकरों वास्तें अपेक्षित आन्दोलन आभियों चली रहलों छै। साथै-साथ, बिहार इण्टरमीडिएट एजुकेशन कौंसिलो में अंगिका कें स्थान दिलवावै कें आन्दोलनों चली रहलों छै।

मंचोत्तर-युगों कें अंगिका कविता

मंचोत्तर-युगों में मंच-युगों कें सब-टा प्रवृत्ति बनलों रहलै। आय अंगिका कें दोसरों-तेसरों विधाओं कें संगें-संग काव्य-विधाओ में सृजन आरो प्रकाशनों में अपेक्षित गति ऐलों छै। यै युगों कें कुछू उल्लेख्य काव्य-कृति में 'कागा की संदेश उचारै' (अनिरुद्ध प्रसाद विमल), 'गेना' (अमरेन्द्र), 'ययाति' (नरेश पाण्डेय 'चकोर'), 'जैजात संस्कृति कें' (अकेला अनिरुद्ध), 'ज्ञान-गंगा', 'गान्धी-चरित' आरो 'आनन्द-मंगल' (गोपाल कृष्ण 'प्रज्ञ'), 'चटनी' (जगदीश पाठक 'मधुकर'), 'रूप-रूप प्रतिरूप' (सुमन सूरो), 'अँचरा' (नेरश जनप्रिय), 'चन्द्रहार' (नवीन चन्द्र शुक्ल 'पुष्प'), 'सूरजमुखी' (सूर्यनारायण), 'आपनों बोली आपनों भाव' (कृत्यानन्द), 'अंगिका कें प्रतिनिधि कवि' (संपादक गंगा प्रसाद राव), 'फूलों कें गुलदस्ता' ('चकोर'), 'अंग-तंरग' (परशुराम ठाकुर 'ब्रह्मवादी'), 'गुड़गुड़ी' (सुरेन्द्र दास), 'स्वाती कें मेघ' (वैकुण्ठ बिहारी), 'उर्ध्वरिता' (सुमन सूरो), 'गीत-गंगा', 'सात समन्दर साथ' आरो 'आठ समन्दर आँख' (संपादक अमरेन्द्र), 'जइबै अंग देश' (प्रीतम कुमार 'दीप'), 'कहभौं तें लागत्हौं छक दें' (लक्ष्मण प्रसाद यादव 'बेलहरिया'), 'मन्दार बोलै छै' (रामनन्दन विकल), 'ई जिनगी' (भूतनाथ तिवारी), 'चढ़ावा' (अंजनी कुमार शर्मा), 'कवि कालीदास पाण्डेय-कृत बारहमासा' (गोपाल कृष्ण 'प्रज्ञ'), 'पतझड़' (उमेश जी),

'अंगिका के प्रतिनिधि प्रकृति कविता' (संपादक गंगा प्रसाद राव), 'अंग-मंजरी' (संपादक 'अनल'/राज कुमार), 'पछिया पुकारै छै' (खुशीलाल मंजर), 'अंग-सागर' (देवेन्द्र दिलवर), 'कृष्ण-लीला' (दर्शन दुबे) आदि विशेष करी कें चर्चित छै।

मंचोत्तर-युगों कें आभी ताँय प्रकाशित भेलों प्रबंध-काव्यों में 'कागा की संदेश उचारै !', 'ययाति', गेना' आरो 'उध्वरिता' खास करी कें परिगणनीय छै। 'कागा की संदेश उचारै !' एक विरह-काव्य छेकै, जें प्रबंधों कें रूप लेने होलों छै। यै में नायिका 'साँवरी' कें विरह-दशा कें विशद वर्णन होलों छै, जे कि बड़ी हृदयस्पर्शी छै। 'ययाति', प्रबंध-काव्यों कें अंतर्गत, एक-टा खंड-काव्य छेकै। यै में शुक्राचार्य कें बेटी देवयानी आरो राजा नहुष कें बेटा ययाति कें पौराणिक कथा कहलों गेलों छै। 'गेना', कथा-वस्तु आरो शिल्प कें आधारों पर, महाकाव्यों कें कोटि में आवै छै। एकरों नायक गेना' कें माध्यमों सें एकरों रचयिता नें समाजों में दलितोत्थान कें आह्वान करने छै। ई आधुनिक युग-बोधों कें एक-टा श्रेष्ठ कृति छेकै। 'उध्वरिता' आधुनिक अंगिका काव्य-साहित्यों कें नवीनतम महाकाव्य छेकै। एकरों प्रकाशन सें अंगिका कें बहुत बड़ों जीवन मिललों छै। तीन खंडों में विभक्त कुल अठारों सर्गों में रचलों यै महाकाव्यों कें मुख्य उद्देश्य भीष्म पितामहों कें चरित्र-प्रकाशन छेकै। 'उध्वरिता' आधुनिक अंगिका महाकाव्य केरों बृहत्त्रयी में सें एक मानलों जाय छै।

(४) आधुनिक युगों कें कवि आरो कविता कें संक्षिप्त परिचय

(क्रम यथासंभव जन्म-तिथि कें अनुसार)

अंगिका केरों आधुनिक युगों कें कविता कें साजै-सँवारै में लागलों कवि आरो हुनकासिनी कें काव्यगत उपलब्धि पर, संक्षेपों में, प्रकाश डाललों जाय रहलों छै। कोशिश करलों गेलों छै कि कोय कृति/कृतिकार छूटी नैं जाय। तैयो वै में कोय व्यवधान होय जाय तें वै लेली विनम्र क्षमा-याचना। त्रुटि-विच्युतियों कें परिमार्जन समय पर करलों जैतै।

गदाधर प्रसाद अम्बष्ठ (स्व.)

श्री गदाधर प्रसाद अम्बष्ठ कें जन्म खगड़िया जिला केरों गोगरी भिरीं बिन्नी गामों में १९०३ ई. में भेलों रहै। हुनी बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् (पटना) में १९५६ ई. ताँय अनुसंधान-पदाधिकारी छेलात। आधुनिक अंगिका के उन्नायकों में हुनकों नाम उल्लेखनीय छै। हुनके संयोजनों में १९५६ ई. में अंगभाषा-परिषदों कें स्थापना पटना में भेलों रहै, जौनी में हुनी प्रधान मंत्री आरो सुधांशु जी अध्यक्ष छेलात। मूल रूपों सें हुनी बिहार में अंगिका भाषा आन्दोलनों सें जुड़लों एक ऐन्हों व्यक्ति छेलात जें सचमुचे 'नेता' संज्ञा कें चरितार्थ करने छोंत।

अम्बष्ठ जी एक प्रतिभासंपन्न कवियो छेलात। हुनी महाकवि कालिदासों कें सुप्रसिद्ध गीति-प्रबंध 'मेघदूत' कें समश्लोकी अनुवाद अंगिका में कैने छोंत। हुनकों हौ कृति अंगिका में अनुवाद-साहित्यों कें खाता खोलै छै। उल्लेखनीय छै कि कोय भारतीय आर्य-भाषा हुएँ या दक्खिनों के तमिल, तेलुगु, मलयाली या कन्नड़ भाषा, सब्भै कें लिखित साहित्यों कें आरंभ अनुवादे सें होलों छै।

अनुवाद-कला कें जोंन गुण होना चाहियो ऊ-सब अम्बष्ठ जी कें कृति में मिलै छै। 'मेघदूत' मंदाक्रान्ता छंदों में छै। अम्बष्ठ जीं वही छंदों में मेघदूतों कें अंगिका-अनुवाद करी कें आपनों प्रतिभा कें उजागर करने छोंत। एक उदाहरण लेलों जाय -

"ऊ सैलों पें विरह-दु:ख सें दुबरों देह होलों,
(हौ) जक्ष केरों कनक-बलिया हाथों सें खुलि गेलै।
आषाढ़ों कें प्रथम दिवसें देखलकै मेध-माला,
हाथी जेना पर्वत -सिखरें दाँत(ों) सें ढूँस लेतें।।"

हुनकों 'पतझड़' जीवनों कें स्वरूप समझै कें कविता छेकै। एकरों मुख्य रस शान्त (रस) कहलों जाय, मतुर आरोसनी रसो कें सुआद मिलै छै।

उमेश चन्द्र चौधरी (स्व.)

पं. उमेश चन्द्र चौधरी संस्कृत आरो हिंदी कें अध्यापक छेलात। हुनी हिंदी, संस्कृत, बँगला आरो अंगिका में समान रूपों सें रचना कैने छोंत। हुनकों कृति 'कैकेयी' पर बिहार सरकारें 'बिहारी ग्रंथ लेखक पुरस्कार' देने रहै। 'कैकेयी' हिंदी में छै। पं. भुवनेश्वर चौधरी 'भुवनेश' उमेश जी कें आपनों चाचा रहैन्। हिनकों प्रतिभा कें जगावै में हुनकों पूरा हाथ रहै।

उमेश जीं अंगिका में गद्य आरो पद्य दोन्हू लिखने छोंत। 'चौबे जी कें गप' स्तंभ-लेखक कें रूपों में हुनी 'गुलाबी जी' कहलैलों छोंत। अंगिका में लिखलों हुनकों काव्य-कृति 'पतझड़' कें नामों सें १९९७ ई. में प्रकाशित होलों छै। ओकरों अलावे अंगिका में लिखलों हुनकों ढेरेसनी कविता 'अंग-माधुरी' में छपलों छै। फनू, 'चकोर' जी-संपादित 'एक साहित्यकार परिवार' में सुकवि उमेश जी कें बारों-टा अंगिका-कविता प्रकाशित भेलों छै। वै में सुधांशु जी आरो दिनकर जी कें प्रति श्रद्धांजलि स्वरूप कविता 'टुटलै टू वीणा कें तार', 'भुरुकवा' आरो 'वसंत' कें संगें 'पतझड़' -ओं कें एक अंश छै।

'पतझड़' उमेश जी कें प्रबंध-काव्य-कृति मानलों जाय पारै छै। एकरा एक बोध-गीति-काव्यों कें कोटियो में राखलों जावें पारें। मानव-जीवनों में सुख-दुख ऐतें-जैतें रहै छै। दुखों में घबड़ाना नैं चाहियों। कोय-नें-कोय समय सुखो ऐबे करतै। बहुत-कुछ येहें रङों कें भाव लेने प्रतीक भाषा में 'पतझड़' केरों रचना भेलों छै।

"पतझड़ छै संकेत नया कोंपल गाछी में आवै कें ;
नया फूल-फल, नया रंग, आनन्द नया उमगावै कें।
दुख कें बाद सुखो आवै छै, होली - हुल्लड़ आवै छै ;
पतझड़ छेकै शान्तिदूत सुख कें संदेश सुनावै छै।।"

भाषा आरो छंद पर उमेश जी कें पूरा अधिकार छैन्। अलंकारों कें प्रयोगों में बेसी सौंदर्य हुनकों रचना में लौकें छै।।

रूपक - "कोयल करिया रंग छै, मोहै सगरो जहान,
बिजली पीतांबर कें भान दरसावै छै ;
रस के समुद्र उमड़ै लें नभ-मंडल में,
घन-घन कें नादों में बाँसली बजावै छै।
बौगला कें पाँती मोती-माला सोहै केसों पर,
विविध विलास मुक्त रस बरसावै छै ;
सावनों में बादलों कें रूप धरी 'श्री उमेश',
ब्रज कें बिहारीलाल नन्दलाल आवै छै।।"

-- 'एक साहित्यकार परिवार', पृ. २८.

श्रीनन्दन शास्त्री

श्रीनन्दन शास्त्री कें जन्म लखीसराय भिरीं नन्दनगामा गामों में १९१४ ई. मे भेलै। हुनी अंगिका कें वयोवृद्ध कवि/गीतकार छोंत। हुनकों अंगिका कविता मगही कें कत्तें नी संकलनों में छपलों छैन्। हुनी शुद्ध अंगिका बोलै छोंत आरो अंगिकाये में कविता करै छोंत। हुनकों कविता लोक-छंदों में छै। हर कविता लय/तालों में बँधलों छै। सखी पत्र शैली में रचलों हुनकों 'खेत कें फूल' कें महाकाल-गीत कें रूपों में खूभे प्रशंसा मिललों छै। 'पतरी' कें आखिर में हुनी कहलें छोंत --

"केकरा देखैयो सखि ! आपन दुर्गतिया ई ?
सुनतौ के बिपतला कें हाँक गे ?
दुनियाँ कें आँख एखन पत्थल कें आँख सखि !
कान दोनों भीत कें सुराख गे।
ऐलों हे समैया ई विनार कें, हे सखि !
जीयै कें नैं आस हौ सखि !
लिखियौ अब कोन बतिया ?"

येहें रङ 'अरिया पर थिरकै किसनमा', 'नया जङ्गल कें जोड़ी', 'रोपा गीत', 'रोपा कें दिन हौ दाय गे', 'मस्ती में झूमै हौ धान' ओगैरह गीतों कें नामे सें लागै छै कि गीतकार शास्त्री जी की रङ लोक-रंगों में रँगी गेलों छोंत। हुनकों 'ऐलों हे समैया', 'जीयै कें नैं आस हौ' आरनी में मगही कें पुट छैन्।

श्रीनन्दन शास्त्री जी मूल रूपों में स्वतंत्रता-आन्दोलन, खेतिहर-किसान आरो मजूदर-आन्दोलन आरो लोग-वेदों कें दुख-दरदों कें कवि छेकात। साँय-बहू सें संबंधित एक-टा गीत देखियै --

"खोजै कें नोकरिया छोड़ों फिकिरिया, बाँधों कमरिया ना ;
तोहर हरवा हमर कुदरिया सें बनतै कियरिया ना।
मिटतै बिपतिया, हटतै आफतिया देश-जहनमा सें ना ;
तोहर डिगरिया ओ हमर कुदरिया में चमकतै सोनमा ना।।"

हलधर चौधरी 'दीन' (श्री)

मिश्रपुर, कुमैठा (भागलपुर) -निवासी पं. हलधर चौधरी 'दीन' कें जन्म २ अप्रिल, १९१४ ई. कें भेलै। हिनकों अंगिका कविता पाण्डुलिपिये में छैन्। हिनी

'अंग-माधुरी' में पहिलों दाफी १९७० ई. में छपलों छोंत। 'जानवर आरु आदमी' -शीर्षक आपनों कविता में हिनकों कहनाम छैन् –

" उठाय कें सिर, हिलाय कें कान, सटाय कें मुँह, ऊ बैलें सोचलकै कि – कहिनों छै ई मानव महान्! आरो, हम्में सब दिन सें – लांछित उत्पीड़ित, ओकरै शब्दों में, पशु – भरलों अज्ञान!"

– 'अंग-माधुरी', दिसंबर, १९७० ई.।

दामोदर चौधरी (शांस्त्री)

पं० **दामोदर चौधरी** कें जन्म भागलपुर जिला कें बभनगामा (नौगछिया) गामों में २७ फरवरी, १९१६ ई. में होलों छेलै। हुनी संस्कृत कें विद्वान अध्यापक आरो कवि तें छेबे करलात, हिंदी आरो अंगिकाऔ कें सिद्धहस्त कवि छेलात।

चौधरी (शास्त्री) जी अंगिका कें हिमायती छेलात। हुनका में प्रबंध-काव्य लिखै कें क्षमता छेलै ; मतुर हुनी अंगिका में कुछुए कविता आरो मुक्तक लिखी कें स्वर्ग सिधारी गेलात।

अलंकारों सें सजलों-सँवरलों सुष्ठु भाषा में लिखलों हुनकों एक-टा मुक्तक यहाँ देलों जाय रहलों छै जे कि 'आँसू' कें छंदों में छै --

"पीबी कें घोर अँधेरा, ऊषाँ दै छै इँजोरा ;
सज्जन भी जहर पियै छै, बाँटै छै सुधा - कटोरा।"

हंस कुमार तिवारी (स्व.)

हिंदी कें मँजलों होलों शिष्ट परंपरा कें कवि हंस कुमार तिवारी केरों पहिचान अंगिकाऔ में छै। हुनकों जन्म हुनकों नानाश्री कें नगर नाथनगर (भागलपुर) में १९१८ ई. में होलों रहै। हुनी हिंदी आरो बँगला कें चर्चित विद्वान् कवि-लेखक तें छेबे करलात, अंगिका लेली हुनकों हृदयों में अपार प्रेम रहै। हुनी अंगिका कें एक पूर्णत: विकसित भाषा कें रूपों में देखै कें प्रबल इच्छा राखै छेलात।

पं. हंस कुमार तिवारी बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् (पटना) कें निदेशक कें पदों कें सुशोभित कैने रहोंत। हुनकों देहावसान २७ सितंबर, १९८० ई. कें होय गेलै।

तिवारी जी कें अंगिका कविता पत्रिका आरनी में कभी-कभार छपलों मिलै छै। 'अंग-लता' कविता-संग्रहों में प्रकाशित हुनकों एक रचना 'गीत बरसात कें'

अंगिका कविता-साहित्यों में मानक कविता कें स्थान राखै छै --

"गुइयाँ,
विष बोरी सुइयाँ ई सावन कें कुहियाँ।
रही-रही बदरा बैमान बड़ी गरजै ;
बरजे नैं सुनै एक मानै नैं अरजे ;
बरसै अकास आरो जे तरसै री भुइयाँ।
मचै मेह - माँदर पर रिमझिम कें कजरी,
अगिनबान मारै री नावनगर बिजरी ;
मन कलकै छलकैने लोचन-मटकुइयाँ।" इत्यादि।

भिखारी ठाकुर 'अधूरा' (स्व.)

श्री भिखारी ठाकुर 'अधूरा' कें जन्म गोड्डा जिला कें रुंजी गामों में ५ अक्टूबर, १९१९ ई. में भेलों छेलै। हुन मृत्यु १० सितंबर, १९७६ ई. कें होय गेलै। हुनी हिंदी आरो अंगिका में कविता करै छेलात।

'अधूरा' जी कें साहित्य-साधना प्रशंसनीय छै। अंगिका कें पत्र-पत्रिका में छपलों हुनकों कविताँ पाठक आरो श्रोतासिनी कें विभोर करतें रहै छेलै। हुनकों कविता कयेक-टा काव्य-संकलनों में छपलों छै। काव्य-गुण आरो अलंकार-योजना हुनकों कविता कें सिंगार छेलै। हुनकों 'अगरबत्ती' कविता में अगरबत्ती कें मानवीकरण बड्डी बढ़िया भेलों छै --

"हम्में अगरबत्ती छेकाँ ;
भारत रों मुकुट - मलयागिरि पर - हमरों बास।
मलयानिल छेकै हमरों स्वास।
हमरा तोड़ी दें, मचोरी दें या कि आगिन लगाय कें जारी दें,
हम्में सुगंध देत्हैं रहभौं ;
कैन्हें कि - हम्में छेकाँ भारतीय ल ल ना।"

व्याजस्तुति कें भाषा में हिनकों भावों कें अभिव्यक्ति देखलों जाय --

"हम्में बड़का वीर छी/सब कामों में मीर छी ;
छाँकलों पापड़ दाँतों सें तोड़ी, पटकी कें तोड़ाँड़ौं सीसी।
केक-बिस्कुटों कें बात नैं पूछों, चाकलेट खाय छी मीसी !
बोडगों नैं, गंभीर छी !"

-- अंग-माधुरी', मई, १९७५ ई.।

लक्ष्मण सिंह चौहान (श्री)

श्री लक्ष्मण सिंह चौहान जी कें जन्म प्रसन्नडों (हवेली खड़गपुरी, मुंगेर/जमुई) में १९२० ई. में होलों छैन्। हिनी अंगिका कें एक सिद्धहस्त हस्ताक्षर छेकात। हिनकों लिखलों 'लोकगीता' शीर्षक काव्य-कृति प्रकाशित छैन् जे कि ६७ पेजों में छै। वै में लोक-धुनों पर रचलों हिनकों गीत संकलित छै। एनाकें तें लागै छै कि श्रीमद्भागवतगीताये लोकगीतों कें रूपों में रूपान्तरित छै, मतुर वोन्हों बात नै छेकै। हों, महाभारत आरो श्रीमद्भागवतगीता कें आधार वै में जरूरे रहलों छै।

'लोकगीतों' अंगिका गीति-परंपरा में महत्वपूर्ण स्थान राखै छै। माधुर्य आरो प्रसाद गुणों सें युक्त 'लोकगीता' खाली सुकवि चौहानों कें कंठे कें नैं, जन-जन कें कंठों कें सिंगार छेकै। यहाँ कवित्त छंदों में रचलों रूपक आ। उत्प्रेक्षा कें एक-एक उदाहरण देलों जाय रहलों छै।

रूपक - "भारत के मूलधन गीता-गंगा-गैया-मैया ;
आरो धन धूल केरों तूल हो साँवरिया।"

यै में आनुप्रासिक छटा कें सुंदर निर्वाहो भेलों छै।

उत्प्रेक्षा - "अधर पर टुहू-टुहू लालियो विराजै रामा,
मनहु कमल-दल छोर हो साँवरिया।"

प्रभातरंजन सरकार 'आनन्दमूर्ति'

महासंभूति प्रभातरंजन सरकार कें भौतिक देह वैशाखी पूर्णिमा १९२१ ई. के रेल-नगरी जमालपुर (मुंगेर) में मिललों रहै आरो अवसान २१ अक्टूबर १९९० ई. कें भेलै। हुनकों पिताश्री लक्ष्मीरंजन सरकार आरो माताश्री आभारानी सरकार अध्यात्म आरो दर्शन में खूभे रुचि राखै छेलात, जेकरों प्रभाव हुनकासिनी कें दुलरुआ नुनू प्रभात पर पड़लै।

'आनन्द-मार्ग' जैन्हों अंतर्राष्ट्रीय संस्था कें प्रवर्त्तक आरो संचालक श्री प्रभातरंजन सरकार कें ख्याति 'आनन्दमूर्ति' कें नाम सें बेसी छै। हुनी एके संग सामाजिक, दार्शनिक, राजनीतिक, क्रान्तिकारी कवि आरो भाषाविद् छेलात। विविध विषयों पर हुनकों २५० सें बेसी ग्रंथ प्रकाशित छै। 'वर्ण विज्ञान', 'वर्णविचित्रा' आरो 'शब्दचयनिका' - ई तीन-टा ग्रंथ भाषाविज्ञानों पर छै।

'आनन्दमूर्ति' जी नें अंगिका के एक स्वतंत्र भाषा बतैने छै। 'प्रभात-संगीत' कें नामों सें प्रख्यापित हुनकों ५०१८ गीत खाली बँगला, हिंदी, संस्कृत, उर्दू,

अंग्रेजी, मैथिली आरो मगहीये में नैं, बलुक अंगिकाओ में छै। वैसिनी अंगिका गीतों में अंगभूमि लेली हुनकों अपार प्यार अभिव्यक्त होलों छै ; जेना --

"हे माय अंगभूमि ! तोरे लेली जान कबूल करै छियै।" (पद-संख्या ४०८९), "अंगभूमि सुंदरता-भूमि, एन्हों देश धरती में पैबों नाहि ; x x x तन-मन तोरा लेली सौंप देलियै, साँस अंगों-आकाश में जैतै बहि।" (पद-संख्या ४२०६)।

महागीतकार आनन्दमूर्ति जी कें अंगिका भाषा-प्रेम देखलों जाय --

"अंगभाषा मोर मधुर समान,
माय सम मातृभाषा सुमहान ;
आबों बंधु ! एय ठाँय सुनौ मोंर गान,
अनूप अंगभाषा मानै छै महि।"

अंगिका में रचलों 'प्रभात-संगीत' सरकार जी नें आपन्हैं सुर-लय-बद्ध करने छोंत, जे कि देश-विदेश में गैलों जाय छै। अंगिका 'प्रभात-संगीत' कें वर्ण्य विषय छेकै - अंग भूमि-महिमा, अंगिका भाषा-महिमा, परम तत्त्व, गुरु, शिव, श्रीकृष्ण, राधा, वर्तमान परिवेशगत स्थिति आर ; मूल रूपों में भक्ति आरो प्रेम-तत्त्व कहलों जाय। हुनकों भाव आरो शिल्प में नवीनता देखलों जाय छै। आधुनिक अंगिका काव्य-साहित्य लेली हुनकों देन अत्यधिक मूल्यवान् मानलों जाय पारें। हुनी अंगिका कें एक स्वतंत्र भाषा तें मानन्हैं छै, देश-देशान्तरो ताँय एकरों व्याप्ति आरो विस्तारो करने छै।

परमानन्द पाण्डेय (डॉ०)

डॉ० परमानन्द पाण्डेय अंगिका के मूर्धन्य कवि आरनी में परिगणनीय छोंत। हिनकों जन्म भागलपुर जिला कें रामपुर भगवान (भँड़ोखर) में श्रावण शुक्ला सप्तमी, सं.१९७९ वि. (१९२३ ई.) में होलों छै। हिनी बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना में सेवारत छेलात। अखनी आपनों सेवा-निवृत्त जीवन पटना में बिताय रहलों छोंत।

पाण्डेय जी अंगिका कें बहुमुखी रचनाकार छेकात। गद्य आरो पद्य दोन्हू में हिनकों रचना भेलों छै। हिनकों प्रकाशित कृतिसिनी में 'सात फूल', 'देश कें बचावों हो', 'पछिया बयार', 'प्रथम अंगिका व्याकरण' (हिंदी में) आरो 'अंगिका कें भाषिक अध्ययन' मुख्य छैन्। अंगिका भाषाविज्ञानों पर शोध करी कें हिनी भागलपुर विश्वविद्यालयों सें डी. लिट्. कें उपाधि हासिल करने छोंत। ऊ एक स्पृहणीय शोध-ग्रंथ छेकै जेकरों प्रकाशनों कें प्रतीक्षा छै।

'पछिया बयार' में पाण्डेय जी द्वारा समय-समय पर लिखलों सैंतीस-टा अंगिका कविता संकलित छै। कुल ६४ पेजों कें है किताबों कें प्रकाशन १९७६ ई. में भेलों छै। 'पछिया बयार' कविता कें कुछेक अंश देखलों जाय --

"थमी-थमी बहै भैया पछिया बयार हो,
पछिया बयार हो, पछिया बयार हो।
तोहरों असराँ रही छै किसान हो ;
पसरलों चास छै खेत - खरिहान हो ;
बूँट गहुम जों केरों लागलों पथार हो,
रौदी में घूमी-घूमी करै छियै दौनी,
टप-टप घाम चुवै करतें ओसौनी ;
ताक नैं मानै भैया रात-भिनसार हो।"

कहलों जाय पारै छै कि 'पछिया बयार' कें रचना आपनों भाषा कें नुँगा-पटोर में कोय ऊँचों भाव या कल्पना या सौंदर्य कें महीनी तें नैं लेने छै, तैयो इतिवृत्तकता में लोक-जीवन यै में जरूरे झलक मारै छै। येहें कारण छै कि हिनकों गणना एक रससिद्ध कवि कें रूपों में होय छै।

आनन्द शंकर माधवन (आचार्य)

अमरावती (मंदार विद्यपीठ) कें योगी आचार्य आनन्द शंकर माधवन दक्खिन-उत्तर भारतों कें मिलन-सेतु छेकात। हिनी १९४५ ई. में लोगों में जन-जागरणों कें संदेश प्रसारित करै लेली मंदार पर्वत भिरीं 'मंदार विद्यापीठ' ऐन्हों शिक्षण-संस्थान स्थापित करी कें जन-सेवा-रत छोंत।

माधवन जी कवि, लेखक, संपादक, चिंतक आरो विचारक छेकात। हिनी अंगिका बोलै आरो लिखै छोंत। हिनकों अंगिका कविता कयेक-टा संग्रहों में लागलों छै। भाषा आरो काव्य-सौंदर्य कें दृष्टि सें हिनकों एक-टा कविता कें कुछेक पाँती देखलों जाय --

"जे महँगों छै हो सस्तो भी ;
जल कें देखों, हवा कें बात सोचों।
प्रतिष्ठा नैं चाहों, अपमान नैं मिलथौं।
धोंन जमा नैं करों, गरीबीं नैं सतैथों।
छिपावों नैं/पाप सें बचभें ;
चाह तजों/शान्ति मिलथौं।"

अभयकान्त चौधरी (डॉ०)

डॉ० अभयकान्त चौधरी मूल रूपों सें अंगिका कें गद्य-लेखक छेकात। तैयो हिनी अंगिका में ढेरे कविता रचने छोंत जे सब 'अंग-माधुरी' में छपलों छै।

डॉ० चौधरी कें जन्म ३० अगस्त, १९२३ ई. कें अखनीकों बाँका जिला कें डहुआ गामों में भेलों छै। हिनी आपनों कविता में सामाजिक विसंगति आरो महँगी पर करारा चोट करने छोंत। एँगनों कें छपरी पर बोलतें होलों कौआ सें कविं अनुरोध करै छै --

"कौआ, तोहें बहुत बोलै छें ; आबें एत्तें कैन्हें डोलै छें ?
पहुना कैं नैं खाय लें मिलतौ ; तोहरो दाना कहाँ सें भेंटतौ ?
महँगी की मामूली भेलै ? सब कें दुर्गत पूरी गेलै !
कैन्हों कें दाना हमें खाय छी; पहुना ऐला पर भुखले रहै छी।"

चौधरी जी कें भाषा बड़ी सरल आरो सुबोध होय छै। गद्य में हिनकों जे अवदान छैन् वैसिनी कें चर्चा यै इतिहासों कें गद्य-भागों में करलों गेलों छै।

भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' (डॉ०)

डॉ० भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' कें जन्म उत्तर भागलपुरों कें एक सुंदर गाँव तेलघी' में १९२४ ई. में तिला-संक्रान्ति कें दिन भेलों छै। हिनकों रहन-सहन, खान-पान, बोल-चाल सब्भै में अंगिकाँ झलक मारै छै। अंगिकाहै में आपनों भाव-विचार खोलैवाला हिनीयें, डॉ० माहेश्वरी सिंह 'महेश' कें बाद, दोसरों व्यक्ति छोंत।

'भुवन' जी कें उल्लेखनीय अंगिका काव्य-कृति छेकै १९८५ ई. में प्रकाशित 'घैरकों' आरो १९९४ ई. में प्रकाशित 'खोरना'। 'घैरकों' में हिनकों २३ कविता कुल २५ पृष्ठों में आरो 'खोरना' में २८८ छंदों में समकालीन शासन पर लिखलों ९६-ठो व्यंग्य-विंब छै।

विचारों सें 'भुवन' जी प्रगतिवादी छोंत। हिनकों कविता में मुख्य रूपों सें जनवादी विचार-धारा उभरलों छै। हिनकों दोसरों कृति में समकालीन शासन-व्यवस्था पर कठोर व्यंग्य कसलों गेलों छै।

'भुवन' जी कें कविता विंब-प्रधान होय छैन् -- चाहे ऊ कृषि-विंब रहें या व्यापार-विंब या कोनो आरो विंब। हुनकों गीत-रचना बड़ा भावपूर्ण होय छैन् ; गीतों कें भाव-सौंदर्य आयकों गरीबी कें भाषा में मनों कें मुग्ध करी दै छै ; जेना कि --

"कत्तें दिन सहतै निनान ?
युगों-युगों सें खटी-मरी कें सौंसे दुनियाँ पालै ;
बुतरू भुखलों, घरनी नाँगटी देखी हियरा सालै।
केहनों ई उलट विधान ?''

हिनी भाषा-शिल्पी छोंत। नर-प्रकृति आरो नरेतर-प्रकृति एक्के संग की रङ हिनकों रचना में ससरलों चलै छै, हिनकों एक गीतों में देखै कें लायक छै --

"कोयल संगीत छै उदास।
मन्है में राखै छी मनों कें बात ;
दिन कटै कानी, छगुनता में रात ;
चिचियावै चिड़ियाँ होथैं परभात,
मुरझैलों कली आ' मरुवैलों पात।
मलय पवन हपसै हतास।।''

डोमन साहु 'समीर' (डॉ०)

संताली, हिंदी, अंगिका, भोजपुरी आदि भाषा कें विद्वान् साहित्यकार डॉ० डोमन साहु 'समीर' मूलत: गोड्डा जिला कें पन्दाहा गामों कें निवासी छेकात। हिनकों जन्म ३० जून, १९२४ ई. कें होलों छै।

'समीर' जी कें लिखलों 'अंगिका-हिंदी-शब्दकोश', 'अंगिका-व्याकरण' आरो 'समीक्षात्मक निबंध (अंगिका)' स्वतंत्र पुस्तकों कें रूपों में प्रकाशित होय चुकलों छै। अंगिका कविता कें कोय संकलन आभी ताँय नैं प्रकाशित होलों छैन् ; मतुर हिनकों रचलों फुटकर अंगिका कविता हिंदी कें 'आज', 'हिन्दुस्तान', 'संकल्य', 'कंचन-लता', 'साहित्य-भारती' आरो अंगिका कें 'आंगी', 'अंगप्रिया', 'अंगिकाँचल' आदि पत्र-पत्रिका में छपतें रहै छै। सच पुछलों जाय तें हिनी आबें अंगिका कें पर्याय बनी गेलों छोंत, अंगिका कें प्रति समर्पित।

'समीर' जीं अंगिका कें मानक रूपों कें प्रयोग करै छोंत आरो, जे रहें से रहें, झूमर छंदों में खूब खिलै छोंत। प्रकृति कें विविध रूप हिनकों रचना में खूब उभरै छै। हिनकों एक अंगिका कविता (झूमटा) कें नमूना लेलों जाय --

"लहकै पुरवैया कि लरकै बदरिया (२),
रही-रही --
मारै कनखी बिजुरिया, कि रही-रही।

बरसै जे पनिया कि चूवै अगरिया (२),
भरी आनौं --
केना खाली गगरिया, कि भरी आनौं ?
अमुआँ कें ठारी पर भोरे भिनुसरिया (२),
कुहू - कुहू --
बोलै कारी कोइलिया, कि कुहू-कुहू।
जिया मोरा सालै कि पिया परदेशिया (२),
केकेरा सें --
खोलौं हिरदा कें बतिया, कि केकरा सें ?''

– 'अंग-प्रिया' सें।

डॉ० समीर शृंगार आरो भक्ति रस्हौ कें सुकवि छोंत। शृंगार रसों कें कविता पढ़तें हुएँ जेना हिनकों शृंगारिक भावना मंचों पर उभरै छैन् तेना भक्ति-रसों में पगलों हिनकों भक्ति-भावो कविता में उजागर होय छैन्। 'सिंहवाहिनी-स्तुति' में कहलों गेलों छै --

''दु:ख-ताप रोग-शोक, तापित अनेक लोग,
गहत चरण तोरों, देवी सिंहवाहिनी।
कंद-मूल फल-फूल, धूप-दीप-दूध-हीन,
चढ़ौआ नयन-लोर, देवी सिंहवाहिनी।''

अध्यात्म-चिंतनों हिनकों कविता कें विशेषता छेकै, जे कि प्रतीकात्मक शैली में मिलै छै --

''एक दीप तें हमरो बरतें रहलै घुप्प अन्हारों में ;
एक राग तें हमरों बजतें रहलै भाव-सितारों में।
दीप-शिखा में काँपी-काँपी उठलै परछाहीं केकरौ ;
ज्योति मचललै, तैयो तें पुरलै मनुहार जेकरों नैं।''

-- 'साहित्य-भारती', जन.-मार्च, १९९७ सें।

वचनदेव कुमार (डॉ०)

हिंदी, संस्कृत आरो अंगिका कें विद्वान् डॉ० वचनदेव कुमार कें नाम साहित्य-जगतों में आदरों सें लेलों जाय छै। अंगिका में हिनकों प्रवेश कविता आरो कहानी में संगें-संग भेलों रहै। हिनी अंगिका कें कयेक-टा व्यंग्य-रचना देने छोंत। हिनकों 'नगर-पुराण' कें कुछेक पाँती देखलों जाय --

"रात/घरों सें मूसा निरास लौटलै ;
भोर/घरों में बिलाय उदास बैठलै ;
साँझ/ड्रेनपाइप पेंट आरो मुँहों में सिगरेटी छल्ला,
कानों में पंपिया केश में कियोकारपिनी बिल्ला,
गोड़ों में छुछंदरी जूत्ता आरो सर्ट हीरो-छाप उलल्ला,
सिनेमा में खिड़की पर मचावै छै हल्ला,
हरिओम् तत्सत् !"

-- 'अंगिका' सें।

कुमार विमल (डॉ०)

गाँव तेंगा, जिला मुंगेर (आबें बेगूसराय) कें निवासी राष्ट्रीय साहित्यकार डॉ० कुमार विमल छठमे क्लासों सें रचना करै छोंत। आपनों आत्मकथ्य में हिनी कहै छोंत -- "आगू चली कें डॉ० माहेश्वरी सिंह 'महेश', प्राचार्य कपिल, आचार्य नलिनविलोचन शर्मा, डॉ० लक्ष्मीनारायण सुधांशु आरनी कें नगीची संपर्क हमरा साहित्य-सृजन दिसिं सदैव उन्मुख राखलकै।"

हिनी मनों सें अंगिका कें विकास चाहै छोंत। हिनकों अंगिका कहानी बेसी चर्चित छैन् ; मतरकि अंगिका में कविता लिखने छोंत। आपनी 'अंगिका' नामों कें कविता में हिनी लोक-चेतना कें माटी में जनमली अंगिका कें प्रति शुभ कामना कें संकेत देने छोंत --

"लोक-चेतना कें अधित्यका पर निरमित ई,
सरस्वती रों दिव्य सौध में पुष्पमालिका ;
लै कें चललै कुशल-खेंम रों सुभग कामना,
गीत-हंसिनी जन-मानस कें मधुर अंगिका।"

-- 'अंगिका' सें।

अवध भूषण मिश्र (पं.)

आयुर्वेद, विज्ञान आरो साहित्यों कें विद्वान् कवि पं. अवध भूषण मिश्र हिंदी में कयेक-टा प्रबंध-काव्यों कें रचयिता आरो कवि-निर्माता छोंत। हिनी अंगिका कें कोय प्रबंध-रचना तें नैं निकाललें छोंत, लेकिन अंगिका कें पत्र-पत्रिका आरनी में कयेक-टा स्फुट कविता छपवैने छोंत।

मिश्र जी कें अच्छा अधिकार भाषा आरो छंदों पर छैन्। हिनकों कविता में काव्य-कला कें दृष्टि सें भाव-गांभीर्य आरो शिल्प-सौष्ठवों कें अच्छा निदर्शन छै। यै विचारों सें हिनकों 'अंगिका अनुगीत' देखलों जाय --

" वनफूल-गुणों कें हमें गुणगान करै छी ;
तोहें राजनीति कै कें नित नाम कमावों,
हमें काव्य-देवता कें सिंगार करै छी।"

-- 'अंग-माधुरी' सें।

मधुकर गंगाधर (डॉ०)

हिंदी कथा-साहित्यों में शीर्षस्थ स्थानों पर समासीन डॉ० मधुकर गंगाधर आपनों बोली कें नैं भुलैने छोंत। हिनी अंगिकाओ में कविता-कहानी लिखी-लिखी कें एकरा जिनगी दै रहलों छोंत। अंगिका कविता में हिनकों कहै कें ढंग निराला छै। 'नेता महातम' कविता में हिनी कहने छोंत --

" सतयुग में होलै एक परम धर्म-जेता, जनमे सें नाम पड़लै बच्चूसिंह नेता।
त्रेता में बनलै वहें पहुँचलों संत, हुनकों शासन में रहै छै वसंत।
दुआपर में कहलैलै देवता कें देव, ई युग में पालै छै मनों में कुटेव।
कलियुग में भोर-साँझ करै छै कीरतन, पीटी-पीटी आपनों मानस कें बरतन।
सतयुग में ई युग कें महिमा छै भारी,साधने छै 'दल', सिद्धि 'बँगला' अरु 'गाड़ी'।

-- 'अंगिका' सें।

मनीर शबनम (जनाब)

जनाब मनीर शबनम हिंदी, उर्दू आरो भोजपुरी कें संगें-संग अंगिकाओ कें कवि छोंत। हिनकों जन्म साहेबगंज नगरों में १९२६ ई. में होलों छै। हिन्ने पिछलका तीन दशकों सें हिनी बाराहाट-ईशीपुरों में रहै छोंत।

'शबनम' जी कें अंगिका गजल या दोसरो रचना बड़ा गंभीर, निर्दोष, भावप्रवण आरो प्रभावकारी होय छै। संवेदनशील कवि 'शबनम' जी कें एक शे'र देखियै --

"दुनियाँ कें हाल देखी 'शबनम' बहै छै लोर ;
अमृत कही कें विष पिलावै छै आदमीं।"

-- 'अंग-माधुरी' सें।

सदानन्द मिश्र 'साहित्यिक साँढ़' (पं.)

अंगिका कें हास्य-व्यंग्य कवि पं. सदानन्द मिश्र 'साहित्यक साँढ़' केरों जन्म उत्तर भागलपुर जिला कें बभनगामा में १९२६ ई. कें नवंबर महीना में भेलों छै। हिनी एक सेवा-निवृत्त शिक्षक आरो मानव-मूल्यों कें चितेरा छेकात।

हिनकों प्रकाशित अंगिका काव्य-कृति 'खोंड़-पताड़' कें बहुते ख्याति मिललों छै। आभी ताँय यै किताबों कें चार संस्करण होय चुकलों छै। यै किताबों कें रचना-काल १९६५ या १९६६ ई. होतै ; पहिलका संस्करणों में प्रकाशन-तिथि नैं देलों गेलों छै। चौथों संस्करणों कें ६० पृष्ठों में कुल ५०-टा कविता लागलों छै।

'साहित्यिक साँढ़ों' कें कविता कें विषय यै जिनगी सें जुड़लों जिनिस आरो जीव-जन्तु छेकै। अंगिका काव्य-साहित्यों में हास्य-रसों कें हिनी पहिलों कवि छोंत। हिनके सें अंगिका में हास्य-व्यंग्यों कें परंपरा शुरू होलों छै।

'साहित्यिक साँढ़' कवि कें कविता केरों शिल्प तें पुराने छै, मतरकि कथ्य छै नया, जै में हिनकों शिष्ट आरो संयमित हास्य कें दर्शन होय छै ; जेना कि --

'हे रे उड़ीस ! हे रे उड़ीस ! सब दिन कें आय झाड़बो रीस।
टेंटी-भर कें जन्तु छहत्तर आँख मुनतें-मुनतें भुक ;
बाँह पटकतें पीठ उचकइलें पीठ हटइतें जाँघी छुक !
अच्छा बात नैं होयतौ आबें चढ़लों जाय छो हमरा खीस।''

-- 'खोंड़-पतार' सें।

श्रीरंजन सूरिदेव (डॉ०)

अंगिका, हिंदी, संस्कृत, प्राकृत आरो नेपाली कें विविध विधा में साहित्य-लेखन में प्रवीण डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव कें जन्म ३ फरवरी, १९२७ ई. कें शुंभेश्वरथान, धौनी (संताल परगना) में भेलों छै। हिनी अंगिका भाषा आरो अंग-महाक्षेत्रों कें गौरव छोंत। हिनकों ढेरेसिनी अंगिका कविता 'अंग-माधुरी' -आर पत्र-पत्रिका में छपलों छै।

हिनकों भाषा, भाव आरो शिल्प कें पहिचान अंगें करने छै। यहाँ हिनकों 'ओलहनों' कविता कें कुछेक पाँती उदाहरणस्वरूप देलों जाय रहलों छै --

"रोहिनी हे !
तोंहें तें बड़ी कुलवंती छों ;
मगर तोरा सें हमरों कुच्छू शिकायत छै,
तोरों चान बहकलों छौन,

झरोखा होय करी कें चुप्पे-चुप्पे चललों आवै छौन,
हमरा सूतैवाला कोठरी में ;
कुच्छू नैं सोचै छौन कुल आरो धरम,
सब केरों गरों रेती दै छौन
आपनों किरिन केरों ठंढा-ठंढा हाथों सें
हमरों गरम-गरम देहों कें नरम-नरम छूवै छौन !''

-- 'अंगिका' सें।

गोपाल मिश्र (पं.)

तारापुर कें धोबई·गामों कें पं. गोपाल मिश्र एक सुयोग्य शिक्षाविद्, कवि आरो लेखक छोंत। हिंदी कें किताब 'नेफा के तांडव' सें हिनी अंगिका में ऐलात आरो सुंदर-सुंदर कविता सें अंगिका कें सिंगार कैलकात। हिनकों 'झुनझुन कटोरवा' कविता काफी लोकप्रिय छैन्, जेकरा में आयकों नेता पर करारा चोट करलों गेलों छै। एक कविता --

"हिंदी में बेसी ठेठ अँगरेजीए चलैने
दुआरी सें एँगने, नैं कुछु तें कोबी आरू बैंगने,
लेने घुरी कें घोर/घर्हौं की तरान !
हिनी लघु प्राण नैं, महाप्राण ;
पटना में मड़वा, दिल्ली मटकोरवा,
जेकरे नाँव झुनझुन कटोरवा।''

शारदा प्रसाद 'सैदपुरी' (श्री)

श्री शारदा प्रसाद 'सैदपुरी' नौगछिया अनुमंडलों कें सैदपुर गामों कें निवासी छोंत। अंगिका कें प्रचार-प्रसार में हिनकों बड़ा योगदान रहलों छै। हिनकों कविता जमीनों सें जुड़लों मिलै छै। भौलीदारों कें दरद देखैतें होलों हिनी भौलीदारों कें भाषा में कहियो दिन फिरै कें बात की रङ कहने छोंत, से देखलों जाय --

"हमरों समैया एक दिन जरूरे ऐतै, बाबू !
तोहरों समैया ऐसनों कबहूँ नैं रहतै, बाबू !
आबें नाँहीं रहतै ऐसनों तोहरों जमनमा हो,
छीनी लेल्हौ कहिने बाबू ! जोतलों जमीनमा हो ?''

अच्युतानन्द चौधरी 'लाल' (श्री)

पेशा सें अधिवक्ता श्री अच्युतानन्द चौधरी 'लाल' अंगिका कें कवि छोंत। हुनकों पहिलों अंगिका गीत 'शिवजी कें बरात' मई, १९७७ ई. कें 'अंग-माधुरी' में छपलों छै। हुनकों एक गीत-संकलन 'शिव जी हीरो बनों हो' कें नामों सें प्रकाशित भेलों छै। वै में शिव जी पर लोक-धुनों पर रचलों गीत, विद्यापति कें नचारी नाखी, लोक-प्रचलित छै। हास्य रसों कें अंतर्गत एक-टा गीतों कें उदाहरण लेलों जाय --

"भूत-परेत साथ लेलें, डिम-डिम ड़मरू बजैलें,
शिव जी आबी गेलै मैना कें दुअरिया में ;
भाँग-धतूरा खैलें, बूढ़ों बैल सवारी करलें,
शिव जी आबी गेलै मैना कें दुअरिया पर।"

गुरेश मोहन घोष 'सरल' (श्री)

श्री गुरेश मोहन घोष 'सरल' स्वभावे सें कवि छोंत। हिनकों जन्म अंग-जनपदों कें अमरपुर अंचलों कें जानकीनगर ओड़ेय गामों में १९२७ ई. में भेलों छै। हिनकों फुटकर कविता पत्रिका-आर में निकलतें रहै छै। एक-टा कविता-संकलनों 'गुमार' नामों सें प्रकाशित छैन्। ऊ हास्य-व्यंग्य कविता-संकलन छेकै। प्रकाशन दिसंबर, १९८४ ई. में भेलों छै, जेकरा में तेरों-टा क्षणिका-सहित कुल २७-टा कविता संकलित छै।

'सरल' जी कें कविता कें एक-टा बड़ों गुण छेकै सहज संप्रेषणीयता। केकरहौ मनों में हिनकों कथ्य सोझे घुसी जाय छै। हिनी काँहीं-काँहीं आपनों वैयक्तिक अनुभवों कें बड्डी सरलता सें खोललें छोंत, जे कि समष्टि लेलियो सही उतरलों छै। चिंतनशील रहस्यमय गुत्थी सें हटलों 'सरल' जी आपनों कृतित्वों में राष्ट्रीय चिंतन में लागलों तें जरूरे आवै छोंत। येहें कारण छै कि अनैतिक आरो भ्रष्ट आचरणों सें व्यथित हिनकों हृदयें समाजों कें हेरी कें आपनों गुमार निकाललें छै --

"भोटो देलियहौं, जितबो करल्हें, मोंर-मिनिस्टर बनबो करल्हैं ;
धुरदा दै नैं चलथौं गाड़ी, डाँड़ी-डाँड़ी जैभें किन्ने ?
की करै लें ऐभें हिन्ने ?
जात-पाँत कें बात भुलैलों जात-पाँत कें याद दिलाय छों ;

गद्दी खातिर जात गमाय छों, फेंकी देभौं गिरभें हुन्ने !
की करै लें ऐभे हिन्ने ?
-- 'गुमार' सें।

हिनकों व्यंग्यों कें भाषाँ कत्तें चोट करै छै, दू पाँती में आगूं देखियै--

"हम्में, भाय जी ! कुछ नैं करलाँ !
जेल नैं गेलाँ बूड़ी मरलाँ,
सन् बयालिस कें आन्ही में आँख मुनी कें कूदी पड़लाँ ;
चोर-डकैतो जे-जे गेलों ओकरे तें पौ-बारह भेलों ;
x x x x x x
तगमा जेकरा जेलों कें छै पेन्शन पाबी गद्‌गद भेलों !"
-- 'जो रे तहिया' सें।

'जो रे तहिया !' सुकवि 'सरल' जी कें एक-टा संस्मरणात्मक आलेख छेकै जेकरों प्रकाशन हाल्है में भेलों छै आरो जेकरा में 'गागर में सागर' भरलों छै। निचलका कवितांशों में उभरलौ 'सरल' जी कें व्यंग्य खास करी कें समझै लायक छै --

"खाय छै सरकारों कें, लै छै सरकारों कें, तोरा दरकार की ?
नहरों कें पानी में पैस्है कें धार छै !
सड़कों कें माटी में एक्कों कें चार छै !
कुच्छू जों बोलों तें नन्हैं कें तार छै !
चुपचाप बैठी रहों, पैभैं तों पार की ? तोरा दरकार की ?"

जगदीश पाठक 'मधुकर' (पं.)

श्रीमती धनेश्वरी देवी रमा आरो पं. अचम्भित पाठक जी कें पुत्ररत्न कें रूपों में अवतरित भेलों पं. जगदीश पाठक 'मधुकर' हास्य-व्यंग्यों कें बेजोड़ कवि छेकात। हिनकों जन्म बाँका जिला कें खैरा गामों में अचला सतमी सं. १९८९ वि. (१२ जनवरी, १९३२ ई.) कें दिन होलों छै। हिंदी कें 'साहित्य-विशारद' सुकवि 'मधुकर' जी हिंदी आरो अंगिका दोन्हू कें सशक्त हस्ताक्षर छोंत। हिनका विक्रमशिला हिंदी विद्यापीठें, हिनकों अंगिका-सेवा पर, 'कविरत्न' कें आलंकारिक उपाधि सें सम्मानित करने छै। एक दोसरों संस्था सें हिनका 'कला-मनीषी' कें उपाधियो मिललों छैन्।

'मधुकर' जी कें एक-टा किताब 'चटनी' प्रकाशित भेलों छैन् १९९० ई.

में। ऊ छोटों-छोटों हास्य-व्यंग्य-प्रधान कविता कें संकलन छेकै। हास्य-व्यंग्य आय-काल सब्भे भारतीय भाषा में खास जोर पकड़लें छै। सुकवि 'मधुकर' जीं आपनों हास्य-व्यंग्य-भरलों रचना सें अंगिका साहित्यों कें अच्छा सजैने छोंत। हिनकों 'चटनी' कविता-संकलनें स्वस्थ मनोरंजन करै छै ; जेना --

"घरनी ऐलै, घोंर स्वर्ग होय गेलै --
आरो हम्में स्वर्गवासी होय गेलाँ !"

वाह, की रङ कसलों व्यंग्य छै एतने-टा में ! समाजों कें व्यथा-कथा हिनीं 'चटनी' कें माध्यमों सें खूब कहने छोंत। मानव-मूल्य सदाय बनलों रहें, ई 'मधुकर' जी कें कविता कें कीमती संदेश छैन्।

'चटनी' कें अलावे 'मधुकर' जी कें कत्तें नी फुटकर कविता पत्रिकासनी में प्रकाशित होतें रहलों छैन्।

महेन्द्र प्रसाद जायसवाल (डॉ०)

पुरानों विक्रमशिला महाविहारों कें भिरीं भवानीपुर गामों कें डॉ० महेन्द्र प्रसाद जायसवाल- हेनों विभूति कें जन्म दै कें गौरव मिललों छै। माघ, सं. १९९० वि. कें हिनकों जन्म होलों छै। हिंदी आरो अंगिका कें विद्वान् कवि-कथाकार जायसवाल जीं अंगिका कविता बेसी नैं लिखने छोंत ; हिनी मूल रूपों में कहानीकार छेकात, तैयो हिनकों कयेक-टा अंगिका कविता 'अंग-माधुरी' में छपलों आरो 'अंग-लता' संकलनों में लागलों छै।

जायसवाल जी कें भाषा फरगुनी नाखी उड़ै छै। तद्गुण अलंकारों कें भीतर रचलों हिनकों 'बिहान' कें वर्णन कें रसास्वादन करियै --

"ललका अबीर लेपी भागलै भोरकवा, कि भेलै बिहान।
तान छोड़ै कोइलिया बगाने -बगान।
हियवा हिंगोर लाल भेलै सरंगवा रों,
जियवा फदाय लाल नदिया तरंगवा रों ;
हुलकै गोसैयाँ मकाने-मकान, कि भेलै बिहान।
तान छेड़ै कोइलिया बगाने - बगान।।" -- 'अंग-लता' सें।

सूर्यनारायण (श्री)

भारतीय संस्कृति कें अनुगायक श्री सूर्यनारायण जी कें जन्म १९३३ ई. में भागलपुर जिला कें एकचारी रेलवे स्टेशनों सें जरा हटी कें साहुपाड़ा दिग्घी में

होलों छै। हिनी अंगिका कें एक समर्थ कवि छोंत। हिनकों एक कविता-संग्रह 'सूर्यमुखी' प्रकाशित भेलों छै, जेकरों पहिलका संस्करा १९८८ ई. केरों छे कै। यै में 'मइया सरस्वती' आरो 'भारत मइया' सहित कुल ३९ कविता संकलित छैन्। आरंभ में डॉ० बेचन जी कें लिखलों गंभीर भूमिका छै, जै में हुनी 'सूर्यमुखी' कें विषय-वस्तु कें उद्घाटित करने छोंत।

'सूर्यमुखी' कें कवितासिनी में रचनाकार सूर्यनारायण जी नें कविता कें संबंध जीवनों सें जोड़ने छै। काल्पनिक चित्रों कें अपेक्षा वास्तविक जीवनों कें चित्र यैसिनी रचनाँ में बेसी छै। हिंदी कें द्विवेदी-युगीन कविता नाखी इतिवृत्तात्मक कविता कें माध्यमों सें रचनाकारों कें दृष्टि मर्मस्पर्शी बनलों छै। एक बनिहारों कें आत्मकथा में जहाँ एक दिस ओकरों जीवनों कें दुर्दिन दरसैलों गेलों छै वाँहीं दोसरों दिस आशा कें किरिनों छिटकैलों गेलों छै ; जेना कि --

"बाघों रङ माघों कें जाड़ा, दलकै छै हड्डी-हड्डी ;
केन्हों कें झाँपै छी देहों कें सीबी कें बोरा-चट्टी।

x x x x x x

समयँ पुकारै छै बान्हों कें मिली-जुली कें तोड़ें पड़तै ;
पियासलों खेतों कें सुराज कें धारों कें पड़तै।
तब्बें धरतीं लोरी गैतै, थिरकी उठतै खेत-खालेहान ;
स्वर्ग सें बढ़लों होतै है प्राणों सें प्यारों हिन्दुस्तान।।"

देखलों जाय कि राष्ट्रीय भाव-धारा आरो समाजों कें उत्थानों कें कत्तें सुंदर भाव अभिव्यक्त भेलों छै यै में । रचना में मानक अंगिका भाषा कें प्रयोग तें भेले छै, छंद-प्रवाहो बड्डी सुगम आरो सुबोध छै। येहें सुकवि सूर्यनाराया जी कें विशेषता छेकैन्ह। देशभक्ति, वीर-रस आरो प्रकृति-चित्रणों हिनकों कविता कें दोसरों विशेषता छेकै ; जेना --

"भारत माता कें लाज मेटें नैं देबै। झंडा तिनरंगा कें झुकें नैं देबै।।
कोय रावण आबें, आबें नैं पारें। सीता कें दामन पाबें नैं पारें।।
यै सीमा रेखा कें काटें नैं देबै। भारत माता कें लाज मेटें नैं देबै।।

कमला प्रसाद 'बेखबर' (प्रो०)

प्रो० कमला प्रसद 'बेखबर' कें जन्म पूर्णिया जिला कें धनपुरा गामों में १९३३ ई. में भेलों छैन्। हिनी हिंदी आरो अंगिका में रचना करै छोंत।

कवि 'बेखबर' जी जागरूक आरो संवेदनशील कवि छोंत। हिनकों अंगिका कविता भावों में सहज सघन होय छै। आभी ताँय हिनको कोय स्वतंत्र पुस्तक तें नैं देखला में ऐलों छैन्, मतरकि पत्र-पत्रिका में हिनकों रचना बरोबरे छपतें रहलों छै। बेखबर' जी एक गतिशील रचनाकार छेकात। हिनकों कविता में युगीन विचारों कें स्वर उभरलों छै। हिनकों व्यंग्य-प्रधान रचना मिट्ठों चुटकी नाखी लागै छै --

'हे रे साँप !
तों बड़ा दकियानूस छें !
पुरानों परंपरा में बसै छें
आरो साँप कें साँपें नैं डँसै छें ;
अरे, आदमी कें तें देख -- ऊ अपना कें
कतना आगू बढ़ैने जाय छै,
आदमी कें आदमीं खैने जाय छै !

-- 'आंगी', जनवरी, १९९६ ई.।

'बेखबर' जी कें कविता में सघलों-सधलों रसों कें नमूना मिलै छै। एक वीभत्स रसों कें चित्र देखों --

"आरो, ई नीचाँ में ठढ़ा-ठढ़ा ताकै छै,
पपड़ीदार ठोर सुखलों जीह लै कें चाटै छै।
पत्थल कें गोली रङ आँख छै ;
हाथ जेना रोआँहीन गीध केरों दू पाँख छै ;
देह जेना मसानों कें लकड़ी
जरलों सुखलों, आरो ऊ अभाव केरों मकड़ी,
सुखलों रोटी प्रेम सें चिबावै छै।''

-- 'अंग-माधुरी', जून, १९७३ ई.।

तेजनारायण कुशवाहा (डॉ०)

डॉ० तेजनारायण कुशवाहा कें जन्म हिनकों नानाजी कें गाँव सिंघाड़ी (जिला गोड्डा, थाना मेहरामा) में २४ अप्रिल, १९३३ ई. कें भेलों छै। हिनी हिंदी-संस्कृत में एम.ए., पी-एच.डी, डिप-इन-एड आरो साहित्यालंकार, आयुर्वेदाचार्य आदि कत्तें नी डिग्रीधारी छोंत। मातृभाषा तें भोजपुरी छेकैन्ह, मजकि अंगिका, हिंदी, संस्कृत, अँग्रेजी, बँगला, गुजराती, मराठी, नेपाली, उड़िया, मलयालम-आर कत्तें नी भाषा कें अच्छा या सामान्य जानकारी हिनका छैन्। हिनी हिंदी, अंगिका

आरो भोजपुरी कें ख्यातिलब्ध रचनाकार छेकात। अंगिका में हिनकों 'अंग-दर्शन' (१९७३ ई.) 'ओमा' आरो 'सवर्णा' (१९८४ ई.) नामों कें काव्य-कृति आरो कयेक-टा गद्य-कृति प्रकाशित छैन्। फुटकर कविता तें कत्तें नी प्रकाशित छैन् तथा रेडियो आरो दूरदर्शनों सें प्रसारितो होय चुकलों छैन्। हाल्है में हिनी हाई स्कूलों कें प्रधान अध्यापकों कें पदों सें सेवा-निवृत्त होय कें साहित्य-सेवा में लागी पड़लों छोंत आरो विक्रमशिला हिंदी विद्यापीठ, गान्धीनगर (ईशीपुर, भागलपुर) कें कुलसचिवों कें आसन सुशोभित करै छोंत। ऊ विद्यापीठ केरों स्थापना हिनके प्रयासों सें भेलों छै। हिनकों आपनों गाँव छेकैन्ह भंगाबान (कहलगाँव, भागलपुर), मतुर आबें ईशीपुर्है कें निवासी बनी गेलों छोंत। हिनी कत्तें नी साहित्यिक संस्थासिनी सें जुड़लों छोंत आरो कत्तें नी संस्थासिनी सें सम्मानित/पुरस्कृतो होय चुकलों छोंत।

कुशवाहा जी एक संवेदनशील आरो उदात्त विचारशील सुकवि तें छेबे करोंत, अंग-देशों कें ऐतिहासिक महत्ता कें प्रामाणिक उद्घाटन आरो अंगिका भाषा-साहित्यों कें समेकित उन्नयनों कें प्रति एक समर्पित व्यक्तियो छोंत। अंगिका भाषा-साहित्यों में हिनकों मंचीय आरो लेखकीय अवदान विशेष रूपों सें उल्लेखनीय छै। समग्र समरसता कें प्रतिपादक डॉ० कुशवाहा कें उपलब्धि कें सम्यक् मूल्यांकन समय पर जरूरे होतै।

'अंग-दर्शन' कुशवाहा जी कें अंगिका कें भौगोलिक काव्य-कृति छेकै, जेकरा में कहलों गेलों छै --

"युग-युग सें ई अंग-देश कें लोग अंगिका बोलै छै ;
ओही भाषा में हिनीसिनी रे भाव हृदय कें खोलै छै।"

'ओमा' एक वैदिक पुरा-कथा पर आधारित एक दूत-काव्य छेकै। एकरा में प्राकृत निश्चेतन पदार्थ (रात) सें दूतत्वों कें काम लेंलों गेलों छै।

'सवर्णा' महाकवि कुशवाहा जी कें युग-जीवी अप्रतिम अंगिका महाकाव्य छेकै, जेकरा में सौर-परिवारों कें पुराकथा आधुनिक अंगिका-भाषा में, विविध मनोहारी छंदों में रचलों, बड्डी प्रभावकारी रूपों में उतरलों छै। आरोसिनी कें छोड़ियो देलों जाय तें एक्के 'सवर्णा' महाकाव्य कुशवाहा जी कें पक्षों में 'नास्ति येषां यशःकाये जरामरणजं भयम्' कें चरितार्थ करै लें काफी छै। एकरा में त्वष्टा (विश्वकर्मा) -पुत्री सरण्यू (संज्ञा) आरो विवस्वत् (सूर्य) कें दाम्पत्यों कें पौराणिक कथा-सूत्रों कें सहारा लेतें होलों समर्थ रचनाकार कुशवाहा जी नें उदात्त चरित्र-

सौष्ठव, प्रांजल भाव-धारा, समृद्ध विचार-वैभव, सुष्ठु प्रकृति-सौंदर्य आदि कें लौकिक धरातलों पर उतारै कें जोंन सफल काव्य-कौशलों कें परिचय देने छै वैसिनी कें प्रशंसा में डॉ० माहेश्वरी सिंह 'महेश', डॉ० अभयकान्त चौधरी, प्रो० ओमा प्रियंवदा, विद्यावाचस्पति कुलदीपनारायण 'झड़प', डॉ० छविनाथ मिश्र, डॉ० उदयनारायण तिवारी, डॉ० विष्णुकिशोर झा 'बेचन', डॉ० विनय मोहन शर्मा, प्रो० भानुदेव शुक्ल, डॉ० नारायण प्रसाद बाजपेयी, प्रो० रामसागर प्रसाद सिंह प्रभृति विद्वानों कें अभ्युक्ति एका-पर-एक छै। कथा-वस्तु, भाव, भाषा, छंद, अलंकार आदि सब्भे दृष्टि सें 'सवर्णा' एक उत्कृष्ट काव्य-कृति छेकै, जेकरा में 'गागर में सागर' कें उक्ति चरितार्थ होय छै। ध्यातव्य छै कि यै महाकाव्यों पर कविवर कुशवाहा जी कें बिहार-सरकारों कें राजभाषा विभागों कें अलावा तीन दर्जन सें बेसी संस्थासिनी सें पुरस्कृत करलों गेलों छै। एकरा में विभिन्न छंदों कें प्रयोग नहला-पर-दहला बनलों छै। लोक-छंदों कें बहार तें 'सवर्णा' कें गीतसनी में चार चाँद लगाय देने छै -- 'गम-गम गमकै पिया, मंगिया कें सिंनुरा हो/झम-झम झमकै झुमका आय नु रे की। चम-चम चमकै बिंदिया चन्दन कें लिलरा हो/ छम-छम छमकै तिरिया आय नु रे की।'' (पृ. ३८)। सात 'किरणों' (खंडों) में रचलों यै काव्यों में स्थान-स्थान पर रूपक, प्रतीक, अलंकार आदि कें छटाओ खूभे निखरलों छै। "मौज सें रहलों तोरों तिया लहरों में''/"तबें रहतियै दोन्हू पानी कें तरों में'' (वक्रोक्ति), "तोरों रङ तोहीं एक रूपसि, सुंदरि/ मोंन गद्‌गद भेलै रूप पान करि'' (अनन्वय), "कोय किरातनी गोड़ मेंहदी लगाय/सेहो मेंहदी हमरो अँखिया समाय'' (असंगति), "यामिनी सरकलै/चाँदनी ढरकलै/जल हिलोरा उठै/चाँद छाया रुठै/गोद लेन्हें छहर/वैं मनावै लहर'' (प्रतीक) आदि उदाहरणस्वरूप लेलों जाय।

'सवर्णा' में कविवर कुशवाहा जी कें उदात्त संदेश छैन् --

"मैया, पटैतें रों भारत कें धरती,
बन-बाग-जंगल-नगर - गाँव - परती ;
हे सतपुरागिरि - विभा भगवती हे !
रोजे उतारों हमें आरती हे।।'' (५४) -- 'समीर'।

लखनलाल 'आरोही' (डॉ०)

भागलपुर नगर आरो गामों कें सीमान्तों पर बसलों बहादुरपुर गामों में जन्म पाबी कें वाँहीं आपनों बचपन बितैलकात आरो जवानी पैलकात डॉ०

लखनलाल 'आरोही' नें। हिनी हिंदी या अंगिका में बेसी कुछ नैं लिखलें छोंत, तैयो हिनकों जेसिनी कविता प्रकाश में ऐलों छै, हौ-सब अंगिका कें उपलब्धिये मानलों जैतै। हिनी आपनों एक-टा स्तरीय रचना 'नीन नैं आबै छै' में शीत-लहरों कें प्रभाव-क्षेत्रों में एक दिसिं अपना कें आरो दोसरों दिसिं दीन-दुखिया कें राखी कें कहने छोंत --

"मौसमे हवा में/ बरफ घोरी देने छै !
ठंढ केरों बाढ़/आबी गेलों छै/रात छै/
चारौ तरफ सन्नाटा छै।
हम्मू गरम कपड़ा में दुबकी कें/बिछौना पर
पड़लों छियै, लेकिन नीन नैं आबै छै ;
गाँव-घरों कें/ गरीबों कें यादें, हमरा सतावै छै।"

देवकीनन्दन 'बैरख' (श्री)

श्री देवकीनन्दन 'बैरख' एक शिक्षक-कवि छेकात। अंगिका-आन्दोलनों कें शुरुआती दिनों में हिनी श्री शारदा प्रसाद सैदपुरी कें साथें अंगिका कें प्रचार-प्रसार लेली अच्छा काम करने छोंत।

सैदपुर (नौगछिया) कें रहैवाला 'बैरख' जी अंगिका-कविता करै में प्रवीण छोंत। हिनकों कविता में समकालीन परिदृश्य देखै में आवै छै --

"नीचें-ऊपर पानी जोर, रहौं हम्में सड़कों कें कोर ;
नैं छै तनिको इँजोर, केकरों के पोंछतै लोर ?"

उचितलाल सिंह (स्व०)

अंगिका-कविता-सौध कें भरैवाला कविसिनी में श्री उचितलाल सिंह कें अवदान बहुत अधिक मानलों जाय पारें। भागलपुर जिला कें घोघा रेलवे स्टेशनों सें थोड़ो-टा हटी कें बसलों ताड़र गामों में ३० सितंबर, १९३६ ई. में पैदा होलों ई सुकुमार फूलों कें भगमानें कम्मे उमरी में १२ फरवरी, १९८५ ई. कें अपना कन बोलाय लेलकै।

श्री उचितलाल सिंह कें चार-टा कविता-पुस्तक निकललों छै -- 'पंचरंग चोल', 'माटी कें चेत', 'रौदा कें दूब' आरो 'कानै छै लोर'। 'पंचरंग चोल' केरों प्रकाशन बुद्ध-पूर्णिमा, २०२६ वि. (१९६९ ई.) कें होलों छै। ५१ पृष्ठों कें वै

किताबों में हुनकों २७-टा कविता छैन्। 'माटी कें चेत' केरों प्रकाशन १९७१ ई. में आरो 'रौदा कें दूब' केरों १९७५ ई. में भेलों छै। 'कानै छै लोर' हुनकों अंतिम कविता-पुस्तक छेकै, जेकरों प्रकाशन १९८४ ई. में भेलों छै आरो जेकरा में २४-टा कविता छै। वेहें रङ, ६० पृष्ठों कें 'माटी कें चेत' में ५८-टा आरो ४२ पृष्ठों कें 'रौदा कें दूब' में ३०-टा कविता संकलित छैन्।

स्व० उचितलाल सिंह लोक-संस्कृति आरो लोक-चेतना कें कवि छेलात। हुनकों गीत लोक-मानस कें सुंदर-सें-सुंदर अभिव्यक्ति सें भरलों छै। वैसिनी में स्वदेश-प्रेम कें अलावे अंग-क्षेत्रीय प्रकृति -- गाँव, नगर, जंगल, नदी, झरना, पहाड़, गाछ-बिरिछ, लता-गुल्म, धरती-सरंग, समुन्दर, पशु-पंक्षी, गरमी, बरसात, जाड़ा, साँझ-बिहान, फूल-फोंर आरनी कें सौंदर्य, पूजा-अर्चा, व्रत-त्योहार, लोक-देवता, लब्बों-पुरानों परंपरा, तंतर-मंतर, जादू-टोना ओगैरह कें मुख्य विषय बनैलों गेलों छै। कुछेक कविता कें विषय यौवन आरो प्रेम-प्रसंगो छेकै, जै में नारी-मोंन कें संयोग आरो वियोग शृंगार-भावों कें भाषा देलों गेलों छै।

श्री सिंह सच पूछों तें रस, अलंकार, गुण, वृत्ति, विंब आरो छंद कें उजागर करैवाला कवि छेलात। रसों में शृंगार, शान्त, करुण, हास्य आरो वीभत्स रसों कें मुख्यता हुनकों कविता में मिलै छै। यहाँ शान्त रसों कें आस्वादन करलों जाय --

"सूना सपाटों में, दूर खपाटों में,
युगों सें खाड़ों छै, गुमसुम चुपचाप --
ठुट्ठों निपत्तों एक गाछ बिकरार।" -- 'पंचरंग चोल', पृ.१९।

यै में बिना ठार-पत्ता कें एक गाछों कें योगी कें रूपों में खाड़ों रहै में शान्त रसों कें सुंदर योजना होलों छै। येहें रङ, शृंगार रसों में एक वासकसज्जा नायिका कें कौआ सें मिललों शुभ संदेशों कें लेलें होलों अभिव्यक्तियो दर्शनीय छै --

'हे रे कौआ,/तोरे समादों पर/पोछै छीं पीढ़ा,
खड़ाम/चपोतलों महकौआ मूँपोछ/राखै छीं अछीनों
जोंल/सब सरजाम झारै-बुहारै छीं/कोना-कातर मंदिर
कें/अछैतें दिनें/सँजौतें छीं मानिक-दियरा/चपोतै छीं
सुखलों बाती में/गैया कें घिउरा/कि जलतों निर्द्वन्द्व सगरे
रात/ओछाय छीं सेज/सहैजै छीं नैहर कें पठैलों सोहाग
सनेस/पसावै छीं/बीहों फाड़ी तेल। फूलै सिनूर खेखरा कें
बेल/डारै छीं कजरा दुफक्कों आँखी में।" -- 'कानै छै लोर'।

हमरों नजरी में, प्रकृति-चित्रणों में जे स्थान हिंदी में कविवर सुमित्रानन्दन पंत कें छै वहें स्थान अंगिका में उचितलाल सिंहों कें छैन्। सचमुच हुनी प्रकृति कें चितेरा छेलात। हुनकों हरेक कविता में घुरतें-फिरतें प्रकृति कें कोय-नें-कोय चित्र आबिये गेलों छै।

स्व० सिंह जी कें कविता में अनुप्रास, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, संदेह, लोकोक्ति, समासोक्ति, विभावना, मीलित आदि अलंकार अनायास भावों सें आबी गेलों छै जे कि बड़ा स्वाभाविक लागै छै।

स्व० उचितलाल सिंह जी अंगिका कें मर्मज्ञ कवि छेलात। हुनी अंगिका कें मिठास पर मुग्ध छेलात। आपनों भाषा कें साहित्यिक रूप दै में हुनी सफल होलों छोंत। हुनकों भाषा में प्रसाद आरो माधुर्य दोन्हू गुण मिलै छै। प्रसाद गुण तें हरेक कविता में छै। विशेषणों कें प्रयोगों में हुनका महारत हासिल छेलै -- सेहो बासी नैं, बिल्कुल टटका, आपनों ढंगों कें मौलिक। देखियै --

"अँखुवैलों गीत/मंजरैलों चित/लूवैलों तवा/निसुवैलों निसुवार ;
गाभिन मौसम, ओसैलों रौद/अनसैलों मोद,
कुहैलों रूप/लोरैलों धूप/ओझरैलों विचार ;
मटमैलों गाम/अलसैलों बाँहीं/तोतरैलों गान,
सुटियैलों, भुटकरलों, पोहैलों भान/बौंकड़ों चान ;
मरुवैलों खुट्टी/चिबैलों भुट्टी/निरौठों बोल,
कोरयैलों सुधिया/सोन्हैलों एङना/भुटकुरलों कैतका चान,
पियासलों धुरदा/गदरैलों जानवर/परबैती धूप/सोहागन बैहार ;
निनैली, अलसैली, अनसैली हवा'' आदि-आदि।

द्विवेदी सच्चिदानन्द 'श्रीस्नेही' (श्री)

द्विवेदी सच्चिदानन्द 'श्रीस्नेही' जी कें जन्म बाँका जिला कें अमरपुर थाना कें कौशलपुर (कोल बुजुर्ग) गामों में पहिली जनवरी, १९३६ ई. में होलों छै। हिनकों पिताश्री छेलात श्री मनमोहन दुबे आरो माताश्री छेलीत श्रीमती कालिन्दी देवी। 'श्री स्नेही' अंगिका लेली एक समर्पित व्यक्ति छेकोत।

'श्री स्नेही' जीं हिंदी आरो अंगिका दुहू में समान रूपों स रचना करै छोंत। 'इमारत की सूरत' (नाटक) आरो 'गूंज हिमालय की' (काव्य) हिनकों हिंदी-पुस्तक तथा 'गीत गामों कें' आरो 'गीत-नाद' अंगिका कविता-पुस्तक प्रकाशित छैन्।

'गीत गामों के' (१९७८ ई.) केँ कुल ४३ पृष्ठों में हिनकों ३७ गीत संकलित छै आरो आरंभ देवी केँ मनौन सें भेलों छै। वेहेँ रङ, १९८४ ई. मे प्रकाशित आपनों 'गीत-नाद' में पारंपरिक अंगिका गीत संगृहीत छै। लोक-धुनों केँ लब्बों जिनगी दै लेली गीतकार श्री स्नेही जीं है किताबों केँ प्रकाशन करने छेँत जे कि स्वागत केँ योग्य छै।

'गीत गामों केँ' केरों विषय लोक-जीवनों केँ अंग-प्रत्यंग छेकै। अंग-क्षेत्रों केँ लोक-जीवनों केँ सही-सही प्रतिनिधित्व एकरा में संकलित गीतसनीं करै छै, जे कि यहाँकेरों प्रकृति, समाज आरो संस्कृति सें जुड़लों छै। यै में हासं, परिहास आरो उल्लास स्वाभाविक रूपें अभिव्यक्त भेलों छै। एना तें कहलों जाय कि 'गीत गामों केँ' मूल रूपों में प्रकृति केरों कविता-संकलन छेकै, जेकरा में प्रकृति केँ यथातथ्य रूप, उद्दीपन-रूप, अलंकृत रूप आदि सहज भावों सें उरेखलों छै। जग्घों-जग्घों पर उपमा, अनुप्रास, रूपक, पुनरुक्ति आदि अलंकारो केँ सुंदर उपयोग भेलों छै -

"झलमल झरोखा केँ झालर नाकी
अँचरा डोलै धानों केँ" (अनुप्रास) ;

"सीसी तुतरू, धम-धम ढोलक, झम-झम माँजर झाल,
नीलों अकासों केँ पीन्ही चुनरिया गोछी चललि ससुराल"।

अनुकरणवाचिका पुनरुक्ति केँ कत्तें सुंदर उदाहरण उपस्थित भेलों छै, यै पदों में, देखलों जाय।

'गीत-नाद' किताबों में 'मनौन' केँ अलावे लोक-भजन, पराती, कजरी, बरखा, झूला, झूमर, रास, चैतावर, गोदना, बोलवै, जँतसार, सोहर, गोसाँय, मुड़नों, जनी-गीत, लगन, बेटा समदन, परछन, कन्या निरछन, अठोंगर, सिनुरदान, डकहनू, गारी, कोहबर, बेटी समदन, लोरी, छठ, होरी, रोपनी, कटनी, करमा, बारहमासा, उटका-पैंची, निर्गुन, बिसहरी धुन ओगैरह सें संबंधित नाना प्रकारों केँ गीत छै, जे कि सोझे लोक-जीवन आरो लोक-संस्कारों सें संबंधित छै। यैसिनी में कत्तें नी गीत आकाशवाणी, भागलपुर सें प्रसारित होय चुकलों छै। इहाँ एकटा 'झूमर' गीतों केँ रसास्वादन करलों जाय --

"नदिया केँ धार बीच गोरियाँ गगरिया पनिया भरै।
फुनगी पै सोभै लाल लाली रे किरनियाँ,
नदिया केँ माँग भरै मुसकै जवनियाँ ;
चुनरी रँगाय लाल, लौनियाँ उँगलिया मेंहदी रचै।

x x x x

तिरछी नजरिया सें बोरैलै मनमा,
देखै जवनियाँ तें सुंदर सपनमा ;
छम-छम नाचै सजनियाँ पैंजनियाँ हौले बजै।
नदिया कें धार बीच गोरियाँ गगरिया पनिया भरै।।''

येहें रङ, आरो कत्तें नी लोक-जीवनों कें मुग्धकारी चित्र 'गीत-नाद' कें गीतसिनी में उभरलों छै। 'श्रीस्नेही' जी एक सधलों लोक-कलाकार छेकात, यै में कोय दू-मत नैं।

नरेश पाण्डेय 'चकोर' (डॉ०)

अंगिका भाषा-साहित्यों कें विकास आरो संवर्द्धन लेली समर्पित डॉ० नरेश पाण्डेय 'चकोर' कें जन्म ३ जनवरी, १९३८ ई. कें भागलपुर जिला कें एक गामों में होलों छै। सांख्यिकि-जेन्हों रूखों विषयों में स्नातकोत्तर उपाधिधारी होल्हों पर हिनका में एक संवेदनशील कवि हृदय आरो अंगिका कें प्रति अपूर्व समर्पण-भावना छैन्। पिछलका २७ सालों सें हिनी आपनों बलों पर 'अंग-माधुरी' मासिक पत्रिका कें संपादन आरो प्रकाशन करतें होलों अंगिका लेली ऐतिहासिक कीर्तिमान स्थापित कैने छोंत। विक्रमशिला हिंदी विद्यापीठ, ईशीपुर (भागलुपर) नें हिनका 'विद्यावाचस्पति' (पी-एच. डी.) कें मानद उपाधि सें सम्मानित करने छै।

'चकोर' जीं अंगिका में कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, निबंध, लोक-साहित्य आदि कत्तें नी विधा कें छूने छोंत। हिनकों लिखलों किताब दू दर्जनों सें बेसी प्रकाशित होय चुकलों छै; 'भोरकों लाली' (१९७२), 'किसान : देशों कें शान' (१९८३), 'ययाति' (१९८८) -आर वैसिनी में मुख्य-मुख्य किताब छेकै। हैसिनी हिनकों कविता-पुस्तक छेकैन्ह। 'भक्ति-पुष्पांजलि' में हिनकों हिंदी कें साथें कुच्छू अंगिकाओ कें गीत आरो भजन संकलित छै। हिनकों कुछेक भजन 'राम-जन्मोत्सव' किताबों में छपलों छै। लोक-साहित्य संबंधी कयेक-टा किताब हिनी डॉ० अभयकान्त चौधरी कें साथें मिली कें प्रकाशित करवैलें छोंत। आपनों 'शेखर प्रकाशन' (बोरिंग रोड पच्छिम, पटना) आरो 'अंग-माधुरी' (मासिक पत्रिका) कें माध्यमों सें कत्तें नी अंगिका-साहित्यकारों कें प्रकाश में लानै कें श्रेय 'चकोर' जी कें प्राप्त छैन्। ई हिनकों जीवनों कें एक विशिष्ट उपलब्धि मानलों जाय पारै छै। हिनकों रचनाधर्मिता कें महत्व साहित्यिकता सें बेसी ऐतिहासिकता संबंधी छैन्ह।

'भोरकों लाली' प्रकृति केरों कविता छेकै। यै में भोरकों लाली कें ४८-टा विंब छै। है किताबों कें बारे में डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव जी नें लिखने छै -- 'निस्संदेह प्रस्तुत मुक्तक-काव्य अंगिका भाषा की भाव-सुकुमारता, मनमोहक विंब, मुक्त चिंतन तथा वैचारिक क्षमता को एक साथ ग्रहण करता है।'' हुनकों यै किताबें अंगिका कें गद्य-गीतों कें परंपरा कें मार्ग खोलै छै।

किसान : देशों कें शान' 'चकोर' जी कें समय-समय पर लिखलों कवितासनी कें संग्रह छेकै। है किताबों कें शीर्षके सें एकरों वर्ण्य विषय स्पष्ट होय जाय छै। लागै छै कि ई कृषि-विज्ञान या कृषक-जीवनों कें कोय पुस्तक छेकै, मतुर भीतरों के पन्ना खोललां पर एकरा में काव्य-रस मिलै छै। किसान, किसानों कें माटी या किसान-जीवनों सें जुड़लों कविता यै में बेसी करी कें रहला कें कारणें एकरों नाम किसान : देशों कें शान' ठीक छै। एकरा में कुल २७-टा कविता छै। विषय-वस्तु, गायन, शैली आरो प्रभाव कें दृष्टि सें सब-टा कविता सराहै लायक छै।

'ययाति' कें रचना-प्रक्रिया में इतिवृत्तात्मकता छै। यै में नैं तें नहुष कें, नै तें देवयानी कें आरो नैं तें शर्मिष्ठा कें चरित्र आपनों ढंगों पर उभरलों छै। वस्तु-संयोजन में लालित्य आरो माधुर्य कें अभाव अखरै छै। एक बात येहों कि एकरा में जे कोनो छंदों कें उपयोग भेलों छै, सबभे में यति, गति आरो मात्रा कें टूट छै। तैयो, 'ययाति' कें रचना सें, श्री अनिल चन्द्र ठाकुर कें प्रबंध-कृति 'कच' नाखी, अंगिका कें है विधा कोय रङ पूरै छै।

'चकोर' जी अंगिका कें अप्रतिम आरो बहुमुखी रचनाकार छोंत। 'भोरकों लाली' कें रूपों में हिनकों देन अंगिका कविता-साहित्यों कें इतिहासों में सदाय बनलों रहतैन्ह।

'चकोर' जी कें 'किसान' कविता कें एक पद लेलों जाय --

"आभियों जों नैं चेतभें, अन्न बिना भूखें मरभें।
'चकोर' कें सहारा चान ; हम्में ते छेकाँ किसान।।"

सुमन सूरो (महाकवि)

लोक-चेतना कें उजागर करैवाला कविसिनी में अग्रगण्य श्री सुमन सूरो जी कें जन्म ३१ दिसंबर, १९३८ ई. कें बाँका जिला कें बौंसी थाना केरों गोलहट्टी गामों में होलों छै। हिनी अंगिका भाषा-साहित्य कें क्षेत्रों में भारी ख्याति अर्जित

करने छोंत। विक्रमशिला हिंदी विद्यापीठ (ईशीपुर, भागलपुर) नें हिनका 'महाकवि' कें विशिष्ट मानद उपाधि सें सम्मानित कैने छै।

कविवर सूरों जी कें अंगिका-कृति में 'पनसोखा', 'सती-परीक्षा', 'सुभद्रांगी', 'रूप-रूप प्रतिरूप' आरो 'उर्ध्वरिता' उल्लेखनीय छैन्। यैसिनी में 'पनसोखा' आरो 'रूप-रूप प्रतिरूप' हिनकों स्फुट कविता-संकलन, 'सती-परीक्षा' आरो 'उर्ध्वरिता' प्रबंध-काव्य तथा 'सुभद्रांगी' उपन्यास विधा कें अंतर्गत आवै छैन्।

'पनसोखा' कें पहिलों संस्करण हमरा देखै में नैं ऐलों छै, मतुर ओकरों दोसरों संस्करण (१९७३ ई.) कें अंतरंग चर्चा सें पता चलै छै कि ओकरों पहिलों संस्करण १९७३ ई. सें १०-१२ साल पहिनें छपलों होतै। दोसरों संस्करणों में हुनी लिखलें छोंत - "नयी 'पनसोखा' में पुरानी 'पनसोखा' की बहुत-सी चीजें छोड़ दी गई हैं तथा कुछ नयी रचनाएँ शामिल की गई हैं।'' यै किताबों में अंतिम कविता 'पनसोखा' लै कें कुल ५१ कविता छै। आरंभ सरस्वती माय कें मनौन-गीत सें भेलों छै --

"मैया हे, तोरों हमें करै छीं मनाओन,
ज्ञान-गृहवासिनी हे।''

यै किताबों में 'पनसोखा' कें रंगे नाखी नाना भाव-विचारों आरो रूप-रंगों कें कविता लागलों छै। हम्में कहियो आपनों एक आलेखों में सूरो जी कें एक भाव-गीति-लेखक कहने छेलियै। सच्चो, हिनकों 'पनसोखा' आरो पिछलका 'रूप-रूप प्रतिरूप' कें रचनासिनी भाव-गीतों कें कोटि में आवै छै।

'सती-परीक्षा' हिनकों खंड-काव्य छेकै। यै में सीता-वनवासों कें कथा कहलों गेलों छै जे कि आठ सर्गों में समाप्त होलों छै। वैसिनी आठो सर्ग छेकै -- वाल्मीकि आश्रम में सीता, अशोक वनिका में सीता, बुतरू लव-कुश, भैयारी बातचीत, नैमिष वन में अश्वमेध जग्य, गाबों काव्य बजाबों बीन, लव-कुश कें रामायण गान आरो सती-परीक्षा। यैसिनी सर्ग-नाम्है सें है खंड-काव्यों कें विषय-वस्तु स्पष्ट होय जाय छै, जे कि एक पौराणिक आख्यानों पर आधारित छै ; मतुर राम कें चरित्रों में एक नया सोचों कें संचार भेलों छै, जे कि सूरो जी कें मौलिक उद्‌भावना मानलों जाय पारें। पुष्ट भाव-पक्षों में आयकों सोचों कें स्थान मिललों छै यै में। यै विचारों सें हिंदी कें महाकवि 'हरिऔध' जी कें 'वैदेही-वनवास' कें तुलना में जे छुटलों छै हौ 'सती-परीक्षा' में छै। यै में खंड-काव्यों कें प्राय: सब्भे लक्षणों कें निर्वाह होलों छै। 'कच' आरो 'ययाति' कें अपेक्षा 'सती-परीक्षा' एक सफल खंड-काव्यों कें कोटि में आवै छै।

'उध्वरिता' महाकाव्यें सूरो जी कें नामों कें साथें जुड़लों 'महाकवि' उपाधि कें सार्थक करै छै। ई हुनको नवीनतम प्रबंध-काव्य छेकैन्। कुल १२५ पृष्ठों कें अठारों सर्गों में समाप्त होलों है प्रबंध-काव्यों कें प्रकाशन १९९६ ई. में भेलों छै ; पहिलों खंड 'पुरोवाक्' में एक सें तीन, दोसरों खंड 'उध्वरिता' में चार सें बारों आरो तेसरों खंड 'लोकान्तर' में तेरों सें अठारों सर्ग छै।

कविवर सूरोकृत 'उध्वरिता' अंगिका कें बृहत्त्रयी महाकाव्य-- डॉ० कुशवाहाकृत 'सवर्णा', डॉ० अमरेन्द्रकृत 'गेना' आरो श्री सुमन सूरोकृत 'उध्वरिता' -- में परिगणनीय छै। एकरों कथावस्तु कें उपजीव्य महाभारत छेकै। महाभारतों में पसरलों भीष्म पितामहों सें समीकृत प्रसंगों कें एक नियमित कथा कें रूप देबों आरो ओकरा छंदबद्ध करबों एक असाधारण बात छेकै। यै में नैं खाली वस्तु-संयोजनों में कवि कें अपेक्षित सफलता मिललों छै, बलुक भीष्म पितामह आरो अवान्तर-कथा सें संबंधित पात्रसिनी कें चरित्रो कें उजागर करै में हुनका सफलता मिललों छै। वस्तुतः, एकरा में एक युग-विशेष में मानव-चेतना कें प्रसार-संकोचन आरो ओकरों द्वन्द्वों कें अभिव्यक्ति दै कें चेष्टा करलों गेलों छै। ई दृष्टि सें 'उध्वरिता' चिंतन आरो दर्शन कें महाकाव्य छेकै। यै में कुच्छू ऐनहों स्थल छै जहाँ कवि कें लब्धों उद्भावना कें दर्शन होय छै ; जेना कि -- अंग-देशस्थित मंद्राचल जाय कें अर्जुनों कें माय दुर्गा कें गुहार करबों, जबें कि महाभारत (भीष्म-पर्व २३/४-१९) में हौ पूजा-स्थल भिन्न छै। सर्ग आरो छंद कें दृष्टि सें 'उध्वरिता' में महाकाव्यों कें पूरा निर्वाह होलों छै।

महाकाव्यों कें वर्ण्य विषयों में प्रकृति-चित्रण आवै छै। 'उध्वरिता' में प्रकृति कें विभिन्न रूपों कें चित्रण/वर्णन स्थान-स्थान पर अच्छा होलों छै। प्रकृति कें मानवी आरो अलंकृत दोन्हू रूप है महाकाव्यों में निखरलों छै ; काँहीं-काँहीं प्रकृति कें उग्र रूपो चित्रित भेलों छै। अलंकार कें भाषा में जीवन कें साथें प्रकृति कें सटीक रूपांकन देखलों जाय --

"उतरी ऐलै दमचुरुवों अधबैसू पूस महीना।
वन-वन के गाछीं चढ़लै पितमरुवों जरठ बुढ़ारी।
वै लोकों कें चिन्ता जेना ताकै छै सरङों कें ;
झरझराय गेलै जिनगी केरों हरियरका पत्ता।"
'झिहिर-झिहिर पसरै बतास में बेलस एक उदासी ;
सुसुवावै छै सिहिर-सिहिर सिहरी-सिहरी बसबिट्टी।

जेना कट्ठर दिल अन्यायी नें अन्याय करी कें,
लूटी सब सिंगार गाँव-कें-गाँव उजाड़ करलकै।''

येहें रङ, प्रकृति कें व्याख्यायित रूप ढेरे मिलै छै यै प्रबंध-काव्यों में। यै सें अर्थ-बोध सरल-सुगम होय गेलों छै। यै महाकाव्यों में प्रकृति कें संश्लिष्ट रूपों कें अलावे नाम-परिगणन-परंपराओ कें जोगलों गेलों छै --

''मंजर - मकूल कें गंध हवा कें छाती पर,
महुआ - कटहर - चम्पा वनबेला उफनैलों।''

'उध्वरिता' त्रासदी-महाकाव्य छेकै। एकरों पहिनें अंगिका में एक-टा आरो त्रासदी-महाकाव्य ऐलों छै -- गेना'। दुन्नो करुण रस-प्रधान छै। अंगी रसों में शान्त, वीर, वीभत्स आरो शृंगार 'उध्वरिता' में ऐलों छै। यै प्रबंध-काव्यों कें सूझ-बूझ आरो प्रवाह स्तुत्य छै।

चन्दरदास (श्री)

अंगिका काव्य-साहित्यों कें विकास में संत-महात्मा आरनीयो कें योगदान रहलों छै। हुनकासिनी में संत चन्दरदास एक ऐन्हों नाम छेकै जिनी अंगिका-भक्ति-काव्यों कें भरै-पूरै में आपनों योगदान कैने छोंत। हुनका पर विशेष शोध होना चाहियों। यहाँ शान्त रसों सें सिक्त हुनकों एक कविता कें एक अंश प्रस्तुत छै --

''नैहरा सें हम जैबै ससुररिया जहाँ बसै कंत हमार हे।
नहिं पिन्हबै सिनुरा, नहिं पिन्हबै कजरा,
नहिं कुछू करबै सिंगार हे।
ई सब उनहू कें मन नहिं भावै,
गुरु मोरा करला विचार हे।
जब हम चलि भेलाँ पिया कें नगरिया,
बाटें भेंटल बटमार नें हे।'' इत्यादि।

-- चन्दरदासकृत 'भजन-माला' (भाग-१) सें।

प्रीतम कुमार 'दीप' (श्री)

श्री प्रीतम कुमार 'दीप' कें जन्म कटिहार जिला कें बरारी में १९३६ ई. कें सितंबर महीना में भेलों छै। हिनी अंगिका आरो हिंदी में कविता आरो नाटक लिखै छोंत। हिनकों प्रकाशित रचनासिनी में 'अरमान' (हिंदी कविता-संग्रह)

'एक लोटा पानी' (हिंदी नाटक), 'दर्दे जिगर' (हिंदी शे'र आरो रुबाई) उल्लेखनीय छै। हिनको 'गीत-माधुरी' (भाग १ आरो २) छोटों-टा गीत-पुस्तिका छेकै। हिन्ने १९९७ ई. में हिनकों कविता-संकलन 'जैबै अंग-देश' निकललों छै।

'दीप' जी कें कविता मानव-मूल्य आरो यथार्थ-बोध सें जुड़लों मिलै छै। सब्भे कविता लोक-धुनों में रचलों गेलों छै। 'घरों कें हाल' नामों कें हिनकों कविता कें एक पद देखों --

"आज-कालों कें बेटी भेलै अभिशाप,
दंस-दस हजार माँगै बेटा कें बाप !
दू बेटी छौन, शादी कें योग,
उँगली देखाय छौन गामों कें लोग !
पेटों में अन्न नैं, तन फटेहाल !
की कहियौन समधी ! घरों कें हाल !!"

मतिकान्त पाठक 'मधुव्रत' (डॉ०)

डॉ० मतिकान्त पाठक 'मधुव्रत' भावों कें कवि छथिन। हिनकों गाँव छेकै भदरिया, जहाँकरी सवासिन छलथिन बौद्धकालीन विशाखा आरो सामा। भदरिया वहें गाँव छेकै जे बुद्ध-युगों में 'भद्दिय' कहलावै रहै। हौ गौरवों कें याद दिलावै छेलात 'मधुव्रत' जी, १ सितंबर, १९३८ ई. में अवतरित होय कें ; किंतु, नियति कें निठुरता नें पिछलका साल ऐन्हों प्रतिभाशाली कवि कें उठाय लेलकै।

'मधुव्रत' जी संस्कृत, हिंदी आरो अंगिकाओ में कोमलकान्त पदावली रों रचना कैने छोंत। हुनकों अंगिका रचना 'अंग-माधुरी' पत्रिका में छपलों मिलै छै। एक-आध संग्रहो में हुनकों रचना ऐलों छै। हुनकों कविता में खाली अंग-क्षेत्रे कें नैं, बलुक सौंसे भारतीय संस्कृति कें उजागर करैवाला विचार प्रगट होलों छै : भाषा रस आरो अंलकार-मंडित छै।

'एकटा चिट्ठी शरणार्थी बंग-बंधु कें नाम' कविता में संवेदनशील कवि-हृदय 'मधुव्रत' जी कें उद्‌गार देखियै --

"की करलों जाय, मीता !
की ढोते रहभें/यादों रों मलकाठ ?
सहथे रहभें/यादों कें साँपिन कें डसान ?
जे गेलों/ओकरा साथें की ?

जीयों / ऊ ननबुटना बिरना कें लेल
जे तोरे लहुओं-खाद पर/जनमलों छौं,
ऊ तोरा अबस्से दै देयौं/छाजा-बाजा-केस
आरो/सोना रों बँगला देश !''

विनय प्रसाद गुप्त (श्री)

श्री विनय प्रसाद गुप्त कें जनमडीह कहलगाँव कें गान्धीनगर महल्ला छेकै। वाँहीं ५ जनवरी, १९३९ ई. कें दिन श्री सत्यनारायण साह आरो श्रीमती विमलाबाला साहा कें सुपुत्रों कें रूपों में हिनकों जनम भेलों छै।

विनय जी 'अंग-माधुरी'; 'आंगी' आदि पत्रिका में छपतें रहै छौंत। 'आठ समन्दर आँख' अंगिका काव्य-संकलनों में हिनकों कविता छपलों छै। हिनी जीवनों कें प्रकृति कें साथें जोड़ी कें चलै छौंत। 'संदेश', 'मुट्ठी भर जाड़ा', 'सावन', 'भरलों सावन' आदि कविता मैं विनय जी कें कविता कें येहें रूप देखै में आवै छै।

"भैया, चलों धूलों पर/डारी कें शूलों पर ;
कैन्हें कि शूले छेकै/मूल ओकरों सार छेकै --
फूल एकरों फोंर;/फूलों कें बारे में सोचना की ?
ओकरा समझनौ की ?/ जे गन्धे कें साथें खतम होय जाय छै।''
-- 'आठ समन्दर आँख' सें।

परमानन्द लाल (श्री)

श्री परमानन्द लाल गाम सुँड़नी (थाना मेहरामा, जिला गोड्डा) में १५ जनवरी, १९४० ई. कें अवतरित होलों छौंत। हिनका में कवि-भाव बचपन्हैं सें विद्यमान रहै, जे कि समय पर फुटलै। हिनकों 'पुरुरवा रों संताप' शीर्षक अंगिका कविता देखी कें महाकवि 'दिनकर' जी बड्डी मुग्ध होय गेलों रहोंथ आरो डॉ० माहेश्वरी सिंह 'महेश' कें सामना में कवि, कविता आरो अंगिका कें गौरवों कें बखान कैने छेलात।

'पुरुरवा रों संताप' कें प्रकाशन १९६९ ई. में उच्च विद्यालय, ईशीपुर कें विद्यालय-पत्रिका 'बेला' में होलों रहै। ओकरा में पुरुरवा आरो उर्वशी कें वैदिक कथा बड़ा सुंदर ढंगों सें सोहर छंदों में कहलों गेलों छै। उर्वशी काव्य-परंपरा में वै कविता कें महत्वपूर्ण स्थान छै। एकरों भाव आरो भाषा सोहर छंदों कें अनुकूल छै।

"रूप-गुण आगरी समैया के विभावरी
देवपुरी अजूब लागै हे।
ललना विधना रों अनुपम रचना
विरचना में रति भागै हे।
छपाछप सुनी कें आ जियरा में गुनी कें
की सेहे छेकै उरबसी हे ?
ललना सेहो राजा उठलै पुकारी कें --
'उरवसी, उरवसी' हे।''

-- 'करील कादम्बिनी' सें।

गोपाल कृष्ण 'प्रज्ञ' (श्री)

श्री गोपाल कृष्ण 'प्रज्ञ' जी कें जन्म ओलपुरा गामों में होलों छै, मतुर हिनकों स्थायी निवास बाथ (थाना शाहकुण्ड) छेकैन्ह। हिनकों झुकाव बचपन्है सें साहित्य-रचना दिसिं रहलों छै, कैन्हें कि हिनकों पूरा परिवारे कवि, लेखकों सें भरलों रहलों छै। हिंदी, संस्कृत, अंगिका आरो बँगला कें ख्यातिलब्ध रचनाकार उमेश जी कें दोसरों पुत्ररत्न 'प्रज्ञ' जी बहुमुखी प्रतिभा कें धनी साहित्यकार छोंत।

'प्रज्ञ' जी कें प्रकाशित अंगिका काव्य-पुस्तकसिनी में 'ज्ञान-गंगा', 'गान्धी-चरित' (१९९० ई.) आरो 'आनन्द-मंगल' (१९९२ ई.) उल्लेखनीय छै। 'ज्ञान-गंगा' कें विषय-वस्तु केरों परिचय एकरों शीर्षक्है सें मिली जाय छै। 'गान्धी-चरित' में विष्णु-स्तुति, कर्मचंद, पुत्तलिका, सुदामापुरी, पटेल, कस्तूरबा गान्धी, गोडसे, चतुष्टय, साबरमती, बानर, प्रयान आरो उपदेश शीर्षकों सें कविता लागलों छै। महात्मा गान्धी जी कें समझै-बूझै आरो हुनकों आदर्शो कें अपनावै खातिर है पुस्तक बड़ा उपयोगी छै। संगें-संगें आरोसिनी चरित-नायकों कें परिचयो है पुस्तकें दै छै।

सुकवि 'प्रज्ञ' जी कें तेसरों काव्य-पुस्तक 'आनन्द-मंगल' (पृ. सं. ८४) में 'दुर्गा प्राकट्य' आरो 'काली प्रकाट्य' लै कें अन्य तेरों कविता विवाह-कथा संबंधी छेकै। विवाह-कथा कविते में कहलों गेलों छै। एकरा में शिव जी, श्रीराम, राधा, रुक्मिनी, यशोधरा, बिहुला, वासवदत्ता, उषा, तुलसी, द्रौपदी, संयोगिता आरो भानुमति कें विवाहों कें वर्णन छै।

'आनन्द-मंगल' आनन्द आरो मंगल कें काव्य छेकै। सुकवि 'प्रज्ञ' जी आयकों भाव-भूमि पर ई रचना कैने छोंत। रचना पद-शैली में होलों छै। भाषा में अंगिका कें मानक रूप प्रयुक्त छै।

'प्रज्ञ' जी कें काव्य-कृतिसनी सें लागै छै कि हिनी एक अध्यात्मवादी कवि छेकात। हिनकों काव्यों में अध्यात्म कें संदेश निहित छै। सुनीति आरो शुद्धाचरण कें पाठ पढ़ैबों हुनकों रचना कें मुख्य स्वर छै। हिनकों 'देश पर अभिमान' कविता कें एक अंश --

"हिंसा कें ज्वाला सें धधकै विश्व-वनी विकराल ;
जखनी देखों तखनी मारै ठोकी-ठोकी ताल।
आडम्बर ऐलै धर्मों में, बुरा सभै कें हाल ;
वैभव छोड़ी घर सें निकली बनलै ... ढाल।"

सधलों छंदों में आपनों भावों के भाषा कर्तें नीकों देलों गेलों छै।

गौरी शंकर तिवारी (श्री)

श्री गौरीशंकर तिवारी कें जन्म सलेमपुर (भागलपुर) में १ जवरी, १९४१ ई. कें होलों छै। कविता करै में आरो ज्योतिषों कें चर्चा करै में हिनकों मोंन खूब लागै छैन्ह।

तिवारी जी कें कविता 'अंग-माधुरी' आदि पत्रिका में छपतें रहै छै। हिनकों कविता में स्वानुभूति आरो प्रकृति कें रंग-रंग कें विंब झलकै छै।

"सगरे शोभा, सगरे मस्ती, सबकें मन में भरलों हुलास ;
अनुराग मिलन कें बेला में, वनवासी योगी छै पलास।"

-- 'वनवासी' कविता सें।

मधुसूदन साहा (डॉ०)

१५ जुलाई, १९४० ई. कें गोड्डा जिला कें धमसाई गामों में जनमलों डॉ० मधुसूदन साहा जी अखनी राउरकेला इस्पात संयंत्रों में राजभाषा-अधिकारी कें आसन सुशोभित करै छोंत। हिनी हिंदी कें एक ख्यातिलब्ध कवि आरो लेखक छेकात, मतुर आपनों मातृभाषा अंगिकाओ में कुछेक रचना कैने छोंत आरो आय-काल उड़िया-साहित्यों कें खास-खास रचनासिनी कें अनुवाद हिंदी में करै में आपनों प्रतिभा कें उपयोग करी रहलों छोंत। हिनकों शिक्षा-दीक्षा अंगिका कें

केन्द्रस्थल भागलुपर नगरों में भेलों छै। एक बेर गोड्डा में जनतंत्र-दिवस कें अवसरों पर जबें कवि-सम्मेलन होलों रहै तबें हिनी १९५७ ई. कें सुखाड़ संबंधी जोंन अंगिका कविता पढ़लें रहोंत ओकरों तारीफ कविवर बुद्धिनाथ झा 'कैरव' नें बड्डी खुश होय कें कैने रहै। 'आंगी' (भागलपुर) कें पिछलका 'कविता-विशेषांक' में हिनकों एक-टा अंगिका नवगीत छपलों छै -- 'अबकी बितलै फेरू रोहिनियाँ, कहिया पड़तै पानी ?''। 'आंगी' सें जुड़ला कें बाद साहा जीं अंगिका में कुच्छू लिखै कें मोंन बनैलें छोंत -- पाँच-छों-टा नवगीत, दोहा आरो मुक्तक लिखबो करने छोंत। उपरलका कविता कें आखरी पद छेकै --

"केकरों श्राप गाम पर पड़लै, मचलै घोर तबाही ?
मौसम हाथों में लै सूरज देलकै झूठ गवाही !
चारो तरफ मौत बौरैलै, चलै हवा तूफानी ;
अबकी बितलै फेरु रोहिनियाँ, कहिया पड़तै पानी ?''

-- 'आंगी' ५/९, जनवरी, १९९७ ई.

सुरेश मंडल 'कुसुम' (स्व०)

श्री सुरेश मंडल 'कुसुम', विद्यावाचस्पति कें जन्म गाम पबई (अंचल अमरपुर, जिला भागलपुर) में २ जनवरी, १९४१ ई. कें होलों रहै, मतुर दुक्खों कें बात कि हुनकों निधन ११ जुलाई, १९८५ ई. कें होय गेलै।

'कुसुम' जी हिंदी आरो अंगिका में रचना करै छेलात। हुनकों साहित्यों कें मुख्य विषय कहानी रहै, मतुर हुनकों कुच्छू अंगिका कविता 'अंग-माधुरी' में छपलों मिलै छै। हुनकों कविता में विचार-प्रमुखता देखलों जाय छै जबें कि कुछेक कविता शृंगार आरो शान्त रसों कें छै। 'निहोरा' कविता में फागुन कें संदर्भ में आपनों परदेशी पाहुन कें घोंर घुरी आवै लें नायिका सें निहोरा करवैलों गेलों छै --

"सूनों छै घर-आँगन छप्पर-छाजन,
ऐलै फागुन घुरी आवों साजन !
ठठाय कें हाँसै कोंढ़ी-कुथरी,
मारै ताना बिहैली फुलवारीं।
चम्पा चमेली लागै राजन,
ऐलै फागुन घुरी आवों साजन !''

लक्ष्मण प्रसाद यादव 'बेलहरिया' (श्री)

श्री लक्ष्मण प्रसाद यादव 'बेलहरिया' कें जन्म १० जनवरी, १९४१ ई. कें बेलहर (बाँका जिला) में होलों छै। हिनी अंगिका आरो हिंदी में कविता करै छोंत। 'कविश्री' कें उपाधि सें सम्मानित हिनकों अंगिका कविता 'अंग-माधुरी', 'अंगप्रिया', 'प्रिय प्रभात' आदि में छपतें रहै छै।

'बेलहरिया' जी कें एक-टा काव्य-कृति 'कहभौं सच तें लागतहौं भक' १९९४ ई. में छपलों छै। यै में कुल ७२ पृष्ठों में हिनकों ४४-टा कविता छै। वैसिनी कविता में आयकों सच आरो सोच कें संदर्भों में सामाजिक विषमता, तिलक-दहेज, परिवार-कल्याण, अंधविश्वास, बेकारी, बेरोजगारी, महँगी, झगड़ा-झंझट, फैशन, लोकतंत्रों कें मखौल आदि कें चर्चा आरो चित्रण छै। हिनकों कवितां नैतिक आचरण आरो राष्ट्रीय चेतना कें संदेश दै छै।

भाषा में ठेठ अंगिका कें प्रयोग भेलों छै। छंदों में विविधता छै, मतुर काँहीं-काँहीं मात्रा कें कमी-बेसी खटकै छै।

"दिन-दहाड़े डकैतें लूटै, जानले छै सरदार ;
बालू भीत बनाय कें लूटै इंजीनियर-ठेकेदार।
नकली दवा सें डाक्टर लूटै, झूठे-झूठे दलाल ;
फाँकी दै मजदूरें लूटै, पानी फेंटी कलाल।"

बीजेन्द्र चौधरी 'बीज' (प्रो०)

प्रो० बीजेन्द्र चौधरी 'बीज' मुंगेर जिला कें पढ़वारा (तारापुर) गामों में २२ अप्रिल, १९४१ ई. में जन्म लेने छोंत। हिनकों कनियैन 'चाँचो' (श्रीमती चंचला देवी) हिनकों कवि-जीवनों कें सहयोगिनी छथिन। 'बीज' जी कयेक भाषा में कविता करै छोंत। हिनकों अंगिका कविता 'अंग-माधुरी' में छपतें रहै छै। 'बीजोपहार' (१९८८ ई.) हिनकों अंगिका काव्य-कृति प्रकाश में ऐलों छै, जेकरा में कुल ३१-टा कविता छै।

'बीज' जी मुख्य रूपें हास्य-व्यंग्य कें कवि छेकात। 'बीजोपहार' में हास्य-व्यंग्य-प्रधान कविता कें अलावे कुछेक दोसरो रसों कें रचना छै, मतुर काव्य-कला कें दृष्टि सें सब-टा कविता निर्दोष नैं कहलों जाय पारें।

राम शर्मा 'अनल' (श्री)

९ अक्टूबर, १९४२ ई. कें दिन कुल्हड़िया गाँव (अमरपुर सड़क मार्ग पर स्थित, जिला भागलपुर) में अवतरित श्री राम शर्मा 'अनल' अंगिका आरो हिंदी कें कवि के रूपों में खूभे ख्याति पैलें छोंत। हिनकों अंगिका कविता पत्र-पत्रिकासिनी में छपतें रहै छै। हिनकों 'बामर' नामों कें गीति-काव्य एक दशक पहिन्हैं छपबो शुरू भेलों रहै, मतुर अब ताँय प्रकाशित नैं हुएँ पारलों छै। तबें, 'गीत-गंगा' आदि अनेक कविता-संग्रहों में हिनकों कयेक-टा रचना संगृहीत छै।

'अनल' जी गीत-रचना कें संगीतों सें जोड़तें होलों मौलिकता प्रदान करै में माहिर छोंथ। हिनकों गीतों में चिंतनशीलता छै, मतुर काँहीं-काँहीं दुरूहताओ आबी गेलों छै। लागै छै, हिनकों रचना-प्रक्रिया में बँगला कें प्रभाव पड़लों रहें। हिनी सोची-समझी कें सुकुमार शब्दों कें प्रयोग आपनों कविता में करै छोंत, वे में स्वर भरै छोंत। गीतसिनी में शृंगार, करुण आरो शान्त रसों कें निर्वाह होलों मिलै छै। ऐन्द्रिक विंबों कें भीतर दृश्य, स्पर्श, घ्राण आदि कें विंब अपने-आप उतरलों बुझाय पड़ै छै। एतने नैं, कृषि, व्यापार आदि सें संबंधित विंबो कें दर्शन हिनकों कविता मे होय छै। दू-एकटा उदाहरण लेलों जाय --

"तन-तरुवर मँजरैलै रे दैबा, बोललै कोयलिया ;
खुशबू सें डूबी गेलै देहिया रे दैबा, गमकै डगरिया।
नस-नस तड़कै, पोर-पोर फड़कै,
हाथों कें कंगन झन-झन झनकै,
लटआबै खेलै लटझुमरी रे दैबा, पिन्हत्हैं टिकुलिया।"

-- 'गीत-गंगा' सें।

लोक-धुन 'चैती' में है गीतों कें सौंदर्य वर्णनातीत छै। येहें रङ, एक दोसरों गीतों में सुकवि 'अनल' जीं रातों के मानवीकरण कें भाषा देतें हुएँ ओकरा भिन्न-भिन्न नायिका कें रूपों में उपस्थित कैने छै। नमूना देखियै --

"एक पख रूप तोरों चकमक चनरिया गे,
दोसरे पख रूप तोरों गुज-गुज अन्हरिया गे।
रंग-रंग भेस धरी खेलै नया खेल गे रजनी !
भूल-भुलैया में सब्भे समैलै गे रजनी ! आदि।

गीतकार 'अनल' जी कें गीतों में युग-बोधो कें रूप उठलों छै। हिनी नवनिर्माणों कें पक्षपाती छोंथ। देखों --

"दोन्हू मिली एक दुनियां बनैबै,
दुनियाँ में लपका बस्ती बसैबै,
बस्ती में एक्के रङ आदमी बसैबै,
धरतीं उतारबै आकाश, सजनमा कें जाबें नैं देबै।''

-- 'प्रतिनिधि अंगिका कवि', पृ. ७।

सुकवि 'अनल' जीं आपनों गीतसिनी में गीतों कें भिन्न-भिन्न शैली अपनैलें छौंत ; जेना -- पत्र-गीत कें शैली में --

"बड़ी छँगुनी-गुनी लिखलें छीं पतिया रे, लेलें जैहौ हमरों नैहर पुरबैया !''

है गीत संबोधन-गीतों कें कोटियो में आवै छै। येहें रङ --

"बड़ी गुण आगरी, बड़ी चतुराइन गे रजनी,
मनों नैं भावै आबें महल अटरिया हे।
मनहु नैं भावै आबें जेवर-गहनमा,
हमरा माँटी राजस्थानी मँगाय दें सजना।''

अंगिका कें सुकुमार गीतकार 'अनल' जी पर अंगिका कें गर्व छै।

मथुरानाथ सिंह 'रानीपुरी' (श्री)

अंगिका कें व्यंग्यकारों कें कतारों में लागलों श्री मथुरानाथ सिंह 'रानीपुरी' कें आविर्भाव ग्राम रानीपुर (कहलगाँव) में ११ जनवरी, १९४३ ई. कें होंलों छै। रानीपुर अंग-क्षेत्रों कें एक-टा ऐतिहासिक गाँव छेकै। हमरों अनुमानों सें येहें रानीपुर पुरानों 'राज्ञी' (राज्ञी = रानी) छेकै जहाँ अंगिका कें आदि-कवि सिद्ध सरहपा केरों जन्म १०.७.७३३ ई. कें होलों रहै। लोक-प्रचलित गामों कें नामों सें जुड़लो 'राज्ञी' = 'रानी' (पुर) ; जेना -- दिघी सिमानपुर, लक्ष्मीपुर-बभनियाँ, खट्टी सिमानपुर आदि कें क्रमों में रानीपुर गाँव रानीपुर-लघरिया कें नामों सें जानलों जाय छै।

कवि 'रानीपुरी' जी कें पिताश्री राजेन्द्रनाथ सिंह आरो माताश्री हरिणी देवी धार्मिक प्रवृत्ति कें लोग छेलात।

'रानीपुरी' जी बचपन्हैं सें रचना करै कें दिसिं उन्मुख छेलात। धर्मपत्नी विमला आरो कनिष्ठ पुत्र अंजनी कुमार कें असामयिक निधन सें हिनकों कवि-प्रतिभा गजूरी उठलै आरो छिटफुट रूपों में लिखतें/पत्र-पत्रिका में छपतें होलों 'धुँध फटतै' ई आशावादी काव्य-संग्रहों कें प्रकाशन ताँय पहुँचलात। 'धुँध फटतै' (१९९७ ई.) में कुल ३५-टा अंगिका-कविता छै।

हिनी मूलतः अंगिका कें हास्य-व्यंग्यकार छथिन, मतुर दोसरो-तेसरो ढंगों कें कविता लिखै छथिन। हिनकों कविता में शोषण आरो सामाजिक विसंगति कें विरुद्ध आक्रोश कें स्वर गूंजै छै। हिनकों कविता में ऐलों तथ्य जीवनों सें जुड़लों छै।

'रानीपुरी' जी कें भाषा फुरगुदी नाखी फुदकतें चलै छै जै में खाली शब्दे नै, विचार आरो भावो फुदकै छै। हिनकों शैली में दोसरा आरनी कें प्रभावित करै कें शक्ति छै। हिनकों व्यंग्य-भाषा देखियै कि यै में कैन्हों नवनिर्माणों कें संदेश छिपलों छै --

"बढ़लों ई चालों कें/चाल बेढंगा,
करों सब्भे सें प्रीत/नहाबों रोज गंगा ;
छोड़ों दाव 'रानीपुरी' लगाबों नैं लीस।" -- 'धुँध फटते' : गीत - ८.

"कहै छै 'रानीपुरी' मट्ठ संभालों ;
टोकरी सें सड़लों आम निकालों ;
दागी आमों कें फेंकों किनार।" -- वहें : गीत - १६.

रघुनन्दन झा 'राही' (पं.)

पं. रघुनन्दन झा 'राही' अंगिका कें प्रबंध-काव्यों कें रचनाकारों में आदर कें दृष्टि सें देखलों जाय छोंत। हुनकों जन्म १२ फरवरी, १९४३ ई. कें भेलों छै।

'राही' जी विचार-संवाहक कवि छेकात। हुनकों अंगिका प्रबंध-काव्य 'चिन्ता' एक विचार-प्रधान काव्य छेकै, जै में राम-कथा कें भाव-भूमि पर ओकरों पात्र -- कैकेयी, दशरथ, राम, सीता, लक्ष्मण, उर्मिला, मंथरा, भरत आरनी कें नया सोच/नया विचार 'राही' जी कें भाषा में अभिव्यक्त होलों छै।

'चिन्ता' काव्य हमरा १९८५ ई. कें उत्तरार्ध में मिलले। एक दाफी ऊपर-ऊपर देखलाँ कि वै पर आपनों मन्तव्य दौं, मतुर मौका नैं मिललों। तबें, आय (३ दिसंबर, १९९७ ई. कें) जबें है इतिहास लिखे कें क्रम में हुनकों पारी ऐलै तबें 'चिन्ता' निकाललाँ। पढ़तें-पढ़तें हमें वोही में खोय गेलाँ। केकरहौ मनों में कोय कैसें पैसी जाय छै, खुद्दे कवि होतें हुएँ हमरा सोचै लें पड़लों। कहलों गेलों छै, 'जहाँ नैं जाय रवि, तहाँ जाय कवि।' सच्चो, 'चिन्ता' काव्यों में देखै छीं कि राम-कथा कें वैसिनी पात्रों कें मनों कें बात/सोच ताँय 'राही' जी बाखूबी पहुँचलों छोंत।

'चिन्ता' केरों रचना सर्ग-पद्धति में होलों छै। यै में कैकेयी आरो मंथरा कें चरित्रों कें प्रधानता छै जेना कि गुप्त जी कें 'साकेत' (हिंदी) में उर्मिला आरो लक्ष्मण तथा श्री बलदेव प्रसाद मिश्र कें 'साकेत-संत' (हिंदी) में भरत कें चरित्रों कें। कैकेयी कें संबंध में भारतीय चिंतनों में प्रायः दूषित भावना देखलों जाय छै, जेकरों परिष्कार हिंदी कें महाकवि केदारनाथ सिंह 'प्रभात' नें आपनों 'कैकेयी' महाकाव्यों में करने छै। वेहें रङ, श्री उमेश जीं आपनों हिंदी-प्रबंध-काव्य 'कैकेयी' में कुच्छू दूर ताँय कैकेयी कें चरित्रों कें परिष्कार कैने छै। सुकवि 'राही' जी कें रचनाकारें कैकेयी कें उदात्त चरित्रों कें उजागर करै में कोय कोर-कसर नैं राखनै छै। मंथरा कें पश्चातापो 'चिन्ता' काव्यों कें मौलिक उद्भावना छेकै। नया सोच/नया चिंतन कें कविता कें ढाँचा में ढालला कें बादो 'राही' जी कें भाषा सहज सप्रेषणीय, छंद प्रांजल आरो शैली गतिशील छैन्। वस्तुतः, 'चिन्ता' अंगिका-साहित्यों कें गौरव-वृद्धि करैवाला काव्य-कृति छेकै।

'राही' जी कें फुटकरों कविता कतें नी छपलों छै। 'मेघ' शीर्षक हुनकों एक कविता में प्रकृति कें छटा देखलों जाय --

"डल्लमडल मेघ छै !
कबदै छै दुखिया कें जान,
अत्त करै छों हो भगवान !
कखनी गिरतै मोर अधदिया,
दोसरों नैं कोय थेग छै ! डल्लमडल० !

-- 'प्रतिनिधि अंगिका कवि', पृ. १३२.

उदयकान्त ठाकुर 'बिहारी' (श्री)

श्री उदयकान्त ठाकुर 'बिहारी' मिर्जाचौंकी रेलवे स्टेशन भिरीं उत्तरें गाँव शाहाबाद (जिला भागलपुर) कें निवासी छेलात। हुनकों जन्म १९४३ ई. में भेलों रहै, लेकिन हुनी ५ मई, १९८३ ई. कें दिवंगत होय गेलात।

हुनी मानलें छोंथ कि कविता करै कें प्रेरणा हुनका डॉ० कुशवाहा आरो आपनों अग्रज श्री राघवेन्द्र ठाकुर 'उन्मन' से मिललों रहै। कुशवाहा जी हुनकों एक किताबों कें 'भूमिका' में हुनका 'गीतों कें राजकुमार' कहने छै।

सुकवि 'बिहारी' जी कें दुइ-टा गीत-संकलन निकललों छै -- 'बिगुल फूँक दो' आरो 'विजय-अभियान'। दोन्हू में अंगिका, हिंदी आरो भोजपुरी कविता छै।

'बिगुल फूँक दो' कें पहिलों संस्करण १९७० ई. में भेलों छेलै, अब ताँय आरो कतेॅ नी संस्करण होय चुकलों छै।

स्व० 'बिहारी' जी कें गीत भाव-गीतों कें कोटि में आवै छै। संक्षिप्तता, रागात्मकता आरो भावों कें एकतानता हुनकों गीतों कें विशेषता छेकै। हुनकों गीतें अनुभूति कें तीव्र बनावै छै। कुछेक गीत उद्‌बोधन-गीतों कें कोटि में आवै छै। लोक-मंगल कें अभिलाषाओ हुनकों गीतों में छै तथा प्रेम-गीतसिनी में भौतिकता उभरलों छै। एक उदाहरण --

"पीपल कें छैयाँ में/बैठी कें देखै छी देश ;
माय गे ! पाकी गेलों हमरों केश !
निमिया कें देखै छी बाँसों कें बाड़ी में ;
कलकी पुतलिया चिन्हावै नैं साड़ी में,
झेंपै छी देखी कें वेष !''

रामदेव भावुक (श्री)

बचपन्है सें अंगिका-रचना में लागलों श्री रामदेव भावुक कें जन्म खगड़िया जिला कें बसबिट्टी (माड़र) में जनवरी, १९४४ ई. में भेलों छै। हिनकों कर्म-क्षेत्र मुंगेर छेकैन्ह। 'हंस कें जीभ तरासल छै' (१९९५ ई.) हिनकों उल्लेख्य अंगिका काव्य-कृति छेकैन्ह। एकरा में हिनकों २७-टा कविता कुल ५ पृष्ठों में संकलित छैन्ह।

देशों कें एकता, अखंडता पर खतरा, भारतीय संस्कृति कें गिरतें हुएँ मूल्य, सामाजिक व्यवस्था आरो न्याय कें अवमूल्यन पर 'भावुक' जी कें संवेदनशील कवि खास करी कें चिन्तित छै --

"पानी-दूध अलग करतौ के ?
हंस कें जीभ तरासल छै !''

है विषम समस्या कें समाधान लेली, व्यवस्था-परिवर्तन आरो नवनिर्माण लेली कवि भावुक उत्सुक छै --

"बदलों नैं, बदली दें दुनियाँ,
हौ भैया ! भागों नैं।''

'हंस कें जीभ तरासल छै' केरों भाषा अंगिका कें पच्छिमी अंगुतरायी रूप छेकै जे कि डॉ० वचनदेव कुमार आरो डॉ० कुमार विमल कें अंगिका कविता आरो कहानी-सब में मिलै छै। जों विषयान्तर नैं समझलों जाय तें कहलों जैतै कि है

किताबों कें अंत में लागलों डॉ० विभूति आनन्द नें यै किताबों कें भाषा कें मैथिली कही देलें छोंत जबें कि ऊ (भाषा) खाँटी अंगिका छेकै (एकाध रचना कें भाषा छोड़ी कें)।

'हंस कें जीभ तरासल छै' में जनवादी भावना खास करी कें उभरलों छै।

रवीन्द्रनाथ 'रवि' (डॉ०)

डॉ० रविन्द्रनाथ 'रवि' कें जन्म १ मार्च, १९४४ ई. कें नवागढ़ी (जिला मुंगेर) में भेलों छै। हिनी एक कृषि-वैज्ञानिक छेकात, मतरकि हिंदी आरो अंगिका दोन्हू में कविता करै छोंत। कहलों जाय कि हिनकों चरित कें सजैने/सँवारने छै श्रद्धा आरो इड़ा दोन्हू नें। है सौभाग्य विरले लोगों कें मिलै छै।

'रवि' जी कें 'मधुमालिनी' आरो 'अंशुमाली' काव्य-संकलन जल्दीये आबी रहलों छै जेसिनी संकलनों कें कुछेक कविता पत्र-पत्रिका आरनी में छपी चुकलों छै। हिनकों गीत बड़ा मधुर आरो मनों कें मोहैवाला होय छै। 'वसंत' शीर्षक गीतों कें कुछेक पंक्ति देखलों जाय --

"वन-वन उदास छै/दहकल पलास छै,
कचरल कचनार देखी/सेमर उदास छै ;
महुआ तर चूवै फगुनियाँ मकरन्द,
पहुना जे ऐलों छै/छोटकी बौरैलों छै,
कैतकी गुलाब संग/गेना फुलैलों छै ;
उगलों पनसोखा-सन चमकै दिगन्त छै,
डाल-डाल पात-पात छलकै वसंत छै।"

नरेश ठाकुर (श्री)

श्री नरेश ठाकुर कें जन्म १६ जुलाई, १९४४ ई. कें भागलपुर जिला कें बैजनाथपुर गामों में भेलों छै। हिनकों रचना 'अंग-माधुरी' में छपतें रहै छै।

नरेश ठाकुर जी कें कविता सामयिक प्रभावों कें संदर्भों कें छूतें चलै छै, मतरकि मात्रिक छंदों कें दृष्टि सें हिनकों कविता में संशोधनों कें जरूरत बुझावै छै।

"मानव-महिमा कें हमरा तप-बल सें आय बढ़ाना छै ;
आपनों चारित्रिक गरिमा सें ऊपर आय उठाना छै।

पहुँचै नैं देवत्व जहाँ वै शिखरों कें करना छै पार ;
लड़ना छै हमरा पशुता सें मानवता कें लै कें कटार।''

रामनन्दन विकल (श्री)

श्री देवनारायण प्रसाद जी कें सुपुत्र श्री रामनन्दन विकल केरों जन्म कुडरो (बौंसी) में २३ मार्च, १९४३ ई. कें होलों छै। हिनकों ढेरेसिनी रचना पत्र-पत्रिका में छपतें रहै छै। कयेक-टा काव्य-संकलनों में हिनकों कविता शामिल भेलों छै। १९९६ ई. में प्रकाशित 'आठ समन्दर आँख' में हिनकों छों-टा कविता छपलों छै जेसिनी में समाज आरो प्रकृति कें विविध चित्र अंकित होलों छै।

'विकल' जी कें दुइ-टा किताब प्रकाशित छै। वै दुहू में एक-टा 'मंदार बोलै छै' (१९९३ ई.) काव्य-पुस्तक छेकै। कुल २४ पेजों कें है किताबों में मंदार, बौंसी, गुरुधाम आरनी कें महिमा कें बखानं करलों गेलों छै।

'मंदार बोलै छै' हमरों (डॉ० कुशवाहा कें) 'अंग-दर्शन' नाखी एक भौगोलिक-काव्य/यात्रा-काव्य छेकै। सुकवि 'विकल' जीं कवित्त छंद/विदेशिया रागों में प्राचीन अंग-देशों कें कुछेक ऐतिहासिक, धार्मिक आरो सांस्कृतिक स्थानों कें रस-सिक्त भाषा में दर्शन करैने छै यै किताबों में। हिनकों काव्य-रचना कें संभावना बरकरार छै। हिनकों 'देवता' शीर्षक कविता कें बानगी लेलों जाय —

'देवता, कहां छों ?/आबों नी./
हिरदा केरों दुआर/खुल्ला छौं,
दीया जराय लें/सब छौ --
सलाय, काठी/तेल, बाती/बारैबाला कोय नैं !
आबों, सब कें मिलाय दें, दीया जराय लें ।

-- 'अंग-माधुरी', जनवरी, ६१.

सुरेन्द्र झा 'परिमल' (डॉ०)

डॉ० सुरेन्द्र झा 'परिमल' कें आविर्भाव १५ जुलाई, १९४६ ई. कें जमुई जिला कें गोहट्टी (लक्ष्मीपुर) गामों में होलों छै। हिनी साहेबगंज कॉलेजों में हिंदी कें अध्यापक छौंत।

अंगिका कें कत्तें नी संस्था सें संबद्ध 'परिमल' जी अनेक पत्र-पत्रिका लेली लिखतें रहै छोंत। हिनकों अंगिका कविता 'अंगश्री', 'प्रतिनिधि अंगिका कवि' आदि संकलनों में ऐलों छै। 'गुमसैलों धरती' (१९८४ ई.) हिनकों स्वतंत्र अंगिका काव्य-कृति छेकै। वै किताबों कें कुल ४८ पेजों में हिनकों ३०-टा कविता लागलों छै। हम्में वै किताबों कें गीतसनी कें 'भाव-गीत' कें कोटि में राखै छियै, सब्भे गीत भावप्रद छै। लागै छै कि अंगिका कें समीक्षकसिनी कें सम्यक् धेयान 'गुमसैलों धरती' पर नैं गेलों छै। गहन अध्ययनों सें हौ भाव-गीत-कृति कें गहराई कें महसूस करलों जैतै। अंगिका-गीति-काव्य कें परंपरा में 'गुमसैलों धरती' एक अनुपम कृति छेकै। संसारों कें जड़-चेतन चीजों कें हमरासिनी सब्भें देखै छियै, मतुर कवि कें देखै कें ढंग कुछू आरो होय छै। जबें हौसिनी वस्तु कें प्रभाव कवि-हृदयों पर पड़ै छै तबें कविं ओकरा आपनों भाषा कें रंग दै छै। कवि कें आपनों अनुभूति आरो अभिव्यक्ति सामान्य श्रोता या पाठकों कें अनुभूति आरो अभिव्यक्ति होय जाय छै। 'गुमसैलों धरती' कें कवि 'परिमल' जी कें आत्माभिव्यक्ति खाली हिनके बनी कें नैं रहलों छै, हौ हमरा आरनीयो कें आत्माभिव्यक्ति बनी गेलों छै। वै संकलनों कें गीतसनी कें येहें सफलता छेकै ; कैन्हें कि आत्माभिव्यक्ति कें काव्यों कें मुख्य तत्व मानलों गेलों छै जे कि भाव-गीत अथवा गीति-काव्यों में खास करी कें प्रगट होय छै।

'गुमसैलों धरती' अनुभूतिपरक काव्य छेकै। हैसिनी भाव-गीतों में कवि रों आत्मा कें संगें भावना मिललों छै। एकरों एक विशेषता येहो मानलों जाय कि कवि 'परिमल' जीं सांस्कृतिक, सामाजिक या राष्ट्रीय स्थिति कें भावों कें रंगों में ऐन्हों रँगी देने छोंत कि अंगिका गीति-काव्यों कें आगू कें परंपरा में हौ रंग जरूरे चढ़तै।

है संकलनों कें कयेक-टा रचना अतुकान्त गद्य-शैली में लिखलों गेलों छै, मतुर वोहो-सब ऐन्हों प्रवाह में बही रहलों छै कि हौ धारा सें हौसिनी कें भिन्न नैं करलों जाय पारें। है कृति कें गीतों में भावों कें सम्यक् विवृत्ति होलों छै। एकाध नमूना देखलों जाय --

''प्रात पवन डोलै छै, कलिका पट खोलै छै ;
सिंदूरी रंग आसमान, अलसैलों उतरल बिहान।
चिड़िया कें पंख खुलल, भौंरा कें बोल जगल ;
बैलों संग चललै किसान, फुसुर-फुसुर बोलै बिहान।''

बालकवि आर्य (स्व०)

सुदूर निर्जनों मे ताड़ों कें पत्ता पर काँटों सें कविता लिखै में आनन्दमग्न रहैवाला भालेश्वर आनन्द 'अंगवासी' (पीछूं 'बालकवि आर्य') कें जन्म ३ जनवरी १९४६ ई. कें गाँव कुशाहा (जिला भागलपुर) में भेलों रहै। हुनी समुद्र-संतरण कें इच्छा राखै छेलात, किंतु हुनकों निधन आय सें तीन साल पहिने बोकारो (बिहार) में होय गेलै।

बालकवि आर्य जी हिंदी आरो अंगिका में कविता आरो लघु कथा लिखै छेलात आरो हिंदी पत्रिका 'अक्षत' कें संपादनों करै छेलात। दक्खिन बिहार मे अंगिका कें प्रचार-प्रसार में हुनकों बड़ा योगदान रहै। हुनकों अंगिका कविता 'अंगवाणी' (ईशीपुर), 'अंग-माधुरी' (पटना) आदि में छपै रहै।

काव्य-कला कें दृष्टि सें जों बालकवि आर्य कें मूल्यांकन करलों जाय तें एक सहृदय कवि कें सहज अनुभूति कें दर्शन होय छै। हुनकों कविता मे मात्रिक छंदों कें प्रधानता छै। हुनकों रचना में मजदूर-किसानों कें प्रति सहानुभूति आरो पूंजीपति या शोषकवर्गों कें प्रति आक्रोशो अभिव्यक्त होलों छै। साथें-साथ, हुनकों बाल-कविता में बाल-सुलभ विषय आरो सरलता/कोमलता कें संगें-संगें सहज गेयता कें समावेश छै। एक बाल-कविता 'आमंत्रण' कें उदाहरण लेलों जाय --

"घरों में नुनवा कानै छै, बात नहीं कुछ मानै छै ;
बाबा-भैया कत्तो मनावै, नुनुवाँ भेल मुँह-फकरों।''
"आबह गैया हियो-हियो, बाट'क पानी पियो-पियो ;
घेरि-बेरि कें आज पितैबो, आप पियें तों सगरो।''

-- 'अंगवाणी' : १.७.१९६८ सें।

वैकुण्ठ बिहारी (श्री)

मेदनीपुर (प्रखंड फूलीडूमर, जिला बाँका) में श्री वैकुण्ठ बिहारी नें २६ दिसंबर, १९४६ ई. कें संसारों कें प्रथम दर्शन कैने छै। हिनी हिंदी में एम. ए. करी कें शिक्षा-शास्त्र आरो संगीत में स्नातक उपाधि उपलब्ध करने छोंथ।

वैकुण्ठ बिहारी जीं हिंदी आरो अंगिका में रचना करै छोंत। हिंदी में प्रकाशित हिनकों नाटक 'चन्द्रशेखर आजाद', 'माँ का कलेजा' आरो 'इन्कलाब का सिंदूर' कें अच्छा ख्याति मिललों छै। अंगिका में 'बिहारी' जी कें एक-टा नाटक 'लहुवों

सें महँगों सिनूर' आरो काव्य-संकलन 'स्वाति कें मेघ' प्रकाशित छै। पहिलका कें प्रकाशन १९८९ ई. में आरो दोसरका कें १९९२ ई. में भेलों छै।

'बिहारी' जी में प्रबंध-काव्य लिखै कें अपूर्व क्षमता छै ; 'अंग-सवासिन' आरो वत्स-नरेश उदयन कें राजरानी 'सामा' पर लिखलों हिनकों प्रबंध-काव्य प्रकाशन कें बाट जोही रहलों छै। हिनकों 'स्वाति कें मेघ' अंगिका कें गीति-काव्य-परंपरा सें जुड़लों एक सुंदर पुष्प छेकै। एक स्वतंत्र संकलन कें रूपों में है किताब हमरा कुछुवे दिन पहिने देखै में ऐलै। पहिने हिनकों गीत पत्र-पत्रिकासनी में छपतें ऐलों छै। 'श्रीस्नेही' जी कें 'गीत गाँवों कें', 'गीतं-गंगा', 'अंग-मंजरी', 'अंगप्रिया', 'अंग-माधुरी', 'अंग-क्षेत्र', 'अंगिकाँचल' आरनीयो में हिनकों अंगिका रचना छपतें रहलों छै।

'बिहारी' जी कें गीतों में मुख्य रूपों सें भक्ति-भावना, साम्प्रदायिक सद्भावना, देश-प्रेम आरो शृंगार-भाव मुखर छै। सब्भे गीत राग-रागिनी में बाँधलों छै। गीति-काव्यों कें लक्षणों पर हिनकों गीत खरों उतरै छै।

शंकर प्रसाद 'श्रीनिकेत' (श्री)

उत्तरी अंग-क्षेत्रों कें ख्यातिप्राप्त साहित्यकारों में शीर्षस्थ श्री शंकर प्रसाद 'श्रीनिकेत' अंगिका लेली एक समर्पित व्यक्ति छोंत। अंगिका में विविध विधा कें रचना करै छोंत। एक-टा छोटों-टा अंगिका व्याकरनों लिखी कें प्रकाशित करवैने छोंत। हिनकों जन्म जेठ दशहरा १९४२ ई. कें सेमापुर बाजार (जिला कटिहार) में भेलों छै। हिनी कटिहार, पूर्णिया, किशनगंज, अररिया, सुपौल, मधेपुरा आरो सहरसा क्षेत्रों में अंगिका कें प्रचार-प्रसार में अच्छा काम करने छोंय। हिनी अंग-शोध-संस्थान (सेमापुर) कें संस्थापक निदेशक आरो ढेरसिनी संस्था सें संबद्ध साहित्यकार छोंय।

'श्रीनिकेत' जी कें अंगिका प्रबंध-काव्य 'कर्ण' आरो कविता-संकलन 'गीतश्री' छपतें-छपतें रुकी गेलों होलों लागै छै, लेकिन हिनकों अंगिका कविता प्रायः पत्रिकासिनी में छपतें रहलों छै।

हिनकों कविता में गान्धीवादों कें छाप झलकै छै। कवि जी कें विश्वास छै कि समाजों में समता आरो समानता ऐल्है पर शान्ति स्थापित होतै। हिनकों कृषि-गीत बड़ा लोकप्रिय होलों छै। कोशी कें किनारा परकों एक बिंब देखियै --

"कोशी कें किनारों पर --
बगुला कें पाँत छै, उजरों-उजरों पाँख छै ;
[illegible] सें खुललों दोनों आँख छै।"

अक्षयश्री

'अक्षयश्री' जी गुरु बाजार (कटिहार) कें निवासी छोंथ। पूरा नाम छेकैन्ह अक्षय कुमार साहा 'अक्षयश्री'। हिनी अंगिका में कविता, कहानी आरो निबंध लिखै छोंथ। 'अंग-माधुरी' -आरं में हिनकों रचना छपलों करै छै। हिनकों विश्वास छैन् कि अन्हारों पर इँजोर होत्हैं छै, होबे करतै। हिनकों एक कविता --

"चहकै छै चिड़िया, गूंजै छै शोर,
पखना फड़काय झाड़ै, भें गेलै भोर।"

'अक्षयश्री' जी मूल रूपें गीतकार छेकात। हिनकों गीत भाव आरो भाषा सें मँजलों रहै छै।

सुभाष चन्द्र 'भ्रमर' (श्री)

लोक-जीवनों सें जुड़लों पुरा-संस्कृति कें अनुगायक श्री सुभाष चन्द्र 'भ्रमर' अंगिका कें नामी-गिरामी कविवर्गों में परिगणनीय छोंत। हिनकों कार्य-क्षेत्र दुमका छेकै। यै लेली हिनकों रचना में अरण्य जीवनों कें झाँकी नजरों में आवै छै।

'भ्रमर' जी कें गीति-नाट्य 'उषा', जेकरों थोड़ों-टा अंश श्री 'राही' आरो श्री 'भ्रमर' - संपादित 'प्रतिनिधि अंगिका कवि' में छपलों छैं, एक उत्कृष्ट रचना छेकै। वै में 'उषा-अनिरुद्ध' कें कथा कें नया भाव आरो भाषा मिललों छै। सधलों छंदों में रचलों वै गीति-नाट्यों कें अंगिका-साहित्यों में विशिष्ट स्थान छै/होतै। हिनकों एक कविता ऐन्हों छै जै में अंग-क्षेत्रों में प्रयुक्त ढेरेसिनी गारी भरलों छै। 'उषा' (गीति-नाट्य) कें पैहलों अंकों कें शुरुआती अंश --

"जन्नें देखों रंग-बिरंगों फूल, हवा बौरैलों रङ ;
यै फुलवारी में वसंत जिनगी-भर सें ओझरैलों रङ।
हर मौसम कें फूल, सभे कें रूप-रंग छहकौआ रङ ;
कोय-कोय गंध हेराय देने छै, कुछ विहँसै महकौआ रङ।" - पृ.२५.

ठेठ अंगिका आरो सधलों छंदों में रचलों गीति-नाट्य 'उषा' में भाव, शिल्प आरो शैली कें मणि-कांचन योग निखरलों छै। दुःखों कें बात येहें कि ऐन्हों उत्कृष्ट रचना अब तॉय पुस्तक कें रूपों में नैं ऐलों छै।

प्राणमोहन 'प्राण' (श्री)

प्रकृति कें सामाजिक संदर्भों में जोड़ैवाला कवि श्री प्राणमोहन 'प्राण' कें जन्म बौंसी (जिला बाँका) में होलों छै। हुनी अंगिका आरो हिंदी में समान रूपों में लिखै छौंत। हिंदी में एक-टा पत्रक 'मनोज' कें नामों सें निकालै छौंत तथा हिनकों हिंदी काव्य-कृति 'भोर' कें अच्छे ख्याति मिललों छै।

'प्राण' जी एक सफल गीतकार छेकात। हुनकों रचना में समकालीन यथार्थ कें चित्र मिलै छै। अंगिका में लिखलों हुनकों कविता 'अंग-माधुरी' 'कविताश्री' आदि पत्रिका में छपतें रहलों छै, मतुर अब ताँय कोय संकलन नैं छपलों छै। हुनकों एक गीतों कें थोड़ों-टा बानगी देखलों जाय --

"गरजै छै मेघ, पिया ! लागै छै डोंर !
चमकै छै बिजली तें धड़कै छै छाती ;
चमकी-चमकी उठै छीं आधे-आधे रातीं ;
उपरें आसमान भेलै, धरती भेलै तोंर।"

-- 'प्रतिनिधि अंगिका कवि', पृ. ९७.

सुरेन्द्र दास (श्री)

हमरासिनी कें देशों कें स्वतंत्रता आरो श्री सुरेन्द्र दास एक्के दिन मिललों छै। जनुई जिला कें केवाल फरियत्ता (गिद्धौर) हिनकों गाँव छेकैन्।

हिनी कवि, लेखक, पत्रकार आरो नेताओ छेकात। हिनकों 'तूफान' (हिंदी में) आरो 'गुड़गुड़ी' (अंगिका मे) किताबों कें रूपों में प्रकाशित होय चुकलों छै। हिनकों कविता में देशों कें महिमा आरो आत्मविश्वासों कें स्वर खास करी कें उभरलों छै। देखलों जाय --

"धन्य यहां कें भूमि कहाय, जहाँ विराजै गंगा माय ;
जेकर पुत्र करै अनुराग, साधै कठिन योग-वैराग।"

नवीन चन्द्र शुक्ल 'पुष्प' (श्री)

श्री नवीन चन्द्र शुक्ल 'पुष्प' चाँदपुर (जगदीशपुर, भागलपुर) कें निवासी छेकात, मतुर आबें भागलपुरों में रहै छौंत। हिनी अंगिका कें एक मधुर गीतकार कें रूपों में जानलों-मानलों जाय छौंत। अंगिका में हिनकों दुइ-टा कविता-पुस्तक 'पुष्पहार' आरो 'चन्द्रहार' (१९८५ आरो १९८८ ई.) प्रकाशित

छै। पहिलका में 'पुष्प' जी कें रचलों ५१ आरो दोसरका में ७१-टा गीत संकलित छै। 'चन्द्रहार' कें शुरू में डॉ० अभयकान्त चौधरी कें लिखलों 'चन्द्रहार' : एक झाँकी' (समीक्षा) छपलों छै।

'पुष्प' जी कें कविता में भक्ति, शृंगार आरो राष्ट्र-प्रेमों कें भाव छै। कृषि, दहेज आरो लोक-जीवनों कें सांस्कृतिक मूल्यों कें अनुरक्षा सें संबंधित गेय पद (कविता) हिनी बेसी लिखलें छौंत। वैसिनी में हिनकों गीतकार-रूप निखरलों छै। भक्ति-गीतों में आत्मसमर्पण कें भाव देखलों जाय छै। राष्ट्रीय गीतों में देशों कें एकता, अखंडता, स्वतंत्रता कें सुरक्षा आरो साम्प्रदायिक सद्भावों कें भाषा देलों गेलों छै। सब-टा गीत लोक-धुन, लोक-लय आरो लोक-तानों में रचलों बुझावै छै।

"भारतों कें पावन धरती सें स्वर्गो भी छै कम ;
जेकरों माटी में ई देहिया मिलै बनी भसम।
देशों कें खातिर ही निकलै जेकरों देहों सें दम ;
मातृभूमि कें ई माटी में जन्मौं जनम-जनम।।"

बाँकेबिहारी झा 'करील' (स्व०)

जिला भागलपुर, अनुमंडल नौगछिया कें भ्रमरपुर गामों में जनमलों श्री बाँकेबिहारी झा 'करील' कें निधन अल्पायु में ही २५ दिसंबर, १९७६ ई. कें होय गेलैन्ह। हुनी विश्वामित्र महाविद्यालयों में संस्कृत कें व्याख्याता छेलात। हुनकों कविता संस्कृत/हिंदी, मैथिली आरो अंगिका में मिलै छै। 'अंग-माधुरी' में हुनकों कयेक-टा कविता छपलों छै।

स्व० 'करील' जी कें एक-टा काव्य-कृति 'करील-कादम्बिनी' कें नामों सें प्रकाशित छै। संगीत कें शास्त्रीय मंचों पर अंगिका कें लानै में हुनकों महत्वपूर्ण भूमिका छेलैन्ह। हुनकों गीतसनी शास्त्रीय राग-ताल में बाँधलों छै। 'गुरु महिमा' (लोक-धुन, ताल दादरा) में हुनी कहने छौंत --

"नाम कें नदिया नहैबै, जनम-फल पैबै हो ;
जनम-जनम कें मल कें ढेरी --
सहज ही सकल बहैबै, जनम-फल पैबै हो।"

सीताराम दास (श्री)

उत्तरी अंग-जनपदों कें प्रतिभासंपन्न कविरत्नों में अग्रण्य श्री सीताराम

दास कें जन्म जियागाछी गाँव (पूर्णिया/कटिहार जिला) में भेलों छै। 'भोर भेले आवै छै' (१९८३ ई.) हिनकों एक प्रतिनिधि कविता-संग्रह छेकै।

सीताराम दास जीं संगीत आरो कविता दोन्हू पर अधिकार राखै छोंय। अंगिका लेली समर्पित कवि सीताराम दास जी कें रचना लोक-जीवन आरो जन-चैतन्य सें जुड़लों छै। 'भोर भेले आवै छै' में हिनकों ७२-टा रचना लागलों छै जेसिनी कें गद्य-गीत कहलों जाय पारै छै। वैसिनी रचना में कवि जीं आपनों सोचों कें दर्शन कें स्तर पर लै गेलों छै। ई माने में 'भोर भेले आवै छै' कें कत्तें नी कविता रहस्य कें कविता छेकै। सरहपा, कबीर आरनी कें रचनासिनी कें परिप्रेक्षों में बात करलों जाय तें 'भोर भेले आवै छै' आधुनिक अंगिका कें पहिलों रहस्यवादी कृति ठहरै छै। कवि सीताराम जी कें साधक आत्मा प्रकृति सें परों कें बात लेली जेना कि बेचैन होय उठलों रहें। भावनात्मक रहस्यवादी हिनकों कविता कें विशेष अध्ययन करै कें जरूरत महसूस होय छै। एक उदाहरण लेलों जाय --

"सुनरीं शृंगार करै छै ऐना लैकें/ कंघी कें लम्बा टान दैकें
बढ़ियाँ एक-टा सीध बिथारलकै/ आँखी में काजरों कें
एक-टा पतली रेख टानी देलकै/ एक-टा टिकली
कपारों पर दैकें ताकै छै/ इन्ने-उन्ने,
अरे, बाप रे !/ आपनों रूपों पर सुनरी
मोहित भै गेलै/ मोहों कें ई-टा भाव जे भाँसलै
कोय देखी तें नैं लेलकै/ सुनरीं ताकै छै इन्ने-उन्ने
आरो ओकरों रूप/ ताकै छै चारो ओर ! -- पद-४.

आमोद कुमार मिश्र (कविरत्न)

कविरत्न आमोद कुमार मिश्र अंगिका कें एक सुपरिचित हस्ताक्षर छेकात। गाँव छतहार (भागलपुर) -निवासी साहित्य-मनीषी पं० गिरिधर शास्त्री 'भ्रमर' कें सुपुत्र आमोद जी कें जन्म आपनों नाना जी कन जसीडीह (देवघर) में १७ दिसंबर, १९४७ ई. कें होलों छै। हिंदी में एम. ए. हिनी अंगिका, भोजपुरी आदि पर अच्छा अधिकार राखै छोंत, हिंदी में तें निष्णात छेबे करोंय।

अंगिका में हिनकों रचना 'भोर ?' (कहानी-संग्रह) आरो 'मुठिया चाउर' (एकांकी-संग्रह) प्रकाशित होय चुकलों छै। पुस्तक कें रूपों में हिनकों कोय अंगिका काव्य-कृति अखनी ताँय हमरों नजरी में तें नैं पड़लों छै, किंतु हिनको

कविता कत्तें नी दोसरों-तेसरों काव्य-संकलनों में छपलों छै आरो मंचों पर ओज-भरलों कविता सुनै कें मौका हमरा मिललों छै। हिन्ने 'अंगद' नामों सें हिनकों एक अंगिका प्रबंध-काव्य प्रकाशित होयवाला छै।

आमोद जी कें कविता 'हम्ही गुलाब छी, काँट्हौ में मुस्कावै छी', 'जब्बड़ भीत' आदि लोकप्रिय होलों छै। ओज गुणपूर्ण हिनकों रचना कें रसास्वादन करै में मोंन मुग्ध होय जाय छै, हिनकों 'आमोद' नामों कें सार्थकता सिद्ध होय जाय छै। एक उदाहरण लेलों जाय --

"कैना काटैछी जाड़ा कें बरफों रङ कनकन्नों रात,
आगिन रङ लू बैसाखों कें, सावन-भादों कें बरसात,
देहरी-घोंर उदास, ओसरा-छारी पर छै सड़लों खोंर ;
कानै छै हमरे सङ हमरों माँटी कें पुस्तैनी घोंर।"

-- 'प्रतिनिधि अंगिका कवि', पृ. ६८-६९.

परशुराम ठाकुर 'ब्रह्मवादी' (पं०)

गोनई (हवेली खड़गपुर, जमुई जिला) -निवासी पं० वासुदेव ठाकुर कें सुपुत्र पं० परशुराम ठाकुर 'ब्रह्मवादी' जी खाली दर्शन आरो अध्यात्मे सें नैं, अंगिका भाषा, साहित्य आरो संस्कृति सें घनिष्ठ रूपों सें जुड़लों व्यक्ति छेकाथ। हिनकों जन्म १५ अगस्त, १९४७ ई. कें होलों छै।

'ब्रह्मवादी' जीं हिंदी आरो अंगिका में विभिन्न विधा कें रचना करै छोंत आरो 'अंग-तरंगिनी' नामों कें एक-टा पत्रिकाओ निकालै छोंत। हिनकों रचना 'अंग-माधुरी', 'नई-बात', 'अंगिकाँचल' -आर पत्रिका में छपतें रहै छै।

अंगिका पर हिनकों 'अंगिका भाषा : उद्भव और विकास' आरो 'अंगिका भाषाविज्ञान' (प्रथम खंड) प्रकाशित (हिंदी में) छै। काव्य-कृति कें अंतर्गत प्रकाशित 'अंग-तरंग' (१९९३ ई.) हिनकों उल्लेखनीय पुस्तक छेकै। कुल १०६ पेजों कें वै पुस्तकों में हिनकों १०८-टा कविता छै।

'ब्रह्मवादी' जी कें कविता में प्रासंगिक भारतीय परिवेशों में अध्यात्म आरो आचार संबंधी विचार विशेष रूपों सें मिलै छै। अंगिका लेली हिनकों उद्गार छै –

"जे भाषा कें बच्चा में माय कें गोदी में सिखलियै,
जे भाषा में बाबू सें अध्यात्म-ज्ञान हम्में पैलियै ;
ऊ भाषा कें रक्षा करबों हमरों धर्म कहै छै ;

आपने भाषा कें बल पर लोगें आत्मज्ञान पाबै छै।''

-- हे अंगवासी ! जागों' कविता से।

भूतनाथ तिवारी (डॉ०)

डॉ० भूतनाथ तिवारी जीं यै धरती कें प्रथम दर्शन ३ मार्च, १९४८ ई. कें भागलपुर जिला कें गोबराय गामों में करनें छोंत। हिनी अँग्रेजी चिकित्सा-पद्धति कें एक सफल चिकित्सक रहतें हुएँ अंगिका में कविता करै छोंत।

हिनकों एक-टा कविता-संग्रह १९९४ ई. में 'ई जिनगी' कें नामों सें निकललों छै, जेकरा में हिनी है जीवनों कें व्याख्या बड़ा गहराय में जाय कें करने छोंत। यै में हिनकों कुल ३८-टा कविता छै। 'अंग-माधुरी' में १९८६ सें १९९४ ई. ताँय छपलों पहिलकों गारों-टा कविताओ एकरा में लागलों छै।

डॉ० तिवारी नें आपनों 'ई जिनगी' में मुक्त छंदों कें प्रयोग करै में कोय अनर्गल बात नैं करने छोंत। तबें नी 'ई जिनगी' कें कवितासिनी में वस्तु-जगत् आरो स्वानुभूति सें जुड़लों सुष्ठु काव्यात्मकता ऐलों छै --

"सब्भैं कहै छै/ हम्में छी आगू/ तोहें छों पीछू/
देखाइयो पड़ै छै/ कोय आगू/ कोय पीछू/
आगू-पीछू रों चक्कर/ छै हैनों भैया/ किस्मत रों/
सब रौनक पर/ पड़ी गेलै खटैया/ होड़ें दौड़ें/
धूम मचाय छै/ धुआँ करै छै/ मन रों भीतर/ कुआं,
करै छै/ निस्तार एक्के छै सतल।''

रामशंकर मिश्र 'पंकज' (श्री)

वैद्यनाथधाम-देवघर-निवासी श्री रामशंकर मिश्र 'पंकज' एनाकें तें मूलतः हिंदी कें कवि छेकात, मतुर अंगिकाओ में रचना करै छोंत। हिनकों अंगिका-कविता 'अंग-माधुरी' पत्रिका में छपलों मिलै छै। हिनकों कविता में भावों कें गाम्भीर्य मिलै छै। हिनकों एक-टा काव्य-संकलन (हिंदी में) प्रकाशित होलों छैन्। मंचों पर हिनकों कविता-पाठ अच्छा जमै छै।

'पंकज' जी कें कविता में अंगिका (देवघरिया) भाषा कें पुट जेना कि भावों कें साथें होड़ करतें चलै छै --

"फुल्ला बुतरू सारी मोंन, रही-रही कें फाटै छें ;
चान छुवै लें चाहै छी, हाँथे नें हमरों आँटे छें !''

अवधबिहारी आचार्य

श्री अवधबिहारी आचार्य कें जन्म नौगछिया कें पकरा गामों में भेलों छैन्। हिनी हिंदी में एम. ए. आरो शिक्षा-शास्त्रों में प्रशिक्षण प्राप्त कैने छोंत।

हिनकों एक काव्य-संकलन १९७१ ई. में प्रकाशित होलों मिलै छै। कवितासिनी में युग-स्वर मुखरित होलों छै। आपनों एक-टा संबोधन-गीतों में देलों हिनकों संदेश छै --

"युग-पूजित तोहें दीपित तोरा नैं शीश झुकाना छौ ;
आपनों गौरव-गाथा कें तोरा नैं कभी भुलाना छौ।
आर्य - कुलों कें गौरव-भूषण ! जागें, भेल बिहान रे।"

कुमार भागलपुरी (श्री)

कुमार भागलपुरी जी कें घोंर रैपुर (भागलपुर)। हिनी भाषा-शिक्षक छोंत। हिंदी में स्नातकोत्तर उपाधि लेला कें बाद हिनी कुच्छू दिनों ताँय आकाशवाणी, भागलपुरों सें जुड़लों रहलात।

'भागलपुरी' जी कें कविता 'अंग-माधुरी' आरो 'पूर्वा' -जेन्हों पत्रिका में छपतें रहै छै। हिनी आशु-कवि आरो कुशल वक्ता छोंत आरो हास्य-व्यंग्य-प्रधान रचना करै छोंत। हिनकों कविता --

"सबसें अच्छा छै ननिहार ; नाना-नानी कें संसार !
नाती जीएँ लाख बरीस ; नाना-मुख बरसै आसीस।
जे नाना-घर जाय मोटाय, वेहें नानी कें सोहाय।"
-- 'ननिहारों कें गीत'।

शंकर मोहन झा (डॉ०)

डॉ० शंकर मोहन झा कें जन्म १६ अगस्त, १९५४ ई. कें बाबा वैद्यनाथ कें नगरी देवघर में होलों छै। श्री शशांक मोहन झा आरो श्रीमती कुसुम देवी कें सुपुत्र झा जीं सुख्यात जन-कवि सदुपाध्याय भवप्रीतानन्द ओझा कें काव्य-कृतित्वों पर गंभीर शोध करी कें हाल्है में भागलुपर विश्वविद्यालयों सें पी-एच. डी. डिग्री हासिल कैने छोंत। हिनकों शोध-कार्यों कें एक विशेषता ई छेकै कि हिनी स्व० ओझा जी कें पदावली कें भाषा कें अंगिका सिद्ध करै में अपेक्षित सफलता पैने छोंत।

डॉ० शंकर मोहन झा कें कोय स्वतंत्र पुस्तक तें अब ताँय नै प्रकाशित भेलों छै, मतुर हिनकों पहिलों अंगिका-गीत 'अंग-माधुरी', १९७५ ई. मे छपलों रहै। हिनी एक गीतकार छेकात, मतुर छंदमुक्त कविताओ करै में हिनका महारत हासिल छैन्। हिनकों कविता में यथार्थवादिता कें साथें-साथ सरसता आरो सहज बोधगम्यता रहै छै। डॉ० शंकर मोहन झा कें एक-टा अंगिका (देवघरिया) कविता कें एक अंश --

"झारखंड नामों'क बोंन तें आबें खाली भवप्रीता'क रचना'म रहले ;
बुजुर्ग पीढ़ी'क माथा'म बिसरतें-भूलतें जरा-जुरी बचलों होते।"

अंजनी कुमार शर्मा 'विशाल' (श्री)

श्री विशाल जी भागलपुरों कें एक उभरलों पत्रकार, कवि आरो लेखक छेकाथ। हिनकों कविता 'अंग-माधुरी' पत्रिका आरो कयेक-टा संकलनों में ऐलों छै।

कवि विशाल जीं विशेष करी कें मानव-मूल्य आरो समाजों में पनपतें हुएँ धरातलीय मोह या प्रवृत्ति संबंधी कविता करै छोंत। हिनकों 'वृक्षारोपण' कविता कें एक बानगी देखलों जाय --

"बेचारी माटी तें छै/ बाढ़ में तबाह !
टूक-कें-टूक पत्थर गिरै छै,
कमै छै नै तइयो कटाव।
पानी कें साथ पैसा बहै छै,
खाली मिलै छै ऑफिसरों कें दाव।"

-- 'सात समन्दर साथ', पृ. ४१

वेद प्रकाश बाजपेयी (श्री)

श्री बाजपेयी जी वंदनवार (जिला गोड्डा) कें निवासी छेकात। हिनकों बेसी अभिरुचि यदियो पत्रकारिता दिस छैन् तैयो हिनकों पहिलों अंगिका कविता 'आदमी' छेकै। हिनी एक-टा अंगिका काव्य-संकलनों में छपलों छोंत। हिनकों कविता --

"हम्में/मशीन बनी कें/गड़गड़ाय छियै !
की हो,/जीयै छियै की ?
कहाँ मालूम छै--/कहाँ/कैन्हे जाय छियै !
चक्का कि मोटर .... की छियै ?" -- 'अंग-माधुरी' सें।

देवेन्द्र (प्रो०)

प्रो० देवेन्द्र अंगिका आरो हिंदी कें सजग कथाकार, सक्षम समीक्षक आरो संवेदनशील कवि छेकात। हिनकों रचना सरजमीनों कें छूतें चलै छै। सर्वहारा वर्गों कें जीवनों कें घात-प्रतिघातों कें पारखी जनवादी चेतना कें कवि प्रो० देवेन्द्र जी कें एक साहित्यकारों कें रूपों में अच्छा प्रतिष्ठा छैन्। अंगिकाओ पर हिनकों अच्छा अधिकार छै। 'अन्हार काँपै छै' हिनकों कविता कें एक अंश देखलों जाय --

"कहीं सें ढोलक-झालों कें आवाज आबै छै ;
एक ढोलक ढेरी झाल -- अन्हार काँपै छै !
एखनियें तें/मुर्दघट्टी रङ लागै रहै सौंसे इलाका !
जिनगी कें कहीं कोय दरेस नैं !
नैं धरती, नैं आकाश ; कुछ नैं सूझैं रहै यहाँ सें वहाँ तक।
जनाँ एक्के गो करिया पहाड़ -- अन्हार !
जनाँ जमी गेलों रहें करिया रात !''

-- 'प्रतिनिधि अंगिका कवि', पृ. ११८.

रतनकिशोर (श्री)

श्री रतनकिशोर जी गुरुबाजार (कटिहार) कें निवासी छथिन। साहित्यों दिस हिनकों अभिरुचि हिंदी आरो अंगिका कें प्रख्यात कथाकार श्री अनूपलाल मंडल (स्व०) कें प्रेरणा सें जागलों छै। हिनकों कविता कें आधार-फलक बहुत फैललों छै। रूपक कें शैली में हिनकों एक गीत --

" बेबसी गावै छै उलझन कें राग,/जीवन कें जंगल में लागलों आग।
दुविधा कें दलदल में अंतर कें फूल,/चिता चढ़लों ढेरों सें अनब्याही धूल।
साँसों कें उपवन में उड़लै काग ! ''

विजय (डॉ०)

१ जनवरी, १९४९ ई. कें जन्म लेलों डॉ० विजय कें घोंर गाँव सहसी (जिला खगड़िया) छेकैन्। हिनी आरक्षी-सेवा सें संबद्ध छोंत आरो 'तुलसी' नामों कें एक पत्रिका कें माध्यमों सें अंगिका कें सेवा करतें आबी रहलों छोंत। 'माटी' आरनी काव्य-संकलनों में हिनकों रचना छपलों छै। कविता हिनी गद्य-शैली में

लिखै छोंत। हिनकों 'चाँद' कविता --

"चाँद, बच्चा लें/सफेद-सफेद गेंद ;
चाँद, सुहागिन वास्तें/कारों कपार पर उजरों सुंदर बिंदिया ;
मतुर, चाँद,/हमरा लें/
चूल्हा पर चढ़लों अल्मूनियम कें हंडी
या ताबा पर सेकैतें कच्चा रोटी।"

-- 'अंगिका कें प्रतिनिधि प्रकृति कविता', २७.

अमरेन्द्र (डॉ०)

अंगिका साहित्यों कें अन्यतम महारथी डॉ० अमरेन्द्र आपनों सर्वतोमुखी प्रतिभा सें अंगिका-साहित्यों कें अंग-प्रत्यंगों कें अलंकृत करी रहलों छोंत। हिनकों जन्म ५ जनवरी, १९४९ ई. कें बाँका जिला, रजौन थाना कें रूपसार गामों में भेलों छै, मतुर भागलपुरों में रहै छोंत। हिनी अंगिका कें अलावे हिंदीयो कें कवि, गीतकार, गजलकार, पत्रकार आरो समीक्षाकार कें रूपों में ख्यातिलब्ध छोंत। कविता कें साथें-साथ नाटक, निबंध, कहानी, शोध, बाल-काव्य आदि दोसरो-दोसरो विधा में हिनी स्तरीय रचना करै छोंत।

आभी ताँय अमरेन्द्र जी कें 'सूरज के पार', 'जनतंत्र का विक्रमशिला' 'करिया झूमर खेलै छी', 'पीर का पर्व पुकारे', देहरी पर दीया', गेना', 'ढोल बजै छै ढम्मक-ढम', 'स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी' (संपादित) इत्यादि पुस्तक प्रकाशित होय चुकलों छै जबें कि हिंदी आरो अंगिका कें कत्तें नी संकलन आरो पत्रिका कें संपादन हिनी करतें ऐलों छोंत। अखनी 'आंगी' पत्रिका कें संपादन आरो प्रकाशनों हिंदी-अंगिका में करी रहलों छोंत, जे कि एक स्पृहणीय पत्रिका कें रूपों में जानलों-मानलों जाय रहलों छै। यै इतिहासों कें गद्य-भागों कें लेखन/संपादन हिनकें द्वारा करलों गेलों छै। 'गीत-गंगा', 'सात समन्दर साथ' आरो 'आठ समन्दर आँख' हिनकों अंगिका कविता कें संपादित पुस्तक छेकै। 'गीत-गंगा' कें अंत में हिनकों एक गाथा-गीति-नाट्य 'अंगदेव' लागलों छै, जेकरों एक विशिष्ट महत्व छै।

अंगिका कें काव्य-कृति कें रूपों में अमरेन्द्र जी कें 'करिया झूमर खेलै छी', 'ढोल बजै छै ढम्मक-ढम' आरो गेना' विशेष रूपों सें उल्लेखनीय छै। 'अंगेदव' १५ पृष्ठों में ४६२ पाँती कें एक लंबा गीति-गाथा-प्रबंध छेकै।

लोक-गीति-गाथा शैली आरो लोक-लय-धुनों में लिखलों एक भौगोलिक कविता छेकै ऊ। गंगा, कोशी, चानन नदी आरो अंग-देशों कें मानवी आरो देव-रूपों में उरेखलों इतिवृत्त -- अमरेन्द्र जी कें त्रासदी काव्य छेकै। करुण रसों में एकरों अंत भेलों छै, मतुर आशा कें किरिन लेलें --

-- "होलों छै आकाश सें भाषण पुरतै किंछा तीनों बहिन रों, हो राम ;
राम, होतै अबकी तीन-तीन अंग-देश अबकी जनम में , हो राम।
ई वचनों कें सुनी कें गंगा कोशी चानन खलखल हाँसै छै, हो राम ;
राम छम-छम नाचै छै आरो मास में खमखम भादों में, हो राम।।"

x x x x x x

तखनी देव पितर आरो मानुख खाली अंगदेवे ध्यावै, हो राम ;
राम, अरज करै सब कहिया लेबा तोंय अवतार, हो राम।"

१९८२ ई. में छपलों 'करिया झूमर खेलै छी' डॉ० अमरेन्द्र कें पहिलका काव्य-संकलन छेकै। कुल २८ पेजों कें है संकलनों में हिनकों २३-टा कविता छै। यै किताबों कें शीर्षक आरो हरेक कविता कें पहिलों पाँती सें लागै छै कि ई एक-टा बाल-काव्य छेकै, मजकि बच्चासिनी कें फेंकड़ा, लोरी आरो सूक्ति कें बहाना सें कविवर अमरेन्द्र जीं समाज आरो देशों कें स्थिति अच्छा दरसैने छै एकरा में ; लोकमनों कें भाव आरो भाषा देने छै, गाम-घरों कें बात करने छै।

डॉ० अमरेन्द्र कें प्रबंध-काव्य 'गेना' केरों प्रकाशन १९९० ई. में भेलों छै। नौ सर्गों में समाप्त है काव्यों में कुल ९५ पृष्ठ लागलों छै। 'गेना' नामों कें एक झाड़ूदार (सफाई-मजदूर) कें जीवनों पर केन्द्रित 'गेना' अंगिका कें पहिलों दलित-काव्य छेकै ; एकरों प्रकाशनों सें एकरों रचयिता अमरेन्द्र जीं अंगिका में दलित-काव्यों कें एक स्तरीय ऊँचाई देने छै।

पाश्चात्य समीक्षा-शास्त्रों कें अनुसार काव्यों कें दू भेद होय छै -- एक विषयी-प्रधान (सब्जेक्टिव) आरो दोसरों विषय-प्रधान (ऑबजेक्टिव)। विषयी-प्रधान काव्यों कें तादात्म्य 'प्रगीत' सें आरो विषय-प्रधान काव्यों कें 'प्रबंध' (एपिक) सें स्थापित करलों गेलों छै। 'गेना' विषय-प्रधान काव्य छेकै। ई महाकाव्यों कें कोटि में आवै छै, जेकरा में एकरों नायक गेना कें सौंसे जीवनवृत्त छंदबद्ध होलों छै। एनाकें तें महाकाव्यों कें नायकत्व कोनो पौराणिक अथवा ऐतिहासिक व्यक्तित्वों कें प्राप्त होलों ऐलों छै, मतरकि 'गेना' दलित लोक-जीवनों पर केन्द्रित छै जे कि आधुनिकता कें एक उत्कृष्ट दृष्टान्त छेकै।

'गेना' अंगिका महाकाव्यों कें बृहत्त्रयी कें अंतर्गत आवै छै -- 'सवर्णा'

(डॉ० कुशवाहा), 'उर्ध्वरिता' (कविवर सुमन सूरो) आरो 'गेना' (डॉ० अमरेन्द्र)।

'गेना' कें वर्ण्य विषय आयकों विशृंखल समाज/समाजों में व्याप्त विसंगति छेकै, एक दलित पात्र (गेना) कें सामाजिक पीड़ा छेकै। वहें पीड़ा कें बखानों में गेना कें सौंसे जिनगी -- "करका कच्चा माँटी रङ बुतरू भेलै" (जन्म) सें लैकें 'अतना कही चुप भेलै गेना' (मृत्यु) ताँय -- कें वर्णन छंदबद्ध भेलों छै यै किताबों में। प्रबंध-काव्य 'गेना' कें नायक गेनाँ आयकों समूचे दलित वर्गों कें प्रतिनिधित्व करै छै। आयकों समाजों में ढुकलों जात-पाँत, ऊँच-नीच, धनी-गरीब, बड़ों-छोटों इत्यादि कें करुणा-भरलों वर्णन यै में होलों छै। लोक-जीवनों कें बहुज्ञ रचनाकार अमरेन्द्र जी नें जीवनों कें कत्तें नी प्रवृत्ति, निवृत्ति कें आपनों अनुभूति कें साथें गूंथी राखनै छै। खाली बौंसी (शहर) आरो आस-पासों कें लोगे कें नैं, बौंसी हेनों दोसरों-तेसरों शहरों-बाजारों कें लोगों कें मनोवृत्ति कें संस्कारवान् आरो संयमशील बनावै कें प्रयास करबों जेना कि 'गेना' कें संवेदनशील रचयिता (अमरेन्द्र जी) कें एक सदुद्देश्य रहलों रहें।

प्रबंध-रचना में प्रायः तीन अंग होय छै -- वस्तु-वर्णन, चरित्र-चित्रण आरो भाव-व्यंजना। 'गेना' में है तीन्हू कें निर्वाह होलों छै।

'गेना' बारहमासा तें नैं, मतुर दू-दू महीना कें जे छों ऋतु होय छै होकरे काव्य छेकै। बारहमासा विरह-काव्य होय छै, जै में कोय विरहिणी (नायिका) आपनों परदेशी प्रीतमों कें विरह में आपनों मनोदशा कें बखान महीना, पाँख आरो नक्षत्रों कें गुण-दोषों पर करै छै। 'गेना' है वर्णन-परंपरा में नैं आवै छै। साल भरी कें छवो ऋतुवों कें चालों पर नायक गेना कें जीवनवृत्त एकरा में घुरै छै। यै में जग्घों-जग्घों पर प्रकृति-वर्णनों कें मनोहरता तें छेबे करै छै, प्रकृति कें संगें गेना कें प्रवृत्ति आरो ओकरों प्रवृत्ति कें संगें नैसर्गिक प्रकृति कें सुंदर समन्वय भेलों छै।

'गेना' लोक-जीवनों कें महाकाव्य छेकै, जेकरा में लोक-व्यवहारों कें शिक्षाप्रद संदेश भरलों छै। एकरा एक समाजवादी महाकाव्य कहलों जाय तें कोय अत्युक्ति नैं। ई एक त्रासदी काव्य छेकै। एकरों अंग-रस 'करुणा' छेकै, जबें कि शृंगार, शान्त, वीभत्स-आर अंगी-रसो कें स्थान यै में मिललों छै। रसें गुणों कें सहारा लै छै। यै दृष्टि सें 'गेना' प्रसाद-गुण-पूरित सरस काव्य-कृति छेकै। भावों कें खोलै में, अर्थ-बोध करावै में, कथेक रकमों कें अलंकारों कें समावेश एकरा में नीकों भेलों छै। उपमान स्थानीय प्रकृति सें बेसी लेलों गेलों

छै ; रूपक आरो उत्प्रेक्षा कें तें भरमारे छै। काँहीं-काँहीं लोकोक्ति-जेन्हों अलंकारो कें प्रयोग भेलों छै यै में।

डॉ० अमरेन्द्र नें 'गेना' में मुख्य रूपों सें मात्रिक वृत्त (छंद) 'सार' आरो वर्ण-वृत्त 'कवित्त' कें प्रयोग करने छै। वोहो शास्त्रीय वृत्त में गेय पदों पर सटीक उतरै छै। 'गेना' कें भाषा ठेठ अंगिका कें निखरलों रूप छेकै। काँहीं-काँहीं मिथकों कें उपयोगों सें यै में गाम्भीर्य आबी गेलों छै। कर्त्तव्यनिष्ठ, यथार्थपरक, उदात्त चरित्र-चित्रण 'गेना' कें विशेषता छेकै। संक्षेपों में, 'गेना' अंगिका-साहित्यों कें एक विशिष्ट उपलब्धि छेकै।

'ढोल बजै छै ढम्मक-ढम' सुकवि अमरेन्द्र जी कें बाल-कविता-संग्रह छेकै, जेकरा में बच्चासिनी कें मनोभावों कें अनुकूल भाषा आरो छंदों में हिनकों ३५-टा छोटों-छोटों अंगिका कविता संकलित छै। अंगिका बाल-कविता कें क्षेत्रों में है सचित्र किताबों कें विशिष्ट महत्व छै, जेकरा सें अंगिका-साहित्यों कें एक अभावों कें पूर्ति होय छै। बच्चासिनी कें मनोरंजनों में 'ढोल बजै छै ढम्मक-ढम' कें स्पृहणीय स्थान है। 'मुर्गा', 'मछली', 'छाता', 'कौआ', 'जाड़', 'बकरी', 'दीवाली', 'भोर', 'चाँद', 'गान्धी बाबा', 'धुम्माँ', 'रेल', 'ढोल', 'भालू', 'हाथी', 'मामा', 'ऊँट' ओगैरह शीर्षकों कें कविता है किताबों में लगलों छै। 'जाड़' कविता कें एक अंश देखलों जाय --

"दलदल दलकै हमरों हाड़ ; सुइये रङ चूभै छै जाड़।
कँपकँप काँपै दोनों ठोर ; कस्सी बान्हलों गाँती जोर।
कनकन्नों राते रङ भोर ; गुरुओ जी सें जाड़ कठोर।
गललों जाय छै हमरों हाड़ ; कहिया जैभा तोहें जाड़। ''

रमेश आत्मविश्वास (डॉ०)

डॉ० रमेश आत्मविश्वास कें पूरा नाम छेकैन्ह श्री रमेश मोहन शर्मा 'आत्मविश्वास'। हिनकों जन्म जयमंगल टोला, साहु परबत्ता (नौगछिया, भागलपुर) में १ फरवरी, १९४९ ई. कें भेलों छै। हिनी हिंदी में स्नातकोत्तर, शिक्षा-शास्त्रों में स्नातक आरो 'अंगिका अंचल कें लोक-साहित्य कें अध्ययन' पर पी-एच. डी. डिग्रीधारी कवि, साहित्यकार, पत्रकार आदि छोंत। हिनकों संपादनों में एक अनियतकालीन अंगिका-पत्रिका 'अंगिकाँचल' निकलै छै। 'ज्योति तपस्या' आरो 'बाबा बिसू रॉथ' कें लोक-गाथाओ हिनकों संकलन आरो संपादनों में निकललों छै।

डॉ० आत्मविश्वासकृत कोय अंगिका काव्य-संकलन हमरा देखला में नैं ऐलों छै, मतुर हिनी अंगिकाओ में नीकों कविता करै छौंत। पत्रिकासिनी में हि·कों जोंन अंगिका कविता छपलों छैन् वैसिनी में आयकों संदर्भो में व्यथा-कथा क· तों मिलै छै। 'कुली' शीर्षक हिनकों कविता कें एक अंश देखलों जाय --

'पेटों कें खातिर कमाय लें लागै छै, हाकिम !
दिन-भरी दूर-दूर जाय लें लागै छै, हाकिम !

x x x x

कुली समझी कें 'रे-बे' करी दै छै, बाबू !
पैसा दै खिनी चौअन्नी दै छै कम्मे !
शरीफ केकरा कहय छै --
आबें नञ जानै छियै, हाकिम ! पेटों कें खातिर ।।''

-- 'अंगिकाँचल', दिसंबर, १९९६ ई.

अनिरुद्ध प्रसाद विमल, 'विद्यावाचस्पति'

स्व० चक्रधर प्रसाद यादव आरो श्रीमती पार्वती देवी कें आत्मज श्री अनिरुद्ध प्रसाद विमल कें जन्म मिर्जापुर-चंगेरी (बाँका जिला) में १८ जून, १९५० ई. कें भेलों छै। हिंदी में एम. ए. आरो शिक्षा-शास्त्रों में स्नातक डिग्रीधारी 'विमल' जी कें साहित्य-सेवा पर 'कविरत्न', 'विद्यावाचस्पति', 'पत्रकारश्री', 'साहित्यशिरोमणि' आदि मानद उपाधि कयेक संस्था सें मिललों छैन्। हिनी हिंदी आरो अंगिका में कविता, कहानी, नाटक, लघु कथा आदि अनेक विधा कें रचना करने छौंत आरो करी रहलों छौंत। १९७८ ई. में संस्थापित 'समय साहित्य सम्मेलन, पुनसिया (बाँका)' कें संस्थापक-महामंत्री आरो हिंदी त्रैमासिक 'समय' कें संपादकों कें रूपों में हिनी एक जानलों-मानलों साहित्यकार छेकात। हिंदी आरो अंगिका में हिनकों कयेक-टा नी किताब प्रकाशित होय चुकलों छै। वैसिनी में 'कागा की संदेश उचारै !' (प्रगीत प्रबंध-काव्य) आरो 'साँप' (नाटक) अंगिका में लिखलों हिनकों विशिष्ट कृति छेकैन्ह। एकरों अलावे 'प्रतिनिधि अंगिका कवि', 'ऐंगना उतरलै चाँद' आरो 'गीत-गंगा' काव्य-संकलनों में हिनकों दू दर्जनों सें बेसी कविता लागलों छै। अंगिका भाषा-साहित्यों कें विकास-चिंतनों सें जुड़लों व्यक्तित्व श्री अनिरुद्ध प्रसाद विमल कें 'कागा की संदेश उचारै!' अंगिका-साहित्यों कें एक विशिष्ट उपलब्धि छेकै।

'कागा की संदेश उचारै !' कें समीक्षात्मक मूल्यांकन डॉ० डोमन साहु 'समीर', डॉ० अमेरन्द्र, डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव, डॉ० मुचकुन्द शर्मा, डॉ० कमलकिशोर गोयनका, डॉ० बालेन्दुशेखर तिवारी, डॉ० श्रवण कुमार गोस्वामी आरनी विद्वानें मुक्त कंठों सें कैने छै। संस्कृत, अपभ्रंश, अवधी, ब्रजभाषा आरो हिंदी कें 'मेघदूत', 'संदेशरासक', 'पद्मावत', 'भ्रमर-गीत' आरो 'कनुप्रिया' कें परंपरा में अंगिका कें 'कागा की संदेश उचारै !' एक उत्कृष्ट विरह-काव्य कें कोटि में आवै छै, जेकरा में अनूढ़ा परकीया नायिका 'साँवरी' (छद्मनाम्नी) केरों विरह-विथा तलस्पर्शी रूपों में, भिनु-भिनु ऋतु-चक्रों कें प्रसंगों में, उभरलों छै। "कागा की संदेश उचारै !' अंगिका की उत्कृष्ट सृष्टि है। ...पंक्ति-पंक्ति में मार्मिकता है। ...भावों की बाढ़ उमड़ती-सी लगती है।'' (डॉ० मुचकुन्द शर्मा) ; "महाकाव्यात्मक गरिमा से मंडित काव्य 'कागा की संदेश उचारै !' प्रिया की स्मृति पर लिखा गया अद्भुत सृष्टि है।'' (डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव) ; "कागा की संदेश उचारै !' डॉ० अमरेन्द्र के कथन -- 'विरह-काव्य-परंपरा का विराम-चिह्न' -- को सत्य सिद्ध करता है।'' (डॉ० गोयनका) इत्यादि।

मुक्त छंदों में रचलों 'कागा की संदेश उचारै !' में भाव, भाषा आरो लयात्मकता कें मनोहर समन्वय छै। अंगिका कें एक उत्कृष्ट आरो विशिष्ट कृति छेकै ई।

अनिरुद्ध प्रभास (श्री)

गाँव बनियाडीह (थाना गंगटी, जिला गोड्डा) में ५ मई, १९४९ ई. कें जन्म लेलों श्री अनिरुद्ध प्रभास हिंदी में एम. ए. छौत। हिनी मुख्य रूपों सें अंगिका कें सिद्धहस्त कथाकार/उपन्यासकार छेकात। हिनकों लिखलों 'छाहुर' अंगिका कें बहुचर्चित उपन्यास आरो 'चम्पा कें राजकन्या' नाटक छेकै। हिनी अंगिका में कत्तें नी कविताओ रचलें छोंत, मतुर किताबों कें रूपों में छपलों हिनकों कोय संकलन हमरो नजरी में नैं पड़लों छै। हिनकों कविता में आधुनिकता के स्वर उभरलों मिलै छै। 'चैतों कें दुपहरिया धूप' कविता कें एक अंश लेलों जाय --

"दारू सें मातलों सौंतारों रङ नाचै छै,
कंठों में लसकलों मंतर पंडितों कें,
खकसी कें फेरू गोस्साय कें बाँचै छै ;
तावों सें तबलों कुम्हारों कें आबा,
मने नैं मानै तें रही-रही आँचै छै,

--ऐसने छै सुरुजों कें रूप !
चैतों कें दुपहरिया धूप !''

-- 'प्रतिनिधि अंगिका कवि', पृ. ९९

सुरेश प्रसाद सिंह (डॉ०)

खगड़िया जिला कें पसराहा गामों में डॉ० सुरेश प्रसाद सिंह कें जन्म १० दिसंबर, १९५१ ई. कें होलों छै। हिनी हिंदी/अंग्रेजी में एम. ए. आरो पी-एच. डी. उपाधि- प्राप्त छोंत।

सुरेश जी कें दुइ-टा नाटक, 'माँ की कसम' आरो 'धरती का स्वर्ग' हिंदी में छै। एक-टा पत्रिकाओ निकालै छेलात।

हिनकों अंगिका कविता जीवनानुभव-युक्त होय छै। रहस्यवादिता कें आवरणों में हिनकों कविता में संगीत, चित्रात्मकता आरो प्रतीकात्मकता विशेष करी कें मिलै छै। हिनकों कविता कें एक अंश --

"धर्मों कें छोड़ी कें/असभ्ये हमें रहबै ;
धर्महीन दुनियां में/लोग आय कैद छै,
मानवता कैद छै/आपनों ही घरों में।''

नन्दनन्दन (श्री)

कमलपुर (पुनसिया, बाँका) -निवासी श्री नन्दनन्दन जी कें जन्म करमा एकादशी, १९५२ ई. कें भेलों छै। विज्ञान आरो कानून कें स्नातक नन्दनन्दन जी कें अंगिका कविता ऐंगना उतरलै चाँद' आरनी कविता-संकलनों में ऐलों छै। हिनी गद्य-शैलीयों में लिखै छोंत। हिनकों भावाभिव्यक्ति मार्मिक, जीवन-मूल्यों कें निर्धारित करैवाला होय छै --

'हुनकों/अलसइलों आँख,/जेना पियासली -- थकली
हिरनी/चटपट जी/पछिया कें मारलों ठोर/जेना चुसलों --
अधसुखलों गुलाब/अँचरा कें छोर ;/ढील-ढाल .../''

-- 'मुनियाँ कें आँख' सें।

विपिन परमार (श्री)

'कविरत्न' -आर कें उपाधि सें सम्मानित श्री विपिन परमार (श्री विपिन कुमार मिश्र) कें जन्म १२ जुलाई, १९५३ ई. कें ग्राम तगेपुर (अंचल जगदीशपुर,

जिला भागलपुर) में होलों छै।

आयकों भारतीय साहित्यों में जेना लघु कथा कें एक नया विधा अस्तित्वों में ऐलों छै तेन्हैं अंगिका में परमार जी कें लिखलों छोटों-छोटों कविता (लघु कविता) आपनों अस्तित्व खोजी रहलों छै। निस्संदेह, वै तरहों कें कविताँ तुरन्त असर डालै छै। हिनकों कवितासिनी में आयकों समाजों कें स्वरूप आरो मनोवृत्ति भाषा पैने छै। एकाध उदाहरण --

काटै छै/ "काटै तें सब्भैं छै --
हम्में हुनंकों खेत काटै छियै
आरो हुनी हमरों पेट काटै छै !"

गनै छै/ "हुनियों गनै छै !
आरों हम्हू गनै छियै --
हुनी नोट गनै छै
आरो हम्में तारा !"

-- 'प्रतिनिधि अंगिका कवि', पृ. १३७.

ऐन्हें, 'विचार', 'देवदूत', 'पेंच', 'किरिया' आरनी पर हिनकों अनेक प्रतीकात्मक अणु-कविता बड्डी व्यंग्यपूर्ण छैन्।

देशभक्त (डॉ०)

कत्तें नी मान-सम्मानों सें विभूषित डॉ० देशभक्त जी कें जन्म ३० जून, १९५३ ई. कें भेलों छै। हिनकों अंगिका कविता 'अंग-माधुरी', 'आंगी' आदि पत्रिका में छपतें रहै छै। हिंदी आरो अंगिका कें पत्रकार 'देशभक्त' जी उत्तरी अंगक्षेत्रों कें रचनाकारों में महत्वपूर्ण स्थान राखै छोंत। हिनकों कविता में आयकों लोगों कें मनों कें तिक्खों अभिव्यक्ति रहै छै। हिनकों 'पहिने छों भारतवासी' कविता कें एक अंश लेलों जाय --

"अंग-बासी छों, बंग-बासी छों
या छों कोनो प्रान्त, जिला, गाँव-वासी--
है-सब छों बादों में तों,
पहिने छों भारत-वासी।
एहनों काम नैं करो, भैया !
जेकरा सें हुएं देशों कें छती ;
एहनों काम केकरहौ नैं करें दें

जेकरा सें हुएँ देशों कें अपमान।''

-- 'प्रतिनिधि अंगिका कवि', पृ. १११-१३.

तारकेश्वर ठाकुर 'सुमन' (श्री)

१६ जनवरी, १९५४ ई. कें गोड्डा जिला, गंगटी प्रखंड कें रुंजी गामों में उत्पन्न श्री तारकेश्वर ठाकुर 'सुमन' अंगिका कें स्वनामधन्य कवि श्री भिखारी ठाकुर 'अधूरा' कें सुपुत्र छेकाथ। हिनकों कविता में अंग-देशों कें माटी आरो कर्म केरों महिमा अभिव्यक्ति पैने छै। हिनकों एक कविता कें एक अंश --

"ई छेकै कर्मयुग/कुछु काम करों ;
कैन्हें कि काम नें/नाम आरो निसानी छोड़ै छै ;
जे-जे बड़ों छेलै/महान् छेलै, कुछु करी गेलै ;
छोड़ी गेलै धरती रों गोदी में छाप।'' --'कर्मयुग' सें।

राजकुमार (श्री)

पटना जिला, बाढ़ अनुमंडल कें शहरी गामों में १९५४ ई. में अवतरित श्री राजकुमार जी कें कर्म-क्षेत्र भागलपुर छेकै। 'कविरत्न' कें उपाधि प्राप्त आरो राजभाषा विभाग, भागलपुर प्रमंडल सें सम्मानित राजकुमार जी सचमुच 'गीतों कें राजकुमार' छोंथ। अंगिका, मगही आरो हिंदी -- सब्भे में हिनकों गीत एक्के रङ उभरै छै। हिनकों मगही किताब 'लपकी' मगही कें बढ़ियाँ-बढ़ियाँ किताबों में स्थान पावै छै। अंगिका में हिनी 'अनल' जी कें साथें संपादित 'अंग-मंजरी' काव्य-संकलन देने छोंत, जे कि काफी चर्चित होलों छै।

राजकुमार जी कें कविता कें विषय देश आरो समाजों कें वर्तमान परिदृश्यों कें उजागर करैवाला होय छै। इहाँ हिनकों दखिनाहा बरखा कें एक-टा झाँकी देलों जाय छै, जेकरा में अनुप्रासों कें छटा अच्छा निखरलों छै--

"दखिनाहा झिहिर-झिहिर झूम-झूम झोरै छै ;
चन्दन रों बगिया कें चाननीं अगोरै छै ;
खींचै छै उतरा लकीर।''

अचल भारती (डॉ०)

समकालीन कविता कें धरातल पर बहुचर्चित कवि डॉ० अचल भारती कें आविर्भाव बाँका जिला कें सोहानी गामों में २७ मार्च, १९५४ ई. कें होलों छै।

हिनी हिंदी आरो अंगिका के चर्चित हस्ताक्षर छौंथ। हिंदी पत्रिका 'आज की कविताएँ' (बाँका) के संपादक डॉ० गिरिजाशंकर मोदी के सहयोगी संपादक डॉ० अचल भारती के अंगिका कविता तुकान्त, अतुकान्त आरो मुक्तक होय छै। हिनका समाजों से बेसी लगाव छै। यै लेली हिनकों कविता में सामाजिक अंतर्ध्वनि के अभिव्यक्ति विशेष रूपों सें होलों मिलै छै। हिनकों कविता 'गाँवों के हवा' के एक अंश देखलों जाय --

"गाँवों के हवा बीमार छै,
शहरों सें ऐलों सब-कुछ उधार छै !
लोगों के आगूँ लाज बेकार छै ;
आरो, कवि छै कि आरी पर बैठी के --
गाय-गाय झुम्मर में खोजै संसार छै।"

-- 'प्रतिनिधि अंगिका कवि', पृ. १३५.

मीरा झा (श्रीमती)

श्रीमती मीरा झा, एम. ए. (हिंदी) अंगिका के कवयित्रीसिनी में अग्रगण्य छथिन। हिनकों जन्म तिथि छेकैन्ह १९ सितंबर, १९५४ ई.। हाल्है में अंगिका लोक-साहित्यों पर हिनी शोध करी रहली छथिन।

श्रीमती झाँ 'अंगप्रिया' पत्रिका के संपादन एकाध बेर कैने छथिन। विक्रमशिला हिंदी विद्यापीठ, ईशीपुर (भागलपुर) द्वारा हिनका 'विद्यावाचस्पति' के मानद उपाधि सें सम्मानित करलों गेलों छै।

मीरा जी गामों सें जुड़ली कवयित्री छथिन। हिनकों कविता में लोक-मंगल के भाव अभिव्यक्त होलों छै। माधुर्य-गुण-प्रधान हिनकों एक कविता के अंश देखलों जाय कि की रङ हिनकों मनों के ललक गामों दिस फिरलों छै --

"सपना सिंगार देखी फरू-फरू सिहरै ;
चिहुँकी के नीन खुलै रही-रही हहरै।
घुरी-घुरी छछनै छै मोंन करै रहतौं --
परदेशी पियवा के बाँह में।
घुरी चलों मीत ! फरू गाँव में।"

x x x x

"बरसलों बदरी के सुबास लेने मह-मह,
कातिक पुरनिमा के उजास लेने दह-दह

नगरों कें चिकनों अकासों रङ,
साफ छौं आँख तोरों।''
-- 'प्रतिनिधि अंगिका कवि', पृ. ८५

अनिल चन्द्र ठाकुर (श्री)

हिंदी, मैथिली आरो अंगिका कें सिद्धहस्त कवि श्री अनिल चन्द्र ठाकुर कें जन्म कटिहार जिला कें समेली गामों में, जहाँ हिंदी-अंगिका कें स्वनामधन्य कथाकार अनूपलाल मंडल रहै छेलात, २५ नवंबर, १९५५ ई. कें होलों छै।

अंगिका कें प्रबंध-रचना कें क्षेत्रों में ठाकुर जी कें अच्छा ख्याति मिललों छै। हिनकों काव्य-कृति 'कच' कें प्रकाशन १९७५ ई. में भेलों छै। ई एकार्थ-काव्य छेकै। यै में कच आरो देवयानी कें पौराणिक कथा कें अंगिका भाव आरो भाषा कें पहिरौन मिललों छै। 'कच' संयम कें काव्य छेकै। है लघु प्रबंध-काव्यें अंगिका कें आधुनिक प्रबंध-काव्य-लेखन कें दुआर खोललें छै। हिनकों कविता 'हवा' करों एक अंश --

"हम्में मनमोहक हवा, मंद-मंद बही कें --
सबकें दिल बहलावै छी, सबकें सुख पहुँचावै छी ;
थकलों राही कें मिटाय छी थकान,
मन कें ताजा करै कें/हम्में छेकाँ अचूक दवा।''

मीना तिवारी (श्रीमती)

ऐतिहासिक नगरी कहलगाँव (भागलपुर) कें सवासिन श्रीमती मीना तिवारी, जिनकों जन्म २५ दिसंबर, १९५५ ई. कें भेलों छै, आपनों रचना आरो संगीतों कें लहलहैलों बिरवा सें जगदीशपुरों कें कनेरी चाँदपुरों कें महिमा कें खिलखिलाय रहली छौंत।

मीना जी कें कला आरो गला दोन्हू श्रोतासिनी कें मनों कें जीती लै छै। हिनकों गीतें नव वसंतों कें प्रभाव नाखी विस्तार पैने छै। हिनकों एक लोक-कथा-संग्रह 'चलों, खिस्सा कें गाँव' हाल्हे में प्रकाशित होलों छेन्ह। हिनकों कविता --

'हे सखि ! ऐलै ऋतु वसंत।
अमुआँ मंजरी गेलै, खिली गेलै चितवन। हे सखि०।
मदमस्त पछिया/बूझै नै बतिया ;
आग लगावै वसंती रतिया, चितवा हिलौरै अनन्त/हे सखि०।''

प्रकाशसेन 'प्रीतम' (श्री)

श्री रामचन्द्र प्रसाद (पिता) आरो श्रीमती शकुन्तला देवी (माता) कें सुपुत्र श्री प्रकाशसेन 'प्रीतम' नें जिला बाँका, थाना रजौन कें बरौनी गामों में ५ जनवरी १९५६ ई. कें यै संसारों कें पहिलों प्रकाश देखने छोंत। हिनी अंगिका कें बेजोड़ गीतकार छोंत। हिनकों गीति-पुस्तक 'गुदगुदी' कें प्रकाशन १९८७ ई. में होलों छै, जेकरा में हिनकों १४-टा गीत संकलित छैन्। नामों कें अनुरूप 'गुदगुदी' अंगिका कें कवि आरनी कें गुदगुदैतें होलों उदात्त प्रेरणा दै छै। दुइये पाँती में 'प्रीतम' जी कें व्यंग्य कत्तें बेधक बनलों छै, से देखलों जाय --

'विज्ञान कें यै युगों में
स्कूटर पर साँढ़ चलै छै !''

नरेश जनप्रिय (श्री)

श्री राम प्रसाद पंजियारा आरो श्रीमती मिनती देवी कें परिवारों में श्री नरेश जनप्रिय जी कें जन्म १९ जुलाई, १९५६ ई. में भेलों छै। हिनी अंगिका आरो हिंदी में रचना करै छोंत। 'कवितांजलि' हिनकों हिंदी काव्य-संकलन आरो 'अँचरा' (१९८९ ई.) अंगिका काव्य-संकलन छेकै। यै में हिनकों २७-टा कविता छै।

'अँचरा' कवि 'जनप्रिय' जी कें प्रारंभिक कविता-संग्रह छेकै। गीत-शैली में रचलों यै किताबों कें कवितासिनी में 'जनप्रिय' जी नें आपनों सुख-दुख आरो गाम-समाजों कें कथा कहने छै। बच्चा-बुतरुओ लेली हिनी कुछेक गीतों कें रचना, बाल-भावना कें अनुकूल, करने छोंत। अंगिकाँ हिनका पर बड्डी असरा राखै छै हिनकों कविता --

"सुनें, सुनें रे सुगना ! नुनू के दै झुलना ;
चान मामा रोज उतरतै, झूमी-झूमी ऐंगना।''

-- 'नुनू कें गीत'।

अनिल शंकर झा (श्री)

श्री अनिल शंकर झा कें गाँव छेकै भागलपुर जिला कें वंशीपुर चटमा। वाँहीं झा जी कें जन्म १५ जनवरी, १९५७ ई. कें भेलों छै। कुछेक बरस ताँय हिनी 'बयान' पत्रिका कें संपादन करने छोंत।

श्री अनिल शंकर झा कें अंगिका कवित्व-रचना पर सम्यक् अधिकार छैन्। आपनों रचना पर हिनी आपनों साहित्यिक छाप अच्छा छोड़ने छोंत। हिनकों अंगिका कवित्तें हिंदी कें रीतिकालीन कवि घनानन्द कें याद दिलावै छै --

"हुनका नैं जावें देबै, चूड़ी खनकाय देबै,
नैन मुसकाय देबै, पलक झँपाय कें ;
रैन सें रिझाय फेनु बैन सें खिजाय देबै,
नैन सें गिराय देबै धनुख चलाय कें ;
सौ उलहनाय देबै, लोर ढरकायं देबै,
हुनका डुबाय देबै कजरा बहाय कें ;
यहू पर जों जैता तें जी कें समझाय लेबै,
लागी पिया पाँव लेबै सिसकी दबाय कें।''

-- 'प्रतिनिधि अंगिका कवि' सें।

भाव, भाषा आरो सदुक्ति-समन्वित ई कवित्तों कें चित्रात्मकता वस्तुतः देखै आरो समझै लायक छै।

विकास पाण्डेय (श्री)

"हमरा नैं अन्धड़ों कें डोंर/नैं बतासों कें/हमरा
नैं जेठों कें चिन्ता/नैं पूसों कें/ई सब्भे हमरों
पचलों छै/हम्में झूमतें रहै छी/जुड़ावै छी मोंन/
हम्में छेकाँ बाँस-बोंन।''

आत्मकथा कें शैली में बाँस-बनों कें भाव-वृत्ति कें गायक सुकवि श्री विकास पाण्डेय कें जन्म चम्पानगर (भागलपुर) में १० अगस्त, १९५८ ई. कें भेलों छैन्। हिनकों 'नदी कातों कें माटी' (कविता-संग्रह) छपी रहलों छै। एक बानगी --

"ई देवी छिकै/कि जोगिन ?
कभी शान्त रहै छै/कभी उमताय जाय छै !
जबें उमताय जाय छै तें हमरा निगली जाय छें,
जबें शान्त होय छै तें उगली दै छें,
हमरों दम्मों पर बीतै छै ;
ओकरों खेल फुरैतें नैं छै !

-- 'अंगप्रिया', दिसंबर, १९९१.

प्रतीकात्मक शैली में, नदी कें प्रति नदी कातों कें माटी कें है उलाहनों बड़ी ठीक उतरलो छै।

ब्रह्मदेव झा रतैठिया (स्व०)

ग्राम रतैठा (खड़गपुर, जमुई/मुंगेर) कें कवि ब्रह्मदेव झा 'रतैठिया' कें भगवानें कम्मे उमरी में ३ अप्रिल, १९८२ ई. कें अपना कन बोलाय लेलखिन। हिनकों कवि बड़ा धारदार रहै। हिनकों कविता में लोग-वेदों कें झकझोरी दै कें क्षमता रहै। जीवनों कें कठोर सच कें दर्शन रतैठिया जी कें कविता कें विशेषता रहै।

प्रसून लतांत (श्री)

'जेतन्है सुंदर नाम ओतन्है सुंदर काम' -- संयोगे सें ऐहिनों कोय मिलै छै। अंगिका कें वहें 'कोय' में एक छोंत प्रसून लतांत जी। हिनकों जन्म १९५८ ई. में हिंदी-दिवस कें अवसरों पर भेलों छै।

कवि आरो पत्रकार 'लतांत' जी कें कविता में लोक-जीवनों कें संवेदनशील झाँकी मिलै छै।

इन्दुभूषण मिश्र 'देवेन्दु' (डॉ०)

डॉ० देवेन्दु (१९५९ ई.) केरों हिंदी में 'मुट्ठी भर धूप' (काव्य) छप्लों छै आरो अंगिका में 'आपनों भारत देस वही' (खंड-काव्य) छपी रहलों छै।

पतझड़ खैरावादी (श्री)

कविरत्न पतझड़ खैरावादी कें जन्म ८ सितंबर, १९६० ई. कें खैरा (नाथनगर) में भेलों छै। हिनी अंगिका आरो हिंदी में रचना करै छोंत।

'खैरावादी' जी कें कविता कें मुख्य विषय छेकै सामाजिक पीड़ा। हौ पीड़ा जातिवादों कें हुएँ, आतंकवादों कें हुएँ या मानवीय अवमूल्यनों कें हुए, सबमें हिनकों कविता में स्थान पैने छै।

"ठीक छै ; ई प्रश्न अजीबो गरीब छै ;
एकरों उत्तर सिर्फ यही छै कि -- 'ठीक छै'।
चाहे लाख दुख रहें/दिल दर्द सें चूर-चूर रहें,
तैय्यो मुसकाय कें कहै लें पड़ै छै -- 'ठीक छै।''

कुमार दीपंकर (श्री)

कुमार दीपंकर आपनों ननिहर नारायणपुर (पीरपैंती) में नवंबर, १९६० ई. कें धरती कें दर्शन पहिलों दाफी कैने छोंत। हिनी अंगिका, भोजपुरी आरो हिंदी में कविता करै छोंत। हिनकों रचना 'नालन्दा-दर्पण', 'वाणी-विकास', 'अंग-मंजरी' -आर पत्रिका में छपलों मिलै छै।

हिनकों 'तुलसीदास रों महिमा' कें एक अंश --

"रामचरितमानस में तुलसीं रामकथा दरसैने छै ;
राम लला सीता मैया कें पुलकित प्रेम उगैने छै।
'मानस' में कविनें चौपाई दोहा छंद सजैने छै ;
महाकाव्य रची कें महाकवि कें सुंदर पदवी पैने छै।"

-- 'अंग-मंजरी' सें।

महेश बेजार (श्री)

स्व० दामोदर प्रसाद सिन्हा कें सुपुत्र श्री महेश बेजार जी कें जन्म १ फरवरी, १९६१ ई. कें भेलों छै। कला आरो कानून कें स्नातक कवि 'बेजार' जीं आपनों रचना कें माध्यमों सें निराश मनुष्यों में आशा कें संचार करै कें चेष्टा करै छोंत। हिनकों 'मानव रों इतिहास' कविता कें एक अंश --

'हे मानव ! उठों ; हारी गेला कैन्हें ?
ई अनमोल जिनगी सें/कोशिश करों नी आगू जाय लें फिरू ;
लक्ष्य पावै लेली हर हालत में/बढ़ना छौन्,
गमों कें ठोकर खाय कें भी/एकरा सें लड़ाय करना छौन्।"

धीरेन्द्र छतहारवाला (श्री)

गाँव छतहार (थाना शंभुगंज, जिला बाँका) में ३० दिसंबर, १९६२ ई. कें जन्मलों श्री धीरेन्द्र छतहारवालाँ हिंदी आरो अंगिका में कविता, निबंध, लघु कथा आदि लिखै छोंत आरो 'लहर' (हिंदी पत्रिका) कें संपादनों करै छोंत। हिनकों रचना अंगिका कें 'अंग-माधुरी', 'तुलसी', 'अंगप्रिया' -आर पत्रिकासिनी में छपतें रहै छै।

छतहारवाला जी अंगिका वास्तें एक समर्पित व्यक्ति छेकात। देवघर में उदित अंगिका साहित्य परिषदों कें स्थापना, डॉ० डोमन साहु 'समीर' कें अध्यक्षता में, करी कें हिनी १९८९ आरो १९९० ई. में दू बेर ओकरों सफल अधिवेशन

करवैने छोंत, जेकरों अनुगूंज आभी ताँय बरकरार छै। 'छतहारवाला' जी कें एक-टा अंगिका-कविता कें नमूना देखलों जाय --

"उठी जाय लहास हमरों प्यारा देश भाय-बहिन लेली ;
बहिन! मिटें नैं जब तक तम देशों कें
जलतें रहें हमरों सारा, होतें रहें देश प्रकाशित
खुशी रहें बहिन-भाय प्यारा।"

हिनी जिला सांस्कृतिक परिषद्, देवघर ; समय साहित्य-सम्मेलन, पुनसिया (बाँका) आदि सें सम्मानितं होय चुकलों छोंत।

कुन्दन अमिताभ (श्री)

श्री कुन्दन अमिताभ जी कें गाँव खानपुर माल (जिला भागलपुर) छेकै। है युवा अभियंता कवि कें जन्म १ जनवरी, १९६८ ई. कें होलों छै। अमिताभ जी कें कविता में भाव आरो भाषा कें सुंदर मेल मिलै छै। नमूना --

"केकरा परवाह छै-- रहें 'आपनों भारत सुंदर' ?
हम्में कपसतें-कपसतें गरजलियै,
हवा में थिरकन होलै,/दर्द-भरलों ध्वनि बिखरी गेलै,
हिन्ने-हुन्ने सन्नाटा में !
केकरा परवाह छै -- रहें 'आपनों भारत सुंदर'?"

राजमोहन शर्मा (श्री)

श्री शर्मा जी कें आविर्भाव ग्राम महौता (अमरपुर) में ५ मई, १९६९ ई. कें भेलों छै। हिनी अमरपुर सें प्रकाशित 'संकल्प' पत्रिका कें संपादक रहलों छोंत। हिनकों पहिलों कविता 'अंग-माधुरी' (नवंबर, १९८२) में छपलों रहै। 'प्रतिनिधि अंगिका कवि' काव्य -संकलनों में हिनी स्थान पैने छोंत। हिनकों कविता प्राकृतिक परिवेशों सें खास करी कें जुड़लों रहै छै।

हिनकों 'भोरकों एकान्त छन' कविता कें एक अंश --

"गेलै रात तें ऐलै भोर, धीरें-धीरें बहै बयार ;
पोखरी आ नदी कें पानी सिहरें लागलै बारम्बार।
कुछ छन में ऊषा कें लाली दुलरैतै कमलों कें फूल ;
यही छनें देतै कर्मो कें गाड़ी कें पहिया में तूल।।" पृ. १४५

दीपक ज्योति (श्री)

श्री दीपक ज्योति नौवाँ दशकों कें एक उभरलों कवि आरो पत्रकार छेकात। हिनकों जन्म गादीराता खेशर (जिला बाँका) में २ दिसंबर, १९६९ ई. कें भेलों छै। हिनी कुच्छू दिनों तक बाँका से प्रकाशित 'आफत' आरो 'अग-मेल' पत्रिका कें संपादन करने छोंत। अंगिका में हिनकों एक-टा कविता-संग्रह 'कानों बोंर' प्रकाशित भेलों छै जेकरा लोगें खूबे पसीन करने छै। वै संग्रहों कें कयेक-टा गीत जन-कंठों में विराजै छै। एक नमूना --

"कानों बोंर /पैसा ऊपर बेटी तोंर,
तइयो बिहैलों कानों बोंर !
तीन दाव गरजों तें सुनथौं उच्चों,
लोल छै बौगला रङ, कान छै बुच्चों !
सोनों रङ धीया कें जिनगी बुड़ैलाँ,
कानों जमाय देखीं जिया जुड़ैलाँ !"

महेश्वर झा 'व्यथित' (श्री)

अंगिका कें सधलों-मँजलों गीतकार श्री महेश्वर झा 'व्यथित' जी द्वारा तरह-तरह कें लोक-धुनों पर रचलों अंगिका गीतसिनीं नब्बों कविता सजैने-सँवारने छै। हिनकों कयेक-टा रचना अंगिका कें कुछेक संकलनों में ऐलों छै। हिनकों 'चिता धधकै छै' कविता कें एक अंश --

"सभैं देखे छै मशान, चिता धधकै छै !
एक दिन होय जैतै समान, सभैं समझै छै !
केश जरै छै घाँसों रङ आरो देह लकड़ी ;
बैठी कें सभैं सोचै छै आपनों माथों पकड़ी,
हमरों छूटतै प्राण, चिता धधकै छै !
एक दिन होय जैतै समान, सभैं समझै छै !"

-- 'प्रतिनिधि अंगिका कवि', पृ. ५५

शंभुनाथ मिस्त्री (श्री)

हिंदी कें संगें-संगें अंगिका नवगीति-रचना में निखरलों दुमकावासी श्री शंभुनाथ मिस्त्री एक सफल शिक्षक आरो भावुक संवेदना कें कवि छेकात। शिल्प आरो कथ्य दोन्हू में मिस्त्री जी कें अच्छा सफलता मिललों नजर आवै छै।

हिनकों 'ई पगडंडी' कविता कें एक अंश देखलों जाय --

"कत्तें छाप उखड़लों छै नंगा पाँवों कें !
यै पगडंडी कथा कहै छै गाँवों कें।
सुखलों कंठ यहाँ तरसै छै पानी लें ;
तबलों धरती सें चिनगारी फूटै छै।
यहाँ अन्हरिया रात पसरलों आठो याम ;
बिलखी-बिलखी सभें करम कें कूटै छै।"

भगवान प्रलय (श्री)

महेशपुर (कुरसेला, कटिहार) निवासी श्री भगवान प्रलय अंगिका के एक रससिद्ध गीतकार कवि छेकात। हिनकों कविता-पाठों सें श्रोतावर्ग विमुग्ध होय जाय छै। एकं गीतों कें एक अंश --

"केकरा कहबै, के पतियैतै, अंड्या भेलै गुदरी ;
है तिनरड्या रंग में कहिया रँगैबै चुनरी !
टुटली टाटी छेदों से लिहारै छियै ऐङना ;
कानी-कानी नून-रोटी माँगै भोरे चेङना !"

-- 'अंगिकाँचल', मार्च, १९९४ सें।

गिरिजा शंकर मोदी (डॉ०)

हिंदी कें कविता-पत्रिका 'आज की कविताएँ' कें संपादक डॉ० गिरिजा शंकर मोदी कें चिंतनशीलता समकालीनता सें संबद्ध छैन्। हिंदी में तें हिनकों कयेक-टा काव्य-संकलन निकली चुकलों छै, मतुर अंगिकाँ आभी ताँय बाटे जोही रहलों छै। हिनी यै पीढ़ी कें दरद, धरमों कें साजिश आरो संस्कृति कें झूठों कें बेटी जानै आरो मानै छोंत। वै मान्यता कें दरसावैवाला नमूना देखलों जाय --

"दहेजों कें बात, महाजनों कें हिसाब ;
सिलिण्डरों कें गैस, मिट्टी कें तेल, सलायों कें काठी !"

विजेता मुद्गलपुरी (श्री)

हास्य-व्यंग्यों कें चर्चित हस्ताक्षर श्री विजेता मुद्गलपुरी कें जन्म १ मई, १९६३ ई. कें मुंगेर में भेलों छैन्।

विजेता जी कें पहिलों कविता-संग्रह 'नीक बात नैं ठीक लगै छौ' जनवरी,

१९९५ ई. में प्रकाशित भेलों छै, जेकरा में दुइ-टा गजल आरो छौं-टा बड़ों-बड़ों कविता छै। हो किताबों कें आरो बेसी संस्कृत रूप देखै कें इच्छा कतेक लोगों कें छै। हिन्ने हुनी एक दोसरों संकलन 'कटरेंगनी कें फूल' छपवैने छौंत, जेकरा में गीत, गजल, मुकरी आरो विविध छंदों में रचलों कविता छै। वैसिनी में हुनी लोक-जीवनों कें यथार्थ आरो आयकों सामाजिक विसंगति-आर कें दर्शन करैने छौंत। ऊ खाली हास्य-व्यंग्यों कें पुटे सें नैं, बलुक प्रकृति-चित्रण, मिथक-प्रयोग, विंब, प्रतीक, रस, गुण, रीति, छंद-रूप आदि सें भारी-भरकम लागै छै।

सुकवि विजेता जी नें कटरेंगनी कें फूलों कें महत्वांकांक्षा आरो ओकरों बहाना/व्यंजना सें समाजों में पसरलों नाना प्रकारों कें रोगों/विसंगतियों कें अभिशमन लेली है किताबों कें माध्यम बनैलें छै, जे कि स्वागत कें योग्य छै। हुनकों हास्य-व्यंग्यों कें नमूना लेलों जाय।

"मारों ओकरा जों कोनो तोहर करें खिलाफ,
तोहर बड़को दोष पर उँगली रखना (छै) पाप !
दण्ड कें ऊ अधिकारी,
तोहरे बलें फूलें-फलें सगरो रंगदारी !
बोलों तारकनाथों सें कि तों हमरो तारों,
जों नैं तारें पारों तें पटैक कें उनकों मारों !''

खुशीलाल मंजर (श्री)

बाँका जिला कें मिर्जापुर-चंगेरी गामों कें निवासी श्री खुशीलाल मंजर हिंदी आरो अंगिका कें एक संघर्षों-मँजलों कवि-साहित्यकार छेकात। हिनको जन्म तिथि छेकै दीवाली, १९४५ ई.। श्री अनिलशंकर झा कें साथें ऐंगना उतरलै चाँद' संकलनों कें संपादन 'मंजर' जी नें तें करन्हें छौंत, 'पछिया पुकारै छै' (१९८४) कें नामों सें हिनकों आपनों कविता-संग्रहो प्रकाशित छै। आपनों आस-पास पसरलों परिवेश आरो सामाजिक विषमता कें सहज सुगम भाषा-शैली में उतारैवाला संवेदनशील कवि 'मंजर' जी कें 'छिरियैलों कहानी' कविता कें एक बानगी देखलों जाय --

"गाछी कें टुटलों पत्ता रङ उदास,
ओकरों जिनगी रों छिरियैलों कहानी !
जबें-जबें हमरा आँखी कें सामना में आबै छै,
लागै छै, हमरों करेजों फाटी जैतों !''

'वहे रङ भरी-भरी आँखी में लोर,
आरो सँपकटुवों रङ पीरों चेहरा ;
लागै जेना कि है दीया --
कखनी भभकी के बुताय जैतै !!''

रामावतार 'राही' (श्री)

लोकप्रिय हास्य-व्यंग्यकार श्री रामावतार 'राही' अंगिका कें एक भावुक कवि छोंत। हिनकों कविता-पाठो सें मंचों पर ठहाका फूटें लागै छै। सवा टका मे किनलो सूप हेराय' गेला पर एक घरनी कें उद्‌गार हिनकों 'किरिया पड़तै' कविता मे केना उभरलों छै, से देखलों जाय --

'ऐतै जबें समसुनरा कें बाप,
देतै हमरा दू-चार थाप,
झोंटों खींचतै, कान मोचारतै,
लाठी बजाडतै, चुट्टा सें दागतै,
तखनी हमरा के-के बचैतै ?
हक्कों नी हक्कों कें किरिया पडतै !''

-- 'प्रतिनिधि अंगिका कवि', पृ. ११६-१७।

गंगा प्रसाद राव (श्री)

समय-साहित्य-सम्मेलन, पुनसिया (बाँका) सें सक्रिय रूपों सें जुड़लों प्रगतिशील कवि-लेखक श्री गंगा प्रसाद रावनें 'अंगिका कें प्रकृति-कविता' संकलनों कें सपादन आरो 'रस-मीमासा' -जेन्हों समालोचनात्मक ग्रंथों के प्रणयन करी कें अंगिका भाषा-साहित्यों कें श्रीवृद्धि करै मे महत्वपूर्ण योगदान करने छै। हिनी एक संवेदनशील कवियो छेकात। हिनकों कविता में सामाजिक विसंगति कें निराकरण कें स्वर खास करी कें उभरै छै, जेना कि --

जात-पांत कें भेद मिटावों, एक नया समाज बनावों।
दशों कें कल्याण यहीं मे छै, मानवता कें मान यहीं में छै।
जन-जन कें सम्मान यहीं मे, जाति-विहीन समाज रचावों।

-- 'अंग-माधुरी', अक्टूबर, १९८६

सियाराम प्रहरी (श्री)

हिंदी कें सुपरिचित हस्ताक्षर श्री सियाराम प्रहरी (जमालपुर/मुंगेर) कें खंड-काव्य 'महासती शैव्या' (हिंदी) कें प्रकाशन हाल्हे में भेलों छै। हिनी अंगिकाओ कें एक भाव-प्रवण सुकवि छोंत। हिनकों एक गीतों कें बानगी --

"ई ओझरैलों जिनगी हमरों कत्तें नाच नचैलें छै !
फूल सभैं तें चुनीयें लेलकै, काँटों-सभ बिखरैलों छै !
बुतरू रोटी लें कानै छै, धरनी लाज बचावै लें ;
कत्तें आस लगैलियै आय तक सब सपना मुरझैलों छै।"

-- 'अंगप्रिया', दिसम्बर, १९९१ ई ।

अश्विनी (श्री)

पुनसिया मिर्जापुर-चंगेरी (जिला बाँका) में, लागै छै, साहित्यिक उर्वरता कम नैं छै। 'समय-साहित्य-सम्मेलन, पुनसिया' कें सक्रियता कें फलस्वरूप वै क्षेत्रों में 'विमल' जी, अश्विनी जी,-मंजर जी, जयप्रकाश जी, प्रभात जी, गंगाराव जी आरनी साहित्यकारों कें रचनाधर्मिता केकरहौ सें छिपलों नैं छै। अंगिका बास्तें ई एक शुभ लक्षण छेकै कि ग्रामीण वातावरणों साहित्यिकता सें मुखरित-सुरभित छै।

हिंदी आरो अँग्रेजी में एम. ए. श्री अश्विनी जी (मिर्जापुर-चंगेरी) एक सफल शिक्षक तें छेबे करोंत, एक संवेदनशील कवियो छोंत। हिंदी त्रैमासिक 'उद्घोष' कें संपादक अश्विनी जी अंगिका कें एक गीतकार कवियो छेकात, जिनकों एक गीतों कें एक अंश देखलों जाय --

"तोरा बिनु सूनों लागै हमरों नगरिया !
फाटी गेलै धरती, सुखलों आकाश छै ;
सूखी गेलै पनघट, सुखलों परास छै ,
चूवी-चूवी सूखी गेलै भरलों गगरिया !"

मधुसूदन 'मधु' (श्री)

'दुमका-दर्पण' (हिंदी पाक्षिक) कें संपादक श्री मधुसूदन 'मधु' (दुमका) हिंदी, भोजपुरी आरो अंगिका कें एक सुमधुर गीतकार छेकात। हिनकों एक अंगिका कविता कें रसास्वादन करलों जाय --

"आपनों सुख-दुख कें बात कहों खुद अपना सें ;
केकरा एत्तें फुरसत छै कि तोरों मौन देखे ?
सब्भै तें गुलाब-कमलों कें फूल निहारै छै ;
केकरा की पड़लों छै कि ओसों कें कण देखें ?''

योगेश कौशल (श्री)

ईशीपुर (भागलपुर) निवासी श्री योगेश कौशल अंगिका आरो हिंदी कें एक सशक्त हस्ताक्षर कें रूपों में उभरलों छेंत। हिनकों कविता में ग्रामीण जीवनों कें चित्र कत्तें बढ़ियाँ उरेखलों छै, देखलों जाय --

"छम-छम छमकै गाँवों कें गोरिया,
चम-चम चमकै हरवा-कोदरिया ;
माथा पर कलौवों झुमलों बहुरिया,
हुलसी कें चललै खेतों कें ओरिया,
रोपै लें खेतवा में धान रे ।
बदरा नें फूँकलकै जान रे ।।'' - 'प्रतिनिधि अंगिका कवि', पृ. १८१

बलभद्र नारायण सिंह 'बालेन्दु' (श्री)

"प्रतीक कथा कें माध्यम सें आयकों पीढ़ी कें झकझौरेवाला आरो नवचेतना कें आगिन सुलगावैवाला कवि'' (संपादक, 'प्रतिनिधि अंगिका कवि', १९८६) श्री 'बालेन्दु' जी (दुमका) कें राष्ट्रीय सद्भावों सें भरलों एक कविता कें एक अंश यहाँ देखलों जाय --

"एक गीत, एक गंध, एक रूप, एक रंग,
एक जात, एक पाँत, एक साँझ, एक प्रात,
एक भाव कें तरंग पर (गीत) गाबै छी ;
-- 'प्रतिनिधि अंगिका कवि', पृ. ४३.

देवेन्द्रनाथ दिलवर (श्री)

अंगिका कें हास्य-व्यंग्यकार कविसिनी में एक आरो नया हस्ताक्षर जुड़लों छेंत -- श्री देवेन्द्रनाथ दिलवर। हिनकों जन्म १९६४ ई. में रामनौमी कें दिन मनियारचक/नौवागढ़ी (मुंगेर) में भेलों छै - श्री भोला मंडल कें सुपुत्रों कें रूपों में।

कवि दिलवर जी कें दुइ-टा अंगिका कविता-संकलन प्रकाशित होय चुकलों छै -- 'अंग-सागरी' (१९९६ ई. में) आरो 'अंग-लहरी' (विमोचनों कें प्रतीक्षा में)। एक सौ एगारों छंदों कें हिनकों 'अंग-सागरी' कविता में परंपरा सें थोड़ों हटी कें कवि, लेखक, महाकवि, माय-बाप आदि कें नया परिभाषा, व्यंग्य कें भाषा में, देलों गेलों छै। एक नमूना लेलों जाय --

"चाहे कत्तो आबों घुसुर-घुसुर, समझें नैं पारभौं फुसुर-फुसुर।
सोचै छौ अपना कें बड़का कवि, छौं कहाँ मालूम कवि कें छवि।
गाछ वहें झुकै छै जेकरा में रहें फोंल, संस्था चैलै छै एकता कें हुवें बोंल ;
विद्वानों कें सामने नैं करों हुचुर-हुचुर।"

माँडवी (श्रीमती)

श्रीमती माँडवी जी कें जन्म १५ मार्च, १९६९ ई. कें एकचारी (भागलपुर) में श्री दुर्गा प्रसाद सिंह कें परिवारों में भेलों छै। श्रीमती माँडवी कें मोंन हिंदी आरो अंगिका में गीत आरो दोहा लिखै में बेसी लागै छै। हिंदी कें 'शंखनाद', 'सावन-भादो', 'सावन', 'कल्पना' आरो 'उमाश्री' -जेन्हों राष्ट्रीय काव्य-संकलनों में आरो 'अपूर्वा' पत्रिका में हिनकों गीत ऐलों छै।

अंगिका कें 'अंग-मंजरी' काव्य-संकलनों में हिनकों कविता 'जगैने कौवा', श्रीमती मीरा झा, मीना तिवारी, मीना सिन्हा, सान्त्वना साह आरो अंशुमाला झा कें कविता कें संगें छपलों छै, जेकरों अभिस्तुति सब्भे दिसिं भेलों छै।

"भोरे-भोरें जगैने कौवा !
सुतली छेलाँ मधुर नींन में पी कें पास भोरौवा।
से दिन जबें जगैने छेलैं,/फनू कैन्हें तरसैने गेलैं ?
चुनचुन करतें, खजुवैतें देहीं कें पीर मेटौवा।
सभे बात कें आगम तोरा,/हमरों मानें एक निहोरा,
दे मिलाय, हुनका बोलाय, ले पायस पेट भरौवा।"

-- 'अंग-मंजरी' सें।

५. अंगिका काव्य-संसार

संक्षेपों में कहलों जाय पारें कि अंगिका कें काव्य-संसार पिछलका कुछुवे बरसों में विभिन्न विषय, भाव, छंद, लय, धुन आदि कें क्षेत्रों में ऐहिनों फैललों

ऐलों छै कि देखी कें अंगिका कें उज्जवल भविष्य सुनिश्चित बुझावै छै। जिनकों-जिनकों जीवनवृत्त आरो काव्य-कृति कें जानकारी उपलब्ध भेलै हुनकासिनी कें संक्षिप्त विवेचन, जन्म तिथि कें क्रम सें, दै कें प्रयास ऊपरों कें लिखलका में करलों गेलों छै। हुनकासिनी कें अलावे सर्वश्री सच्चिदानन्द पाठक, जोगेश्वार जख्मी (डॉ०), देवेन्द्रनाथ साह (डॉ०), देवनारायण 'चोंच', श्याम सुंदर घोष (डॉ०), वारिद जी, राजेन्द्र पंजियार (डॉ०), मृदुला शुक्ल (डॉ०), हरिहर चौधरी 'विकल', रविकान्त नीरज, अनिरुद्ध अकेला, माधुरी जायसवाल (डॉ०), प्रदीप प्रभात, कमलकिशोर 'एकलव्य', सान्त्वना साह (डॉ०), प्रभात सरसिज, सामवे (डॉ०), मुहम्मद मुख्तार आलम (प्रो०), विक्रमादित्य विहंगम, त्रिलोकीनाथ 'दिवाकर', राघवेन्द्र नारायण आर्य (डॉ०), नलिनीकान्त (डॉ०), मनाजिर आसिक हरगानवी (प्रो०), भगवान प्रलय, ओम् प्रकाश मिश्र, कमला प्रसाद उपाध्याय, श्यामलाल आनन्द (डॉ०), अंजनी प्रसाद शर्मा (डॉ०), भुवनेश्वर भारती, अमर कुमार सिंह, कमलेश्वरी तिवारी, सुरेन्द्र प्रसाद यादव, योगेन्द्र चौधरी, शिवनन्दन प्रसाद हर्षवर्द्धन, भूदेव शर्मा, राजेन्द्र सिंह 'अमन', श्रीकृष्णा सिंह (डॉ०), राकेश रवि, शंभुनाथ जायसवाल, धर्मेन्द्र कुसुम, राघवेन्द्र उन्मन, रामवरण चौधरी (डॉ०), विनय प्रसाद गुप्त (प्रो०), देवेन्द्र (डॉ०), सोहन प्रसाद चौबे, महेश प्रसाद सिंह 'आनन्द', निर्मल सिंह लाल, नविता, जयप्रकाश गुप्त (डॉ०), देवेन्द्र जयपुरी, भुजंगी यादव 'मधुर', अभय कुमार भारती, सुरेन्द्र कान्त 'हंस', ब्रह्मदेव 'ब्रह्म', मोहनदास 'राही', सुरेन्द्र 'शोषण' (प्रो०), कामदेव मिश्र (प्रो०), अरविन्द कुमार 'भारती', डॉ० इन्दुभूषण मिश्र 'देवेन्दु' आरनी कवि-कवयित्रीसिनी कें अंगिका रचना जबें-तबें पत्र-पत्रिका आरो संपादित संग्रहों में छपलों मिलै छैन्। हिनकासिनी में अनेक विद्वान् हिंदी कें ख्यातिलब्ध साहित्यकार/रचनाकार छेकात, मतरकि अंगिका-काव्यों में हिनकासिनी कें अवदानों कें उल्लेख्य अब ताँय प्राय: कम्मे छैन् जदियो अंगिका-भाषी रहला कें नातों अंगिका कें बड्डी असरा सब्भै सें छै। जिनकासिनी कें अंगिका कविता देखै में ऐलों छै वैसिनी में लौकिक प्रेम, गान्धीवादी विचार-धारा, देश-भक्ति, प्रकृति-चित्रण, किसान-मजदूरों कें प्रति संवेदनशीलता, दलितोत्थान, प्रदूषण-निवारण, मानवीय मूल्यों कें अवमूल्यन आदि सें संबंधित भाव-विचारों कें नीकों अभिव्यक्ति होलों मिलै छै। अनेकों कें दू-एक्के अंगिका रचना सही, स्वागत कें लायक छैन्।

सर्वश्री फाल्गुनी मरीक कुशवाहा, विनोदबाला सिंह (डॉ०), छेदी साह

(डॉ०), राकेश रंजन, कामदेव मिश्र, लक्ष्मीकान्त मंदबुद्धि, बैरिस्टर प्रसाद सिंह, मणिलाल मंडल, देवेन्द्रनाथ साह (डॉ०), महेन्द्र नारायण मिश्र, त्रिवेणी पाठक, मु० जाहिद, रत्नेश शर्मा 'पंकज', गणेश कुसुम, शुकदेव प्रसाद मंडल, मंतलाल शर्मा, मनोज कुमार पंकज, चन्द्र प्रकाश 'जगप्रिय', त्रिवेणीनाथ दिवाकर, उमेश भारती, विजयेन्द्र, अशोक कुमार अकेला, छोटेलाल, निशाकर, विजय कुमार, संजय कुमार, शीलरक्षित, गौरांग प्रसाद 'सेवक', राजेन्द्र राज (प्रो०), सुरेन्द्र सलिल, अरुणेन्द्र भारती, वाल्मीकि (डॉ०), पवन कुमार पंजियारा आरनीं अंगिका में कविता करबों शुरू करने छौंत। हिनकासिनी में कोय बेसी उमरी कें छौंत, कोय कम उमरी कें, मतुर कविता करी रहलों छौंत आरो 'अंगिकाँचल', 'आंगी', 'अंग-माधुरी', 'अंगप्रिया', 'अंग-तरंगिनी' -आर पत्रिका में छपी रहलों छौंत। हिनकासिनी कें कविता सामाजिक उत्तरदायित्वों कें समस्या आरो ओकरों समाध ानों कें भाव-धारा सें जुड़लों लागै छै। हिनीसिनी समकालीन विचार-धारा आरो प्रवृत्ति-प्रवाहों कें बेसी करी कें कविता कें विषय बनैने छौंत। हिनकासिनी कें रचना में नवीनता लेली ललक झलकै छै। आगू चली कें हिनकासिनी में किनकों प्रतिभा कौनी रूपों में विकसित-प्रस्फुटित होतै, से कहबों अखनी संभव नैं बुझावै छै, मतुर अंगिका कें प्रति उत्साह तें प्रायः सब्भै कें रचना में देखावै छै।

६. निष्कर्ष

आखिर में, सार-संक्षेपों कें रूपों में, आधुनिक युगों में अंगिका कविता लेखन कें प्रवृत्ति आरो उपलब्धि नीचें प्रस्तुत करलों जाय रहलों छै।

(१) अंगिका में महर्षि मेंहीं, प्रभातरंजन सरकार 'आनन्दमूर्ति', संत-सेवी बाबा, संत शाही स्वामी, चरणदास, बाँकेबिहारी झा 'करील' आदि संत-महात्मा कें भक्ति-भाव-भरलों कविता थोड़ों-बहुत सृजित होलै। हिनकासिनी कें रचना में आत्मा, परमात्मा, बंधन, मुक्ति, संसार कें असारता आदि कें वर्णन होलों छै। हिनीसिनी मिथ्याचार आरो वाह्याचार कें धिक्कारने छै।

(२) आधुनिक युगों में लोक-साहित्यों कें अनुसंधान, अनुशीलन, संपादन आरो प्रकाशन शुरू भेलै। 'अंगिका संस्कार गीत' (पं वैद्यनाथ पाण्डेय), 'सलेस भगत' (डॉ० अभयकान्त चौधरी/डॉ० नरेश पाण्डेय 'चकोर'), 'लोरिकैन' (डॉ० चकोर), 'ज्योति तपस्या' आरो 'बाबा बिसू राँथ' (डॉ० रमेश आत्मविश्वास), 'ज्योति तपस्या' (श्री प्रदीप प्रभात) आदि गीति-गाथा-प्रबंध आरो 'अंगिका जँतसार'

(डॉ० चकोर) कें संकलन आरो प्रकाशन येहें युगों में भेलै।

(३) भागलपुर, मगध आरो बिहार विश्वविद्यालयों कें तत्वावधानों में अंगिका लोक-गीत, लोक-गाथा आदि पर डॉ० गायत्री देवी, डॉ० मनोहर सिंह, डॉ० निर्मल कुमार सिंह, डॉ० रमेश मोहन शर्मा 'आत्मविश्वास', डॉ० पुष्पा कुमारी, डॉ० शंकर मोहन झा आरनी कें उल्लेखनीय शोध-कार्य भेलै।

(४) प्रबंध-काव्य-रचना कें दिसिं कविसिनी कें धेयान गेलै आरो एक-सें-एक बढ़ियाँ प्रबंध-काव्य लिखलों गेलै -- 'कच' (अनिलचन्द्र ठाकुर), 'सवर्णा' (डॉ० कुशवाहा), 'ययाति' (डॉ० चकोर), 'कागा की संदेश उचारै !' (श्री अनिरुद्ध प्रसाद विमल), गीना' (डॉ० अमरेन्द्र) आरो 'उर्ध्वरिता' (श्री सुमन सूरो) इत्यादि।

(५) गीति-रचना कें क्षेत्रों में विकास होलै आरो भजन, उद्‌बोधन-गीत, अभियान-गीत, पत्र-गीत, शोक-गीत, पथ-गीत ओगैरह गीति-काव्यों कें विभिन्न अंगों पर कत्तें नी अच्छा-अच्छा रचना भेलै। ऐहिनों गीतिकारों में सर्वश्री राजकुमार, वैकुण्ठ बिहारी, राम शर्मा 'अनल', श्रीस्नेही, परमानन्द प्रेमी, राजेन्द्र पंजियार (डॉ०), भगवान प्रलय, उदयकान्त ठाकुर बिहारी, अश्विनी, अनिरुद्ध प्रसाद विमल, माँडवी, अमरेन्द्र (डॉ०), परमानन्द पाण्डेय (डॉ०), कुशवाहा (डॉ०) खास करी कें उल्लेख्य छोंत।

(६) आधुनिक युगों में बहुतेसिनी व्यंग्यकार अंगिका में उभरी कें ऐलै। सर्वश्री सदानन्द मिश्र 'साहित्यिक साँढ़', जगदीश पाठक 'मधुकर', भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' (डॉ०), गुरेश मोहन घोष 'सरल', रामावतार 'राही', प्रकाशसेन 'प्रीतम', बलभद्रनारायण सिंह 'बालेन्दु', विजेता मुद्‌गलपुरी, सुरेन्द्रदास, मथुरा प्रसाद सिंह 'रानीपुरी' आरनी कें नाम मुख्य रूपें आवै छै। हास्य रसों कें बेजोड़ कविसिनी में रामावतार 'राही', प्रकाशसेन 'प्रीतम', विजेता मुद्‌गलपुरी, जगदीश पाठक 'मधुकर' आरो 'साहित्यिक साँढ़' कें नाम आवै छै।

(७) ई युगों में भाव-गीत-लेखन कें परंपरा चललै। वै परंपरा में सर्वश्री सुमन सूरो, उचितलाल सिंह, सीतारामदास, मतिकान्त पाठक (डॉ०), अचल भारती (डॉ०), गंगा प्रसाद राव, खुशीलाल मंजर, 'समीर' (डॉ०), आरनी उल्लेख्य छोंत।

(८) अंगिका भाषा संबंधी अध्ययन, व्याकरण, शब्दकोश, काव्य-शास्त्र, इतिहास-लेखन आदि पर कयेक-टा ग्रंथ लिखलों गेलै आरो छपलै। वै प्रसंगों में सर्वश्री परमानन्द पाण्डेय (डॉ०), डोमन साहु 'समीर' (डॉ०), अभयकान्त चौधरी

(डॉ०), तेजनारायण कुशवाहा (डॉ०), नरेश पाण्डेय 'चकोर' (डॉ०), ओमा प्रियंवदा (डॉ०), गंगा प्रसाद राव, नवीन निकुंज, शंकर प्रसाद 'श्रीनिकेत' (डॉ०) आरनी कें नाम खास करी कें याद आवै छै। ऐन्होंसिनी ग्रंथों या आलेखों कें प्रकाशन सें कवि-लेखक आरनी कें शब्द (पद)- विन्यास, वाक्य-विन्यास, छंद-विधान आदि कें संबंध में नया दिशा मिलतै।

(९) आधुनिक युगों कें अंगिका कविता कें इतिहासों सें लागै छै कि करीब-करीब सब्भे अंगिका कवि कें प्रारंभिक रचना मुक्तके सें शुरू होलों छै आरो मुक्तक काव्यों कें अच्छा विस्तार भेलों छै। मुक्तक काव्यों कें कयेक-टा बढ़ियाँ-बढ़ियाँ संकलन निकललों छै आरो निकली रहलों छै। लागै छै कि ढेरेसिनी कवि मुक्तक-संकलन्है में जीवित रहतै। एन्हों कवियों में कुछेक हिंदी कें कवियो आवै छै। कुछेक कवि आर्थिक कमजोरी सें आपनों स्वतंत्र संकलन निकालै में असमर्थ रहलों छै। सर्वश्री गदाधर प्रसाद अम्बष्ठ, बाँकेबिहारी झा 'करील', भिखारी ठाकुर 'अधूरा', राजमोहन शर्मा, मतिकान्त पाठक आरनी कर्त्तें नी रचनाकारों कें कविता अर्थाभाव कें कारणें पुस्तकों कें रूपों में अब ताँय प्रकाशित नें होलों छै। जिनकासिनी कें अंगिका कविता पत्र-पत्रिकासिनी में छपलों रही गलों छै हुनकासिनी में डॉ० कुमार विमल, डॉ० वचनदेव कुमार, डॉ० मधुकर गंगाधर, डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव, आचार्य आनन्द शंकर माधवन, पं. ब्रह्मदेव झा रतैठिया, श्री राजेन्द्र सिंह 'नमन', कुसुमाकर दुबे, अशोक अरुण, कामदेव झा, विक्रम कुमार राणा, कृतिनारायण प्यारा, अंशुमाला झा, हंसकुमार तिवारी, दामोदर शास्त्री, प्रभात सरसिज आरनी कें रचना-संपदा सें हमरासिनी बहुते लोग वंचित रही गेलों छियै।

(१०) शास्त्रीय छंदों कें अलावे लोक-धुनों पर कविता करै कें प्रवृत्ति केरों विकास यै युगों में बेसी भेलै आरो कर्त्तें नी लोक-छंदों कें साहित्यों में प्रतिष्ठा मिलतै। साथें-साथ हिंदी में प्रचलित काव्य-रूपों आरो छंदों में अंगिका में कविता रचना करै कें प्रवृत्तियो विकसित भेलै, जे कि अंगिका काव्य-साहित्यों कें वृद्धिकारक भेलों छै।

(११) अंगिका कविता करै में कविसिनी कें संगें-संग अनेक कवयित्रियो आगू बढ़लों छथिन। सर्वश्रीमती मीरा झा, मीना तिवारी, आभा पूर्वे (डॉ०), सान्त्वना साह (डॉ०), अंशुमाला झा, मृदुला शुक्ला (डॉ०), माधुरी जायसवाल (डॉ०), कृष्णा सिंह (डॉ०), विनोदबाला सिंह (डॉ०),

माँडवी, प्रतिमा वर्मा, नीलम महतो (डॉ०), रूपम पाण्डेय, राधा कुमारी, नविता आरनी कें नाम यै क्रमों में याद आवै छै।

(१२) अतीत कें गौरव-गायन, देश-भक्ति, सांस्कृतिक चेतना, साम्प्रदायिक सद्भाव, प्रदूषण-निवारण, शोषण-उत्पीड़न-निराकरण, आर्थिक वैषम्य-दूरीकरण, राजनीतिक अपराध-विमुक्ति, देशों कें वर्तमान दशा आरो दिशा-बोध, अमानुषिक अत्याचार-विरोध, भ्रष्टाचार-उन्मूलन, आतंकवाद-निर्मूलन ओगैरह आधुनिक अंगिका कविता कें प्रमुख स्वर यै युगों में बनलों छै जे-सब कि देश-राष्ट्रों कें मौजूदा अवस्था में अपेक्षित छै।

(१३) कविसिनी कें आकर्षण आन्तरिक सौंदर्य कें अपेक्षा वाह्य सौंदर्य दिसि बेसी देखलों जाय छै ; मतुर भौतिकता कें बाहुल्यो में आध्यात्मिकता कें स्वर अवक्रमित नै देखावै छै।

(१४) अंगिका कें प्रारंभिक रचनासिनी बेसी करी कें इतिवृत्तात्मक मिलै छै, जेकरों मूल कारण आपनों मातृभाषा-प्रेमों में बहबों बुझावै छै, जे कि बहुत अंशों में स्वाभाविक छै।

(१५) यै युगों कें एक महत्त्वपूर्ण बात ई भेलै कि हिंदी अकादमी हैदराबाद (आ. प्र.) कें पूर्व-महामंत्री आरो हिंदी त्रैमासिक 'संकल्य' कें प्रबंध-संपादक अंग-सवासिन चतुर्वेदी प्रतिभा मिश्र-जेन्हों विदुषी कें विशेष अभिरुचि आरो हुनकों श्रद्धास्पद पतिदेव प्रो० डॉ० बैजनाथ चतुर्वेदी कें सत्प्रेरणा कें फलस्वरूप अंगिका भाषा-साहित्यों कें विकास में नया गति ऐलै। दोन्हू कें सत्प्रयासों सें 'अंगिका-हिंदी-शब्दकोश' (१९९७) कें प्रकाशन तें होले छै, पद्मश्री डॉ० बी० वी० राजू -जेन्हों प्रख्यात उद्योगपति कें दानशीलता कें फलस्वरूप 'अंगिका-व्याकरण' (१९९८) प्रकाशित भेलै आरो ई 'इतिहास' प्रकाशित होय रहलों छै। भगमानें ऊ अंग-सवासिनों कें असमये में अपना कन बोलाय नैं लेतियै तें अंगिका भाषा-साहित्यों कें विकास में चार चाँद लागी जैतियै। अंगिका-संसार हुनकासिनी कें प्रति सदाय आभारी रहतै।

सारांशत:, अंगिका काव्य दोसरों-तेसरों जनपदीय भाषा-काव्यों सें कोनो रूपें निम्नतर नैं छै। अंगिका कें रचनाकार आपनों उत्तरदायित्वों आरो कर्त्तव्यों कें प्रति पूर्णत: जागरूक छोंत आरो आपनों रचना सें अंगिका भाषा-साहित्यों कें समृद्ध करै में दत्तचित्त छोंत, जे कि एक शुभ लक्षण छेकै। इति शुभम्।

✧✧✧

अंगिका साहित्य केरों इतिहास

(खंड - २ : गद्य)

डॉ० अमरेन्द्र, पी-एच० डी०
(संपादक, "आंगी")
(ज्ञानेन्द्रनाथ मुखर्जी पथ, भीखनपुर, भागलपुर, बिहार - ८१२००१)

जीवनवृत्त

१. नाम - **अमरेन्द्र कुमार सिन्हा।**

२. माता - स्व० पंचारानी देवी।
पिता - स्व० नरसिंह प्रसाद सिन्हा।

३. जन्म - ५ जनवरी १९४९; ग्राम - रूपसार (रजौन), भागलपुर, बिहार।

४. शिक्षा - बी० ए० (ऑनर्स), एम० ए० (हिंदी), पी-एच० डी० (भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार)।

५. मानद उपाधि - 'विद्यावाचस्पति', 'संपादकरत्न'।

६. पुरस्कार - भवप्रीतानन्द-पुरस्कार, राष्ट्रभाषा-पुरस्कार, नन्द-पुरस्कार, कर्ण-पुरस्कार, बुद्धिनाथ झा 'कैरव'-पुरस्कार, धूमकेतु-पुरस्कार।

७. प्रकाशित ग्रंथ/पुस्तक - अंगिका में - करिया झूमर खेलै छी ; गेना (महाकाव्य) ; ढोल बजै छै ढम्मकढम (बच्चासिनी कें लायक) ; पंचगव्य ; छंद-छौनी ; अंगिका छंद-मौनी ; गज़ल रों पिंगल ; हिंदी में - सूरज के पार ; जनतंत्र का 'विक्रमशिला' ; पीर का पर्वत पुकारे ; देहरी पर दीया।

८. संपादन - सत्यावर्त्त ; शिरीष-कथा ; अणुकथा ; हाँक ; आंगी ; हिंदी-अंगिका कें कयेकटा किताब।

९. प्रसारण - एक दर्जन सें बेसी रेडियो रूपक।

१०. आलेख, कविता-आर (प्रकाशित) - कत्तें नी पत्र-पत्रिका आरो पुस्तकों में समीक्षात्मक आलेख, कविता, कहानी, फीचर लेख ओगैरह।

११. संपर्क - संपादक, "आंगी", ज्ञानेन्द्रनाथ मुखर्जी पथ, भीखनपुर, भागलपुर (बिहार) - ८१२००१ (फोन - ०६४१/४२८०६७)।

अंग जनपदों कें पिछलका स्थिति-परिस्थिति

राजनीतिक स्थिति

पूर्वी भारत कें मुगल बादशाहसिनी पर अँग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी कें आधिपत्य होत्हैं अंग-जनपद अँग्रेजी-शासनों कें प्रभाव-क्षेत्रों में आबी गेलै। मुगल-आक्रमण कें समयों में जेना अंग-जनपद तुलनात्मक दृष्टि सें कत्ले-आम कें अत्याचारों सें प्रभावित होलों छेलै होन्हें शुरुआती दौर में अँग्रेजी अत्याचारों कें विरुद्ध होलों कोनो ऐतिहासिक क्रान्ति आकि विद्रोहों कें उल्लेख नैं मिलै छै ; मतरकि १८३८ ई० कें बाद स्थिति एकदम बदली गेलै। धीरें-धीरें अँग्रेजी शासनों कें विरुद्ध ज़नाक्रोश भड़की रहलों छेलै आरो वही गति सें अँग्रेजी शासनों कें अत्याचारो जोर पकड़तें जाय रहलों छेलै। अंग-जनपदों में १९४२ ई. कें जोंन भयंकर जनक्रान्ति फुटलों रहै, ओकरा सें पहिलें १८५५ ई. में संताल-विद्रोह आरो भागलपुरों में अँग्रेजी शासन आरो अँग्रेजभक्त सामन्तसिनी कें विरुद्ध लोगों कें भयंकर विद्रोहों कें ऐतिहासिक उल्लेख प्राप्त होय छै ; मतरकि सामन्त-जमींदारों कें संरक्षण हासिल होला कें कारणें अँग्रेजी शासन संताल-विद्रोहों कें आसानी सें दबावै में सफल होय गेलै। तैय्यो हौ संताल-विद्रोह नें है जनपदों में अँग्रेज आरो अँग्रेजी शासन-पोषित सामन्त-जमींदारों कें खिलाफ एक नया चेतना कें नींव अवश्य डाली देने रहै।

अँग्रेजी शासनों कें दौरान १७९३ ई. में बंगाल, बिहार आरो उड़ीसा में जबें जमींदारी प्रथा कें नींव डालतों गेलै, तबें अंग-जनपदों कें, जे कि ग्रामीण व्यवस्था कें जनपद छेलै, वास्तविक शासक सामन्त-जमींदारसिनी बनी गेलै। बड़ों-बड़ों जमींदारी कायम होय गेलै आरो जमींदारसिनी कें आतंक आम लोगों कें जीवनों पर बढ़ें लागलों छेलै। गामों-जबारों कें मोंर-मोकद्दमा कें सुनवाय आबें परंपरागत पंचायत आरनी में नैं होय कें कचहरीसनी में होबों शुरू होय गेलों छेलै, जे कि अंग-जनपदों कें महत्वपूर्ण स्थानों में स्थापित करलों गेलों छेलै। वैसिनी कचहरी कें कानून-कायदा सें अनभिज्ञ आम लोगों कें परेशानी बढ़ें लागलों छेलै, जेकरों परिणाम छेलै ऊ संताल-विद्रोह आरो जेकरों दुष्परिणाम भागलपुरों कें राजनीतिक भूगोलों कें भोगै लें पड़लै। भागलपुरों कें एक अंग काटी कें संताल परगना जिला बनाय देलों गेलै। क्रान्ति कें दबावै लेली राजमहल सें मुंगेर तक कें एक भागलपुरों कें तोड़ी-ताड़ी कें तीन जिला में बाँटी देलों गेलै, ताकि अँग्रेजी अन्यायों कें विरुद्ध आम लोगों में मजबूत संगठनों कें अभाव बनलों रहें। येहें

कारण छेकै कि १८५७ ई. कें सिपाही-विद्रोह कें वक्तीयो भारत कें राजनीतिक इतिहासों मे कोय उल्लेखनीय घटना कें जिक्र नैं मिलै छै।

मतरकि १९-मी शती कें अंत होतें-होतें अंग-जनपदों में अँग्रेजी शासनों कें विरुद्ध अभूतपूर्व क्रान्ति शुरू होय गेलै, जेकरों नेतृत्व सशस्त्र परशुरामी दलों कें महान् क्रान्तिकारी शहीद महेन्द्र गोपनें करने छेलै। हुनकों साथें परशुराम सिंह, श्री गोप, जागोशाही पागोशाही, सियाराम सिंह आरनीं अँग्रेजी कचहरीसनी कें जरावै सें लै कें अँग्रेज-समर्थकसिनी कें बलि चढ़ैने जाय रहलों छेलै। पूरा-कें-पूरा बाँका तोप आरो टॉमीसिनी सें भरी देलों गेलों छेलै आरो हेलीकॉप्टरों सें अँग्रेजी सैनिकों द्वारा अंग-जनपदों कें लोगों पर गोली दागलों गेलों छेलै। अँग्रेजी सत्ता कें विरुद्ध एक विशाल क्रान्ति कें शुरुआत होय चुकलों छेलै।

अंग-जनपदों में ऊ समय कत्तें नी हेनों अंगिका कें गीत लिखलों गेलों छेलै जेसिनी में अँग्रेजी शासनों कें विरुद्ध क्रोध कें भाव अभिव्यक्त भेलों छै। देशों कें आजादी मिलला कें बादें अंग-जनपदों कें साथें जे राजनीतिक दुर्व्यवहार होलै ओकरा सें ई युगों कें साहित्य सर्वाधिक प्रभावित देखलों जाबें सकै छै। राज्य-सरकार द्वारा नैं तें यहाँ कोय सामाजिक आकि आर्थिक उद्धार करै कें कोशिश भेलै आरो नैं तें यहाँकरों लोक-भाषा कें माध्यमों सें यहाँकरों लोगों कें शिक्षित करै कें प्रयास। हेकरों विपरीत, सब सरकारों कें प्रयास दोसरों-तेसरों जनपदों कें भाषा कें ई जनपदों पर थोपै कें रहलै। आर्थिक जीवनों में समृद्धि लानै कें बजाय बिहार कें राजनीतिज्ञ यहाँकरों सामाजिक जीवनों में असंतुलन आरो धार्मिक फूट लानीकें आपनों गोटी सेंकै लें ज्यादा लागलों रहलै, जेकरों सबसें विस्फोटक रूप भारत-विभाजन कें समय तारापुर कें बाद भागलपुरों कें देखैलें पड़लै।

साम्प्रदायिक नीति कें कारणें अंग-जनपदों कें यातायातों कें सुविधा सें वंचित राखबों, राजनीतिज्ञों कें वादा-खिलाफी, जातीय विद्वेष-प्रचार आरनी सें आपनों हित-साधन आरो आपनें हित लेली राजनेतासिनी कें आपसी फूट-आर कें चलतें अंगिका भाषा कें आधुनिक साहित्यों कें वैचारिक संसारों पर भारी प्रभाव पड़लों देखलों जावें सकै छै। जों ई कहलों जाय कि अंगिका कें आधुनिक साहित्य आजाद भारतों के केन्द्रीय आरो प्रान्तीय सरकारों कें अमानवीय क्रूर राजनीति सें सामना होवै कें साहित्य छेकै तें कोय अत्युक्ति नैं।

आजादी कें पहिलें आरो ओकरों बाद दक्षिणी अंग-क्षेत्रों में जोंन शोषण जारी रहलै ओकरों दुष्परिणाम सौंसे अंग-जनपदों कें झेलैलें पड़लै। आरो, आजादी कें बाद, आबें अलग झारखंड राज्यों कें माँग ! वै नामों पर राजनीतिज्ञसिनी कें

आत्म-लाभ ! अंग-जनपदों कें दक्षिण में ई राजनीतिक समस्या कें लै कें विपुल अंगिका काव्य-साहित्यों कें सृजन ई बातों कें द्योतक छेकै कि आजादी कें पूर्व-आरो परवर्ती राजनीतिक परिस्थिति की रङ आरो कत्तें अंगिका साहित्यों कें प्रभावित करने छै।

सामाजिक परिस्थिति

अंग-जनपदों में जे जातीय सौहार्द्र कें भावना प्राचीन समयों में बहुत हद तक कायम छेलै ऊ आधुनिक अंग में आबी कें सुरक्षित नैं रहें पारलै। हेकरों एक प्रमुख कारण होलै ई प्रान्तों कें बड़ों-बड़ों राजा-रजबाड़ा कें समृद्धि कें पतन आरो ओकरों साथें सामाजिक प्रतिष्ठा केरों धीरें-धीरें ह्रास।

चंदेल, गन्धवरिया, किनवार, सुरखी, सखरवार आरनी क्षेत्रीय परिवारों कें नैं हौ समृद्धि रहें पारलों छै आरो नैं तें हौ प्रभुत्व। कुछेक परिवारों कें छोड़ी कें अधिकांश राजपूत घराना कें आर्थिक स्थिति संतुलित नैं रहें पारलों छै; आर्थिक फिसलन कें बावजूद समाजों में उच्च दिखैकें फ़िजूलखर्ची आरनी की रङ ई जाति में प्रवेश करी गेलों छै, ई सब स्थिति कें चित्रण अंगिका कें आधुनिक साहित्यों में मिलै छै। दक्षिण अंग में बसैलों घटवाल जातियों कें आर्थिक कमजोरी कें कारणें सामाजिक प्रतिष्ठा सुरक्षित नैं रहें पारलों छै। बुंदेल क्षत्रिय सें आपनों संबंध जोड़ैवाला बनौत जाति कें भी आर्थिक स्थिति कमजोर पड़ी गेला कें कारणें सामांजिक प्रतिष्ठा में कमी आबी गेलों छै।

खेतौरी राजवंशों सें पहिलें जे नट आरो दुसाध जाति कें राजवंश दक्षिण अंग में मिलै छै वहू घराना कें सामाजिक प्रतिष्ठा आबें शेष होय चुकलों छै। जमींदारी कें छाया में पलला कें कारण विद्याभ्यासी कायस्थ लोगों कें सामाजिक स्थिति काँहीं-काँहीं आपनों आर्थिक मजबूती कें कारण तें सुरक्षित छै, मतरकि बाकी जग्घों में आपनों फिजूलखर्ची कें प्रवृत्ति, दहेज-प्रथा, मादक द्रव्य-सेवन आरो विलासी प्रवृत्ति के कारणें विचित्र उपहासात्मक स्थिति में आबी गेलों छै।

समाजों में औरतोसिनी कें स्थिति भारत में मध्यकालों कें स्थिति सें ज्यादा भिन्न नैं छेलै। ई बात नैं छेलै कि ई जनपदों में स्त्री जाति कें स्थिति सदाय हेन्हें छेलै। तत्कालीन उत्तरी भागलपुरों में मंडन मिश्र हेनों प्रकाण्ड विद्वानों कें धर्म-पत्नी नें कभी शंकराचार्य कें तर्क में परास्त करनें छेलै आरो मुगलकालीन समयों में सुल्तानगंज उधाडीह गाँव (जमालपुर) कें एक सामान्य परिवारों में जनमली रानी चन्द्रजीत नें कभियो जहाँगीर कें सरदार बाज बहादुर

कें परास्त करने होतै। मतरकि, आम स्त्री के स्थिति हाल तक बहुत कारुणिके मानलो जैतें रहलै। विशेष करी कें उत्तर अंग में बसलों दरभंगा-मधुबनी कें ब्राह्मण समाजों में 'बिकौआ' पद्धति के कारणें स्त्रियों कें आभियों अत्यधिक कारुणिक छै। एक-एक बिकौआ के पास दस-पन्द्रह स्त्री कें होबों कुछ साल पहिलें तक आम बात छेलै। है बहुविवाह कें कारणें एक बिकौआ कें मरत्है एक साथ पन्द्रह-बीसों कें विधवा होय जैबों आरो हौसिनी (विधवा) कें साथ अमानवीय व्यवहार होबों हृदयों कें हिलावैवाला कथा छेकै। इतिहासों में यहाँ तक उल्लेख मिलै छै कि एक-एक बिकौआ तीस-चालीस बीहा यै लेली करै छेलै कि हुनका कोय काम नै करें पड़ें, ससुराल जाय-जाय कें उदर पालतें रहें। ससुरालों कें स्मरण लेली हुनी एक कॉपी रखै छेलै। मधेपुरा, सुपौल में आभियों हेनों बिक[illegible] कें समृद्ध समाज छै। येहो प्रचारित करलों गेलों छै कि जें आपनी कन्या बिकौआ कें देतै ऊ पुण्य कें भागी होतै। उत्तरी अंग कें ब्राह्मण समाजों में ई सामाजिक-धार्मिक विश्वास सें स्त्री-समाजों कें स्थिति अत्यधिक दयनीय रहलों छै। समाजों में विधवा-विवाह पर तें निषेध छेबे करलै, दहेजों कें परेशानी सें बचैलें समाजों में अधवयसू कें साथें कन्या कें विवाह करै कें प्रथाओ प्रचलित छेलै।

पुरानों समृद्धि आरो सम्पत्ति कें क्षय होय कें क्रम में समाजों कें बीच कुलाभिमान के संस्कारो जागृत हुवें लागलों छेलै। ई बात खाली उत्तरी अंग-जनपदे कें ब्राह्मण समाज कें बीच पराकाष्ठा पर नैं छेलै, वरन् धीरें धीरें ई भाव एक साथ क्षत्रिय, कायस्थ, यादव, भूमिहार, वैश्य, कोयरी, कुरमी आरनीयों में जागृत होतें गेलै। १९३१ ई. आरो १९३४ ई. में क्रमशः सुपौल, बौंसी आरो मधेपुरा में मैथिल ब्राह्मण महासभा कें आयोजनों सें प्रभावित होय कें १९३७ ई. में भागलपुर कें गोशाला में भूमिहार ब्राह्मण महासभा कें आयोजन, आरो फेनू कायस्थ महासभा, क्षत्रिय महासभा, यदुवंशी महासभा, कुम्हार महासभा, गोप महासभा, गंगोत्री महासभा, मुसहर महासभा, वैश्य महासभा कें बात आवै छै। आरम्भ में ई सब महासभा कें उद्देश्य जातीय कमजोरी कें दूर करबों आरो जातीय उत्थान पर केन्द्रित छेलै, मतरकि बाद में वैसिनी महासभा कें उपयोग राजनीतिक लाभ लेली हुवें लागलै, जेकरों विकास जातीय विद्वेषिता में होय चुकलों छै। पीछूँ हैसिनी महासभा कें तैयारी समाज-द्वारा नैं, राजनीति-द्वारा आयोजित करवैलों गेलै, राजनीतिक स्वार्थ-सिद्धि लेली। जातीय महासभा कें राजनीतिक उपयोग कें कारणें आय अंग-जनपदों कें जे सामाजिक स्थिति होय गेलों छै, ओकरों साफ-साफ चित्र अंगिका कें आधुनिक साहित्यों में देखलों जावें सकै छै। साहित्यकार आपनों समयों

सें सबसें ज्यादा प्रभावित होय छै। यही सें ओकरों साहित्य-कलाओ संबद्ध साहित्यकारों कें समाज आरो समयों कें आईना बनी जाय छै।

अंगिका कें आधुनिक अद्वैत कालों कें साहित्यों में आधुनिक समाजों कें तस्वीर उपस्थित छै, वै सें निजात पावै लेली सुधार कें भावों छै। समाजों में होय रहलों सामाजिक सुधार कें काम्है सें साहित्यों में बहुत-कुछ ऐलों मानलों जैतै, जै में जातीय महासभा द्वारा चलैलों जाय रहलों सुधार-कार्यो गिनैलों जाबे सकै छै। जातीय महासभा कें ओरी सें नैं खाली आपनों जात कें शिक्षित करै कें प्रयास चली रहलों छेलै, बलुक समाजों कें कुरीति -- दहेज, मद्यपान आरनी कें दूर करै वास्तें शिक्षाओ प्रचारित करलों जाय रहलों छेलै।

अनाथ बच्चासिनी वास्तें समाजों में चिन्ता उत्पन्न होय चललों छेलै, जेकरे कारणें मुंगेर आरो भागलपुर में अनाथालयों कें स्थापना करलों गेलों छेलै।

आधुनिक समयों में स्त्री-उत्थान अनेक स्वयंसेवी संस्थानों कें सराहनीय कार्यो सें अलग सरकार कें ओर सें भी अनेक बालिका-विद्यालयों कें स्थापना जारी छै आरो स्त्री समाजों कें सामाजिक-आर्थिक दशा में सुधार लेली अनेक कानून बनैलों आरो योजनाओ चलैलों जाय रहलों छै। नौकरीयो में विशेष सुविधा देलों गेलों छै।

सामाजिक व्यवस्था कें सुदृढ़ करै कें उद्देश्यों सें बंधुआ मजदूरी-व्यवस्था खत्म करलों गेलों छै। अंग-जनपदों में प्रचलित गुलामी-प्रथाओ शेष होय पर आबी गेलों छै। ई जनपदों में गुलामी-प्रथा 'नफर' कें नामों सें प्रसिद्ध छेलै। ई नफरें (गुलामें) जों कोय स्वतंत्र लड़की सें बिहाय करै छेलै तें हौ लड़की पर मालिकों कें अधिकार नैं होय छेलै, मतरकि जों कोय नफर लड़की कोनो नफर लड़का सें बियाह करै छेलै तें ओकरों (लड़की कें) मफादात पर मालिकों कें अधिकार मानलों जाय छेलै। स्वामी कें इच्छा पर ऊ नफरों कें बिक्री कें परम्पराओ यहाँ मिलै छेलै। भागलपुर आरो मुंगेर में चुटिया-गुलाम होवै कें उल्लेखो मिलै छै, जे कि नफर लड़की सें बियाह आरो अपनी कें बदला में साधारण मजूरी पर गुलामी करला कें कारण कहलाय छेलै। अंग्रेजी शासन कें समय अंग जनपदों कें वै गुलामी-प्रथाओ पर रोक लगाय देलों गेलै।

ऐन्हों समयों में जातीय दुरवस्था कें निवारण वास्तें कुछेक धार्मिक सस्था सक्रिय होलै। वैसिनी में आनन्दमार्ग प्रमुख छै, जेकरों अनुसार आदमी या तें अच्छा होय छै या बुरा। ओकरों कोय जात नैं होय छै। आनन्दमार्ग में ई व्यवस्था बनैलों गेलै कि कोय आपनों सन्तानों कें बियाह आपनों जात मे नैं करतै। शहर-शहर में अनेक उत्साही युवक नें अन्तरजातीय विवाह कें अनेक उदाहरण राखलकै।

समाजों मे आइयो हेनों एक वर्ग छै, जेकरा ऊ सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त नै छै , मतरकि यै वर्गो में एक नया आत्मबल आरो आत्मसम्मान लानै लें कयेक संत-मार्गो यहाँ सक्रिय छै। यै सें सामाजिक दूरी आरो जातीय तनाव कम होलों छै। आधुनिक वैज्ञानिक प्रचारो नें यै दिशा में मदद पहुँचैलें छै।

ई-सब सामाजिक बदलाव नें आधुनिक अंगिका साहित्यों कें दिशाओ कें आपनों अनुसार चलैलकै।

आय समाजों में तरह-तरह कें प्रदूषण छै। आदमी कें भौतिकता-प्रेम कें कारणें सौंसे समाज सड़ाँध कें बीच आबी गेलों छै। पर्यावरण कें सुधार कें वास्तें ई जनपदों में अनेक स्वयंसेवी संस्था सक्रिय छै। गंगा-मुक्ति-आन्दोलनों कें उद्देश्य पर्यावरणों में सुधार छेकै।

ई-सब सुधार लेली अंग-जनपदों कें आधुनिक समयों में ढेरे साहित्यों कें निर्माण होलों आरो होय रहलों छै। मद्य-निषेध, स्त्री-शिक्षा, बंधुआ-मजदूरी-उन्मूलन, सामंती-रुग्णता, पर्यावरण-संरक्षण आरनी कें लैकें गद्य आरो पद्य दोनों विधा में समृद्ध साहित्यों कें सृजन भेलों छै। यहाँ यहू संकेत करी देबों आवश्यक छै कि देश-विभाजन कें बाद (नौआखाली कें बाद) अंग-जनपदों कें मुंगेर में आरो स्वतंत्र भारत में भागलपुर कें सबसें बड़ों अमानवीय दु:ख झेलैलें पड़लों छेलै। राजनीतिक कारणों सें अंग-जनपदों कें सामाजिक जीवनों में जे विभाजन कें दरार आबी गेलों छेलै ओकरा दूर करै कें ई जनपदों कें प्रमुख साहित्यिक संस्था आरो नया साहित्यकारसिनी नें साम्प्रदायिक सद्भाव कें साहित्य-सृजन में आपनों जे रुचि प्रदर्शित करने छै ऊ आधुनिक अंगिका-साहित्यों कें एक प्रमुख पक्ष नाखी छेकै।

समाजों में नया वैज्ञानिक शिक्षा सें विकसित एक नया वर्ग कें कारणें आय एक वर्ग हेनों छै जे भीतर सें जातीय व्यवस्था आरो सम्प्रदायवाद हेनों सामाजिक अव्यवस्था कें विरोध करी रहलों छै आरो सभा-संगठनों कें माध्यमों सें ई व्यवस्था कें तोड़ै में डॉ० योगेन्द्र, प्रभाकर आरनी नया पीढ़ी कें लोग अत्यधिक सक्रिय छै।

धार्मिक परिस्थिति

अंगिका के आदि अद्वैतकाल में १९वीं शती कें १८८२ ई. सें लैकें बीसवीं शती कें १९२५ ई. तक कें धार्मिक स्थिति कें साहित्यों कें इतिहास-निर्माण में भारी भूमिका रहलों छै। एक तरह तें इस्लाम धर्म में हिन्दूसिनी कें परिवर्तन आरो दोसरों

तरफ ईसाई पादरीसिनी द्वारा ईसाई धर्म कें प्रचार होलै। भागलपुर कें उत्तर-दक्षिण क्षेत्रों में दू हिन्दू राजघराना कें मुसलमान धर्म कें स्वीकार करी लेबों इतिहास-प्रसिद्ध छै। मुंगेर आरो संताल परगना में ईसाई पादरी कें प्रभुत्व बढ़े लागलों छेलै।

ब्रह्म-समाज कें संस्थापक राजा राममोहन राय कें कार्य-क्षेत्र तें भागलपुरों में रहलै, जहाँ ब्रह्म-समाज-मंदिर कें स्थापना सें राजा राममोहन राय कें सिद्धान्त कि ईश्वर एक्के छै, जातिवाद देशों कें राष्ट्रीयता में बाधक छै, कें प्रचार अंग-जनपदों कें बुद्धिजीवी कें आपनों दिस आकर्षित करलकै। राजा राममोहन राय, विधवा-विवाह आरो स्त्री-पुत्र कें बराबरी कें विचार चलाय रहलों छेलै।

फेनू, स्वामी विवेकानन्द कें १९९० ई. में मुंगेर-भागलपुर में प्रवास कें क्रम में होलों प्रवचनों सें अंग-जनपदों कें सामाजिक-धार्मिक परिस्थिति प्रभावित हुवें बिना नैं रहें पारलों छेलै। विवेकानन्द जे कि परमहंस अरविंद कें विचारों कें प्रचारक छेलै, हिनकों जाति-छुआछूत-उन्मूलन कें साथ सम्प्रदायवाद-उन्मूलनों कें विचारों सें अंग-समाज काफी प्रभावित होय रहलों छेलै। समाजों कें सामान्य लोगों कें प्रति सहानुभूति-प्रदर्शन आरो हिन्दू-धर्मों कें अपराजेय शक्ति कें स्थापना विवेकानन्द जी कें जीवन-लक्ष्य छेलै, जें अंग जनपदों कें सामाजिक-धार्मिक जीवनों पर प्रभाव छोड़ी रहलों छेलै।

हिन्दू जाति सदाय जाति-प्रथा पर आधारित रहलों छै, जेकरा में ऊँच-नीच कें भेद कम नैं रहलों छै। ई अलग बात छेकै कि जातीय उन्माद एक उन्माद कभियो नै रहलै। तैयो कुलाभिमान आरो कुलापमान कें भाव गहरा रहलों छै, जेकरों प्रतिगामी विकास धर्म-परिवर्तनों में होतें रहलों रहै। ई धर्म-परिवर्तन आरो हिन्दू-धर्मों कें महत्व-स्थापना लेली अंग-जनपदों में कैएक धार्मिक संस्था सक्रिय छेलै, जेकरा में आर्य-समाज प्रमुख छै। मुंगेर आरो भागलपुर में आर्य-समाज कें स्थापना सें अंग-जनपदों में नया धार्मिक परिस्थिति कें जन्म होय रहलों छेलै। आर्य-समाज कें कार्यक्रमों सें जाति-भेद आरो स्त्री-पुरुष-भेद कें स्थिति चरमरावें लागलों छेलै। आर्य-समाज जहाँ वेदों कें सार्वभौमिकता कें प्रचार करी रहलों छेलै वहाँ समाजों कें भौतिक उन्नति लेली विज्ञान आरो पाश्चात्य अध्ययनों पर बल दै रहलों छेलै। यै सें अंग-जनपदों कें जातीय आरो अन्धविश्वासों कें जड़ता कें जड़ीभूत रहै में मुश्किल होय चललों छेलै।

धर्म-परिवर्तनों कें ई स्थिति में अंग-जनपदों कें चिंतक-बुद्धिजीवी कें चिंतित होबों स्वाभाविक छेलै। यहें समय में १८८२ ई. में थियोसॉफिकल सोसाइटी कें मद्रास में स्थापना आरो १८९३ ई. में इंगलैंड सें ऐली श्रीमती एनी

बेसेंट कें भारत-भर मे घूमी-घूमी कें हिन्दू-धर्मो कें महत्व पर व्याख्यान देला सें हिन्दू धर्मो कें पुनरुत्थान लेली एक नया परिवेश कायम हुवें लागलै। अंग-जनपदों कें भागलपुर (भीखनपुर) में थियोजॉफिकल सोसाइटी कें स्थापना करलों गेलै।

अंग-जनपद तें शुरूवे सें धर्म कें द्वीप रहलों छै। नाना रङों कें धार्मिक आन्दोलन कें, धर्म कें उत्स-केन्द्र रहलों छै। यै लेली एनी बेसेंट द्वारा हिन्दू धर्म कें आध्यात्मिकता पर जबर्दस्त भाषण कें दौर शुरू होलै तें एकरा सें पूर्वी भारत काफी आन्दोलित होलै। अंग सें लैकें बंग तक धार्मिक पुनर्जागरण कें वलय सें बंधी गेलै। धर्म-पंथ, धार्मिक मान्यता, धर्म-पुरुष कें संबंध में साहित्यों कें सृजन कें परम्परा काफी उत्कर्ष पर पहुँची गेलै। आदि अद्वैत काल कें समाप्ति कें दौर पर स्थित कवि दर्शन दुबे, भवप्रीतानन्द ओझा, चामू कमार, गैबीदास आरनी कें धार्मिक साहित्यों कें पीछूँ धार्मिक परिस्थिति कें प्रभावों कें इन्कार नैं करलों जावें सकै छै।

शैक्षिक स्थिति

अंग-जनपदों में कहियो विक्रमशिला विश्वविद्यालय हेनों विश्वविख्यात विद्यापीठ आरो यहें विश्वविद्यालयों में दीपंकर श्रीज्ञान अतिश हेनों अद्वितीय विद्वानों छेलै ; मतरकि यहाँ जोन महायानी, तंत्रयानी आरो वज्रयानी सिद्धसिनी कें बोलवाला छेलै ओकरा सें यहू पर प्रकाश पड़ै छै कि वहू समयों में शिक्षा आरो शिक्षार्थी कें की स्थिति होतै।

ई कहलों जैतै कि जों दर्शन, ज्ञान-विज्ञान आपनों ऊँचाई पर होबो करलै तें कुछेक विद्वानों कें बीच केन्द्रित रहै। तखनी आम लोगों कें बीच उन्नत शिक्षा कें प्रचार होलों रहें, एकरों इतिहास नैं मिलै छै। १८३८ ई. में बड़ी जाँच कें बाद ब्रिटिश कम्पनी कें आदेश पर रॉबर्ट मौंटगोमरी नें जे 'ईस्टर्न इंडिया' ग्रंथों कें रचना करने छै, ओकरों अनुसार भागलपुर नगर कें सोलह पढ़लों-लिखलों आदमीसिनी में खाली दू व्यक्ति रामायणों कें भली-भाँति समझें पारै छेलै, चार आदमी एकरों कुछ वाक्यों कें आरो बाकी दस आदमी रामायणों कें कुछेक शब्दे-भर समझें सकै छेलै। हुवें पारें कि वै वर्णनों में अशिक्षा कें कुछ अत्युक्ति में कहलों गेलों रहें, मतरकि वै वर्णने शिक्षा कें स्थिति कें स्पष्ट अवश्य करै छै।

ई जनपदों कें अधिकांश आदमी खड़ी बोली आकि रामायणों कें पाठ्य-ज्ञान सें अनभिज्ञ होला कें कारणें आपनों मातृभाषा कें साथें जुड़लों रहलै। अँग्रेजी

शासन कें समय शिक्षा प्रचार लेली अनेक शिक्षण-संस्थानों कें स्थापना भेलै, मतरकि यहाँ अँग्रेजी पठन-पाठने कें बोलवाला रहला कें कारणें यहाँकरों निवासी कें एक बहुत बड़ों अंश अप्रभाविते रहलै। ई स्थिति कमोवेश आजो छै। अधिकांश शिक्षण-संस्थान कें संचालन अंग्रेजी-शासन कें केन्द्र कलकत्तै सें होय छेलै। १९१७ ई. ताँय भागलपुरों कें शिक्षण-संस्थान कलकत्तें विश्वविद्यालयों सें संचालित होतें रहै कें उल्लेख मिलै छै। जहाँ रामायण भली-भाँति समझैवाला सोलह पढ़लों-लिखलों व्यक्ति में दुइये व्यक्ति रहै वहाँ कलकत्ता सें संचालित इस्कूलों कें प्रति यहाँकरों लोगों कें कत्तें खींचें पारलें होतै, ई विचारै कें बात छै। जेहनों रामायण भली-भाँति समझैवाला दुइये व्यक्ति छेलै होन्है अँग्रेजी शिक्षाओ पावैवाला सोलह में एकाधे व्यक्ति होतै।

सरकारी स्तरों सें अलग शिक्षा-प्रचार लेली स्थानीय शिक्षा-प्रेमी द्वारा जोंन कार्यक्रम चलैलों जाय रहलों छेलै वहू लोकोन्मुखी नैं छेलै। संस्कृत, फारसी-अरबी आरो हिन्दी कें विकास लेली नामी-नामी मदरसा आरो स्कूलों कें स्थापना होलै, मतरकि है जनपदों कें स्थानीय (प्राकृत) भाषा कें उपेक्षा होतें रहलै जबें कि भोजपुरी कें विद्वान रघुवीर चरण आपनों भागलपुर-प्रवास कें दौरान अंगिका में 'बटोहिया' हेनों लोकप्रिय गीतों कें रचना करै में रुकलों नैं छेलै।

यहें बीच अँग्रेजी शिक्षा प्राप्त विद्वानसिनी में अँग्रेजी नीति कें अनुसार आपनों क्षेत्रीय बोली कें राजनीतिक पहचान दै कें ललक जागृत भेलै। ई ललक बंगाल सें शुरू भेलों छेलै आरो वाँहीं सें राष्ट्रीय स्तरों पर उभरी रहलों ई प्रवृत्ति कें पोषण होय रहलों छेलै। यै लेली जबें भागलपुरों में १९०९ ई. में बंग-साहित्य-सभा कें अस्तित्व प्रमुखता सें उभरलै तबें अंग-जनपदों में बसलों मधुबनी-बोली कें समर्थक पंडित, जिनकों प्रभुत्व बनैली स्टेट पर छेलै, कें धेयान मधुबनी कें बोली पर गेलै, आरो होकरों वास्तें विद्वान् पंडित-सब नें एक दोसरों रास्ता अख्तियार करलकै कि अंग-जनपदों कें मूल (प्राकृत) स्थानीय भाषा अंगिका कें मधुबनी-बोली कें एक रूप कहना शुरू करी देलकै, ताकि मधुबनी-बोली कें विस्तार कें देखैलों जावें सकें। हुनकासिनीं भागलपुर कें बनैली स्टेटों कें आपनों गिरफ्त में लैकें मधुबनी-बोली कें उत्कर्ष लेली स्टेटों कें प्रोपराइटरसिनी सें कलकत्ता-विश्वविद्यालयों में आर्थिक अनुदानों दिलवैलकै। एक तरफ मधुबनी कें पंडितसिनी कें यशोगान आरो दोसरों तरफ अंग कें स्टेट मालिकों कें उदारता। दोनों कें असाधारण लाभ उठैतें मधुबनी-बोली कें समर्थक पंडित महाराजा कामेश्वर सिंह बहादुरों सें, आपनों पिता कें स्मारक कें नामों पर, प्रान्तीय विश्वविद्यालयों में मधुबनी-भाषा

लेली भारी आर्थिक अनुदान दिलवावै में सफल रहलै आरो सब्भे राजकीय संरक्षणों कें लाभ उठैतें हुवें मधुबनी-बोली कें समर्थन कें समय में मधेपुरा कें वनगाँव नामक बस्तीयो में 'साहित्य-सभा' कें माध्यम सें हौ बोली कें प्रचार दै कें कार्यक्रम प्रारम्भ होलै।

१८५३ ई. में ब्रिटिश कम्पनी कें ओरी सें शिक्षा कें सर्वसुलभ बनावै वास्तें जौंन संसदीय समिति कें निर्माण होलै ओकरों सर्वाधिक लाभ बंगालीसिनी कें होलै। अँग्रेजी शासन कें मुख्य केन्द्र होला कें कारणें आरो बंगाल कें सम्पर्क में रही कें दोसरों लाभ केकरहौ ज्यादा मिलै तें मधुबनीवासी कें, जेकरों एक दुष्परिणाम यहू भेलै कि अँग्रेजी पदाधिकारी सें मूल प्राकृत अंगिका कें साथ बौद्धकालीन महाजनपद बज्जि कें लोक-भाषा कें भी मधुबनी-बोली कें उपभाषा बतावै में सफल भै गेलै।

अंग-जनपदों में जें अँग्रेजी शिक्षा ग्रहण करी रहलों छेलै आकि करी चुकलों छेलै ओकरा आपनों मातृभाषा लेली कुछ बोलबो अँग्रेजी मतों कें विरुद्ध लागी रहलों छेलै, जेकरा हुनकासिनीं ग्रहण करने छेलै। आइयो कमोवेश वहें स्थिति छै, जेकरों दुष्परिणाम ई होलै कि अंगिका भाषा कें नैं खाली अस्तित्वे धूमिल पड़ें लागलै, बलुक हेकरों भौगोलिक सीमा आरो साहित्यों कें हड़पै कें हड़प्पू-संस्कृति बिहार में शुरू भेलै। यहाँकरों आम आदमी निरक्षर छेलै, यै लेली ई हड़प्पू-संस्कृति कें लाभ-हानि सें आम आदमी उदासीने बनलों रहलै। अँग्रेजी तालिम पैलों अंगवासी कें उदासीनता आरो निरक्षर लोगों कें चुप्पी कें कारणें बिहार कें अन्य बोली-भाषा कें अकादमी बनलै, स्कूल-कॉलेजों में ओकरों पढ़ाय कें व्यवस्था होलै ; मजकि अंगिका लेली सरकार के ओरी सें कुछ नैं करलों गेलै। डेढ जिला कें बोली कें साहित्य पुरस्कृत होलों शुरू भेलै, मतरकि पाँच प्रमंडलों कें भाषा अंगिका शिक्षा में पिछड़ला कें कारण पिछड़ले रहलै।

ऐन्हों स्थिति में आजादी पैला कें बाद अँग्रेजी तालिम पैलों अंग-विद्वानों कें एक हेनों वर्ग तैयार भेलै जे कि अंगिका के अस्तित्वों कें सुरक्षा लेली कटिबद्ध होलै। ये में श्री गदाधर प्रसाद अम्बष्ठ अग्रगण्य छेलै। अन्य विद्वानों में डॉ० लक्ष्मी नारायण सुधांशु, डॉ० परमानन्द पाण्डेय, डॉ० तेजनारायण कुशवाहा, श्री नरेश पाण्डेय 'चकोर', श्री सुमन सूरो, श्री मधुकर गंगाधर, प्रो० कमला प्रसाद 'बेखबर' आरनी प्रमुख छेलात। अंगिका आन्दोलनों कें जेसिनी प्रमुख साहित्यकारों कें पूर्ण समर्थन मिली रहलों छेलै वैसिनी में डॉ० रामधारी सिंह 'दिनकर', श्री अनूपलाल मंडल, डॉ० वचनदेव कुमार, डॉ० कामेश्वर शर्मा अग्रगण्य छेलात।

बिहार में बिहारी लोक-भाषासिनी कें केन्द्रीय आरो विशेष सुविधा प्रदान करतें रहला कें घोषणा सें अंग-जनपदों कें बुद्धिजीवीसिनीयों में एक नया किसिम कें मातृ-भाषा-प्रेम कें चेतना कें विकास होलै, जे कि देखतहैं-देखतहैं अंग कें दक्षिण सें लैकें हिमालय कें सीमा कें छूतें उत्तर ताँय फैली गेलै। डॉ० लक्ष्मीनारायण सुधांशु, श्री अनूप लाल मंडल, श्री मधुकर गंगाधर, प्रो० कमला प्रसाद 'बेखबर', श्री शंकर प्रसाद 'श्रीनिकेत' आरनी अंगिका कें प्रगति-पथ पर अग्रसर रहलों ऐलात आरो टटका समयों में श्री प्रद्युम्न सिंह, श्री केशव, डॉ० देशभक्त, डॉ० रमेश आत्मविश्वास, श्री चन्द्रप्रकाश जगप्रिय, श्री दीपनारायण 'दीप', डॉ० विजय, डॉ० सकलदेव शर्मा, श्री अनिल ठाकुर आरनी जहाँ अंगिका कें लोकप्रिय बनावै आरो साहित्य सें भरै में जुड़लों छोंत, वाँहीं दक्षिण में पं० भवप्रीतानन्द ओझा, पं० शुद्धदेव झा 'उत्पल', महाकवि सुमन सूरो, श्री सुभाषचन्द्र 'भ्रमर', डॉ० डोमन साहु 'समीर', डॉ० श्यामसुंदर घोष, श्री अनिरूद्ध प्रभास, प्रो० सुरेन्द्र झा 'परिमल', श्री वेद प्रकाश बाजपेयी, श्री पंकज मिश्र आरनी कें अंगिका-सेवा सें अंगिका भाषा आरो साहित्यों कें समृद्धि काफी ऊँचाई पर चढ़ी गेलों छै।

पश्चिमों में जों अंगिका कें लोकप्रिय करै में श्री गदाधर प्रसाद अम्बष्ठ, डॉ० माहेश्वरी सिंह 'महेश', प्रो० नीलमोहन सिंह, डॉ० रामधारी सिंह दिनकर, श्री विजेता मुद्गलपुरी, श्री सियाराम सिंह 'प्रहरी', श्री रामदेव भावुक, श्री छन्दराज, श्री प्रभात सरसिज, श्री निर्मल सिंह 'लाल' आरनी कें भूमिका ऐतिहासिक रहलों छै तें पूरब में डॉ० तेजनारायण कुशवाहा, श्री महेन्द्र प्रसाद जायसवाल, श्री अनिरुद्ध प्रभास, श्री पंकज साहा आरनी नें अनेक अंगिका सम्मेलन, अधिवेशनं आरो कार्यशाला कें माध्यमों सें अंगिका भाषा कें पूर्बी अंग कें कोना-कोना तक खाली मोहे नैं पैदा करलकै, बलुक समारोह आरो अधिवेशनों कें माध्यमों सें सौंसे राष्ट्रों कें विद्वानों कें सम्मुख अंगिका कें समृद्धि आरो प्राचीनता कें राखै में अद्वितीय कार्य करलकै। यहें कार्य मध्य जनपदों में डॉ० परमानन्द पाण्डेय, श्री 'चकोर', श्री भुवनेश्वर सिंह 'भुवन', श्री सदानन्द मिश्र, श्री गुरेश मोहन घोष 'सरल', श्री सच्चिदानन्द 'श्रीस्नेही', श्री सुरेश मंडल 'कुसुम' आरनी साहित्यकारों द्वारा होलै। ई काम अंगिका भाषा कें नया पीढ़ी कें साहित्यकारों में अभूतपूर्व उत्साह आरो संकल्पबद्ध ढंगों सें करी रहलों छै। कोशी अचलों में डॉ० आत्मविश्वास, मध्य अंग में श्री परशुराम ठाकुर ब्रह्मवादी, दक्षिण में श्री धीरेन्द्र छतहारवाला आरो पश्चिम में श्री विजेता मुद्गलपुरी तें पूरब में श्री अनिरुद्ध

प्रभास अंगिका भाषा कें प्रति आम जन-जीवनों में गहरा रुचि कें स्थापना लेली प्रयत्नशील छोंत। अखिल भारतीय अंगिका साहित्य-कला-मंच द्वारा 'अंगवाणी' कें चलन्त गोष्ठी नें ई क्षेत्रों में क्रान्तिकारी बदलाव आरो विकास लानी देने छै।

हेना कें अंगिका भाषा आरो साहित्यों कें शिक्षा-संस्थानों में स्थान दिलावै कें माँग तें बहुत पैहिनें सें होतें रहलै, मतरकि १९९४ ई में. ई माँग कें राष्ट्रीय रूप देलों गेलै, जेकरों नींव समय-साहित्य-सम्मेलन, पुनसिया (बाँका) कें राष्ट्रीय महाधिवेशन १९९३ ई. में देलों गेलों छेलै जबें कि राष्ट्रीय आचार्य पद्मश्री डॉ०· लक्ष्मीनारायण दुबे कें अध्यक्षता में ई निर्णय लेलों गेलै कि अंगिका भाषा आरो साहित्यों कें प्रचार लेली दिल्ली में अधिवेशन करलों जाय। ऊ निर्णयों कें तहत अंगिका अभियान-साहित्य कें निर्माण करलों गेलों छेलै, जेकरों अध्यक्ष श्री सतीशचन्द्र सिंह, महामंत्री डॉ० अमरेन्द्र आरो संयोजक छेलै डॉ० तेजनारायण कुशवाहा। ई समिति कें पहलों राष्ट्रीय अधिवेशन दिल्ली में होलै, जेकरा में प्रसिद्ध साहित्यकार आरो राजनीतिज्ञ डॉ० शंकर दयाल सिंह (स्व०), डॉ० दिवाकर प्रसाद सिंह, पूर्व-शिक्षा मंत्री, श्री गुनेश्वर प्रसाद सिंह आरनी नें भी भाग लेने छेलै। वै अधिवेशनों सें अंगिका कें राष्ट्रीय स्तरों पर नया पहचान देलों गेलों छेलै आरो वाँहीं सें अंगिका कें विश्वविद्यालयों में लानै वास्तें फेनू सें एक नया ताकत ऐलै। ई ताकत दै में अंगिका भाषा-एकता-परिषद, भागलपुर आरो उदित अंगिका साहित्य परिषद्, देवघर कें योगदान बड़ी ऐतिहासिक रहलै। डॉ० डोमन साहु 'समीर' आरो श्री सतीश चन्द्र सिंह कें अविराम सक्रियता सें आखिरकार १९९५ ई. में भागलपुर विश्वविद्यालय कें कुलाधिपति (राज्यपाल, बिहार) कें आदेश भेलै कि अंगिका भाषा-साहित्यों कें विश्वविद्यालयों कें स्नातक स्तर कें सब्भे पाठ्यक्रमों में शामिल करलों जाय। राज्यपाल महोदय कें वै आदेशें अंगिका लेखक, साहित्यकार आरो विद्वानों कें बीच पसरलों उदासी कें धूल कें झाड़ी-पोंछी देलकै, जेकरों अन्दाजा १९९५ कें 'हिन्दुस्तान' (पटना) में प्रकाशित अर्पणा सिंह के एक लेखों सें लगैलों जावें सकै छै। यै तरहों सें अंगिका भाषा कें आधुनिक साहित्यों कें प्रकाशन में सर्वथा नया किसिमों कें उत्साह कें दिशा खुललै।

अंग-जनपदों में शिक्षा कें नवीन प्रचार सें ई जनपदों में एक नया किसिम कें सांस्कृतिक परिवेश बनें पारलै। बुद्धिजीवी-साहित्यकार कें संबंध विश्व कें विभिन्न दार्शनिक विचार-धारा सें होलै। मार्क्स, लेनिन, नीत्शे आरो सात्र कें दार्शनिक विचार-धारा सें भी यहाँकरों समाज में एक नया चिंतन (सोच) लेली

मानसिक स्थिति पैदा भेलै। विश्वविद्यालय स्तर पर ई-सब दर्शन कें अध्ययन-अध्यापन नें नया शिक्षित समाजों कें अन्तर्राष्ट्रीय बनै में काफी मदद पहुँचैलकै। आधुनिक अंगिका-साहित्यों में भौतिकतावादी, प्रकृतिवादी, अस्तित्ववादी चिंतन यहें नवीन शिक्षा कें परिणाम छेकै।

आर्थिक परिस्थिति

अंग-जनपद, जे आपनों आरम्भ-काल्हे सें सम्पत्ति आरो समृद्धि वास्तें विश्वभरी में नामी छेलै, जोंन जनपदों कें व्यापारी समुद्र कें पार करी-करी विश्वभरी सें आपनों व्यापारिक संबंध कायम करने छेलै आरो जे समृद्धि-सम्पत्ति कें कारणें आपना पर बार-बार मगध कें आक्रमणों कें कारण बनलों छेलै, अँग्रेजी शासन कें प्रसार-प्रचार कें कारणें यहाँकरों बचलों-खुचलों नामी उद्योगो धूमिल पड़ें लागलै।

रेशम-उद्योग कें लैकें जे ‘लपुर विश्वभरी में विख्यात रहै, ओकरो अँग्रेजी कम्पनी नें बचाय कें कोशिश नैं करलकै। आजादी कें बादो रेशम-उद्योग में कोय बुनियादी सुधार कें कोशिश नैं करलों गेलै। बड़ों-बड़ों कें नीचें कुछ-कुछ काम करलों गेलै। स्वातंत्र्योत्तर भारत में ई रेशम-उद्योग कैन्हौं कें आपनों अस्तित्वे-भर बचावें पारी रहलों छै। बुनकरों कें आर्थिक दयनीयता पिछलका कुछ दशकों सें आपनों चरम पर आबी कें रुकी गेलों छै।

सरकारी सहयोग आरो संरक्षण कें अभाव कें कारणें कयेक महत्वपूर्ण गृह-उद्योग अस्तित्वविहीन होय गेलै, जै में एक लाह-उद्योगो छेलै। लाह कें चूड़ी-उद्योग कें समाप्ति कें साथें-साथ अनेक परिवारों कें समक्ष भुखमरी कें भयंकर संकट आबी गेलों छै, एक महत्वपूर्ण आर्थिक स्रोत छेलै लाह-उद्योग।

आजादी कें बादो ई जनपदों में सरकार द्वारा कोय महत्वपूर्ण उद्योगों कें स्थापना नैं करलों गेला कें कारणें ई जनपदों कें अधिकांश लोगों कें आर्थिक स्थिति कें मजबूती देबों संभव नैं छेलै। ई जनपदों कें आर्थिक सुदृढ़ता कें एक आधार जे जंगल छेलै ओकरो विनाश ई क्षेत्रों कें दरिद्रता कें आरो भयंकर बनैतें गेलै। आय ई जनपदों कें दक्षिणी हिस्सा संताल परगना कें अधिकांश जंगल वृक्षविहीन होय गेलों छै आरो उत्तरी अंग कटिहार-पूर्णिया, जे कि कभी पूरा अरण्य छेलै, आबें मैदान होय कें रही गेलों छै। जंगल ई जनपदों कें आर्थिक जीवनों कें सुदृढ़ता में हमेशा सें भारी सहयोगी रहलों छै। ओकरों विनाश सें ई जनपद जों आय कंगाली कें कगार पर आबी गेलै तें आचरज नैं।

अंग-जनपदों कें आर्थिक दुरवस्था कें सबसें बड़ों कारण रहलै - जमींदारी व्यवस्था पर कृषि कें कार्य। एक समय छेलै जबें कृषि-भूमि पर केकरो आधिपत्य नैं होय छेलै ; मतरकि जमींदारी-प्रथा कें लागू होत्हैं जमीन पर जमींदारों कें अधिकार होय गेलै। जमीन कें खरीद-बिक्री शुरू होय गेलै। फसलों पर जमींदारों कें अधिकार होय गेलै आरो ओकरों कृषि-भूमि पर काम करैवाला किसानों कें जीवनें कारुणिक दृश्य उपस्थित करें लागलै। धीरें-धीरें खेतिहर-मजदूरों पर जमींदारों कें अत्याचारो बढ़लों गेलै, जेकरों कयेक बुरा परिणाम निकललै। गाँवो सें लोगों कें पलायन शुरू भेलै ; वैसिनी देशों कें नगर-महानगरों में मजूरी करै लें निकली गेलै।

उत्तरी अंग-जनपदों में तें गंगा आरो कोशी कें उपद्रवों सें आर्थिक उपद्रव आरो चरम पर देखलों गेलै। प्रतिवर्ष लाखो परिवारों कें बाढ़ कें कारणें अन्न आरो घोंर वास्तें बिलबिलावें पड़ें छै। हर वर्ष सरकारों कें आश्वासन चलतें रहै छै। फरक्का बराज कें कारणें तें कोशी अंचल कें आर्थिक परेशानी दिनोंदिन बढ़लों चललों जाय रहलों छै। फरक्का बराज कें कारणें गंगा कें नैं खाली गहराई घटलों जाय रहलों छै, बलुक बालू कें लगातार जमाव होतें जाय कें कारणें नदी कें पाटो चौड़ा होय रहलों छै। दियारा कें कृषि गंगा कें चौड़ा होतें पाट सें लगातार समाप्त होय रहलों छै। जमीन एक बेर गंगा-कोशी कें पेटों में समैलों तें तीस-पैंतीस सालों कें बाद उबरै कें बात रहै छै। खेतिहर-मजदूरों कें समक्ष लगातार भुखमरी कें सुरसा मुँह फैलैले जाय रहलों छै। वै पर कोशी अंचल कें जमींदारी निर्दयता अलग। फरक्का बराज कें कारणें समुद्र सें मछली कें ऐबों बंद होलों जैबो उत्तरी अंग-जनपदों कें मछुवारासिनी कें जीवन-सुरक्षा पर भारी प्रश्न-चिन्ह खाड़ों करी देले छै।

अंगिका कें आधुनिक गद्य-साहित्य, खास करी कें उपन्यास आरो कहानी साहित्य, में अंग-जनपदों कें नया किसिमों कें अमानवीय आर्थिक शोषण आरो पूंजीवादी अत्याचारों कें बड़ी भयावह अभिव्यक्ति भेलों छै। कथा-साहित्य नाखी नया समय कें अधिकांश अंगिका कवियोसिनी नें है आर्थिक विपन्नता आरो आर्थिक अपराधों कें खुली कें उजागर करनें छै। गंगा-मुक्ति कें लैकें सैकड़ों अंगिका-गीतों कें रचना ई बातों कें सबूत छेकै कि अंग-जनपदों कें बेढंगा आर्थिक व्यवस्था नें कोन तरह सें अंगिका-साहित्यों कें प्रभावित करने छै।

काल-विभाजन आरो नामकरण

कोय भाषा कें लिखित साहित्य जबें सें मिलें लागै छै तभिये सें ओकरों इतिहासो शुरू होय जाय छै। 'आंगी' कें साहित्य हेना कें तें सातमी-आठमी शती ईस्वीये सें सिद्ध-कविसिनी कें चर्यापदों में मिलें लागलों छै जेकरों जिक्र यै इतिहासों कें पद्य-खंडों में करलों गेलों छै। वै हिसाबों सें अंगिका-साहित्यों कें पुनरुत्थान आकि पुनर्जागरण-युग बीसमी शती कें लगभग मध्य भागों सें शुरू होय छै। पुनर्जागरण-युग यै लेली कि येहें समयों में अंगिका भाषा आरो साहित्यों कें संरक्षण आरो विकास लेली अनेक ख्यातिप्राप्त साहित्यकारों कें अंगिका-आन्दोलन शुरू होलै।

साहित्य कें इतिहासों कें काल-विभाजन आरो नामकरण प्राय: उपलब्ध साहित्यों कें मुख्य प्रवृत्ति कें अनुसार होय छै। अंगिका साहित्यों कें काल-विभाजन डॉ० तेजनारायण कुशवाहा नें, खासकरी कें, अंगिका-आन्दोलनों कें धेयान में राखतें होलों, मंच-युग (१९५०-१९८५ ई.) आरो मंचोत्तर-युग (१९८५ ई. सें अब तक) कें नामों सें करने छै। हिनी मंच-युगों कें अनेक वरिष्ठ साहित्यकारों कें मंचोत्तर-युगों में देखैने छै आरो कहलें छै कि मंचोत्तर-युगों में मंच-युगों कें सब्भ प्रवृत्ति मिलै छै। यै संबंधों में कुच्छू मतान्तर होवै कें गुंजाइश छै, मतरकि यहाँ वै संबंधों में कुछ कहै कें अवकाश नैं छै। ई बात नैं छै कि १९५० ई. सें १९८५ ई. कें बीच खाली मंच आकि संस्थाये कें जन्म होलै, साहित्यों कें सृजन नैं ; बल्कि देखलों जाय तें येहें काल-खंडों में मंच आकि संस्था बनै सें काँहीं बेसी श्रेष्ठ अंगिका साहित्यों कें सृजनों भेलों छै।

श्री सच्चिदानन्द श्रीस्नेही नें अंगिका कें आधुनिक अद्वैत कालों कें चार भागों में बाँटी कें देखने छै -- १. उत्थान-काल (१९३५-१९५५ ई.), २. रजत-काल (१९५६-१९६९ ई.), ३. स्वर्ण-काल (१९७०-१९७७ ई.) आरो ४. हीरक-काल (१९७८ ई. सें आय तक)। श्रीस्नेही जी कें ई काल-विभाजनों कें आधार साहित्य कें विशेषता कें कारण नैं, बल्कि साहित्य कें प्रकाशन-संख्या आरो साहित्यिक चहल-पहल छेकै। जों साहित्य कें श्रेष्ठता कें बात लेलों जाय तें जे कालों कें श्रीस्नेही जी नें उत्थान-काल कहलें छै वही कालों में सर्वश्री भुवनेश्वर सिंह 'भुवन', सदानन्द मिश्र, सुमन सूरो आरनी हेनों श्रेष्ठ रचनाकारों कें साहित्य पर्याप्त मात्रा में आबी चुकलों छेलै। सचतें ई छेकै कि काल-विभाजनों कें समय श्रीस्नेही जी कें सामने रचना-विशेष कें मूल्यांकन मुख्य नैं रहलों छेलै।

रचनासिनी कें प्रकाशन-संख्या कें आधारों पर काल-विभाजन वैज्ञानिक नै मानलों जावें सकै छै। तथाकथित स्वर्ण-युग आरो हीरक-युगों कें अनेक रचना कोनो मूल्यो कें नैं छै।

डॉ० माहेश्वरी सिंह 'महेश' कें 'अंगिका भाषा और साहित्य' हिंदी-निबंधों मे अंगिका-साहित्यों कें पुनरुत्थान आकि पुनर्जागरण-युग वास्तें कोय स्पष्ट नामकरण तें नै मिलै छै, मतुर आधुनिक अंगिका गद्य-साहित्यों कें उल्लेख कें क्रम मे हुनी 'नवयुग' शब्द कें प्रयोग करने छै। यै सें यही कहलों जावें सकै छै कि हुनकों मतानुसार ई कालों कें नाम 'नवयुग-काल' उपयुक्त छै।

जों गंभीरता सें विचार करलों जाय तें ऊपरों कें सब नामकरण या तें समयों कें बोध करावै छै या साहित्यों सें अलग कोय दोसरों बातों कें। हमरों विचारों सें अंगिका-साहित्यों कें ई पुनरुत्थान-कालों कें आधुनिक अंगिका-साहित्यों के अद्वैत काल कहबों बेसी उपयुक्त होतै। आधुनिक अंगिका-साहित्यों सें जहाँ समय-विशेष पर प्रकाश पड़ै छै वहाँ रचनासिनी में अभिव्यक्त आधुनिक भावो कें बोध होय जाय छै। फनू, 'अद्वैत' शब्द सें ई कालों कें दू विभेदों कें बीच भावों कें समानता कें साथें-साथ ई साहित्यों में आधुनिक भावों कें प्रमुखता-व्यापकता कें भी बोध होय जाय छै। यही सें 'अंगिका साहित्यों कें नवयुग' आकि आधुनिक कालों कें 'आधुनिक अद्वैत काल' कहबों बेसी वैज्ञानिक होतै।

श्री सुमन सूरो नें अंगिका-साहित्यों कें पुनरुत्थान-युग कें 'आधुनिक काल' कहने छै जे कि आगू चली कें डॉ० कुशवाहा आरो श्रीस्नेही जी द्वारा है काल वास्तें निर्धारित नामों सें जरूर अधिक वैज्ञानिक छै।

आधुनिक अंगिका अद्वैत काल कें साहित्य, जेकरों शुरुआत १९४० ई० कें आस-पास सें होय छै, आपनो भाव-धारा आरो शिल्प-विधानों में बहुत अधिक बदलावों कें संकेत दियें लागै छै। वहें बदलावों कें कारण अंगिका-साहित्यों कें आधुनिक अद्वैत कालों कें दू स्पष्ट उपभेद आरो बनें पारै छै -- १. पूर्व-आधुनिक अद्वैत काल आरो २. उत्तर आधुनिक अद्वैत काल।

पूर्व-आधुनिक अद्वैत कालों कें तात्पर्य वैसिनी साहित्यकारों सें छै जिनकों सबंध खास करी कें अंगिका भाषा आरो साहित्यों कें नवोत्थानों सें भी छेलै। सर्वश्री गदाधर प्रसाद अम्बष्ठ, भुवनेश्वर चौधरी 'भुवनेश', उपाध्याय जी, लक्ष्मण सिंह चौहान, परमानन्द पाण्डेय, भुवनेश्वर सिंह 'भुवन', सदानन्द मिश्र, नरेश पाण्डेय 'चकोर', तेजनारायण कुशवाहा, सुमन सूरो आरनी कवि पूर्व-आधुनिक अद्वैत कालै कें साहित्यकार छेकै जिनकों काव्य-साहित्यों में नया सामाजिक-

राजनीतिक चेतना मिलबों शुरू होय जाय छै, मतरकि शिल्प आरो शैली कें दृष्टि सें निस्संदेह पहिलें प्राचीनता कें ही बोध कराय छै। लोक-छंदों कें उपयोग प्रमुखता सें होला कें साथें आधुनिकता-बोध कें ऊ झाँस आकि कड़वाहट नैं छै जे कि उत्तर-आधुनिक अद्वैत काल कें कविसिनी कें रचना में मिलै छै। यहू में कोय शक नैं कि श्री सदानन्द मिश्र आरो श्री भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' -हेनों कवि होनों विभाजन सें मुक्त छै, मतरकि अधिकांश कवि पर ई विभाजन लागू होय छै।

पूर्व-आधुनिक अद्वैत काल कें कविसिनी में आधुनिकता कें झाँस, काँहीं-काँहीं तें एकरों गंध-भर छै। तबें, आधुनिक यै लेली छै कि हिनकासिनी कें काव्य में भक्ति कें ऊ प्रबल धार पर रोक अवश्य देखाय छै जे वै धारा कें अबाध गति आधुनिक काल सें पहिलें सर्वश्री दर्शन दुबे, भवप्रीतानन्द ओझा, महर्षि मेंहीं, चन्दरदास, गैबीदास आरनी तक अबाध गति सें बीसमी शती कें पूर्वाद्ध तक चललों आबै छै। भक्ति कें जग्घा पर पूर्व आधुनिक अद्वैत काल कें कविसिनी नें प्रकृति आरो लोक-रीति-रिवाजों कें प्रमुखता सें आपनों कविता में उठैबों शुरू करलकै।

उत्तर-आधुनिक अद्वैत काल कें छोर १९७५-७६ ई. कें आस-पास काँहीं सें मानलों जैतै। ई दृष्टि सें पबई (अमरपुर) में जुलाई १९७८ ई. में होलों अखिल भारतीय अंगिका साहित्य-मंच कें प्रथम अधिवेशन कें ऐतिहासिक महत्व छै। ऊ साहित्य-कला-मंचों कें स्थापना आरो ओकरों प्रथम अधिवेशन नें नया अंगिका लेखकों कें एक बहुत बड़ों सूची सामने में राखलकै। वै सूची कें साहित्यकारों कें प्रवेश, एकाध कें छोड़ी कें, अंगिका साहित्यों में नये छेलै, मतरकि हेनों बात नैं छेलै कि हुनकासिनी साहित्य कें दुनियाँ लेली नये छेलै। वै मंचों कें अधिवेशन में उपस्थित नया पीढ़ी कें रचनाकार मुख्य रूपों सें खड़ी बोली (हिंदी) कें साहित्य सें जुड़लों साहित्यकार रहै जिनकों पहचान आबें अंगिका-साहित्यकारों कें रूपों में पहिलें छै। सर्वश्री ज्योतिष मंडल, सच्चिदानन्द श्रीस्नेही, सुरेश मंडल 'कुसुम', गुरेश मोहन घोष 'सरल', निर्मल कुमार चौधरी, मुर्शीद अली, शिवेन्दु आरनी कें प्रयास सें वै मंचों कें स्थापना आरो ओकरों ऊ ऐतिहासिक अधिवेशन संभव हुवें पारलों छेलै।

वै अधिवेशनों में डॉ० रामजी सिंह, डॉ० विष्णुकिशोर झा 'बेचन', डॉ० अभयकान्त चौधरी, डॉ० तेजनारायण कुशवाहा, श्री नरेश पाण्डेय 'चकोर' आरनी पूर्व-आधुनिक अद्वैत काल कें साहित्यकार तें छेबे करलै, नया साहित्यकारों में सर्वश्री सुरेश मंडल 'कुसुम', जगदीश पाठक 'मधुकर', श्रीस्नेही, गुरेश मोहन घोष 'सरल', प्रियतम कापरी, मीरा झा (श्रीमती), अंजनी कुमार विशाल, शिवेन्दु

विद्रोही, अमरेन्द्र, कुमार भागलपुरी, ओम् प्रकाश मिश्र, श्रीराम शर्मा 'अनल', श्रीनिकेत, राकेश रवि, श्रीचन्द, रामावतार राही, कैलाश कुमार, परमानन्द प्रेमी आरनीयो छलै। उत्तर-आधुनिक अद्वैत काल कें प्रारम्भ येहेंसिनी कवि-साहित्यकारों सें मानना चाहियों। फरू, अक्टूबर १९७८ ई. में अखिल भारतीय अंगिका-विकास-सम्मेलन कें जे पहिलों अधिवेशन चम्पानगर (भागलपुर) में भेलै ओकरों संपूर्ण संचालन मे अंगिका कें बिल्कुल नया लेखक-साहित्यकार सर्वश्री भोलानाथ दत्त 'लतांत', विकास पाण्डेय, सुलेमान चम्पापुरी, संजय यादव, रविकान्त नीरज, अभय आनन्द, रंजीत दत्त आरनी छेलै। वहू सम्मेलनों में जे नया पीढ़ी कें साहित्यकार आपनों-आपनों कविता लै कें मंच पर ऐलों छेलै हुनकासिनी कें नाम वहें छेकै जे जुलाई १९७८ ई. कें पबई कें अधिवेशनों में उपस्थित छेलै। यही सें उत्तर-आधुनिक अद्वैत काल कें एक सौ सें बेसी साहित्यकारों कें सूची आबें मिलै छै जे कि आपनों साहित्यों कें प्रवृत्ति लै कें उत्तर-आधुनिक अद्वैत कालों कें साहित्यिक प्रवृत्ति सें अलग-थलग नैं छै। यही लें १९७८ ई. सें लै कें आय तक कें अंगिका साहित्यकार उत्तर-आधुनिक अद्वैत काल कें ही साहित्यकार ठहरतै।

१९७८ ई. कें बाद अंगिका साहित्य में राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक आरो धार्मिक विसंगति कें भयावह आरो हास्यास्पद स्वरूपों कें जे रङ पारदर्शी रूपों में उतारलों गेलों छै, ऊ बेशक आपनों स्वरूप पूर्व-आधुनिक अद्वैत काल सें आपनों अभिव्यक्ति कें साहसिकता आरो स्पष्टता में बिल्कुल भिन्न छै।

कथा-साहित्य

कहानी (सामान्य)

खड़ी बोली हिंदी कें आलोचक भलें ई मानतें रहें कि हिंदी में आधुनिक कहानी कें प्रचलन अँग्रेजी साहित्य सें भेलै, मतरकि अंगिका कें आधुनिक कहानी ई भाषा मे प्रचलित लोककथा कें विकास छेकै, जेकरों जन्म बातचीतों कें एक नया रूप ग्रहण करी लेला कें कारणें होलों होतै। यही कारण छै कि अंग-जनपदों में कहानी मे ऐन्हों गपों कें प्रयोग होय छै,जे कि गपों कें गढ़लों साहित्यिक रूप छेकै। अंगवासी लोगें खिस्सा कें साथें 'गप' (खिस्सा-गप) लगाये कें अकसराँ बोलै छै।

खिस्सा-गपों कें सही परिभाषा की हुवें पारें आरो ई कोन गद्य-विधा सें अलग पहचान राखै छै, निर्णायक रूपों में ई कहबों कठिन छै ; कैन्हें कि यहें कहानी जबें ज्ञान-शैली पर लिखलों जाय छै, तबें ई संस्मरण बनी जाय छै आरो

जबें यै में चरित्र पर जोर देलों जाय छै तबें यहें शब्दचित्रों कें नगीच पहुँची जाय छै। फनू, भावों कें प्रधानता सें ई निबंधों कें नगीच पहुँची जाय छै तें संवादों कें प्रमुखता सें नाटकों कें करीब चली जाय छै।

यै सें स्पष्ट छै कि कहानी कें कोनो खास तत्वों पर ज्यादा जोर देला सें ऊ आपनों कहानी-रूप छोड़ी कें आरो कोय साहित्य-रूप ग्रहण करें लागै छै। यही सें ई कहलों जाबें सकै छै कि कहानी ऊ साहित्यिक रूप छेकै जेकरा में चरित्र-चित्रण, संवाद, देश-काल कें साथें कोय एक घटना कें होबों जरूरी छै आरो जेकरों संतुलित, उद्देश्यपूर्ण समन्वय कहानी छेकै।

आधुनिक अंगिका कथा-साहित्य केरों विधिवत् लेखन आरो प्रकाशन, हिंदी कहानिये नाखी, अनुवादित कहानी-साहित्ये सें होलों छै। हेकरा सें ई नैं समझना चाहियों कि जखनी ई भाषा में रूपान्तरित कहानी कें प्रकाशन शुरू भेलै, तखनी मौलिक कहानी कें लेखन नैं होय रहलों होतै। तखनी मौलिक रूपों सें लिखलों कहानी कें प्रकाशनों कें कोय व्यवस्था नैं छेलै आरो नैं तें ओकरों लें कोय सरकारी आकि लेखकीय उत्साहे छेलै। यै लेली हस्तलिखित रूपों में रखलों ऊ-सब कहानी दीमक आरो समय कें प्रभावों सें आपना कें सुरक्षित नैं राखें पारलें होतै। हेना कें तें एकरों प्रमाण मिलै छै कि मुद्रण सर्वसुलभ होला कें पहिलें तक अंगिका साहित्यकारों में हस्तलिखित पत्रिकाओ कें संपादन कें उत्साह कम नैं रहलै आरो हेनों पत्रिका में कहानियों कें स्थान मिलतें रहलों छेलै। १९५४ ई. कें आस-पास भागलपुरों कें एक गाँव 'बाथ' सें संपादित 'भारती' एक हेने पत्रिका छेलै।

अंगिका भाषा में रूपान्तरित कहानी कें प्रकाशन अठारवीं शती ईस्वी कें आखिरी चरणों में श्री फादर अंटेनियोकर द्वारा 'नामी गोस्पेल' कें अंगिका-अनुवादों सें डॉ० माहेश्वरी सिंह 'महेश' नें मानलें छै, जेकरों उल्लेख 'महेश' जी कें 'अंगिका भाषा आरो साहित्य' (पृ० २४) में छै। यहें किताबों सें पता चलै छै कि जॉन क्रिश्चियन नें भी 'बाइबिल' कें एक अंशों कें अंगिका-अनुवाद तैयार करवैने छेलै, जेकरों लीथों-प्रतिसिनी जन-समुदाय कें बीच बँटवैलें रहै। डॉ० ग्रियर्सन नें आपनों प्रसिद्ध पुस्तक 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया' में रूपान्तरित कहानी साहित्यों कें कुछ उदाहरणों राखलें छै, जेकरों एक अंश नीचें छै।

"कोय आदमी कें दू बेटा छेलै। ओकरा में से छोटकों बाप सें कहलकै कि हो बाप! जे कुछ धन-सम्पत छौ, ओय में जे हमरों हिस्सा होय छै से हमरा दै दें। तबें ऊँ धन-सम्पत कें बाँटी देलकै। बहुत दिन भी नै भेलै कि ओकरों

छोटका बेटा सब चीज कें इकट्ठा करी-धरी कें बहुत दूर मुलुक चललों गेलै आरो वहाँ तुच्चापनी मे दिन-रात रही कें सब धन कें ऐश-जैश में खरच करी देलकै। जबेंकि सब धन-सम्पत चललों गेलै तबें ऊ गाँव में अकाल भेलै आरो ऊ बिल्लला होय गेलै। तबें ऊ एक वहै गाँव के रहवैया कन रहै जें ओकरा सूगर चरावै लेल आपनो खेत मे भेजलकै।'' (अंगिका भाषा आरो साहित्य)।

अंगिका में मौलिक कहानी लिखै कें जे प्रयास चललै, ऊ संभवत: हास्य-व्यग्यों के कहानी रहै। पंडित बुद्धिनाथ झा 'कैरव' नें, जे कि अंगिका भाषा-साहित्यो कें आंदोलनों कें कट्टर समर्थक रहै आरो जिन्ही पटना में १९५६ में 'अग-भाषा-परिषद्' कें स्थापना में आपनों भारी सहयोग देलें छेलै, परिषद्-स्थापना से बहुत पहिले अंगिका में गद्य-साहित्य-सृजन शुरू करी देनें छेलै। 'अंगिका सपूत पंडित बुद्धिनाथ झा 'कैरव' शीर्षक सें डॉ० डोमन साहु 'समीर' कें लेखों में एक उल्लेख छै कि 'कैरव' जी नें 'मोतिया विनोद' कें नामों सें अंगिका में एक किताब लिखने छेलै, जे कि हस्तलिखित होला कें कारणें आबें अप्राप्य छै।

'कैरव' जी कें ई अंगिका गद्य-कृति आपनों लोकप्रियता कें सीमा पार करी गेलों छेलै। आचरज नैं कि 'कैरव' जी कें हास्य-व्यंग्यवाला अंगिका कहानी ने बाद में कहानी लिखै कें मार्ग प्रदर्शित करलकै ; कैन्हें कि हेनों कहानी कें सृजन मे लोगों में अंगिका भाषा आरो साहित्यों कें प्रति एक आकर्षण पैदा करलों जावें सकै छेलै। १९५४ ई० कें आस-पास जे हस्तलिखित 'भारती' अंगिका पत्रिका कें संपादन शुरू भेलै आरो वै में श्री उमेश कें 'चौबेजी कें गप' कें नामों सें जे कथा ऐलै (जेकरों नियमित प्रकाशन, 'अंग-माधुरी' कें प्रकाशन कें बाद करलों गेलों छेलै) वोहो हास्य-व्यंग्ये कें कहानी छेकै।

मतरकि निश्चित रूपों सें यहू नैं कहलों जावें सकै छै कि ओरलका दिनों मे प० 'कैरव' आकि श्री उमेश नें जौंन हास्य-व्यंग्यवाला कहानी कें नींव राखलकै, ऊ आधुनिक अंगिका कहानी कें प्रस्थान-बिन्दु छेलै।

श्री निर्मल लाल नें 'गोविन्द दीक्षित' नामों कें एक हेनों साहित्यकारों कें नाम लिखी कें भेजनें छै जिनकों निधन १९९२ ई० में या १९९६ ई० में नब्बे साल कें उमरी में भेलै आरो जे अंगिका कहानी कहै में अद्‌भुत प्रतिभा कें छेलै। गाँव-टोला कें कोय घटना कें लैकें वै पर कहानी गढ़ी देबों आरो दोस्त-मोहिन कें सुनाय देबों हुनका लें आम बात छेलै। आखिर खिस्सा सच कें अर्थो तें यहै छेकै, सच मे खिस्सा दीक्षित जी तारापुर-निवासी छेलै। तखनी मुद्रण कें असुविधा सें पाण्डुलिपि कें रूपों मे गाँव-घरों में राखलों अंगिका कथा-साहित्यों कें खोज

लेली कोय प्रयास नैं होलों छै।

साहित्यों कें इतिहास लेखक-द्वारा आभियों ताँय कोय सराहनीय ईमानदार कोशिश नैं भेलों छै। आपनों रचना कें प्रकाशित करी कें आरो वहीं सें अंगिका-साहित्यों कें संबद्ध विधा कें आरम्भ मानी लै कें कुछ अंगिका साहित्यकारें अंगिका भाषा आरो साहित्यों कें स्वरूपों कें एतें अंधकारमय करतें ऐलों छै कि रौशनी कें अन्वेषी दिग्भ्रमित होय उठै। साहित्यिक दबाब, सरलता आकि प्रोत्साहनों कें ख्याल सें कोय नामी साहित्यकार द्वारा खास-खास कृति पर अंगिका गद्य कें, अंगिका कविता कें आदि रूप लिखी-देला सें अंगिका कें स्थिति बड़ी उलझी गेलों छै। हालाँकि सिद्ध-साहित्यों में नया सिरा सें डॉ० समीर द्वारा अंगिका भाषा कें स्वरूप-निर्धारण सें उलझलों स्थिति हटी चुकलों छै।

जहाँ तक मुद्रित रूपों में प्रकाशित मौलिक आधुनिक अंगिका कहानी कें प्रश्न छै, डॉ० परमानन्द पाण्डेय कें 'सात फूल' सें पहिलकों कोय मुद्रित कहानी नैं प्राप्त होलों छै। 'सात फूल' कें प्रकाशन १९६२ ई० में समाज-शिक्षा-पर्षद्, पटना (बिहार) सें होलों छै, जे में डॉ० पाण्डेय कें सात-टा कहानी -- नामसमझी कें फोंल, तरु-मंगल, किरपिनी रों धोंन खोंटाँ खाय, आब अछैतें बाब नें लागें, पाप लिखतौ, जेन्हें करनी तेन्हें भरनी आरो राँगाधारी बाबा, संकलित छै।

प्रो० दुर्गा प्रसाद उपाध्याय रों एक लेखों कें मोताबिक देश कें बढ़ावों हो' (१९६३) डॉ० पाण्डेय कें 'कहानी-प्रधान कृति' छेकै। हुनकों मोताबिक ई संग्रहों कें पहिलों कहानी 'सुग्गीरानी' कथोपकथन कें लिहाज सें एक अच्छा कहानी छेकै। ई संग्रहों कें प्रकाशको समाज-शिक्षा-पर्षद्, पटना छेकै। एक आरो उल्लेख कें मोताबिक 'सपना' हिनकों कहानीसिनी कें एक आरो संग्रह छेकै जे पांडुलिपिये अवस्था में रखलों होलों छै।

तबें सें लैकें आय तक अंगिका में कयेक-टा कथा-संग्रह होय चुकलों छै, जे में कुछ तें स्वतंत्र कहानी-संग्रह छेकै आरो कुछ संपादित। संपादित कहानी-संग्रहों में 'अंगिकांजलि' (१९६९ ई०) बहुत ऐतिहासिक महत्व कें छेकै, जे कि डॉ० पाण्डेय आरो श्री नरेश पाण्डेय 'चकोर' कें संयुक्त प्रयासों कें उपलब्धि छेकै। चौंसठ पृष्ठों कें ई कहानी-संग्रहों में सतरों-टा कहानी राखलों गेलों छै। अंगिका कहानी कें विषय आरो शिल्पगत आधुनिकता कें समझै कें ख्यालों सें है संग्रहों कें कहानी 'बरद-बिद्रोह' (मधुकर गंगाधर), 'कांक्षा' (डॉ० कुमार विमल), 'भुललों याद' (प० अयोध्या प्रसाद झा), 'भिरखो सराध' (डॉ० वचनदेव कुमार) कें ऐतिहासिक महत्व निर्विवाद रूपों सें असंदिग्ध छै।

संपादित कहानी-संग्रहों कें दृष्टि सें दोसरों महत्वपूर्ण कथा-संग्रह 'फूल फूलैलै' (१९७१ ई०) छेकै, जेकरों सम्पादन श्री नरेश पाण्डेय 'चकोर' द्वारा होलों छै। वै संग्रहों में कयेक-टा कहानी हेनों छै जेकरों प्रकाशन 'अंग-माधुरी' पत्रिका में होय चुकलों छेलै। वै संग्रहों कें कहानी में 'गूंज' (मधुकर गंगाधर), 'खटुआ भाय' (सुमन सूरो), 'नरकौ में ठेला-ठेली' (नरेश पाण्डेय 'चकोर'), 'फुटरा' (राधाकृष्ण चौधरी) आरो महेन्द्र जायसवाल के कहानी असंदिग्ध रूपों में श्रेष्ठ कहानी कें प्रतिमान प्रस्तुत करै छै। हेकरों अतिरिक्त 'गुलाबी जी' आरो प्रकाशवती नारायण कें कहानियों कें आपनों-आपनों महत्व छै।

आय तें अंगिका कथाकार कें एक लम्बा सूची मिलै छै, मजकि वै सें पहिलें हेनों कथाकार ऐलों छै जौनें आपनों कहानी-संग्रहों सें अंगिका कथा-साहित्यों कें भरै-पूरै कें प्रयास करलकै। हालाँकि हेनों संग्रहों कें महत्व यही लें रहें पारें कि ऊ-सब संग्रह मुद्रित कहानी कें अभाव-काल में ऐलै। शेखर प्रकाशन, पटना सें प्रकाशित सुरेश मंडल 'कुसुम' के कहानी-संग्रह - 'लपकी' (१९७६ ई०) आरो 'कथा-कुसुम' (१९७७ ई०) कहानी-संग्रहों कें गिनती में जहाँ वृद्धि लानै छै वहाँ हौ काहनीसिनी में कथाकार 'कुसुम' कें भावी लेखन कें दिशा आरो प्रौढ़ता कें बीजबिंदु अवश्य मिली जाय छै।

१९८६ ई० में अंगिका कहानी लैकें विशिष्ट पहचान के कथाकार श्री महेन्द्र जायसवाल कें कहानी-संग्रह 'शनिचरा' कें प्रकाशन चम्पा प्रकाशन, दुमका सें होलै, जै में 'ज्वाला भाय', 'चितकबरी', 'मसूदन', 'खेसरा', 'शनिचरा', 'लबकी' आरो 'बटेसरा' कहानी कें संग्रह छै। 'शनिचरा' कें कहानीसिनी पढ़ला कें बाद यहें कहलों जैतै कि 'कथा-कुसुम' कें बाद अंगिका में 'शनिचरा' कें प्रकाशन जेना कोय समतल जमीन पर पर्वत खाड़ों होय गेलों रहें। आपनों गहराई आरो फैलाव में अद्‌भुत जायसवाल जी कें ई-सब कहानी अंगिका साहित्यों में कभियो नै भुलैलों जावें पारें।

'शनिचरा' कहानी कें बाद १९८७ ई० में श्री आमोद कुमार मिश्र कें तीन-टा कहानी कें संग्रह 'भोर ?' कें प्रकाशन भेलै। आर्थिक विसंगति, साम्प्रदायिक सद्‌भाव आरो सांस्कृतिक अवमूल्यन कें लैकें लिखलों गेलों - 'कहिया होतै भोर ?', 'मटरू' आरो 'मरगांग' ई तीनों कहानी विषय-वस्तु कें साथें शिल्पो कें स्तरों पर मनों कें बाँधैवाला छेकै। डॉ० 'समीर' कें शब्दों में, -- " भोर ?' (कहानी-संग्रह) पढ़ी कें आह्लादित होय गेलाँ। अंगिका साहित्य केरों बाल्य-कालै में ऐहिनों

प्रौढ़ रचना प्रस्तुत करी कें हुनी (मिश्र जीं) सिद्ध करी देलें छै कि अंगिका भाषा रों अभिव्यंजना-शक्ति केकरहौ सें लिच्चड़ नैं छै। .....आमोद जी कें कहानीसिनी अंगिका रों प्रतिनिधि-कहानी गिनलों जैतै।'' - 'अंगप्रिया', जन०-मार्च, १९९७ ई०। फिरू १९८८ ई० में डॉ० रामनन्दन विकल कें कथा-संग्रह 'माँटी केरों गंध' प्रकाशित होलों छै, जेकरा में 'विकल' जी कें चौदह-टा कहानी संकलित छै। ऊ-सब कहानी कें शर्त कें केन्हों कें पूरा करैवाला कहानी छेकै, सस्ता मनोरंजन आरो अविश्वसनीय संवाद।

नया समयों कें अंगिका कहानीकार आरो अंगिका कहानी कें आधुनिक मिजाज कें समझै में तीनों संपादित कथा-संग्रहों कें प्रकाशन कें बाद कहानीकार नरेश पाण्डेय 'चकोर' के कहानी-संग्रह 'तिलका सुन्दरी डार-डार' कें प्रकाशन १९९१ ई० में शेखर प्रकाशन, पटना नें करलै छै, जेकरा में 'सतुआ' कहानी छोड़ी कें मई, ९० सें अक्टूबर, ९० आरों मार्च, ९१ सें सितम्बर, ९१ कें 'अंग माधुरी' पत्रिका में प्रकाशित 'चकोर' जीं कें पन्द्रह कहानी संग्रहित छै, जै में कहानी कें क्रम छै -- कचहरिया बाबा, घल्लर, मेहनत कें फूल मिट्टी, लाचारी, श्रवण कुमार, मीता, परिवर्तन, तिलका सुन्दरी डार-डार, बुढ़ारी में गंजन, प्रीत के रीत, नरकों में ठेला-ठेली, बाबाजी, समाज के बन्धन, बिन्दु आरो भतुआ। संग्रह कें सबटा कहानी कथाकारों कें वैष्णवी व्यक्तित्व आरो हुनकों सामाजिक सोच कें व्यक्त करैवाला छेकै। कहानीसिनी में 'चकोर' जी नें सामाजिक बदलाव कें यथार्थ चित्रण कें साथें साहित्यों कें उद्देश्यों कें सामना में राखलों होलों छै।

सामाजिक बदलाव कें विभिन्न यथार्थ आरो नया अंगिका कहानी कें आधुनिक शिल्प कें जेसिनी कथा-संग्रहें मजबूती कें साथ प्रस्तुत करै छै वै में सुधाकर जी द्वारा संपादित - 'अंगिका कथा' (१९९२), देवेन्द्र जी द्वारा संपादित 'अंगप्रिया' कें कथा-विशेषांक (मार्च १९९४) आरो डॉ अमरेन्द्र कें सम्पादन में प्रकाशित 'अंगिका कहानी' (१९९७) प्रमुख छै।

'अंगिका कथा' में निम्नांकित कहानी प्रकाशित होलों छै -- बहर पूजा, भोथरी'का कें पहलवानी (जगदीश पाठक 'मधुकर'), तिनडरिया (सुरेश मंडल 'कुसुम'), दू पाटों कें बीच (रवीन्द्र कुमार मिश्र), झोपड़ी में उगलों अमरलता, बँटवारा (प्रकाश सूर्यवंशी), अपराधी (सुरेश मोहन मिश्र), समझ, गिरगिट (विपिन परमार), सरकार (वेदप्रकाश बाजपेयी), सातो नदिया उमड़ली जाय, नालिश (सुधाकर) आरों केकरों कें ? (दिनेश बाबा)। संग्रहों में दुइ-टा लोक-कथाओ छै।

हेना कें तें प्रकाश सूर्यवंशी, सुरेश मोहन मिश्र, विपिन परमार आरो वेद प्रकाश बाजपेयी कें कहानीयों वै संग्रहों में धेयान खींचै छै, मतरकि कथा-शिल्प कें दृष्टि सें जे सच्चे में आपनों उदात्त रूप खाड़ों करै छै वै में 'सातो नदिया उमड़ली जाय', 'नालिश', 'दू पाटों कें बीच', 'तिनडरिया', 'बहर पूजा' आरो 'भोथरी'का कें पहलवानी' कहानी कें ही राखलौ जैतै। जों बाजपेयी जी आरो सुरेश मिश्र जी कें कहानी कें हटाय देलों जाय तें बाकी कहानीकारों कें कहानी में स्वाभाविकता आरो संतुलन कें अभाव कहानी कें कमजोर करै छै।

'अंगप्रिया' कें कथा विशेषांक (१९९४) में जे कथाकार कें कहानी प्रकाशित होलों छै, ऊ निस्संदेह सबटा उत्कृष्ट कोटि कें कहानी छेकै, जेसिनी कि कथाकारों कें साथें संपादकों कें सजग बिश्व-दृष्टि कें पारदर्शी परिचय दै छै। विशेषांकों में प्रकाशित अणु-कथा (पारस जी कें अणुकथा 'डेड लिस्ट' छोड़ी कें) समीक्षा कें विषय नैं बनैलों जाय तें वै अंको कें सबटा कहानी -- 'राजभोग' (महेन्द्र जायसवाल), 'विपत्ति' (सुमन सूरो), 'आसरा' (अनिरुद्ध प्रभास), 'गोला बरद' (श्रीकेशव), 'बानर' (भुवनेश्वर सिंह 'भुवन'), 'के नैं जानै छै ?' (पी० एन० जायसवाल), आरों 'पनरों अगस्त' (सुधाकर) कथातत्व कें विशिष्ट गुणों सें कसलों-गुँथलों छै। हेकरों एक प्रमुख कारण ई छेकै कि ई विशेषांक कें सब कथाकार कै दशकों सें कथा विधा सें जुड़लों रचनाकार छेकै।

१९९७ ई० में डॉ० अमरेन्द्र कें सम्पादन में 'अंगिका कहानी' कें प्रकाशन यै दृष्टि सें एक विशेषतः उल्लेखनीय कृति छै कि यै संग्रहों में अंगिका कें चर्चित कथाकारों कें साथें हेनों रचनाकारों कें कहानी छपलों छै जे कि कथा-लेखक कें रूपों में अज्ञेय छेलै। साथें-साथ कयेक लेखक पहिलों बार लेखक कें रूपों में आपनों पहचान यहीं सें शुरू करें सकलों छै। यै संग्रहों में निम्नांकित कथाकार आरो कहानी छै -- श्री केशव कें 'काकी', डॉ० महेन्द्र प्रसाद जायसवाल कें 'जिनगी रों सत्त', श्रीमती आभा पूर्वे कें 'टुकड़ा-टुकड़ा सुरुज', श्री अनिरुद्ध प्रसाद विमल कें 'तपेसर', श्रीराम शर्मा 'अनल कें 'दशरथ कबीर पंथी', श्री गंगा प्रसाद राव कें 'स्वर्ग रों खंडहर', श्री नागेश्वर प्रसाद राम कें 'धरती रों स्वर्ग', श्री सुरेन्द्र प्रसाद यादव कें 'समय-चक्र', श्री सोहन प्रसाद चौबे कें 'चाँदनी रात रों अन्हार', श्री नवीन निकुंज कें 'संस्कार', डॉ० विजय कुमार कें 'परलोक-यात्रा', प्रो० कमला प्रसाद 'बेखबर' कें 'मानस-पुत्र', डॉ० श्यामसुन्दर घोष कें 'भूत', डॉ० देशभक्त कें 'सम्मान', प्रो० विनय प्रसाद गुप्त कें 'टीस', 'जागृति' कें 'नानी

माय', 'अग्यानी' कें 'सबसें बड़ों झूठ', डॉ० आशुतोष प्रसाद कें 'मनों कें बोझ', श्रीमती आशापूर्णा कें 'नहिरा कें आश' आरो अशोक ठाकुर जी कें 'दुःख'।

ई संग्रहों कें सबटा कहानी पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक यथार्थ कें बहुत संतुलन में उतारतें कहानी छेकै। सब रचना में रचनाकारों कें विश्व-दृष्टि यै संग्रह कें ऐतिहासिक बनैलें होलों छै।

मतरकि हैसिनी काहनी-संग्रहों सें अलग अंगिका कहानी कें ऊ वृहत् साहित्यों कें उल्लेख करबों शेषे रही जाय छै जेकरा पर बिना विचारलें अंगिका कहानी कें सम्पूर्ण संस्कार कें समझबों मुश्किलें बनलों रहतै। अंगिका कहानी साहित्यों कें कोष कें विस्तृत करै में लागलों ईसिनी कथाकार छेकै सर्वश्री राजीव परिमलेन्दु, जनार्दन राय, देवेन्द्र, भिखारी ठाकुर 'अधूरा', अक्षय कुमार साहा, दीपंकर कुमार घोष, मुख्तार आलम 'दीपक', गोपाल कृष्ण 'प्रज्ञ', मीरा झा, मीना तिवारी, रीता सिन्हा, विजेता मुद्गलपुरी, आर० के० नीरद, विमल वर्मा, डॉ० श्यामलाल आनन्द, राम किशोर, महेश सिंह 'आनन्द', अरुन्धती पाण्डेय, डॉ० नीलम महतो, अनिल चन्द्र ठाकुर, राधाकृष्ण चौधरी, प्रदीप प्रभात, डॉ० मनाजिर आशिक हरगानवी, विकास पाण्डेय, डॉ० देशभक्त, रतन प्रकाश आरनी।

ई-सब कहानीकारों कें अधिकांश कहानी 'अंग-माधुरी' (पटना), 'अंगप्रिया' (भागलपुर), 'चम्पा' (दुमका), 'अंगिकाँचल' (नौगछिया), 'आंगी' (भागलपुर), 'शिरीष कथा' (भागलपुर), 'नई बात' (भागलपुर), 'प्रिय प्रभात' (भागलपुर) आदि में प्रकाशित होलों छै आरो दुर्भाग्य सें हैसिनी पत्रिका कें सब्भे अंक अलभ्य होला कें कारणें कत्तें नी महत्वपूर्ण कहानी-लेखकों कें संबंध में नामोल्लेखो करबों मुश्किल छै।

आधुनिक समय में जे अंगिका कहानी लिखलों गेलों छै वैसिनी कें विषय आरो उद्देश्य कें दृष्टि सें, वातावरण-प्रधान, चरित्र-प्रधान, मनोविश्लेषक, सामाजिक, ऐतिहासिक आरो घटना-प्रधान काहनी में कथानक-प्रधान कहानी कें कोटि में राखलों जैते। कुछेक कें मिजाज रोमांस कें कहानी कें रूपो में छै। मतुर, निश्चित रूपों सें, सामाजिक वातावरण, चरित्र-चित्रण या मनोविश्लेषण कें कहानी कें तुलना में अंगिका में घटना-प्रधान कहानी कें अभाव छै। घटना-प्रधान कहानी कें संबंध मुख्यतः ऐतिहासिक कहानी कें साथें होय छै। कल्पना कें आधारों पर जबें लेखक आपनों कहानी कें कथानक-प्रधान बनाय छै तबें ओकरों कोशिश कथा में औत्सुक्य कें भंडार पैदा करबों होय छै। अंगिका कें लोक-कहानी में यहें

घटना-तत्व कें प्रधानता छै ; मतरकि आबें हेनों कहानी कें मूल्य चुकी चुकलों छै आरो हेनों कहानी साहित्य में आबें प्रतिष्ठा नैं पाबै छै। आधुनिक अंगिका-लेखक नें कहानी मे ई प्रवृत्ति कें प्राय: छोड़ी देलै छै। आधुनिक समय में धर्म आकि लोककथा कें आधार बनाय कें अंगिका कें लिखलों गेलों कहानी घटना-प्रधान कहानी कें अन्तर्गत ही राखलों जैतै, जेकरों अच्छा उदाहरण श्री गोपालकृष्ण 'प्रज्ञ' कें 'सती बिहुला', डॉ० श्यामलाल 'आनन्द' कें 'वकील बाबू' आरो श्री राधाकृष्ण चौधरी कें 'जरलों नसीब' कहानी छेकै।

वातावरण-प्रधान आरो चरित्र-प्रधान कहानी आधुनिक अंगिका कथा-साहित्यों कें मुख्य भेद छेकै। हालाँकि यहाँ एक बात कही देबों आवश्यक होतै कि अंगिका कहानीकारों में कहानी कें कोय तत्व-विशेष कें विशिष्ट रूपों सें पकड़ी कें कहानी लिखै कें प्रवृत्ति नैं मिलै छै। ये लेली यहाँ कहानी में एक संतुलन मिलै छै जे कि श्रेष्ठ कहानी कें कसौटी भी मानलों गेलों छै। ई अलग बात छेकै कि अंगिका में कोय कहानीकारों कें विशिष्ट कथा-शैली कें आकि कथा-भेद कें कहानीकार रूपों में नैं देखलों जाबें सकै छै, तैयो कै-एक कथाकार हेनों छै जिनकों कहानी में कहानी कें कोनो तत्व कें प्रति विशिष्ट झुकाव आसानी सें देखलों जाबें सकै छै।

वातावरणों कें दृष्टि सें अंगिका कहानी पर विचारलों जाय तें सर्वश्री महेन्द्र प्रसाद जायसवाल, श्रीकेशव, अनिरुद्ध प्रसाद विमल, आभा पूर्वे (श्रीमती), अनिरुद्ध प्रभास आरनी के कहानी मुख्यत: वातावरण कें प्रधानता लेलों कहानी छेकै। दरअसल, श्रेष्ठ कहानी कें निर्माण में वातावरण कें भूमिका बड़ी प्रमुख होय छै। प्रकृति आरो रूप-चित्रण सें ही जहाँ कहानीकारें आपनों कथ्य कें प्रभावी बनावै कें कोशिश करै छै, ऊ वातावरण-प्रधान कहानी होय छै। यै दृष्टि सें 'राजभोग' (महेन्द्र प्रसाद जायसवाल), 'सातो नदिया उमड़ली जाय' (सुधाकर), 'टुकड़ा-टुकड़ा सुरुज' (आभा पूर्वे), 'काकी' (श्री केशव), 'तिनडरिया' (सुरेश मंडल 'कुसुम'), 'तपेसर' (अनिरुद्ध प्रसाद विमल), 'गणतंत्र दिवस' (नीलम महतो), 'जिनगी रों सत्त' (महेन्द्र प्रसाद जायसवाल), 'गोला बरद' (श्रीकेशव), 'देवदूत' (अक्षयश्री), 'आसरा' (अनिरुद्ध प्रभास) आरनी कहानी श्रेष्ठ उदाहरण छेकै।

जेहनों कि पहिलें कहलों गेलों छै, अंगिका कहानीकारों में कोय विशिष्ट शैली कें पकड़ी कें आपनों कोय अलग पहचान बनावै कें परिश्रमपूर्ण कोशिश नैं भेलों छै ; मतरकि यहू बात सें इनकार नैं छै कि महेन्द्र प्रसाद जायसवाल जी कें कहानी में चरित्र-तत्व कें ही प्रधानता छै। हिनकों

'ज्वाला भाय', 'चितकबरी', 'लबकी' आरनी चरित्र-प्रधान कहानी छेकै। डॉ० नीलम महतो कें कहानी 'आयकों बाल्मीकि', 'तैहिया', 'गणतंत्र-दिवस' आरो 'हार रों जीत' अंगिका में चरित्र-प्रधान कहानी कें अच्छा उदाहरण राखै छै। श्री नरेश पाण्डेय 'चकोर' कें 'मीता', प्रो० कमला प्रसाद बेखबर' कें 'मानसपुत्र', श्रीराम शर्मा 'अनल' कें 'दशरथ कबीर पंथी', श्री जयप्रकाश ठाकुर 'तृषित' कें 'चान बाबा', 'जागृति' जी कें 'नानी माय', श्रीमती आभा पूर्वे कें 'नत्थूराम' आदि चरित्र-प्रधान कहानी छेकै।

अंगिका में आय-काल ऐतिहासिक कहानियों लिखै कें प्रचलन दिखै छै। हालाँकि हेनों कहानी कें घटना-प्रधान कहानी सें अलग नैं राखलों जावें सकें छै, मतरकि उद्देश्य कें भिन्नता सें दोनों में जरूरे अन्तर देखलों जावें सकै छै। खाली घटना-प्रधान कहानी में औत्सुक्य पर लेखकों कें धेयान ज्यादा केन्द्रित होय छै, जबें कि ऐतिहासिक कहानी में कहानीकार इतिहासों कें कोय घटना आकि वीर-चरित्रों कें लैकै समाजों कें सम्मुख कोय आदर्श राखै कें कोशिश करै छै। येहें फरक दोनों तरहों कें कहानी कें भेदक तत्व हुवें पारें। 'कोखी कें लाल' (जगदीश पाठक 'मधुकर'), 'प्रायश्चित पूरा नैं होतै' (राजीव परिमलेन्दु), 'पन्ना कें उदारता' (धीरेन्द्र छतहारवाला) आरनी कहानी अंगिका में ऐतिहासिक कहानी-लेखन-प्रवृत्ति दिस इशारा करै छै।

हेना कें तें, चरित्र-चित्रण कें ख्यालों सें अंगिका साहित्य नें मनोवैज्ञानिक आरो मनोविश्लेषण-प्रधान कहानियों लिखै दिस कहानीकारों कें सम्मान दिलैलें छै। 'गूंज' (मधुकर गंगाधर) कहानी में जों मनोविज्ञान कें सहारा लेलों गेलों छै तें 'आधों रात कें सुबह' (अमरेन्द्र) में मनोविश्लेषण कें आधार बनैलों गेलों छै, मतरकि यै ढंगों कें कहानी कें संख्या अधिक नैं छै। हेकरों एक बड़ों कारण यहें हुवें सकै छै - नया अंगिका लेखकों कें सामाजिक चेतना कें प्रति प्रतिबद्धता। येहें सामाजिक प्रतिबद्धता कें कारण अंगिका में सामाजिक कहानी कें सर्वश्रेष्ठ उदाहरण गिनैलों जावें सकै छै। सामाजिक कहानी कें क्षेत्र बहुत विस्तृत छै ; केन्हें कि 'समाज' शब्दे आपना-आप में काफी विस्तृत होय छै।

अंगिका कें सामाजिक कहानी कें भीतर आर्थिक, राजनीतिक, पारिवारिक यथार्थ कें कहानी प्रमुख छै। राजनीतिक चेतना कें कहानी में मुख्य रूपें वर्ग-चेतना आरो वर्ग-संघर्ष कें आधार बनैलों गेलों छै। सुधाकर जी कें कहानी 'नालिश' आरो श्रीकेशव कें कहानी 'गोला बरद', देवेन्द्र जी कें 'प्रतिकार', श्री प्रकाश सूर्यवंशी कें 'झोपड़ी में उगलों अमरलता', पवन कुमार जी कें 'हाय,

लोगें की कहतै।' आदि हेकरों श्रेष्ठ उदाहरण छेकै। यै दृष्टि सें सर्वश्री अनिरुद्ध प्रसाद विमल, अनिरुद्ध प्रभास, रामकिशोर, सुरेन्द्र प्रसाद यादव आरनी कें कहानियों विवेचनीय छै ; मतरकि हेनों कहानी कम नैं छै जे कि राजनेता कें चरित्रों कें उजागर करतें कहानी छेकै। मधुकर गंगाधर जी कें कहानी 'बरद-विद्रोह', वेद प्रकाश वाजपेयी जी कें 'सरकार' आरो 'अग्यानी' जी कें 'सबसें बड़ों झूठ' हेनें कहानी छेकै। विगत कुछ वर्षों में अखिल भारतीय अंगिका साहित्य-कला-मंच कें साहित्य-शाखा 'अंगवाणी' कें कै-एक कथा-गोष्ठी में पढ़लों गेलों कै-एक राजनीतिक कहानी बड़ी सशक्त आरो ऐतिहासिक महत्वों कें छेकै।

सामाजिक कहानी में आर्थिक दबाव सें लिखलों गेलों कहानी कें संख्या ई भाषा-साहित्यों में सर्वाधिक छै, जेसिनी में पारिवारिक आर्थिक बोझ सें लै कें ऑफिसर, जमीन्दार, महाजनों कें आर्थिक लूट-खसोट, षड्यंत्र, सब-कुछ शामिल छै। हेनों कहानी में 'राजभोग' (महेन्द्र प्रसाद जायसवाल), 'पनरों अगस्त' (सुधाकर), 'टुकड़ा-टुकड़ा सुरुज' (आभा पूर्वे), 'आस्था' (डॉ० नीलम महतो), 'तिनडरिया' (सुरेश मंडल 'कुसुम'), 'दू पाटों कें बीच' (रवीन्द्र कुमार मिश्र), 'कहिया होतै भोर ?' (आमोद कुमार मिश्र), 'दमयन्ती' (अनिरुद्ध प्रसाद विमल), 'भाय' (अश्विनी कुमार), 'दुखनी काकी' (गंगा प्रसाद राव), 'अधकपाड़ी' (धीरेन्द्र छतहारवाला) आरनी निस्संदेह महत्वपूर्ण कहानी छेकै। आर्थिक पहलू कें लैकें अंगिका कथाकारसिनी नें आर्थिक शोषण में लागलों जमींदार, पटवारी, सेठ, साहूकार, ऑफिसर, राजनेता कें चरित्र कें लैकै बढ़ियाँ-बढ़ियाँ कहानी कें निर्माण करनें छै। 'बानर' (भुवनेश्वर सिंह 'भुवन'), 'खटुआ भाय' (सुमन सूरो), 'समाज कें बंधन' (नरेश पाण्डेय 'चकोर'), 'नापी' (राम किशोर), 'तिनडरिया' ('कुसुम'), 'सोरजबा' (विमल वर्मा), 'बड़ों आदमी' (राधाकृष्ण चौधरी) आरो रामकिशोर कें कहानी 'बेटखौका' हेनें कहानी छेकै।

पारिवारिक-आर्थिक कलह-संघर्ष कें लैकें श्री सोहन प्रसाद चौबे, श्रीमती आशापूर्णा, श्री सुरेन्द्र प्रसाद यादव आरनी कें लिखलों कहानी प्रभाव छोड़ैवाला छेकै। राधाकृष्ण चौधरी कें 'एक हीरा, दू अंडा-गंडा', पवन कुमार कें 'हाय, लोगें की कहतै!', नरेश पाण्डेय 'चकोर' कें कहानीसिनी पारिवारिक जीवनों कें विविध यथार्थ, खासकरी कें आर्थिक दबाब बढ़ी गेला कें कारण तनाव-संघर्ष कें कहानी ऐतिहासिक शैली में लिखलों प्रभाव राखैवाला कहानी छेकै।

सामाजिक कहानी में अन्धविश्वास कें लै कें 'भूत' (डॉ० श्याम सुन्दर घोष), अन्धप्रथा कें लै कें 'समाज कें बंधन' (नरेश पाण्डेय 'चकोर'), सामाजिक

साम्प्रदायिक सद्भाव कें लै कें 'प्रीत कें रीत' ('चकोर'), 'राखी रों मान' (डॉ० निर्मल कुमार सिंह), 'मटरू' (आमोद कुमार मिश्र) तथा नारी-सम्मान आरो जागृति कें लैकें 'धरती रों स्वर्ग' (नागेश्वर प्रसाद राम), 'बेटी' (रतन प्रकाश) -हेनों कहानी कम नै लिखलों गेलों छै। जों सोहन प्रसाद चौबे कें कहानी 'चाँदनी रात रों अन्हार' आरो श्रीमती आशापूर्णा कें कहानी 'नहिरा कें आस' में नारी-उत्पीड़न कें देखैलों गेलों छै तें सुमन सूरो कें 'खटुआ भाय', रतन प्रकाश कें 'बेटी', डॉ० मनाजिर कें 'दर्द रों काँटा', डॉ० नीलम महतो कें 'बतैहिया', अक्षयश्री कें 'कीमत', आरो जागृति कें लेलें सामाजिक छेकै। अनिरुद्ध प्रसाद विमल, आभा पूर्वे, सुरेन्द्र प्रसाद यादव, नवीन निकुंज आरनी कथाकार नारी-जागृति कें लैकें श्रेष्ठ कहानी कें सृजन दिस सक्रिय छै। नारी-संवेदना लैकें कहानी लिखै दिस श्रीमती रीता सिन्हा कें कथा-लेखन बहुत लोकप्रिय छै। 'करिया मेघ' हिनकों नारी-अन्तर्मन कें उल्लास आरो अन्तर्संघर्ष कें खोलैवाला एक बहुचर्चित कहानी रहलों छै।

आय-काल वातावरण-प्रधान कहानी कें एक अंग के रूपों में पर्यावरण कें लैकें अंगिका में कहानी-लेखन कें प्रवृत्ति देखलों जाय रहलों छै। 'परिवर्तन' (नरेश पाण्डेय 'चकोर'), 'जहर' (राम किशोर) - आरनी हेनें कहानी छेकै। यै सिनी सें पता लागै छै कि अंगिका कहानीकार आपनों समय आरो वातावरण कें प्रति सजग आरो विश्व-दृष्टि राखैवाला रचनाकारों कें रूपों में उपस्थित छै।

प्रेम-कहानी कें सृजन अंगिका कहानी कें मुख्य धारा नाखी नैं दिखै छै, मजकि आभा पूर्वे कें 'ऋणी' (१९९७) आरो जय प्रकाश गुप्त कें 'लाज रही गेलै गुलमोहर कें' (१९९७) आरनी हेनों प्रभावी प्रेम-कहानियों लिखलों गेलों छै।

जहाँ तक आधुनिक अंगिका कहानी कें शिल्प-शैली कें सवाल छै, ई भाषा कें कहानीकारसिनी नें आधुनिकतम प्रचलित शैली कें प्रति आपनों रुचि आरो ओकरों प्रयोग में आपनों दक्षता कें अद्भुत प्रतिमान प्रस्तुत करनें छै।

शैली कें दोनों पक्ष, ढाँचा आरो भाषा कें क्षेत्रों में अंगिका कहानीकार नें आपनों अद्भुत सामर्थ्य कें पता देनें छै। रूपगत शैली कें लैकें जहाँ ऐतिहासिक यानी वर्णनात्मक शैली श्री प्रकाश कुशिक (भला कें गुजर नैं), मु० मुख्तार आलम 'दीपक' (हंसा जाई अकेला), ठाकुर जयप्रकाश तृषित (सर्वनाशों कें कारण), धीरेन्द्र छतहारवाला (पन्ना कें उदारता) आरनी कथाकार नें आपनों-आपनों कहानी लिखनें छै वहाँ संस्मरण-शैली कें ढेर कहानी अंगिका में सृजित होलों छै। 'काकी' (श्रीकेशव), 'तपेसर' (अनिरुद्ध प्रसाद विमल), 'टुकड़ा-टुकड़ा सुरुज'

(आभा पूर्वे), 'दू पाटों के बीच' (रवीन्द्र कुमार मिश्र), 'नानी माय' (जागृति), 'मनों के बोझ' (डॉ० आशुतोष प्रसाद), 'दुःख' (अशोक ठाकुर) आरनी संस्मरण-शैली के श्रेष्ट कहानी छेकै। अक्षयश्री के कहानी 'देवदूत' (१९८१) मिश्रित शैली के एक उल्लेखनीय कहानी छेकै।

संस्मरण-शैली के एक भेद आत्मकथा शैलीयो में श्रीमती मीरा झा, श्रीमती जीवनलता साह, डॉ० नीलम महतो, श्री गंगा प्रसाद राव, श्री सोहन प्रसाद चौबे आरनी के कलात्मक कहानी मिलै छै। श्री मधुकर गंगाधर के 'बरद-विद्रोह' जो प्रतीक-शैली के एक श्रेष्ठ कहानी छेकै तें श्रीमती आभा पूर्वे के कहानी 'ऋणी' (१९९७) अंगिका में लिखलों पत्र-शैली के कहानी के सुन्दर उदाहरण छेकै। वहीं आभा पूर्वे के केन्हों द्रौपदी : केन्हों महाभारत' कहानी (१९९७) में डायरी शैली के सुन्दर निर्वाह होलों छै।

भाषा-शैली के लैकें अंगिका कहानीकार नें आपनों विराट् प्रतिभा के प्रदर्शन करलें छै। जहाँ एक ओर भाषा के ध्वन्यात्मकता -- 'ढिन्नर ढिकचर .... ढिन्नर ढिकचर .... ढिन्नर ढिकचर। xxx कड़ - मकड़ .... कड़ - मकड़ .... पीं - पीं पँच बजना। कड़ - मकड़ ..... कड़ मकड़ ..... पी - पी ..... टन - टन।' (जिनगी रों सत : महेन्द्र प्रसाद जायसवाल) आरो चित्रात्मकता -- "काकी नैं ज्यादा लंबी रहै, नै नाँटी। xx एकदम गोल-मटोल। कोमल कमल रङ काया। चिक्कन-चाक्कन। गुलगुल-थुलथुल। मांसों सें भरलों। लड्डू मोतीचूर सन। तिक्खों नाक-नक्श। सुगढ़। हँसमुख। xx आपन्है कामों में व्यस्त। लद्धर-पद्धर। इन्नें-उन्नें। आपनों बित्ता-भर के माँगों में गद्दी-भर सिनूर ..... (काकी' : श्रीकेशव) सें आपनों कथा-भाषा के वयस्क बनैलें छै। काँहीं व्यंजकता, काव्य ममता -- "बैशाखों के टपटपिया रौदा xxx चान बाबू चौकी के गरदा गमछा सें झाड़ी के बोलै छै -- याय ऐतना गरमी छौं, भुजंगी बाबू . कि गाछियो-बिरिछियो सें घाम चुवै छै -- (बेटी' : रतन प्रकाश) आरनी गुणों सें भाषा के उदात्त रूप प्राप्त होलों छै।

कथा-भाषा गढ़ै के साथें-साथ कहानीकारसिनी नें अंग-जनपदों के जोंन सामाजिक भाषा के मुहावरा -आर के नया अर्थ आरो परिष्कृत रूपों में प्रस्तुत करने छै, वहू अंगिका कहानी के एक बड़ों उपलब्धि छेकै।

व्यंग्य-कथा

आधुनिक अंगिका कहानी-साहित्यों में व्यंग्य-कथा एक स्वतंत्र विधा कें रूपों में विकास पाबी गेलों छै। अंगिका लें ई रगों कें कथा-साहित्य कोय नया चीज नैं छेकै, बल्कि अंगिका कें लोककथा-साहित्यों कें आधों सें अधिक हिस्सा हास्य-व्यंग्ये कें कथा-साहित्य छेकै। यै सें है जनपदों कें विनोदी स्वभाव हेकरों जड़हे में मिलै छै, जेकरे विकास आयकों अंगिका व्यंग्य-कथा-साहित्य छेकै।

ई मात्र संयोग नैं हुऐं पारें कि पं० बुद्धिनाथ झा 'कैरव' कें कहानी-संग्रह 'मोतिया विनोद' भी हास्य-व्यंग्य में पहिलों दाफी ऐलै। आय तें व्यंग्य-कथा-लेखकों कें एक मजबूत कड़ी यहाँ छै। पं० बुद्धिनाथ झा 'कैरव' कें बाद हस्तलिखित पत्रिका 'भारती' सें श्री उमेश जी कें जे 'चौबेजी कें गप' प्रकाशित भेलै ओकरों धारावाहिक प्रकाशन 'अंग-माधुरी' कें प्रकाशन कें साथ फेनू करलों गेलै। व्यंग्य-कहानी में श्री उमेश जी कें नाम 'गुलाबी जी' ऐलों छै। 'अंग-माधुरी' में प्रकाशित हिनकों व्यंग्य-कथा काहीं तें तिरिया-चलित्तर, माखी-मच्छर, चीलर-उड़ीस, सन् '७४ कें गणतंत्र-दिवस, बेरादरों कें पगड़ी, पोता कें ललक, झुनकू भाय, सिक्की साव, बड़की-छोटकी आरनी शीर्षकों सें छपलों छै आरो काहीं शीर्षक नैं होय कें खाली स्तम्भ-शीर्षकों कें साथें कथा शुरू करलो गेलों छै।

यै में कोय शके नैं कि श्री उमेश जी (गुलाबी जी) कें व्यंग्य-कथा व्यंग्य कें सब दृष्टि सें उच्च कोटि कें ठहरै छै। यै में जत्तें हास्य कें तत्व छै ओत्ते सामाजिक कुरीति पर प्रहार करै कें परिहासपूर्ण क्षमताओ छै। हिनकों हास्य-व्यंग्यों कें एक अंश उद्धृत छै,-- "रातीं लागै छेलै कि मखरें उड़ाय कें भागी जैतों। कथी लें एक्को घंटा सुतबों। खटिया में खजबज उड़ीस आरो उपरों सें भन-भन खच्च! की करतियाँ? हेठे में गमछी बिछाय कें धोती कें नाय ओढ़ी कें सुतै कें कोशिश करलाँ। भोरों पहरों तनिटा आँख लागलों तें बसंती पाँड़े कें प्रातकाली शुरू भै गेलै। भेंड़बाजा ठोंठों रङ लै कें आलाप दियें लागलै -- 'जागों हो, मुरलीधर माधो! जागों हो, तमाकुल!''

हास्य-व्यंग्य-कथा-लेखक के रूपों में श्री जगदीश पाठक 'मधुकर', श्री उमेश जी कें दोसरों हेनों हस्ताक्षर छै जिनकों पहचान व्यंग्य-लेखक कें रूपों में छै। १९७८ ई० कें 'अंग-माधुरी' (नवम्बर) मे प्रकाशित 'जेहनों करनी, वैन्हों फल' संभवतः हिनकों पैहलों प्रकाशित मौलिक रचना छेकै। १९८७ ई० में हिनकों व्यंग्य-कथा लैकें 'पंचफोरन' कथा-संग्रह कें प्रकाशन होलै जेकरा में

हिनकों -- 'बहरपूजा', 'भोथरी 'का कें पहलवानी', भोथरी 'का के इन्साफ', 'सौन्धी' आरो बैदें' व्यंग्य-कथा संग्रहित छै। यै में से 'बैदें' कें छोड़ी कें बांकी कें प्रकाशन पैहलें होय चुकलों छै। हेकरों बादो 'मधुकर' जी कें कै-एक व्यंग्य-कहानी प्रकाशित होलों छै, जै मे -- 'नदी आरो नद', 'सतफोट-सहस्राफोट के दंगल' बहुत लोकप्रिय होलों छै।

जगदीश पाठक 'मधुकर' जी कें व्यंग्य-कथा कें ई निजी पहचान छेकै कि हिनकों कथा-पात्र आपनों व्यक्तित्व चरित्रों में एतें जीवन्तता लेलें होलों छै कि शब्दचित्रो कें यही सुख प्राप्त होय जाय छै। पात्र आपनों कार्य आरो रूप-गठन सें कथा में बड़ी सहजता सें हास्य-व्यंग्य कें सृजन करै में समर्थ दिखै छै। 'मधुकर' जी के व्यंग्य-कथा में लोककथा कें छौंको छै, व्यंग्य कें झाँस कम। हिनकों व्यंग्य-कथा कें एक अंश नीचें देलों जाय छै, --

"सुनथैं भोथरी 'का कें पारा गरम। हुनी मुड़ी घुमाय कें जबाब दै छथिन -- जे सें मानों कि तोरा कौवाँ नोचौं -- आरो पोटरी बान्ही कें सत्तू, चूड़ा, भात आरो रोटी दहू छुतहरी कें। अेंह ! गरीब छै ! लगुवा छेकै। बेसहारा छै। हाय रे, दया के देवी ! जराबों भी आबें की जराय छों ! सब यैं दुनियाँ में दगाबाज, नमकहराम छै। बच्चा में दादीं हमरा ठिक्के कहै छेलै -- जे सें मानों कि तोरा कौवाँ नोचौं -- कि

'बहू-बहू मत कर, बहू होतौ बकरी।
माँगतौ नोन तेल, माँगतौ लकड़ी।'
ओह, कचारों सें तें तंग आबी गेलाँ।''

धारावाहिक रूपों में 'करुआ माय'- शीर्षक सें रामावतार 'राही' कें तेरों-टा व्यंग्य-कथा भागलपुरों के 'प्रिय-प्रभात' (साप्ताहिक) में प्रकाशित होलों छै -- १९८३ ई०, १९८९ ई० कें २८ मई, ११ जून, २५ जून, २ जुलाई, ९ जुलाई, ३० जुलाई, २० अगस्त, १० सितम्बर, १७ सितम्बर, २४ सितम्बर, १ नवम्बर कें अंकों में।

रामावतार 'राही' कें व्यंग्य-कथा में मध्यवर्गीय आरो निम्नवर्गीय परिवारों कें आशा, उल्लास, घुटन, संघर्ष आरनी कें बड़ी परिहास कें साथें राखलों गेलों छै, जे सहृदयों कें रिझैला कें साथें-साथें रुलाबै छै। करुआ माय कें एक अंश नीचें छै, --

'हाथ चमकाय कें करुआ माँय कहें तें लागलै सौंसे रामायण - 'हाय रे,

मरद ! बड़का मरद बनै कें गुमान करै छों। जबें सें बीहा करीं कें हमरा लानलें छों, तबें सें हमरा कौन सुख देलें छौं, सिवाय बच्चा-बुतरू कें ? हेकरों अलावा कोय सौखो - अरमान हमरों पूरा करलें छों ? सौखों सें एक्को पत्ता टिकलियो लानलें छों ? देखों तें ठामें मटरा माय की सुन्नर-सुन्नर साड़ी-कुरता, रोल्ड-गोल्ड कें झूमका, नथिया आरो सिलवरों कें पायल पिन्ही कें सौंसे गाँव झमाझम करै छै ! आरो, हम्में तोरों एक पीतरों रों औंगठियो तक नैं जानै छियौं।'

है ओलहना सुनी कें करुआ बाप कें दिमागों कें फ्यूज उड़िये तें गेलै।''

'अंग-माधुरी' पत्रिका में दीनदीप उर्फ गुरुजी कें व्यंग्य-कथामाला कें प्रकाशन होलों छै। ई व्यंग्य-माला कें मुख्य शीर्षक छेकै -- 'गुरुजी कें गुटरगूँ'। मुख्य शीर्षकों कें नीच्हौं उपशीर्षक मिलै छै ; जेना -- 'भीमों कें पार्ट', 'हाथी कें सवारी' (अ: सि: ८५), 'इन्द्र कें पार्ट', 'कलकत्ता कें चक्कर', 'नागा कें टक्कर', 'अस्ससानी काली', 'गुरुजी कें भूत' ; मतरकि अधिकाश, जेनाकि जनवरी सें अगस्त-सितम्बर '८५ कें पूर्व प्रकाशित व्यंग्य-माला, कें कोय उपशीर्षक नैं देलों गेलों छै।

प्राप्त सामग्री कें आधारों पर ई ज्ञात होय छै कि हिनकों व्यंग्य-कथा कें प्रकाशन ८४ ई० कें अन्तिम चरणों सें होलै। दिसम्बर, १९८४ ई० में प्रकाशित 'भीमों कें पार्ट' सें पैहलकों हिनकों कोय कथा हमरा देखैलें नैं मिललों छै। आश्चर्य तें ई छै कि हास्य-व्यंग्य कें ई कथा-लेखक कें संबंधों में कोय कुछ संकेत करै कें कोशिशो अंगिका-साहित्य कें विद्वान्द्वय इतिहासकारें आपनों साहित्येतिहासों में नैं करनें छै।

'दीनदीप' उर्फ 'गुरुजी' कें व्यंग्य-कथा कें प्रकाशन 'अंग-माधुरी' में रुकी-रुकी कें होलों छै। हर कथा एक-दोसरा सें स्वतंत्र छै, यै सें एकरों अंत कें घोषणा नैं मानलों जाबें सकै छै। सब कथा अगर जुड़लों छै तें शुरू कें दू पात्र सें, जे आपस में मिलै छै आरो कथा शुरू होय छै। कथा कें ई शैली श्री उमेश जी कें 'चौबेजी कें गप' में भी मिलै छै।

गुरुजी कें हास्य-व्यंग्यों में व्यंग्य कें फुहारा तें छै के, परिहासो कें कभियो-कभियो अन्धड़-बतासो बहतें मिलै छै। हिनकों व्यंग्यों कें एक अश द्रष्टव्य छै, --

"दू ठो बोतल भरी देलकी x x x x x x x x x
"हम्में कहलियै कि एकटा लोटा लै लौ, दिशा-मैदान करै ले लेकिन

ऊ बोलली कि तोहें भलों करनें छौं। लोटा-तोटा हेराय देभैं। केन्हों कें काम चलाय लिहों। खैर, हम्मे बोलबम करी देलाँ। xxx हम्में तीन दिनों पर देवघर प्रातः दस बजे पहुँचलाँ। xxx शिवगंगा में नहैलाँ। दुन्नों बोतलों में गंगाजल लेलों। xxx हम्मे कहुना भीड़ चीरी कें बाबा कें पास गेलाँ। xxx मार खैलों पर हमरा दिशा-मैदान कें हरकत होलों। xxx शिवगंगा गेलाँ। हम्में खाली दुन्नों बोतलों में जल भरलाँ आरू दौड़लों-दौड़लों थोड़ों दूर पर जाय कें बैठी गेलाँ। दुन्नों बोतल आगू में दायाँ-बायाँ राखी कें बैठी गेलाँ।

"चौबेजी ठठाय कें हँसलात। हुनी बोललात -- तबें तें सभा में दू गुलदस्ता बीच जेहिनों सम्पत्ति सोहै छै, वहें रङ शोभतें होबें ? गुरुजी दाँत निकोसी कें बोललात -- 'ओकरों सें ज्यादा सुन्दर।''

आय अंगिका में व्यंग्य-कथा कहैवाला लेखकों कें संख्या कें कमी नैं छै। सदानन्द मिश्र, महेन्द्र जायसवाल, राधाकृष्ण चौधरी, डॉ० विजय कुमार आरनी व्यंग्य-कथा-लेखकों में प्रमुख स्थान राखैवाला गद्यकार छेकै। ई दोसरों बात छेकै कि अंगिका व्यंग्य-कथा कें चतुर्भुज रूपों में श्री उमेश, जगदीश पाठक 'मधुकर', दीनदीप उर्फ गुरुजी आरो रामावतार 'राही' दिखै छै।

मतरकि एक बात जे अंगिका कें सब्भे व्यंग्य-लेखकों वास्तें कहलों जावें सकै छै ऊ ई कि हिनकों व्यंग्यों में सामाजिक कुरीति, विसंगति भीड़ में प्रदर्शित छै आरो ओकरा पर प्रहार आकि आलोचना लेली व्यंग्यकार नें आपनों बुद्धिवाला कल्पना कें सहयोगों सें व्यंग्य रचना कें विभिन्न उपादानों कें बड़ी कुशलता सें उपभोग करनें छै, जेकरे कारणें यहाँ प्रहार कें साथ परिहासों के भरपूर ठिकाना छै। महेन्द्र जायसवाल कें 'चितकबरी', डॉ० विजय कुमार कें 'परलोक-यात्रा', ठाकुर जयप्रकाश 'तृषित' कें 'केतारी कें खेती' अंगिका में व्यंग्य-कथा कें मजबूत जमीनों कें सिद्ध करैवाला कहानी छेकै।

अणु-कथा

मुक्तक कविता में जे स्थान दोहा कें छै, कहानी कें क्षेत्रों में, आपनों शैली आरो शिल्प लै कें, अणु-कथाँ ठीक वहें स्थान राखै छै। अणु-कथा लघु कथाये (सॉर्ट स्टोरी) कें सरलतम, संक्षिप्त, लेकिन व्यंग्य-प्रधान रूप राखैवाला कथा-शैली छेकै, जेकरा कुछ कथाकारें/आलोचकें, गलती सें, 'लघु-कथा' कें कोटि में राखै छै। असल में, लघु-कथा 'सॉर्ट स्टोरी' -ये कें हिंदी-अनुवाद

छेकै आरो वही सें कहानी विधा कें स्वरूपों कें समकक्ष छै। लघु-कथा आरो अणु-कथा में एक विशिष्ट अन्तर ई छेकै कि श्रेष्ठ कहानी में जहाँ करुणा आपनों पराकाष्ठा पर अभिव्यक्त होय लें चाहै छै वहाँ अणु-कथा कें अंत व्यग्यों कें पराकाष्ठा पर होय छै।

कुछ लोगें समझै छै कि अणु-कथा कें मतलब दू-चार संवादात्मक पंक्ति में आपनों बात कही देबों होय छै, जे कि एकदम गलत समझ छेकै। अणु-कथा, असल में, लघु-कथा कें ऊ रूप छेकै जेकरा कोनो विशिष्ट बाहरी दृश्य कें केमरा कें लेन्सों पर अंकित दृश्याकार कहबों ज्यादा मुनासिब होतै, जहाँ सब कथा-तत्व आपनों हिसाबों सें लघु रूपों में उपस्थित रहै छै।

अणु-कथा कें लोकप्रियता कें पीछूँ आयकों भागम-भाग जिनगी कें उपज कहलों जावें सकै छै। होना कें हेकरों जोंड़ आरो फोंर लोक-कथाये में सुरक्षित छै। आय अणु-कथा कें एक समृद्ध परंपरा नैं खाली हिंदीये में, बलुक हिंदुस्तानों कें सब्भे लोक-भाषा में हासिल छै। अंगिकाओ में अणु-कथा-लेखन दिस है भाषा कें कथाकारसिनी काफी विलक्षण प्रतिभा कें सबूत दै रहलों छै। सर्वश्री सुमन सूरो, डॉ० मनाजिर आसिक हरगानवी, अनिरुद्ध प्रसाद विमल, आभा पूर्वे (श्रीमती), आर० के० नीरद, राजकुमार, पारस कुंज, 'अज्ञानी', अनिरुद्ध प्रभास, विजेता मुद्गलपुरी, योगेश कौशल आरनी कयेक कथाकार अणु-कथा-साहित्यों कें विशिष्ट पहचान दै में बहुत सक्रिय छै। हेना कें तें नरेश पाण्डेय 'चकोर', मीरा झा, प्रदीप प्रभात -हेनों कुछेक कथाकारहौ कें अणु-कथा प्रकाशित होवै कें अलावा गोष्ठी-आर में पढ़लों-सुनैलों जैतें रहलों छै।

१९९० ई० सें १९९७ ई० कें बीच ढेर अणु-कथा अंगिका में प्रकाशित होलों छै ; मतरकि दू बात सही छै कि शिल्प-शैली कें दृष्टि सें सब्भे कें अणु-कथा साहित्यों कें भीतर राखलों नैं जावें सकै छै। हेनों कहानी कें संख्या बहुते रहलै जे कि आर० के० नीरद कें 'समझ' (१९९३), पारस कुंज कें 'डेड लिस्ट' (१९९४), 'चकोर' जी कें 'मजाक' (१९९४), डॉ० देशभक्त कें 'सम्मान' (१९९७), 'अज्ञानी' जी कें 'सबसे बड़ों झूठ' (१९९७), डॉ० हरगानवी कें 'हारलों दाव' (१९९७) कें बरोबरी कें रहै।

१९९७ ई० में श्री विजेता मुद्गलपुरी कें कोय दर्जन-भर अणु-कथा कें प्रकाशन भेलों मिलै छै, जेसिनी में 'मौन कें ऐंगना', 'लोगें की कहतै', 'जिम्मेवारी', 'दहेज बियाह', 'एगो आरो घोटाला' काफी चर्चा में रहलों छै। मुद्गलपुरी जी कें अणु-कथा 'अग्रसर' (मुंगेर), 'आंगी' (भागलपुर) -आर पत्र-पत्रिका में प्रकाशित

होतें रहलों छै। १९९७ ईस्वीये में डॉ० अभयकान्त चौधरी के कुछेक अणु-कथा 'लघु कथा' के नामों सें, प्रकाशित होलो छै, जे कि अणु-कथा-संग्रह 'लघु कथा आरो ललित निबंध' में संकलित छै ; मतरकि 'भिखारी', 'दुमड़ी', 'चमरू', 'अकाल', 'मोटर साइकिल', 'एगारों अगस्त', 'पंखा पूलर', 'मुहरी', 'बग्घी' हेनों 'लघु कथा' असल में 'अणु-कथा' छेकै, 'सॉर्ट स्टोरी' (लघु कथा) तें नहींये कहलों जाय पारें हैसिनी कें।

अणु-कथा कें लोकप्रियता कें देखतें हुऍं पिछलका कयेक सालों सें आरो-आरो भाषाओ कें कयेक-टा अणु-कथा कें अनुवादों कें प्रचलन अंगिका में बढ़ी रहलों छै। १९९० ई० के 'अंगप्रिया' (मार्च) में श्री सआदत हसन मंटो के 'सफाई-पसंद' आरो श्री कम्बर अली कें 'मरुस्थल की पुकार' अणु-कथा के अंगिका-अनुवाद 'अंगप्रिया' कें संपादक डॉ० देवेन्द्र नें प्रस्तुत करने छै। हालांकि बहुत कम हेनों लेखक छै जिनकासिनी कें धेयान अनुवाद दिस देखावै छै जबें कि हेकरो बहुत ज्यादा आवश्यकता छै। खाली उर्दू आकि अँग्रेजीये कें अणु-कथा के अंगिका-अनुवाद प्रस्तुत करलों जाय तें एक उपलब्धि होवें। भारतीय भाषासिनी में ई शैली कें जे श्रेष्ठ रचना आबी रहलों छै वैसिनी कें अनुवादो अंगिका में हुऍं तें अंगिका-साहित्यों कें पाठकों कें भारतीय कथा-साहित्यों कें समृद्धि कें साथे अंगिका-लेखकों कें अपना कें थाहै में मदद मिलें। तैयो पूरा विश्वासों सें कहलों जाय पारें कि सर्वश्री अनिरुद्ध प्रसाद विमल, आभा पूर्वे (श्रीमती), राजेश कुमार झा आरनीं जे तरहों सें अंगिका अणु-कथा कें नया शिल्प आरो शैली दै रहलों छै वैसिनी सें ई कथा-शैली आपनों साहित्यों कें समृद्ध करें पारतै।

उपन्यास

आय-काल जे उपन्यास लिखलों जाय रहलों छै आकि ई साहित्य विधा कें जे अर्थ समझलों जाय छै, ऊ बेशक आपनों स्वरूप आरो माने में एकदम आधुनिक छेकै। आय उपन्यासों कें अर्थ ऊ बृहद् आकारों कें गद्य-कथा सें होय छै जे कि वास्तविक जीवनों कें सुख-दुखों सें संबद्ध होय छै, जेकरों कथानक में ठोस जगत् आरो एकरों पात्रसिनी कें प्रतिनिधित्व होय छै। उपन्यासों कें कोय निश्चित परिभाषा तें नै हुवें पारै छै, मतरकि सब ने है स्वीकारै छै कि उपन्यास आपनों युगों कें वास्तविक चित्र दैवाला बृहद् आकारवाला कथा-साहित्य छेकै।

ई गद्य-कथा कें तत्वो वही छेकै जे कि कहानी कें होय छै

जेना -- कथावस्तु, पात्र, संवाद, देश-काल, शिल्प आरो उद्देश्य ; मतरकि है बात स्मरण रहना चाहियों कि कहानी में जहाँ हैसिनी तत्वों में एक सें अधिक कें अवहेलनों हुवें पारें छै वहाँ उपन्यास ई सब में से केकरौ इनकार करी कें नैं चलें पारें। जों हेनों होय छै तें वहाँ उपन्यासों कें वयस्क रूपो नैं उभरै पारै छै।

उपन्यासों कें है तत्वों कें आधारे पर उपन्यास कें कै गो भेद करलों जावें सकें छै ; जेना -- घटना-प्रधान, चरित्र-प्रधान, वातावरण-प्रधान आरनी। हेना कें तें कथा-स्त्रोतो कें आधारों पर उपन्यासों कें विभाजन साहित्य में बहुप्रचलित छै ; जेना -- ऐतिहासिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, वैज्ञानिक आरनी।

होना कें सब तरहों कें उपन्यास या तें पात्र कें अन्तर्जीवन कें कथा होय छै या फेनू पात्रों सें बाहर कें दुनिया कें संघर्ष-कथा। यहीं सें सब तरहों कें उपन्यास कें मोटा-मोटी दू जातों में रखलों जावें सकै छै, ऊ जात छेकै -- वैयक्तिक उपन्यास आरो सामाजिक उपन्यास। मनोवैज्ञानिक, मनोविश्लेषणात्मक, राजनीतिक, आर्थिक आरों वैज्ञानिक उपन्यासों कें सब वर्ग उपरे कें दू वर्गों में अँटी जाय छै।

अंगिका भाषा में उपन्यास-साहित्य एकदम सें नया लेखकों कें निधि छेकै, हेकरा में कोय विवाद नै हुवें पारें। ई भाषा में उपन्यास-लेखन कें प्रारम्भ दीप नारायण सिंह 'दीप' सें होय छै, ई बात तब ताँय कहलों जैते जब ताँय कि हेकरा से पूर्वो कें कोय औपन्यासिक कृति कें उल्लेख आकि जानकारी नैं प्राप्त होय छै। साहित्यकार निर्मल प्रसाद सिंह 'लाल' सें प्राप्त एक लिखित जानकारी कें मोताबिक दीप नारायण सिंह 'दीप' शंभुगंज-तारापुर कें निवासी छेलात, जिनकों मृत्यु १९८० ई० कें आस-पास करीब एक सौ पाँच बरसों कें उमिर में होलों छेलै। हिनी आपनों पूर्वजों कें जीवन-घटना कें लैकें लगभग पाँच सौ सें ऊपर पृष्ठों कें एक उपन्यास लिखने छेलै। आत्म-कथा शैली में लिखलों हौ उपन्यासों कें नाम निर्मल सिंह लाल ने 'जरलों दीया' लिखनें छै।

'लाल' कें ही मोताबिक 'जरलों दीया' में कै-एक पुस्तों कें जीवनों कें उतार-चढ़ावों कें बड़ी रोचक ढंगों सें उपन्यास बनाय कें लिखलों गेलों छै। जब ताँय ई औपन्यासिक कृति कें सर्वसुलभ रूप साहित्यों कें बीच नैं आबी जाय छै, एकरो कथावस्तु आरो शिल्पों कें संबंध में निर्णयात्मक रूपों में कुछवो कहना मुश्किल छै ; मतरकि है बात सही छेकै कि अब ताँय 'जरलों दीया' से पूर्वो कें कोय औपन्यासिक कृति कें सूचना नैं होला कें कारणें 'जरलों दीया' से ही अंगिका

भाषा में उपन्यास-लेखनों के आरम्भ मानबों असंगत नैं होतै।

हेना कें तें १९७१ ई० में नरेश पाण्डेय 'चकोर' कें एक प्रकाशित कृति मिलै छै जेकरा पर 'अंगभाषा' के सर्वप्रथम लघु-उपन्यास कें विज्ञापनों छपलों होलों छै। शीर्षक के नीचें एक पंक्ति आरो प्रकाशित छै - बौद्ध कालीन आदर्श चरित्र - नारी विशाखा कें जीवन-वृत्त पर आधारित।

उपन्यासकार नें केना एकरा उपन्यास कहनें छै, नै मालूम। जहाँ तक लघु उपन्यास कें प्रश्न छेकै ऊ वृहत् उपन्यास कें सम्पूर्ण तत्व कें संक्षिप्तता में ग्रहण करतें आपनों औपन्यासिक स्वरूप कें प्रकट करै छै। विशाखा कथावचन शैली में लिखलों मात्र बीस पृष्ठ कें एक पहेली-कथा (कहानी) छेकै जेकरा में नै कोय संघर्षतत्व कें प्रधानता छै, नै वातावरण के आरों नैं तें विशाखा के कोय बहुत उल्लेखनीय उदात्त रूप ही समक्ष आवै छै, बल्कि नारी में आभूषण के प्रति आकर्षण के कमजोरी कें कुछु ज्यादा स्वर मिललों छै। ज्यादा सें ज्यादा विशाखा कें एक बड़ों कहानी कहलों जावें सकै छै।

अंगिका में उपन्यास के वास्तविक लेखन आरो प्रकाशन प्रख्यात कथाकार अनूप लाल मंडल के उपन्यास 'नया सूरज, नया चान' से ही होय छै।

'नया सूरज : नया चान'

'नया सूरज : नया चान' १९७९ ई० में शेखर प्रकाशन, पटना सें स्व० अनूप लाल मंडल के प्रकाशित पहिलों उपन्यास छेकै। ई उपन्यासों कें विषय जातीय व्यवस्था कें विरोधों में अन्तर्जातीय शादी कें प्रोत्साहन देबों छेकै, जेकरों लें उपन्यासकारें उत्तर अंग-जनपदों कें ग्रामीण, सामाजिक-आर्थिक अवस्था आरो भूगोल कें आपनों ई कृति कें विषय-वस्तु कें रूपों में स्वीकार करने छै।

रमानाथ, जे कि मोटो खाय-पीयैवाला, मतरकि ईमानदारी सें जीयैवाला किशुनदास कें पुत्र छेकै, जबें एम० ए० प्रथम श्रेणी में पास करी कें आपनों गाँव हरिहरपुर लौटै छै तें किशुनदास कें खुशी कें ठिकानों नैं रही जाय छै। पुरानों सोच-समझ कें मोताबिके पिता नें आपनों पुत्र कें सामना में बीहा करी लैकें प्रस्ताव राखै छै, मजकि रमानाथ मुकरी जाय छै। बीहा कें लैकें रमानाथ कें सोच असामान्य छै कि ऊ अन्तर्जातीय बीहा छोड़ी कें आरो कुछ नैं करें पारें। यै में रमानाथ कें दोस्त बिष्णुकान्तो मदद करै छै। खाली बीहे कें मामला में नैं, रमानाथ, जें कि गाँवों कें आर्थिक-सामाजिक भेदों कें लैकें दू फाँकों में बँटलों देखने छै, ओकरा नया जीवनों दै लें बेचैन छै।

एक बेर निमंत्रण पाबी कें रमानाथ उच्च विद्यालय, रहीमगंज कें स्वर्ण-जयंती में भाग लै लें जाय छै जहाँ ओकरों मुलाकात शील-गुण सें सम्पन्न विदुषी शिक्षिका सुश्री प्रभावती गुप्ता सें होय छै, जे कि खुद्दे ऊ स्वर्ण-जयंती में भागीदारी लै लें ऐली छेलै। बाते-बात में ई-सब बातों कें पता चलै छै कि दोनों वही स्कूलों कें छात्र रही चुकलों छेलै आरो सुश्री प्रभावती कें धर्मपिता चौधरीये जी आबें एकमात्र ओकरों अभिभावक छेकात। यहू मालूम भेलै कि प्रभावती कें माय खाली अन्तर्जातीय नैं बिहैली गेली छेलै, बलुक हुनी अन्तर्प्रान्तियो छेली। सबकुछ जानी-सुनी कें प्रभावती कें ओकरों इस्कूल ताँय छोड़ै कें बीचों में रमानाथ ओकरा सें बीहा करै कें इच्छा राखै छै, जेकरा प्रभावतीं स्वीकारी लै छै।

रमानाथ कें लागै छै कि ओकरों आर्थिक-सामाजिक विचार पारम्परिक नैं होला कें कारणें गाँवों कें समृद्ध लोगों लें ऊ उपेक्षित रङ बनी गेलों छै। शायद यहें कारणें जबें प्रोफेसर अग्रवाल कें चिट्ठी मिलै छै, तबें ऊ बनारस जाय कें हिन्दू विश्वविद्यालयों में इतिहास कें प्रोफेसर बनी जाय छै ; मतरकि जल्दीये प्रभावती कें धर्मपिता चौधरी जी कें चिट्ठी मिलै छै, शादी-बीहा लैकें। वै कारणें ऊ छुट्टी लै कें बनारस सें आपनों गाँव लौटी जाय छै।

रमानाथ आरो प्रभावती कें शादी होय जाय छै आरो रमानाथ कें कहला पर प्रभावती अपनों नौकरी छोड़ी कें घर-गृहस्थी सुव्यवस्थित करै में लागी जाय छै ; मजकि ई अन्तर्जातीय विवाह सें गाँव खुश नैं छेलै। किशुनदास ई बातों कें लैकें कम परेशान नैं छेलै, परंतु हुनी यहें बातों सें खुश छेलै कि पुतोहू बड़ी सुघड़ मिलली रहै, जेकरा सें किशुनदास कें बड़ी आत्मिक खुशी मिलै रहै। वें आपनी पत्नी कें साथें तीर्थयात्रा पर निकलै कें बात सोची लै छै, परंतु विधि कें विधानों कुछ अलगे होय छै। जखनी किशुनदास गौरी साहु कें मुकदमा कें पैरवी करी कें शहर से गाँव आबी रहलों छेलै तखनीये हुनका कोय दुश्मने छूरा सें घायल करी दै छै। रमानाथ कें अनुपस्थितिये में प्रभावतीं नै खाली धैर्य आरो विवेक कें साथें घायल ससुरों कें शहर कें अस्पताल पहुँचाय छै, बलुक हुनकों सेवा में दिनरात एक करी दै छै। रमानाथ कें जल्दी लौटै कें तार करै छै, मतरकि सब-कुछ होल्हौ कें बाद किशुनदास नैं बचै छै।

ई घटना सें रमानाथ एत्तें दुखित होय छै कि गाँव ऐला पर फेनू घुमी कें शहर नैं जाय छै आरो गाँव कें सड़ाँध मिटावै कें संकल्प करी कें प्रभावती कें साथें वहीं में लागी जाय छै। हौ कामों में एक ग्रामीण मित्र हीरानंदों कें ओकरा खूब मदद मिलै छै, जेकरों ई परिणाम होय छै कि गाँवों में श्रीकृष्ण उच्च विद्यालय

के साथे-साथ कृष्ण-पुस्तकालयो खुलै छै। ग्रामीणों सब देखै छै कि रमानाथ आरो प्रभावती ऊ गाँव वास्तें नया सूरज, नया चान बनी गेलों छै।

सतरह परिच्छेदों में लिखलों गेलों एक सौ नौ पृष्ठों केँ ई उपन्यास एक महान् सामाजिक आदर्श खाड़ों करै वाला छेकै, जेकरों पीछूँ उत्तरी अंग-जनपदों केँ सांस्कृतिक परिवेशों केँ बल छै। उपन्यासकारों केँ समक्ष एक निश्चित सामाजिक आदर्श प्रमुख रहलो छै, यै लेली है उपन्यासों केँ भाषा-शैलियो घुमावदार नैं होय केँ सीधा-सपट्टा छै। गाँव केँ लोगों केँ आरो खुद उपन्यासकारों केँ व्यक्तित्वे नाखी भाषा रूपों केँ एक उदाहरण नीचें छै,--

"घाटों पर एक जगह चौरस करी केँ मोटों-मोटों लकड़ी रखलों गेलै ; फिरू सरबों-सरबों लकड़ी ; ओकरों ऊपर कुच्छू संठी बिछैलों गेलै। हिन्ने दू आदमी मिली केँ दासजी केँ गंगाधारों में लहवाय केँ फिरू अँगोछा सें पोछी केँ लकड़ी केरों सारा पर राखी देलों गेलै।

छाहुर

१९८२ ई० में लोकप्रिय कहानीकार अनिरुद्ध प्रभास केँ उपन्यास 'छाहुर' केँ प्रकाशन होलै। बौंसठ पृष्ठों में समैलों अंगिका केँ ई उपन्यास आपनों प्रकाशन केँ साथें चर्चा में रहलों छै।

ई उपन्यास पैरू आरो ओकरों मुँहबोली भौजाय केँ बीच केँ संबंधों पर आधारित छै।

पैरू केँ दोस्त किसन अपनी पत्नी केँ गोदी में एक छोटों बच्चा (जोगिया) केँ छोड़ी केँ दुनियाँ सें चली बसै छै। फेरू तें जोगिया केँ भार पैरूँ आपनों ऊपर लै लै छै। जोगिया माय (भौजी) केँ प्रति लगाव देखी केँ पैरू केँ पत्नी पैरू सें लड़ै छै। एक दिन आपनों पति सें मार खाय केँ पैरू के पत्नी घोंर छोड़ी केँ चली दै छै।

आबें पैरू विधवा भौजी आरो जोगिया लेली सोचतें रहै छै। होली केँ समय पैरू केँ ऊपर रंग-अबीर डालतें भौजी केँ देह-हाथ शिथिल पड़ें लागै छै। यहें-सब वातावरण केँ बीच जोगिया बड़ों होय जाय छै। पैरू जोगिया केँ बीहा करवाय दै छै, मतरकि जोगिया बहू पैरू आरो आपनी सास केँ संबंधों सें कुपित होय उठै छै। आखिर में दुखित पैरू घर-द्वार छोड़ी केँ साधुगिरी पर उतरी आबै छै। आश्रम बनाय केँ अलग होय जाय छै।

दुखित जोगिया मायो एक दिन घर-द्वार छोड़ी केँ आश्रम पहुँची जाय छै -- पैरू के सेवा में। फरू एक दिन पैरू केँ जीवनों केँ आखरी समयो आबी

जाय छै। पैरूँ इच्छा व्यक्त करै छै - जोगिया आरो जोगिया बहू कें देखै कें। जोगिया अपनी कनियैनी कें साथें आवै छै। एक दिन पैरू कें प्राण उड़ी जाय छै। विवाद उठी खाड़ों होय छै कि पैरू कें मुँहों में आग के देतै, मतरकि भौजी आपनों निर्णय सुनाय दै छै, पैरू कें मुँहों में आग देतै तें जोगियाँ।

'छाहुर' अंगिका पाठकों कें बीच काफी लोकप्रिय उपन्यास सिद्ध होलों छै। यै में उपन्यासकारें पैरू आरो भौजी कें सहज स्वाभाविक आकर्षण कें लैकें जे कथावस्तु गढ़लें छै। ओकरा में पाठकीय रोचकता कें कारण कथावस्तु कें साथें-साथें भाषा-शिल्प कें आकर्षणौ कें महत्वपूर्ण योग छै। लोकतत्व कें प्रधानता सें 'छाहुर' में औत्सुक्य-आकर्षण-तत्व कें काफी समावेश होय गेलों छै। 'छाहुर' उपन्यासों कें भाषा-शिल्पों कें एक बानगी देखलों जाय --

"राम-राम ! ऐन्हों बात नैं कहों। वैसें केकरों मुँह पकड़लों जाय ; लेकिन पैरुआ-किसन कें दोस्ती कृष्ण आरो सुदामा सें कम नैं रहै। सब दिन पैरूँ किसन कें भैया नाकी आदर देतें रहलै आरो जोगिया माय कें भौजाय कें आदर। किसन नें भी मरै दम तक पैरू कें दोस्त आरो छोटों भाइये समझलकै, दुश्मन नैं।"
(पृ.६)।

शुभद्रांगी

१९८८ ई० में अंगिका विकास समिति, दुमका सें प्रकाशित 'सुभद्रांगी' श्री सुमन सूरो-रचित एक ऐतिहासिक उपन्यास छेकै। प्रियदर्शी अशोक के माय सुभद्रांगी, जे कि चम्पा (अंग) के रहै, ओकरहै केन्द्र में राखी कें ई उपन्यास कें सृजन करलों गेलों छै।

सुभद्रांगी कें संबंध में कोय विशेष ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त नैं होय छै (कम-सें-कम ई उपन्यासों सें तें यही मालूम होय छै), मतरकि उपन्यासकार नें ई ऐतिहासिक उपन्यासों कें आपनों कल्पना सें भरै-पूरै कें प्रयास करने छै ; जेकरों परिणाम छेकै कि ई उपन्यासों में गुलेठी झा, अनंगसेना, सखेती हेनों कै-एक पात्र उपन्यासकारों कें मानस-पात्र कें रूपों में आबी कें यै उपन्यासों कें भरै-पूरै में मदद करै छै। मदद की करै छै, एक तरह सें ई-सब मानस-पात्र इकट्ठा होय कें सुभो (सुभद्रांगी) कें पीछूँ छोड़ी कें आपनों कथा बनैतें चलै छै। चम्पा सें लैकें मंदार पर्वतों कें यात्रा में, जे कि उपन्यासों कें पहिलों खंडो छेकै, अनंगसेना सुभद्रांगी कें सखी आरो सखेती सुभो कें भाये आपनों प्रेम-प्रसंगों सें ई खंडों कें घेरने राखै छै, सुभौ यै में एक मददगारे कें रूपे-भर में आबै छै।

कथा में मंदार पर्वतों कें कथा आरो परिवेशों कें प्रसंग द्वारा ज्यादा जग्घो

छेंकबों मूल उपन्यास-कथा कें गौण करी दै छै। दरअसल, सुभो के कथा तें उपन्यासों कें दोसरों खण्डों सें प्रारम्भ होय छै, जबें गुलेठी झा आपनों मित्र बिष्णुगुप्त (चाणक्य) सें मिलै लें सुभद्रांगी कें लैकें पाटलिपुत्र पहुँचै छै। अनंगसेना भी साथ जाय छै।

बिष्णुगुप्त सुभद्रांगी कें शील-गुण-प्रतिभा सें प्रभावित होय छै। पाटलिपुत्र कें युवराजो ओकरों रूप-राशि सें अवाक् रही जाय छै। प्रणय-व्यापार माधवी-कुंज में पुष्प-प्रदान सें पल्लवित होय कें आखिर में चन्द्रगुप्त कें गुरु बिष्णुगुप्त कें सलाह पर विवाह-बंधन में बदली जाय छै। युवराज विन्दुसार सें सुभद्रांगी कें विवाह होत्हैं चम्पा छोड़ै सें पहिनें आचार्यें गुलेठी सें कहै छै कि वें अनंगसेना कें भौजी कहने छै, एकरों खेयाल राखियौहों। चम्पा कें बेटी सुभद्रांगी कें मगध में ऐत्हैं समुच्चा मगध खुशी कें सागर में डुबी जाय छै।

एक महाकवि कें उपन्यास होला कें कारणें ई उपन्यासों कें महत्वो यै में कवित्वपूर्ण प्रसंग आरो भाषा-शैली कें कारणें विशेष छै, ई निर्विवाद रूपें कहलों जैतै। तेहत्तर पृष्ठों कें ई उपन्यासों में प्रकृति आरो प्रेम कें जतना-टा स्थान मिलें पारलों छै, ऊ प्रभाव छोड़ै वाला छै। पाटलिपुत्र में सुभो आरो युवराज कें मालती-कुंज में पुष्पे कें माध्यम बनाय कें प्रेम-निवेदन करवैबों सूरो जी कें कवि आरो शीलपूर्ण लेखन कें उजागर करै छै। उपन्यासकार कें हेनों पात्र आपनों देश-काल कें मोताबिके चलै छै, ई उपन्यासकारों कें सजग व्यक्तित्वे मानलों जैतै। यही सजग व्यक्तिवों कें कारणें उपन्यासकारें यै उपन्यासों में घुरलों अनंग सेना कें प्रेम-कथाओ कें विदा होती सुभो कें एक वाक्यों सें कि वें ओकरा भौजी कहने छै, खेयाल राखियौ, जोड़ी दै छै। तैयो ई कहलों जैतै कि है उपन्यासों में शुरूवे कें चौथों पृष्ठ पर मंदार पर्वत लें तुरत्ते 'ई' आरो तुरत्ते 'ऊ' कें प्रयोगों कें असावधानी पाठकीय भ्रम कें पैदा करै छै।

यै उपन्यासों कें भाषा-शैली कें एक उदाहरण नीचें द्रष्टव्य छै, "कटेली चम्पा कें सुगन्ध सें समूचा वातावरण सराबोर छै, कहीं कोय तरह कें आवाज नैं, जेना आकास कें सौन्दर्य कें धरती आ धरती कें सुगन्ध कें आकासें पीतें रहें।" (पृष्ठ १२)।

परबतिया

'परबतिया' श्रीमती आभा पूर्वे कें पहिलों उपन्यास छेकै, जनवरी १९९१ ई० में प्रकाशित। ई लघु उपन्यास मात्र ४४ पृष्ठों में समाप्त होलों छै,

जेकरों कथावस्तु तत्कालीन समयों कें राजनीतिक दाँव-पेंच आरो वै सें उत्पन्न सामाजिक स्थिति छेकै।

'परबतिया' (पार्वती) ई उपन्यासों कें प्रमुख पात्र आरो कोशी-अँचलों कें एक गाँवों कें समृद्ध आरो प्रतिष्ठित व्यक्ति बिसुनदेव बाबू (वंशी बाबू) कें बेटी छेकै। है उपन्यासों कें उद्देश्य जातीय विरोध कें अभिशापों कें देखाना छेकै, यै लेली एकरों नायक सूरज मंडल कें पुत्र कार्तिक चन्द कें बेटा परमेश्वर कें बनैलों गेलों छै। कायस्थ परिवारों कें 'परबतिया' परमेसर कें प्यार में आकंठ डुबली छै, जेकरों खुलासा उपन्यास कें पहिलों, दोसरों आरो तेसरों अध्यायों सें होय छै।

ई उपन्यासों कें तेसरों अध्याय में परमेसर कें नौकरी पर जैतैं ओकरा सें परबतिया कें मुलाकात आरो एक-दोसरा लें दोनों कें खिंचाव कें वर्णन छै। परमेसर ई कही कें बिदा लै छै कि अबकी गाँव लौटी कें ऊ शहर नैं जैतै, बलुक गामें में एकटा स्कूल खोली कें गामों में शिक्षा फैलैतै, ताकि ओकरों पारबती सें अलग रहै कें कष्टमय जीवनों नैं जीयै लें लागै।

अध्याय पाँच में जाति कें आधार पर नौकरी में सुविधा कें घोषणा सें सामाजिक स्थिति कें चित्रण छै। जेकरों झलक उपन्यास-लेखिका नें पत्र कें माध्यमों सें उजागर करने छै, पत्र जे कि पारबती कें नाम परमेसरें लिखै छै। अध्याय छवो यही समस्या सें जुड़लों होलों छै, जे कि चिट्ठीये कें रूप में राखलों गेलों छै। ई चिट्ठी परमेसर कें लिखलों गेलों पारबती कें छेकै। दोनों मुख्य पात्रों कें दू चिट्ठी सें दोनों कें सामाजिक सोच साफ होय छै, जें है मानै छै कि गरीबी-निर्धारण कें आधार जाति नैं हुवें पारें। पारबती वैज्ञानिक विश्व-दृष्टि कें प्रचार लेली गाँवों कें हरिजन-बस्ती में एक स्कूल स्थापना आरो वही माध्यमों सें अशिक्षित पीड़ित वर्ग में वैज्ञानिक कल्याणकारी सोच करै कें बात परमेसर कें लिखै छै।

है उपन्यासों कें अध्याय छों में हरिजन-बस्ती में पारबती कें पढ़ैबों आरो वै सें बदनामी होय कें चिंता सें ग्रसित पारबती माय कें ओकरों शादी लें चिंतित देखैलों गेलों छै, जेकरों परिणाम होय छै कि वंशी बाबू कापरी कें कहलों पर ओकरों बीहा कार्तिकचन्द कें बेटा परमेश्वर सें करै लें तैयार होय जाय छै। यै लेली सूरज मंडल कें छोटों भतीजा बेरासी कें सम्मुख गीत गावै कें बहाना सें पारबती कें लानै छै, ताकि देखा-सुनी होय जाय।

मतरकि ई शादी कें विरोध में पारबती माय खाड़ी होय जाय छै। माँय चाहै छै कि पारबती कें बीहा आपनों जाते में हुवें -- दिवाकर बाबू कें

बेटा सें। आखिर में, अपनी कनियाँय कें जिद कें सम्मुख वंशी बाबू कें नमै लें पड़ै छै आरो पारबती कें बीहा दिवाकर बाबू कें लड़का शशांक सें होवै कें तैयारी शुरू होय जाय छै।

अध्याय आठ में पारबती आपनों मनों कें विरुद्ध बीहा होतें देखी कें परमेसर कें नाम एक चिट्ठी लिखै छै, जेकरा में पारबती कें जीवन-लीला कुछुवे देरी बादें समाप्त करी लैकें सूचना दै छै। साथें-साथ हेकरों लें दुख व्यक्त करै छै कि अशिक्षित समाज में शिक्षा सें जे रोशनी लानै लें चाहै छेलै, आबें ऊ अधूरे रहतै। पारबती बेरासी कें बोलवाबै छै आरो ऊ चिट्ठी परमेसर कें दै आबै कें बात कही कें विदा करै छै। बेरासी कें जैत्हें पारबती भी भोर हुवै सें पहिलें घरों सें चुपचाप निकली जाय छै। ऐंगना कें केबाड़ी खोली कें चोरकी पाँवों सें गंगा किनारी पहुँची जाय छै। गणेशी कें नाव खोले छै। गणेशी अभियो कछारिये नगीच बनलों अपनों मड़ैया में बेखबर सूती रहलों छै। बीच नदी में पहुँची कें पारबती एक दाफी गणेशी काका के तीन दाफी हाँक लगाय छै आरो उत्तर में गणेशी'का कें हाँक सुनत्हैं ऊ गंगा में धौंस लगाय दै छै। गणेशी'का परबतिया कें निर्जीव शरीर पानी नें गोता लगाय कें निकालै छै।

है कृति कें आखरी (दशमों) अध्यायों में शोक-संतप्त परिवार कें साथें-साथ गणेशी'का कें विह्वलता प्रदर्शित छै। पारबती कें चिताग्नि में करैकें पहिलें परमेसरो आबी जाय छै। जखनी निर्जीव पारबती कें चिता जलै छै तखनी सब लोगें परमेसर कें बदहवास बनलों एक दिस चलले-चललों जैतें देखै छै।

'परबतिया', आभा पूर्वे जी कें संभवतः पहिलों उपन्यास होला कें कारण, एकरा में औपन्यासिक शिल्प पूर्णता कें मजबूती सें रिक्त रही गेलों छै, जेकरों एक उदाहरण कथा में पारबती आरो बेरासी कें सम्मिलित लम्बा गायन छेकै। उपन्यास में ई विस्तार कें कोय औचित्य नैं बुझावै छै। हेकरों बादो उपन्यास-लेखिका नें वर्तमान सामाजिक सद्भावों कें छिन्न-भिन्न करै कें राजनीतिक चाल कें उजागर करै कें साथें समाज में जातीय सद्भावों कें स्थापना लेली जे विषय-वस्तु उठैने छै ऊ आपनों प्रभाव में अचूक छै। है उपन्यास कें भाषा पर लेखिका रों कवि व्यक्तित्व कें भी पूरा प्रभाव छै ; उदाहरणस्वरूप एकरा में लागलों लोक-धुनों पर रचलों गीत --

"आ ऽऽ ऽऽ ऽऽ
जाहि बनें सीकियो नैं डोलै, हे जोगिया !
ताहि बन तों नहीं जा।

ओहि बनें जोगिन बहुत छै, हे जोगिया !
रखतौं नैना लोभाय।
आँगन मोरा लेखै बीजूबन, हे जोगिया !
घर लागै दिवस अन्हार।
तोरों बिना सून सेज भेलै, हे जोगिया !
गेरुआ मोहि नैं सोहाय।
बाटें-घाटें सुमिरन करबौ, हे जोगिया !
मोती जकाँ झहरत नीर।'' इत्यादि।

अन्तहीन वैतरणी

'अन्तहीन वैतरिणी' श्रीमती आभा पूर्वे रों दोसरों उपन्यास छेकै, जेकरों प्रकाशन-वर्ष १९९३ ई० छेकै। ऐकरों पहिलें ई उपन्यास 'आंगी', जुलाई-अक्टूबर १९९३ में सम्पूर्ण रूपों में प्रकाशित होय चुकलों छेलै। ई उपन्यास 'कचनार जबें कल्पतरु भेलै' - शीर्षकों सें धारावाहिक रूपों में 'नई बात' (हिन्दी दैनिक, भागलपुर) सें प्रारम्भ होय कें कै-एक अंकों में समाप्त होलों छेलै। चौंसठ पृष्ठों कें ई उपन्यास एक नारी कें व्यथा-कथा कें घेरतें उपन्यास छेकै।

बच्ची, काफी सम्पतवाला जानकी बाबू कें बेटी छेकै जे कि आपनों बाबुओ कें काफी दुलारी छै। सम्पत बाबूँ, आपनों नाम कें विरुद्ध अर्थहीन स्थिति कें कारणें, चाहै छै कि केन्हों कें हुनकों बेटा सेमल कें शादी बच्ची कें साथें होय जाय। यद्यपि बच्ची कें माय होनों परिवारों में बेटी दै लें तैयार नैं छै, मतरकि जानकी बाबू कें ई आश्वासन पर कि हुनी लड़का कें अर्थवान् बनाय देतै, बच्ची माय ऊ घरों में बेटी दै लें तैयार होय जाय छै।

जानकी बाबू देशभक्त आदमी छेकै। हुनी देश-सेवा में ही आपनों अपार जमीन-जायदाद कें बहुत बड़ों हिस्सा खोय चुकलों छै। बच्ची कें शादी वक्तीं हुनी खर्च करै में कोय कोर-कसर नैं राखै छै, खान-पान सें लैकें सौंर-सजावट ताँय ; मतरकि कुछू जोंर-जेवरात बादे में दै कें बात रही जाय छै।

जखनी बच्ची पहिलों दाफी डोली सें उतरी कें ससुराली कें दुआरी पर गोड़ राखनें छेलै, आरो पति साथें-साथें सासों कें जे घोर अपमान ओकरा मिललों छेलै, ऊ खत्म होय कें जग्घा में एक सिलसिला बनी जाय छै। सम्पत बाबू आपनों बेटा सेमल कें बहू कें साथें लेन्हे समधियारों पहुँचै छै, जहाँ बाकी जेवर-जेबरात

वास्तें जानकी बाबू पर दबाब डालै छै। आपनों विपरीत हालतों कें बादो जानकी बाबू गहना-जेबर कें व्यवस्था करै छै, आरो सेमल ऊ गछलों-सब लैकें एक दिन लौटी जाय छै ; यहाँ तक कि बच्ची कें गला रों हारो ओकरों सुतला में खोली लै छै। सब-कुछ समझी कें जानकी बाबू सेमल कें नौकरी कें जोगाड़ लगाय छै, स्वास्थ्य-विभागों में ; मजकि सेमल इण्टरव्यू में भाग लेला कें जग्घा चुपचाप घोंर चली दै छै।

बच्ची कें भविष्य लेली चिंतित जानकी बाबू बच्ची कें पढ़ाना शुरू करै छै ; मतरकि सेमल कें अनैतिक व्यवहारों कें बात आपनों एक दोस्त सें सुनी कें सम्पत बाबू पतोहू कें फेनू सें मँगाय लै छै। बच्ची कें दुख कम नैं होय छै, यहाँ तक कि घोर उपेक्षा आरो आर्थिक अभाव कें कारणें बच्ची वाँहीं जनमली आपनों फूल हेनों बेटी रजनीगंधा सें भी सदाय वास्तें बिछुड़ी जाय छै। ससुराल में एक दियोर कमल छै, जेकरहै सें कभी कुंडली मिलला कें कारणें शादी लगै छेलै आरो जेकरों सीना में आभियों भाभी बच्ची वास्तें श्रद्धा छै।

जबें बच्ची दोबारा दूजीवियो होय छै तबें जानकी बाबू बच्ची कें ओकरों ससुराल सें लै आनै छै। नैहरे में बच्ची कें बेटी बिजली होय छै। हुन्ने, समय बीतला के साथें, देह आरो अर्थ सें जर्जर सम्पत बाबू, बच्ची लें करलों गेलों दुर्व्यवहार सें, दुखित सेमल कें ससुरों सें कुछ लै-दैकें ससुराले में बसै कें सलाह दै छै। सेमलें आपनों बाबू कें बात मानी लै छै।

सौभाग्य कें एक अध्याय खुलै छै। सेमल कें साथें-साथें बच्चियो कें नौकरी कें खबर छै। फेनू बच्ची माय कें कहला पर जानकी बाबू खाली दसबिघिया जमीने नैं करी दै छै, बलुक एक मकानों खरीदै छै। सेमल बच्ची कें ओकरों नौकरी कें जग्घा धनबाद पहुँचाय कें घुरी आवै छै, नवजात बेटी लेलें कपसती बच्ची कें छोड़ी। बच्ची ऊ सुनसान जग्घों में अपना कें काफी भयभीत महसूस करै छै, कि एक दिन पियक्कड़ पड़ोसी मिसिरजी ओकरों डेरा घुसी आवै छै। बच्ची सुरक्षा लेली चीखै छै। बी० डी० ओ० श्रीवास्तव आपनों बँगलावाला क्वार्टर सें निकली कें वहाँ पहुँचै छै आरो मिसिर कें वहाँ देखी कें ओकरा नौकरी सें हमेशे वास्तें निकाली दै के बात कहै छै। बी० डी० ओ० श्रीवास्तव बच्ची कें आपनों बहिन सें जरियोटा कम नैं मानै छै।

ई घटना कें कछुवे दिन बाद बच्ची कें आपनों बाबू कें खबर मिलै छै आरो ऊ आपनों घोंर भागलपुर लौटे लें तैयार होय जाय छै। बी० डी० ओ०

श्रीवास्तवो ओकरा आश्वासन दै छै कि ओकरों बदली वें मुंगेर कराय देतै।

भागलपुर ऐत्हैं सेमल आरो सेमल कें भाय, जे कि बच्ची कें नामें लिखलों मकाने में आबी कें रहें लागलों छेलै, भयभीत होय जाय छै। अबतक जानकी बाबू कें राजनीतिक प्रतिष्ठा कें लाभ उठाय कें सेमल आपनों बदली भागलपुर कराय लेने छेलै। बच्ची कें देखी कें सेमल ओकरा प्रति आपनों व्याकुलता देखाय छै। फेनू, ओकरों मनों में प्राप्त धोंन कें भोग-भाग लेली एक बेटा पावै कें भी किंछा जागी गेलों छै। तीने रोज कें बाद बच्ची कें नौकरी लें मुंगेर जाय लें पड़ै छै। सेमलो साथ जाय छै, मतरकि ट्रेनिंग वास्तें जल्दीये बच्ची कें पटना जाय लें लागै छै। बच्ची कें पति वेतन पावें सकें, एकरों ऑथोरिटी-स्लिप लिखी के ट्रेनिंग लें चली दै छै। हिन्नें सेमलें बच्ची कें वेतन तें उठाय लै छै, मजकि ओकरा भेजै नैं छै।

पति के व्यवहारों सें काफी दुखित होय आपनों नौकरी श्रीवास्तव सें पैरवी करवाय कें पटनाहे करवाय लै छै। अब ताँय बच्ची अश्वघोष नाम कें एक बेटा कें मायो बनी चुकली छेलै। बिजली बीहा योग्य होय चुकली छै। बच्ची एक बेर फेनू श्रीवास्तव जी कें सहयोग सें ओकरों शादी पूर्णियावाली रामसेवक बाबू कें बेटा सहजानंद सें ठीक करै छै ; मतरकि पहिलों सन्तानों क बीहा हेकै, हेकरों बाबू कें उपस्थित रहना एकदम जरूरी छै, यही सोची कें बच्ची आपनों पति लुग पहुँचै छै पुत्र अश्वघोष कें साथें ; मजकि सेमल नैं खाली श्रीवास्तव बाबू साथें ओकरों अनैतिक संबंध होय कें लांछन वै पर लगाय छै, बलुक जीवनों कें भय दिखाय कें ओकरा सें कागज पर दस्तखतो कराय लै छै, ताकि ऊ अश्वघोष कें नैं लै जावें पारें।

जिनगी सें एकदम थकली बच्चीं ऊ घोंर हमेशे वास्तें छोड़ी दै छै। बिजली कें शादी होय जाय छै। ओकरा अश्वघोष कें शादी कें खबर मिलै छै। बच्ची ठीक सें खुशो नैं हुवैं पारै छै कि श्रीवास्तव बाबू कें मिरतू सें ऊ फेनू टूटी जाय छै आरो थकली-हारली बिजली कें बीहा कें बीस बरसों कें बाद नौकरी छोड़ी-छाड़ी कें जिनगी कें शेष समय काशी कें विश्वनाथ मंदिर कें नगीच एक टुटलों-टाटलों मकानों कें सीलन-भरलों कोठरी में रहें लागै छै - आपनों अतीत आरो वर्तमानों कें बीच झुलतें होलों।

'अन्तहीन वैतरिणी' कें कथा-वस्तु येहे छै, पर यै उपन्यासों में वर्णन कें जे विस्तार होय छै ओकरा समेटियें कें कहला कें कारणें एकरा में संकोचन आबी

गेलों छै। काँहीं-काँहीं तें अपेक्षित वर्णन मिलबो करै छै, मजकि कै-एक बेर तें जेना लेखिका प्रसंग दिस संकेत-भर करी देने छै। यै लेली यै उपन्यासों के परिच्छेदो बड़ी छोटों-छोटों बनी गेलों छै। है उपन्यासों में ओरी सें लैकें आखरी ताँय कथा के मुख्य पात्र बच्ची कें मनोविज्ञान उभारै कें कोशिश एक हद ताँय सफल कहलों जैतै। निस्संदेह आखरी में मुख्य पात्रों कें मन:स्थिति आरो कथाशिल्प उदात्त बनें पारलों छै। यै उपन्यासों में भाषा-प्रयोग के एक रूप नीचें छै, --

'दिन आबी कें रोशनी अगजग में उलझी जाय छै आरो रात आबी कें गुजगुज अन्हार ; मतरकि आँख खुललों रहला पर बच्ची कें नैं तें रोशनीयें बुझावै छै आरो नैं तें अन्हारे। बस, धरती आरो आकासों कें स्मृति-आशा रेगिस्तान में छिण्डोबों नाखी ओकरों मनों में दौड़तें-हाँफतें रहै छै।''

भाग्य रेखा

'भाग्यरेखा' परशुराम ठाकुर 'ब्रह्मवादी' -लिखित उपन्यास छेकै। वर्ष १९९४ कें 'अंग-तरंगिनी (प्रवेशांक) में ई उपन्यासों कें एक अंश प्रकाशित छै, जेकरों ऊपर धारावाहिक लिखला में ज्ञात होय छै कि ई कृति कें लगातार निकालै कें योजना छेलै जे कोय कारणें रुकी गेलै। प्रकाशित अंशों कें एक अंश प्रस्तुत छै,--

"हो पाण्डेजी ! जे परेशानी सें अपने गुजरी रहलों छियै, ओकरा सें जादे परेशानी सें हमरा गुजरें लें पड़ी रहलों छै। ई तें जानबे करै छियै "हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश विधि हाथ''। तैहियो लोगों कें अपनों कर्म नञ् छोड़ना चाहियों। हिम्मत नञ् हारना चाहियों। सफलता-असफलता तें लोगों कें अपनों हाथों में रहै छै।''

तुलसी मंजरी

'तुलसी-मंजरी' श्रीकेशव कें पहिलों प्रकाशित उपन्यास छेकै, हालांकि रचना कें दृष्टि सें 'मरगांग' हिनकों पहिलों अंगिका-उपन्यास ठहरै छै, जेकरों प्रकाशन नैं होलों छै।

'तुलसी मंजरी' पहिलों दाफी 'आंगी' (जनवरी, १९९५) में सौंसे प्रकाशित होलों छेलै ; बादों में ई स्वतंत्र रूपों में अंगिका-संसद, भागलपुर सें १९९५ में प्रकाशित भेलै। डिमाई आकार कें उनहत्तर पृष्ठों में समैलों ई सही

मायने में अंगिका कें पहिलों उपन्यास छेकै, जेकरा पूर्ण रूपों सें आधुनिक कहलों जैतै। एकटा छोटों उपन्यास होला कें बादो यै में तीन-तीन पीढ़ी कें सामाजिक, आर्थिक कथा कें साथें-साथ ओकरों मनोविज्ञान कें बड़ी कुशलता कें साथ प्रकट करलों गेलों छै।

सौंसे उपन्यास पूंजी कें अत्याचार, अनैतिकता आरो दरिद्रता कें परेशानी, आक्रोश तथा परिवर्तित नया चेतना सें गुँथलों-गाँथलों गेलों छै।

दुखना, ई उपन्यासों कें मुख्य कथा-पात्र, गाँव कें महतो बड़का बाबू कें ड्योढ़ी कें एक हेनों मजूर छेकै जें परबों-त्योहारों में दोसरै कन सें गोबर लानी कें आपनों ऐंगनों लीपै छै। दुखना कें जनमला पर दुखना बाबू ओकरा ड्योढ़ी पर मजूर बनाय कें ई कहतें वहाँ से मुक्त होय जाय छै कि यहाँ आँख-मूँ बंद रखना छै, खाली कानें खुल्ला रखना छै।

ई उपन्यासों में नैं खाली बड़का महतो कें आर्थिक शोषण देखैलों गेलों छै, बलुक ओकरों यौन-शोषणों कें शिष्ट वर्णन छै। यही यौन-शोषणों कें कारणें ड्योढ़ी कें एक नौकरानी झिलियो छोटका महतो कें शिकार बनै छै, दुखना कें आँखी कें सामनाँ। दुखना कें क्रोध सें छोटका महतो केन्हों कें बची तें जाय छै, मतरकि दुखना ड्योढ़ी छोड़ी दै छै।

ड्योढ़ी सें निकलला कें बाद दुखना अपनी पत्नी भागवंती कें साथें श्रम करै छै, जेकरों श्रमें रंग लानै छै आरो फल-फूलवाला खेत दुखना कें पास होय छै। दुखना कें जीवन एक तरह सें एकदम बदली गेलों छै। एक तें खेती कें सुख, फेनू भागवंती कें बाढ़ में बहतें एक गाय मिललों छै जेकरों पुण्य-प्रताप सें भागवंती कें दुआरी पर बाछा-बाछी बँधी जाय छै। दुखना आपनों बेटी फूलपरी कें साथें बहुत सुखी छै।

मतरकि ओकरों छोटका भाय भिखना ड्योढ़ी कें छोटका महतो कें संगत में बिगड़तें चललों जाय छै ; भागवंती कें गोस्सा-विरोध कें बावजूदो घरों कें गाय-बैल खेत-पाथर सब भाय-भाय कें बीच बँटी जाय छै ; मजकि भिखना ऊ सम्पत राखौ नैं पारै छै ; एक पतुरिया कें पीछूँ पड़ी कें नैं खाली सब-कुछ बुड़ाय दै छै, बलुक जेलो कें हवा खाय छै। वैसिनी बातों सें दुखना टुटी कें रही जाय छै।

हुन्ने, सबसें छोटों - वही 'वावन हाथ के' - वाला ड्योढ़ीयो कें विनाश शुरू भै जाय छै। बड़का महतो कें मरला कें बाद छोटका महतो कें चंडाल-चौकड़ी गाँवों कें घोर अनाचार कें अड्डा बनावें लागलों छै। एक दिन ऊ ड्योढ़ी कें

माँजो'दी (मंजरी) ड्योढी छोड़ी कें गाँवों में नया चेतना रों विकास लेली 'मुक्ति-केन्द्र' खोली कें सक्रिय होय जाय छै। घूमी-घूमी कें अनपढ़ लोगों में शिक्षा आरो आत्मबल कें संचार करै छै, जबकि छोटका महतो धर्म कें नामों पर लोगों कें शोषण मे आरो सक्रिय होय जाय छै। माँजो'दी तंत्र-मंत्र कें घोर विरोधी छै, कैन्हें कि यहें-सब कें आड़ों में वें व्यभिचार कें शिकार होलों जनानी कें देखने छै। ओकरा तें एक दिन राते-राते आपनों ससुराली सें यहें-सब कें कारणें भागै तें पड़लों छेलै। रास्ता में एक बैलगाड़ी कें पुआली में नुकाय कें ऊ नैहर ऐलों छेली आरो तेहियें सें नैहरे में बसी गेली छै।

है उपन्यासों कें लेखक नें तीन खंडो में, तीन शीर्षकों सें, बाँटलें छै-- 'एक गाछ तुलसी', 'जहरों कें जंगल' आरो 'तुलसी मंजरी'। 'तुलसी मंजरी' खण्ड में दुखना कें आपनों बेटी कें शादी वास्तें परेशानी कें वर्णन छै ; केना कें आपनी एकलौती बेटी कें शादी में, तुलसी मंजरी कें भोज कराय कें जिद कें कारणें, ओकरा बचलों-खुचलों जमीन-जायदादों सें, छोटका महतो कें कारणें, वंचित होय तें लागै छै। मजकि, तुलसीयो (फूलपरी) बीहा कें बाद सुख से नैं रहें पारै छै। लोभी पति कें कारणें फूलपरी कें ससुराल सें भागी कें नैहरे में जान बचाय तें पड़ै छै। यही खण्डों मे ई कथा आबै छै कि केना भागवंती एक दिन जीवनों सें निराश फूलपरी कें लैकें माँजो'दी कें पास पहुँचै छै आरो केना माँजो'दी कें कारणें फूलपरी सच्चो में फूलपरी बनी जाय छै। माय कें दुआरी पर फेनू सें गाय बाँधी दै छै। माँजो'दी आपनों शिष्यसिनी कें सहयोगों सें नैं खाली गाँवों सें छोटका महतो कें चंडाल-चौपालों कें उखाड़ी फेंकै छै, बलुक आपनों आश्रमों कें मुख्य शिष्य अमर कें साथें फूलपरी कें जीवन जोड़ी दै छै, नारी कें अर्थ कें बतैतें हुवें कि खुद कें बान्ही कें मुक्त होय जाय कें साधना कें नामे छेकै नारी।

'तुलसी-मंजरी', एक अर्थों में, अंगिका कथा-साहित्यों कें अमूल्य कृति छेकै। ई उपन्यास होरी-संस्कृति कें कथा छेकै तें होरी के उत्तरवर्ती रूपो यहाँ छै। यहाँ भागवंती प्रेमचन्द कें 'धनिया' बनी कें ही खाली नैं आबै छै, ओकरों रूप, ओकरों क्रोध परवर्ती धनिया कें ही रूप छेकै। चाहे ऊ मनोविज्ञानों कें यथार्थ रहें, चाहे समाजों में प्रचलित धर्मो कें, चाहे अर्थ कें रहें आंकि प्रकृतिवाद कें, -- सबकें ई उपन्यासों में बड़ी बारीकी सें गुँथी-गाँथी कें खाड़ों करलों गेलों छै। उपन्यासकारों कें बिम्बवाली भाषा कें उपयोग ने ई उपन्यासों कें शैली कें चरम रूप प्रदान करी देने छै। है उपन्यासों कें

भाषा कें एक अंश नीचें छै,--

"बाप रे ! सिरों से पाँव तक लाल ! रत-रत लाल साड़ी आरो वैह्नें बिलौजो। गमकौआ तेलों सें चुपड़लों करिया भौंर केशों कें बीच्चों में टहटह लाल माँग वाला चान रङ मुखड़ा। वै पर भकभक लाल टिक्का। अपनों घोंर-ऐंगना में माँजो'दी हरदम्मे एहने लाली में लबालब भरलों रहै छै जबें कि बाहर गाँव-समाजों में घूमै खनी माँग-माथा छोड़ी कें बाकी सब-कुछ उजरों बगबग। मानसरोवरों कें हंस नाखी।'' (पृष्ठ २०)।

जटायु

वन-सम्पदा कें संरक्षणों कें समस्या लै कें लिखलों गेलों डॉ० अमरेन्द्र कें उपन्यास 'जटायु' पर्यावरण-संकटों कें कथा-वस्तु बनाय कें लिखलों गेलों छै, जेकरों एक बहुत बड़ों अंशों कें धारावाहिक प्रकाशन 'नई बात' (भागलपुर) में ३ नवम्बर १९९६ में होलों छै।

विधाता, जे कि ई उपन्यासों कें मुख्य नायक छेकै, ऊ गाँवों कें कटी रहलों वन-सम्पदा सें चिंतित छै आरो चाहै छै कि उजाड़ बनी रहलों गाँवों कें फेनू सें हरा-भरा बनैलों जाय। यै कामों में ओकरा रूपाँ, जे कि यै उपन्यासों कें नायिका छेकी, काफी मदद करै छै। गाँवों कें हितैषी लोगो विधाता कें साथ छै, पर पारस्परिक ईर्ष्या आरो आर्थिक लोभ कें कारणें गाँवों के कुछ युवक, विधाता कें साथीसिनीयों, सक्रिय छै। होली कें रात वही गाँवों कें कुछ लोगें गाछसिनी कें कटवैबों शुरू करै छै। विधाता कें ओकरों भनक लगै छै तें जंगलों में आपनों साथी जोगी कें साथें पहुँची जाय छै। विधातां लोगों कें गाछ काटै सें रोकै छै। आखिर में विधाता कें अड़ियल रुख कें कारणें विधाता आपराधिक आक्रमणों सें लहूलुहान होय कें वनों कें रक्षा में जटायु नाखी दम तोड़ी दै छै।

ई उपन्यासों कें आखिर में रूपा कें विक्षिप्त मनोदशा में अकस्मात् आलोपित होय जैबों, गाँवों कें वही जंगलों कें नगीच विधाता आरो रूपा कें स्मृति-स्थल बनबों, गाँवों में एक योगी कें ऐबों आरो अचानक एक दिन अलोपित होय जैबों आरनी प्रसंगों सें एक नीरस विषय कें कथानक कें साहित्यों कें कथा-वस्तु बनैलों गेलों छै, जेकरों शिल्प में रूपगत संरचना कें साथें-साथ भाषा-शिल्प, ओरी सें आखरी ताँय, मदद करतें रहलों छै। है उपन्यासों कें ओरी कें एक अंश यहाँ उद्धृत छै,--

"पुरबा कें झोंका सें आरी कें किनारी-किनारी झबरलों निसुआरी कें गाछसिनी हेने झूमी रहलों छेलै जेना महुआ रों निसाँव माथा पर चढ़ी गेलों रहें। पुरबा जेन्हैं कुछ तेज हुवै कि निसुआर एक-दोसरा सें लिपटी-लिपटी बाँसुली कें सुरों में गीत गावें लागै छेलै। आकि हेने लागै जेना निसुआरी कें बीचों में बैठी कें कोय बाँसुलिये टेरतें रहें। छिनमान मोहनेवाला बाँसुली - सुनत्हैं तन-मन बेसुध करी दैवाला।"

हम सुरमुख दास नैं छिकियै

'हम सुरमुख दास नैं छिकिये' आयकों सामाजिक-सांस्कृतिक अवमूल्यनों कें रेखांकित करतें एक व्यंग्य-प्रधान उपन्यास छेकै। १९९७ ई० कें ओरीये 'नई बात' (हिंदी दैनिक) कें रविवारीय परिशिष्ट में ई उपन्यास पनरों किस्तों में धारावाहिक रूपों सें प्रकाशित भेलों छै।

'सुरमुख दास' ई उपन्यासों कें मुख्य पात्र स्वतंत्रता-सेनानी कें पुत्र छेकै। आपनों बाबू नाखी सुरमुख दासों कें आपनों बीहा लेली भारी परेशानी उठाय लें पड़ै छै। पड़ोसी भगवान् दास रों कनियाँय ओकरा आपनों नैहर भेजै छै, गँजेरी काका कें बेटी बेला कें पसंद करै लें, मतरकि बेलाँ बीहा सें इन्कार करी दै छै। आखिर में सुरमुख दास कें बीहा तिरपित नामों कें एक आदमी कें बेटी मैना रानी सें होय छै।

मैट्रिक पास करला कें बाद सुरमुख दास नौकरी लें परेशान होय छै। एक जगह धोखा खैला कें बाद, एक शिक्षा-पदाधिकारी कें सहयोगों सें, ऊ एक इस्कूली में चपरासी बनी जाय छै।

दुर्गादास जाति सें राजपूत छेकै, मतरकि कबीरपंथी होला कें कारणें आपना कें दास कहै छै। एक दिन वें आपनों खेतों में मँगरुआ कें चोरी करतें देखी कें पीटी दै छै। समय देखी कें नवग्रह मिसिर दुर्गादास पर मँगरुआ सें केस करवाय दै छै। मँगरुआ कें जाति कें दारोगा अमरदेव पासवानें दुर्गादासों कें घोर अपमान करै छै।

सुरमुख दासो ताकों में रहै छै। एक दिन आपनों करतूतों सें वें दारोगा कें चोरी कें इल्जामों में अपमानित करै छै। चोटैलों दारोगा बदला लै कें फिराक में रहै छै।

विधान-सभा कें चुनाव कें समय आबै छै। आपनों बेटा कें किंछा पर

दुर्गादास उम्मीदवार कें रूपों में खड़ा होय छै। पूर्व-विधायक बटेर सिंह कें चुनाव हारी जाय कें भय होय छै आरो एक दिन एक ट्रेकर पर एक मुसलमान उम्मीदवारों कें पोस्टर चिपकवाय कें दुर्गादास कें हत्या करवाय दै छै। शहरों में दंगा फैली जाय छै। फिरौती माँगै कें खेयालों सें लखिन्दर पहलवान एक मुसलमानों कें बच्चा कें उठाय लानै छै, मजकि सुरमुख दासों कें ई जेन्हें मालूम होय छै तेन्हें ऊ केन्हों कें बचवा कें निकाली कें ओकरों घोंर पहुँचाय लें चली दै छै।

रास्ता में दारोगा अमरदेव पासवान मिली जाय छै। वें ओकरा पर अपराधों कें इल्जाम लगाय कें तब तक मारै छै, जब ताँय ऊ मरणासन्न नैं होय जाय छै। तभैं सुरमुख दास कें अस्पताल पहुँचाय छै। वहाँ नर्स कें रूपों में नियुक्त बेलाँ सुरमुख कें पहचानी लै छै। तखनीये अस्पतालों में एक आरो मरणासन्न घायल मरीजों कें लानलों जाय छै जे कि सुरमुख दास सें बहुत अधिक मिलै छै। बेला नया मरीजों कें सुरमुख कें स्थान पर राखी कें सुरमुख कें आपनों घोंर रखी आवै छै। भिहाने ताँय नयका मरीज मरी जाय छै आरो ओकरै साथ ई खबर फैली जाय छै कि सुरमुख दास कें मौत होय गेलै।

फरू पार्टी नेतासिनी कें जुटाव हुवें लागै छै। हत्यारा कें सजाय आरो मृतक कें एक लाख रुपया दै कें बातों पर आन्दोलन शान्त होय छै। हुन्नें, सुरमुख आरो बेला काँहीं आरो जग्घों में चली दै छै, जहाँ दोनों साधु आरो साध्वी बनी कें जीवन काटें लागै छै।

बार-बार अखबारों में सुरमुख कें फोटो छपला सें दारोगा अमरेदव शक जाहिर करै छै कि ऊ स्वामी नैं, सुरमुख दासे छेकै। हो-हंगामा होय छै। पत्रकार सिनी स्वामी सुरमुख के पास पहुँचै छै, मतरकि सुरमुख कें साथें बेला भी साफ-साफ इन्कार करी जाय छै कि ऊ सुरमुख दास छेकै। आखिर में मैना रानी सें सुरमुख कें पहचान करवैलों जाय छै, मतरकि मैना रानी (सुरमुख कें पत्नी) सुरमुखो कें पहचान होय गेला पर एक लाख टाका नैं मिलै कें स्मरण करी कें यही बात कहै छै कि ई सुरमुख दास नैं छेकै। तबें लोगहौं मानी लै छै कि ई सुरमुख दास नैं छेकै। एक्के चेहरा कें दू आदमी होला कें कारणें एत्ते बड़ों भ्रम होय गेलै। सभैं सुरमुख दासों कें हमेशे लेली भुलाय दै छै।

'हम सुरमुख दास नैं छिकियै' अंगिका में हास्य-व्यंग्य कें पहिलों उपन्यास छेकै, जेकरों कै-एक पात्र जेना, सरंगपताली, गद्दल गुरुजी, बिनडोलिया, आपनों-आपनों नामों कें पीछू कें कथा आरो व्यवहरों कें है उपन्यासों में

हास्य-व्यंग्यों कें वातावरण बनाय में सफल होलों छै। स्वयं ई उपन्यासों कें नायको यै में कम भूमिका नैं निभावै छै। सौंसे उपन्यासों में ग्रामीण संस्कार, जातिवाद कें प्रति नया उत्साह, अपराधनीति कें खेल, सांस्कृतिक मूल्यों कें विघटन कें साथें हृदय पर भौतिकवादी सत्ता कें शिकंजा आरनी कें यथार्थो कें उपन्यासकार विजेता मुदगलपुरी नें बड़ी नगीच सें देखने-उठैनें छै। सामाजिक यथार्थ कें तिक्तता कें उपन्यासकार नें हास्य-व्यंग्यों कें छौंक सें कम करतें गेलों छै। है उपन्यासों कें एक अंश नीचें छै,--

"नैं महाराज! विवाह कें, बियाहो कें एगो उमर होय छै। ऊ खतम भे गेलै। साल कें अन्तिम लगन पार भेइ गेलै, लेकिन बियाह कें कोय संभावना नैं बुझैलै। दुर्गादास कें लागलै, जेना साँझ के पथ कें इँतजार करैत रोगी कें थर्मामीटर बुखार करार दै छै ओनाहिये।

फिर बियाह केना भेलै!

महापुरुष कें नाम लेइ कें वैतरिणी पार करै कें चलन आपनों देश में पुरानों छै। एकरे फायदा लेलकै दुर्गादासें, गाँधीजी कें अछूतोद्धार-आन्दोलन तखनी जोर पर रहै। दुर्गादास ऊ आन्दोलन में पत्नी-कामना सें घुसलै, अछूतोद्धार लेली नैं।'' ('नई बात' ; ४ मई, १९९७ ई०)।

गुलबिया

'नई बात' (दैनिक, भागलपुर) में ८ अप्रैल, १९९७ सें धारावाहिक रूपों में प्रकाशित होलों 'गुलबिया' श्रीमती आभा पूर्वे कें तेसरों उपन्यास छेकै, जे कथा-वस्तु आरों शिल्प कें दृष्टियों सें श्रीमती पूर्वे कें पहिलकों दुन्नों उपन्यासों सें अधिक मजबूती लैकें उपस्थित होलों छै।

है उपन्यासों के मुख्य नायिका 'गुलबिया' केला-खेतों में काम करैवाली मजूरिन छेकी, जे वही खेतों में एक मजूर बलेसर सें आसक्त छै। मालिकों सें नैं पटला पर जबें बलेसर ऊ खेतों सें निकलै छै तें गुलबियो ऊ खेत छोड़ी दै छै आरो बलेसरे कें साथ ओकरे केला-खेतों में काम करें लागै छै जेकरा बलेसरें महाजनों सें कर्जा लैकें शुरू करै छै।

बलेसरों कें सफल खेती देखी कें ओकरों पहिलकों मालिक सशंकित होय उठै छै आरो बलेसरों कें मनोबल कें तोरै कें खेयालों सें गुलबिया कें भाय पर दबाब डालै कें गुलबिया कें बीहा गुलबिये कें भाय कें साला सें

कराय दै छै। महाजन आरो मालिकों कें षड्यंत्रों सें हिन्ने बलेसरों कें खेती घाटा में लुटी जाय छै।

हुन्नें गुलबिया ससुरालवाला कें यंत्रणा सहला कें बादो बलेसर कें नैं भुलें पारै छै। आपनों उद्देश्यों में सफलता लेली गुलबिया आपनों जीवन आपनों पति आरो ससुरालवाला कें अनुकूल करी लै छै। विश्वासों कें सबसें बड़ों कारण बनै छै गुलबिया कें माय बनी जैबों। यही विश्वासों कें लाभ उठाय कें एक दिन गुलबिया आपनों पति कें साथें आपनों नैहरों चली पड़ै छै।

नैहरा पहुँचत्हैं गुलबिया रास्ते में गाड़ी रोकवावै छै आरो आपनों पति कें बच्चा थमाय कें गाँवों कें मंदिर दिस बढ़ी जाय छै, जहाँ कभियो ऊ आरो बलेसर एक-दोसरा कें होय कें कसम खैने छेलै। ओकरा विश्वास छै, बलेसर आभियों वहीं होतै, ओकरों इन्तजारी में। बातो वहें छेलै। गुलबिया आपनों साथ लानलों सिनूर कें बलेसर कें हाथों सें आपनों माँगों में डलवाय लै छै,-- भगवानों कें साक्षी राखी कें। फेनू, दोनों हमेशा-हमेशा लेली आपनों गाँव, आपनों समाजों सें दूर होय जाय छै।

यै उपन्यासों में लेखिका परिवेश-वर्णन आरो पात्र-चित्रण में भाषा-शैली के प्रति बहुत सावधान रहली छै। नीचें भाषा-शैली के एक उदाहरण देखलों जाय --

"मंगरू गेहुँआ रंग, नाटा कद कें एक मजदूर छै। बदन भरलों आरो माथा चौड़ा रङ छै। माथा पर कारों-कारों घनों बाल। नाक चौड़ा आरो मोटों। ठोर थोड़ों चौड़ा, मतरकि पतरा। आँख बड़ों-बड़ों नैं, मतरकि छोटो-छोटो नैं। चेहरा पर हरदम हँसी। मनों में एक-टा दंभो कि ऊ कलकत्ता शहर सें घुरी ऐलों छै। ओकरों किस्मतें साथ देतियै तें वें मजदूरी नैं करतियै। जानै छै कि मजदूरसिनी रों की हैसियत होय छै।"

-- 'नई बात', २२ अप्रिल, १९९७

मरगांग

'मरगांग' श्रीकेशव कें दोसरों अंगिका-उपन्यास छेकै, जेकरों एक बड़ों अंशों कें प्रकाशन २८, २९, ३० मई, १९९७ कें 'नई बात' में होलों छै।

'मरगांग' कें कथा-वस्तु सम्पूर्ण रूपों सें ग्रामीण परिवेशों कें घेरतें होलों छै, जेकरा में उत्तरी अंग-जनपद (कोशी अंचल) कें सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेशों

कें चढ़ाव-उतार कें चित्र प्रस्तुत छै। लाल बाबू, है उपन्यासों कें एक पात्र, गाँवों कें एक विशाल, छायादार पीपर गाछ नाखी छै, मतरकि हुनकों बेटासिनी गाछ में खोड़र-कोटर रङ सिद्ध होय छै।

लाल बाबू कें बड़का बेटा रघुराम अपनी मास्टरनी कनियाँय कें पीछूं बेहाल रहै छै, कनियाँय कें नौकरी जोगै में घरों कें पैसा पदाधिकारी कें पीछूं बहैतें। दोसरों बेटा पुरू हाकिम छेकै, जेकरा पढ़ावै-लिखावै में लाल काकी कें एक-एक गहना बिकी जाय छै, मतरकि हुनी घोंर कभिये-कभार आबै छै, वहू पर समय पर कभियो नैं। लाल काका कें मिरतु पर जबें रघुराम ऐलै आरो मुशहरा कें पाँच सौ टाका दैकें जे गाँव छोड़लकै तें कभियो नैं लौटलै।

मुशहरा गाँवों कें एक अजगुत आदमी छेकै। ओकरों गुरु छेकै जंगला जहाज। जंगला छेलै तें अपराधी, मतरकि ऊ गाँवों में भैंसवाड़ी आरो कीर्त्तन आरनी सें सामान्य बनी जाय छै। मतरकि देखतहैं-देखतहैं वें आपनों पापों में सौंसे गाँवों कें समेटी लै छै। जात-पाँत कें भेद-विभेदों कें बिण्डोवों उड़ें लागै छै। समाजों कें रिस्ता बिखरी जाय छै।

लाल काकी कें तेसरों लड़का मनु, जेकरों महत्व ई उपन्यासों में बहुत छै, आधुनिक जीवन-जगत कें सच्चाई समझतें हुवें आखिर आपनों मांटी पकड़ी लै छै, जे मांटी कि कभियो नैं मरे छै, सृजन जेकरों धर्म छेकै।

'मरगांग' भारतीय समृद्ध गाँवों कें बनी गेलों आयकों दुर्दशा कें भयावह चित्रे छेकै, जै में मरगांग कें 'गांग' (गंगा) बनावै कें संदेश उपन्यासकार नें ई उपन्यासों कें माध्यम सें प्रस्तुत करनें छै। ओकरों एक अंशों कें बानगी लेलों जाय--

"बाबू नें भी कहनें रहै - 'नूनू, गंगा की कहियो मरै छै ? कहियो नैं। बस, हमरों-तोरों पापों सें डोम-डाबर बनी जाय छै ; ..... मरियों कें गंगे रहै छै। तुलसी कें पत्ता छोटों चाहे बड़ों हुएँ, तुलसीये रहै छै ; आपनों धरमों सें आदमी कें धरम छेकै जीना आरो दोसरहौ कें जीयें देना।''

पियावासा

'पियावासा' प्रसिद्ध गीतकार श्रीराम शर्मा 'अनल' कें उपन्यास छेकै, जेकरों कथा-वस्तु प्रेम आरो सामाजिक आदर्शों कें ताना-भरनी सें तैयार करलों गेलों छै।

रूपों, जे कि ई उपन्यासों कें मुख्य नायिका छेकै, आपनों कलाकार भाय के संरक्षण उठत्हैं गाँवों कें एक क्रूर व्यक्ति कें शिकार होतें-होतें तबें बचै छै जबें वहें गाँव कें गुरुजी ओकरों अपनी बेटी बनाय कें घोंर लै आनै छै। गाम्है कें एक समृद्ध ब्राह्मण परिवारों कें लड़का अमर, जे बाहर सें डाक्टरी पढ़ी कें लौटलों छै, रूपो कें शील-गुण कें कारण ओकरा मनों सें आपनों मानै छै, मतरकि जातीय कुलीनता-अकुलीनता कें कारणें रूपो कें शादी अमर सें नैं होय कें एक हेनों लड़का सें होय छै जे रूपों कें मानसिक यंत्रणाँ कें साथें शारीरिक यंत्रणाओ पहुँचाय छै।

विवश होय कें रूपो अपनी दयालु-सास कें सहयोगों सें फिरू गुरुजी कें घोंर लौटी आबै छै।

आपनों पिता कें मृत्यु कें बाद अमर, जें कि रूपो द्वारा देलों जन-सेवा लें जमीन पर अस्पताल चलाय रहलों छेलै, रूपो कें सब हालत सें परिचित होय कें ओकरा सें अपनों बीहा कें प्रस्ताव राखै छै। अमर कें माय्यो कें यै में स्वीकृति होला कें कारणें रूपो आरो अमर विवाह-बंधनों में बँधी जाय छै।

'पियावासा' आपनों शीर्षकों सें लैकें आखिर तक प्रेम-संवेदना सें संचालित होतैं उपन्यास छेकै, जेकरों पूरा-पूरा प्रभाव उपन्यास-भाषाओ पर देखलों जावें सकें छै। कवि-व्यक्तित्वे कें ई दबाव छेकै कि वै उपन्यासों में प्रकृति कें ग्राम्य वैभव यहाँ आपनों विराटता में ऐलों छै।

केन्द्रावती

शिल्प आरो विषय-वस्तु कें दृष्टि सें विवेकानन्द झा-कृत उपन्यास 'केन्द्रावती' आधुनिक अंगिका गद्य कें एक उल्लेखनीय कृति छेकै। सम्पूर्ण रूपों सें अप्रकाशित है उपन्यासों में केन्द्रीय कारा कें उपन्यासकार विवेकानन्द जी नें नायिका कें रूपों में चित्रित करने छै, जे कि कोय अभिशापवश आपनों बिछुड़लों नायकों कें आगमन में चिर-प्रतीक्षारत छै। वही क्रम में जबें कोय नया अपराधी आवै छै तें केन्द्रावती ओकरों परिचय जानै लें व्यग्र होय जाय छै। येहें ढंगों सें शुरू होलों गेलों छै एक अपराध-कथा कें बाद दोसरों अपराध-वृतान्तों कें शृंखला।

ई उपन्यासों कें अंत भारतीय चिन्तन में विश्वात्मा-दर्शन सें होय छै, जेकरों दर्शनों कें प्रतीक्षा केन्द्रावती कें छै।

लोक-कथा-लेखन रूढ़ि कें स्पर्श सें रोमांचित-स्पन्दित ई उपन्यासें जहाँ आधुनिक समाजों कें अपराध-मनोविज्ञान कें समक्ष राखै छै वाँहीं भारत में कारा-व्यवस्था कें इतिहासो कहै में ई कृति साहित्यिक रूपों में सफल छै।

उपन्यासकार के स्वयं न्यायाधीश होला कें कारणें केन्द्रावती आपनों केन्द्रीय लक्ष्यो कें पूर्ति में सफल रहलों छै, ई कहलों जैतै।

☆☆☆

१९९५ ई० सें १९९७ ई० कें बीच देवेन्द्र, सुधाकर आरो अनिरुद्ध प्रसाद विमल कें भी आपनों-आपनों अंगिका-उपन्यासों कें अंश-पाठ गोष्ठीसिनी में होतें रहलों छै। वैसिनी अंश-पाठों कें आधारों पर कहलों जावें सकै छै कि ई तीनों उपन्यासकारों कें उपन्यास नया समाजों कें खाली परिवर्तित सामाजिक दशाये कें चित्रित नैं करै छै, बलुक पात्र-चित्रण में उपन्यासकारसिनी नें जोंन मनोवैज्ञानिक शैली कें स्वीकार करनें छै वै सें ई-सब उपन्यासों कें आधुनिक कृति होय कें श्रेष्ठता मिलतै।

पिछलका कुछेक दशकों सें अंगिका में उपन्यास-लेखन कें प्रवृति बड़ी तेजी सें बढ़लों छै। विषय कें दृष्टि सें अगर ई-सब उपन्यासों कें वैयक्तिक आरो सामाजिक वर्गो कें भीतर राखलों जैतै तें शैली कें दृष्टि सें यैसिनी में सर्वश्री अनूपलाल मंडल, अनिरुद्ध प्रभास, श्रीकेशव, सुमन सूरो, देवेन्द्र, आभा पूर्वे, अनिरुद्ध प्रसाद विमल, सुधाकर, परशुराम ठाकुर 'ब्रह्मवादी', विजेता मुद्गलपुरी, अमरेन्द्र आरनी कें अंगिका-उपन्यासों में यथार्थवादी, मनोवैज्ञानिक, चेतनप्रवाह, प्रत्यकज्ञान, फोटोग्राफिक आरनी अनेक आधुनिक कथा-शैली कें चरम विकास मिलै छै। डायरी, पत्र, आत्मकथा-शैलियो कें कलात्मक नियोग यै-सब उपन्यासों कें एक वयस्क रूप प्रदान करै छै, यै में कोय वाद-विवाद कें गुंजाइश नैं छै।

अंगिका कें उपन्यास-साहित्यों कें एक विशेष खासियत ई छेकै कि यै में खाली यथार्थ-चित्रण कें नामों पर सामाजिक कूड़ा-कर्कट उठाय कें राखै कें प्रयास नैं भेलों छै ; बल्कि ओकरों जग्घों पर यैसिनी उपन्यासों में ऊ जीवन-द्रवों कें ढूंढ़ै कें पुनर्प्रयास मिलै छै, जै सें साहित्यों कें कालजयी स्वरूप मिलै छै।

अंगिका उपन्यासों कें एक आरो उल्लेखनीय पक्ष ई छेकै कि अधिकांश उपन्यासों में नारी कें एक खास विराटता में उभारै कें कोशिश छै। चाहे ऊ आभा पूर्वे कें 'परबतिया' हुवें या 'अन्तहीन वैतरिणी' आकि 'गुलबिया', सुमन सूरो कें 'सुभद्रांगी' हुवें आकि श्रीकेशव कें 'तुलसी मंजरी', अनिरुद्ध प्रभास कें 'छाहुर' हुवें आकि अमरेन्द्र कें 'जटायु' उपन्यास, सबमें स्त्री कें विराट् स्वरूप प्राप्त छै। की ई सायास छेकै आकि अनायास ? अंगदेश आखिर पुराण-काल्हौ में 'स्त्री-देश' कें नामों सें विख्यात रहलों छै।

सेतुबंध

'सेतुबंध' डॉ० सीताराम शर्मा कें लिखलों उपन्यास छेकै जे कि पाण्डुलिपिये में पड़लों छै, मतरकि एकरों कुछ प्रकाशित अंश देखैलें मिललों छै। ई अमरपुर अंचलों कें भूगोल पर घटित होयवाला दू युवक-युवती कें कहानी छेकै जे कि आपनों सामाजिक काम आरो नैसर्गिक सहयोगों सें वै अंचलों कें नया स्वरूप दै में सक्षम होय छै आरो यै तरह सें समाजों कें आदर्श बनी जाय छै। यै उपन्यासों कें भाषा साहित्यिक आरो उद्देश्य कें अनुकूल पात्रों कें चरित्र-चित्रण आरो विचार-प्रतिपादन में उपन्यासकार शर्मा जी सतत सावधान देखलों जाय छै।

नाटक

आधुनिक समयों में अंगिका नाटकों कें मंचीय आरो रेडियोधर्मी दोनों रूपों कें विकास मिलै छै ; मजकि है बात सही छै कि आय जत्तें अंगिका कें रेडियो-नाटकों कें लोकप्रियता आरो समृद्ध विकास हासिल छै, ओत्ते मंचीय नाटकों कें प्राप्त नैं हुवें पारी रहलों छै। एकरों एक मुख्य कारण छेकै - रेडियो आरो दूरदर्शनों कें दबाव। मंचीय नाटकों कें लेली अरुचि कें एक कारण आदमी कें व्यस्तताओ सें इन्कार नैं करलों जावें सकै छै। फेरू, अर्थ आरो विस्तृत यश-लाभ कें दृष्टियो सें रेडियो-नाटक एक नाटककार वास्तें जत्तें उपयोगी सिद्ध होलों छै, ओत्तें आय मंचीय नाटकों सें संभव नैं रही गेलों छै। यहें कारण छै कि आधुनिक समयों में जत्तें रेडियो-नाटकों कें लेखन-विकास हुवें पारलों छै, ओत्तें मंचीय नाटकों कें नैं होलों छै।

रेडियो-नाटक

रेडियो-नाटक ध्वनि-नाटक छेकै; कैन्हें कि नाटकों कें ई शैली सौंसे रूपों सें ध्वनिये पर आधारित होय छै। यै लेली रेडियो-नाटक आपनों रूप-स्वरूप में दृश्य याने मंचीय नाटकों सें बहुत अधिक भिन्नता लेलें रहै छै।

सबसें पहिलें तें ई कि रेडियो-नाटक पूर्णत: श्रव्य नाटक छेकै ; यहां आँखों कें नैं, खाली कानों कें उपयोग होय छै। यही कारणें रेडियो-नाटकों में दृश्य-नाटक नाखी नैं तें आंगिक अभिनय करतें पात्रों कें देखैलों जावें सकै छै, नैं तें वातावरण आकि परिवेशों कें जानकारी लें दृश्य-विधाने करलों जावें सकै छै,

नै तें पात्रों कें भेष-भूषाये दर्शैलों जावें पारें, जबें कि मंचीय नाटकों में ई-सबकें सुविधा सें उपयोग होय छै।

है अंतरों कें साथें-साथ आरो कुछ खास अन्तर छै रेडियो आरो मंचीय नाटकों में ; जेनाकि, मंचीय नाटकों में नाटककारें जे रङ ढेर पात्रों कें उपयोग करी लै छै, आकि करी लियै पारें छै - सबके अलग-अलग पहचान सुरक्षित रखतें हुएँ - ऊ रेडियो-नाटकों में असंभव छै। यही लेली बड़ों-सें बड़ों रेडियो-नाटकों में पात्रों कें संख्या सीमिते होय छै। यहू बात छै कि मंचीय नाटकों में कै-एक पात्र एक साथें हाजिर हुवें पारै छै, मजकि रेडियो-नाटकों में है कहाँ संभव छै ? यहाँ तें गिनलों-गुँथलों पात्र बारी-बारी सें आबै-जाय छै। श्रोता कें, पात्र-ग्रहण लेली, है बहुत जरूरी छै।

रेडियो-नाटकों में पात्रसिनी कें संख्या कम होय छै, यै लेली ओकरों कथा-वस्तुओ मंचीय नाटक नाखी लम्बा-चौड़ा आरो उलझाववाला नैं होय छै, नै हुवें पारें। बड़ों-सें-बड़ों रेडियो-नाटक आधों घंटा कें होय छै, अपवाद छोड़ी कें। जों रेडियो-नाटकों कें कथा-वस्तु अपवाद वाला होतै आरो सरल नैं, तें ऊ श्रोता पर आपनों अपेक्षित प्रभाव नैं छोड़ें पारतै। रेडियो-नाटकों में पेचीदा कथावस्तु कें उठावै कें जग्घों में नाटककारों कें मुख्य जोर पात्र आरो कथावस्तु कें मनोवैज्ञानिक रूपों पर ज्यादा केन्द्रित रहै छै। लगभग सब अच्छा रेडियो-नाटकों में है खूबी जरूरे विराजमान रहै छै।

यहाँ रेडियो-नाटकों कें ऊ खासियतो पर थोड़ों विचारी लेबों जरूरी होतै जे कि मंचीय नाटकों कें नसीबों नैं छै। रेडियो-नाटकों में जोंन ढंगों सें गतिशील दृश्यों कें देखलैलों जावें सकै छै, होनों मंचीय नाटकों में नैं ; आरो, नैं तें मंचीय नाटकों कें ऊ सुविधे प्राप्त छै कि वहाँ सभ्भे रङों कें दृश्य देखलैलों जावें सकें ; जेना कि कोय समुद्र, कोय नदी आकि नदी में चलतें नाव आरो समुद्र में उठतें ज्वार कें, जोंन कि रेडियो-नाटकों में खाली ध्वनि कें प्रभावों सें आसानी सें उपस्थित करै सकै छै।

ध्वनि रेडियो-नाटकों कें प्राण होय छै आरो ध्वनिये कें कुशल प्रभावों सें रेडियो-नाटककार नैं खाली दृश्य कें रूप दै छै, बलुक दृश्योतर विधानो ध्वनिये पर आश्रित होय छै। यही सें रेडियो-नाटक पूर्णरूपेण ध्वनि-नाटक होय छै।

अंगिका में रेडियो-नाटकों कें शुरूआत रेडियो-रूपक 'अंगिका अंग लगैबै' (अमरेन्द्र) कें प्रसारण सें होय छै, जे कि पहिलों बेर १ सितम्बर, १९८२ ई० में प्रसारित करलों गेलों छेलै। अंग-जनपदों कें इतिहास आरो भूगोल

कें तथ्यों पर आधारित ई रेडियो-रूपक तत्कालीन कार्यक्रम अधिशासी श्री सुरेन्द्र अग्याल कें प्रस्तुति में छेलै। ३० सितम्बर, १९८२ ई० में श्री उमेश कें रेडियो-नाटक 'बरतुहारी' कें प्रस्तुति श्री वीरेन्द्र शुक्ल जीं करनें छेलात।

हौ रूपकों कें बाद रेडियो-नाटकों कें ढेरे प्रकार श्रोता कें सम्मुख ऐलै। वै में रेडियो-नाटक, रेडियो-रूपान्तर, संगीत-रूपक आरनी प्रमुख छै। यहू में कोय शक नैं कि रेडियो-नाटकों कें विकास में जौंन लेखकों कें खास योगदान रहलों छै, हुनकासिनी में श्री आमोद कुमार मिश्र आरो श्री सत्य नारायण प्रकाश मुख्य छेकात। आमोद कुमार मिश्र जी कें आकाशवाणी, भागलपुर सें प्रसारित होलों नाटक छेकै - 'फुसरी', 'भोज खाय कें चस्का', 'राम-रहीम'। धारावाहिक रूपों में प्रस्तुत आमोद कुमार मिश्र जी कें रेडियो-नाटक 'जागी उठलै गाँव' बहुत लोकप्रिय रेडियो-नाटक छेकै जेकरों प्रस्तुति तेरह भागों में श्री वीरेन्द्र शुक्ल नें करलें छेलात। श्री वीरेन्द्र शुक्ले कें प्रस्तुति में डॉ० नवल किशोर सिंह कें तेरों खंडवाला धारावाहिक रेडियो-नाटक प्रसारित होलों छेलै। सात भागों में विभाजित डॉ० रामप्रवेश सिंह कें रेडियो-नाटक 'नयका बिहान' भी वै परंपरा कें मजबूत नाटक छेकै।

रेडियो-नाटक साहित्यों कें श्रीवृद्धि में दोसरों प्रमुख नाम छेकै -- श्री सत्यनारायण प्रकाश। अब ताँय हिनकों कै-एक लोकप्रिय अंगिका नाटकों कें प्रसारण आकाशवाणी, भागलपुरों सें करलों गेलों छै, 'अंगिया' (अगस्त, ९१), 'बड़का जिलेबी' (दिसम्बर, ९४), 'पुसभत्ता' (दिसम्बर, ९५), 'नया सुरुज' (मार्च, ९६), 'आबें कहियो नैं भुलैबै' (फरवरी, ९७), 'सोचै कें फेर' (१९९७)। हैसिनी रेडियो-नाटकों कें अतिरिक्त १९९७ ई० कें अगस्त सें डॉ० राम प्रवेश सिंह कें लिखलों धारावाहिक रेडियो-नाटक 'नयका बिहान' कें प्रसारण करलों गेलै। भागलपुर आकाशवाणी सें प्रसारित कुछू आरो चर्चित रेडियो-नाटकों में -- 'घूरन पंडित' (रीता झा), 'दुलरिया' (शिवशंकर साह), 'नया समाज' (अजीत दास), 'नयका बिहान' (रामेश्वर प्रसाद सिंह) प्रमुख छै।

प्रमुख रेडियो-नाटकों सें अलग रूपान्तरित रेडियो-नाटक-लेखन कें विकास जोरों पर छै। आकाशवाणी, भागलपुर सें प्रसारित प्रेमचन्द्र कें कहानी 'पूस की रात' आरो 'पंच-परमेश्वर' कें रेडियो-रूपान्तर काफी लोकप्रिय रहलै। डॉ० अमरेन्द्र आरो श्री जय प्रकाश मिश्र रों रेडियो-रूपान्तर क्रमशः 'पूस कें रात' (जून, ९२) आरो 'पंच-परमेश्वर' केरों प्रसारण १९९२ ई० में करलों गेलों छेलै।

रेडियो-रूपान्तर वास्तें ई बहुत जरूरी छै कि मूल कथा कें निर्वाह कें साथें-साथ ओकरों मुख्य पात्रों कें रक्षा हुवें, आरो ऊ स्थलों कें प्रमुखता मिलें जे कि संवेदना कें दृष्टि सें बड़ी महत्व कें होय छै। ऊपर कें दोनों रूपान्तरित नाटकों में एकरों मजबूती सें निर्वाह होलों छै ; मतरकि 'पूस कें रात' में रूपान्तरकार नें आवश्यकतानुसार गीत आरो नया संवादों कें योजना सें कहानी कें नाटक रूपों कें कुछू आरो निखारें पारलें छै। ई बात सही छेकै कि रेडियो-नाटक कोय कहानी या उपन्यासों कें रेडियो रूप ही होय छै, मतरकि रूपान्तरकारें जबें कहानी आकि उपन्यासों कें रेडियो कें लायक बनाय छै तबें एकरों रचना-प्रक्रिया जे होय छै ऊ रूपान्तर कें मौलिक रचना-प्रक्रिया होला कें कारणें मूल कृति आपनों नया स्वाद कें साथें श्रोता कें सामने आवै छै। 'पूस कें रात' आरो 'पंच-परमेश्वर' रेडियो-रूपान्तर ई बातों कें सबूत रङ रहलों छै। समय-समय पर भागलपुर केन्द्रे सें अंगिका कें साथें-साथें हिंदी में 'झलकियाँ' कें प्रस्तुतियो बहुत लोकप्रिय होलों छै। 'झलकियाँ' रेडियो-नाटकों कें लिखित आरो अलिखित रेडियो-भेद मानबों ठीक होतै। अंगिका रेडियो-नाटकों कें मुख्य तीन प्रकार आकाशवाणी कें भागलपुर केन्द्र सें प्रसारित होतें रहलों छै जें कि रूपक, गंभीर प्रहसन, रूपान्तर-नाटक झलकियाँ कें भेदों में आवै छै। श्री सत्यनारायण प्रकाश आरो श्री आमोद कुमार मिश्र कें कै-एक रेडियो-नाटक प्रहसनों कें सुन्दर रूप प्रस्तुत करै छै।

रेडियो कें सीम्हे कें कारणें विषय-वस्तु कें दृष्टि सें अंगिका रेडियो-नाटकों कें विभिन्न भेद मिलै छै। ज्यादातर हेनों नाटक सामाजिक-आर्थिक आरो समस्या-प्रधान छै ; मतरकि मौका पैत्हैं नाटककार राजनीतिक विसंगति पर चोटो करै में नैं चुकलों छै। सब्भे प्रकारों कें रेडियो-नाटकों कें देखला सें एक कंडिका में ई कहलों जावें सकै छै कि अंगिका कें रेडियो-नाटककार रेडियो कें सीमा सें बाधित होतें रहत्हौं आपनों रचनात्मकता कें क्रियाशील बनैलें राखनें छै, जेकरा सें कोय रचनाकार आपनों समयों कें आरो समयों कें गति दैवाला भी होय छै।

रंगमंचीय गद्य-नाटक

अंगिका रेडियो-नाटकों कें तुलना में प्रकाशित रंगमंचीय नाटकों कें संख्या बहुत कम छै। आबें हेकरों समृद्धि लें रेडियो-नाटके कें रंगमंचीय नाटकों में बदली कें प्रकाशित करैलों जाय रहलों छै। हेकरों आवश्यकता यै लेली भी होय

गेलों छेलै कि अंग-जनपदों के पिछड़लों इलाकासिनी में वैसिनी के मंचनों से नया वैज्ञानिक सोचों के रास्ता खोललों जावें सकें।

हेना के तें अंगिका भाषा में लोक-नाटकों के एक समृद्ध परम्परा मिलै छै। रामलीला, रासलीला, जातरा, नौटंकी, भगैत, डोमकच, जट-जटिन, सामा-चकेवा, जोगिड़ा आरनी हेन्हें लोकप्रिय अंगिका लोक-नाटक छेकै, मतरकि हेनों नाटकों में गद्य के छिटपुट प्रयोग होला के बादो वैसिनी सम्पूर्ण रूपों सें गीति-लोक-नाटकों के उदाहरण छेकै। लोक-गीति-नाट्यों से प्रेरित होय के श्री नरेश पाण्डेय 'चकोर' के 'श्रीरामजन्मोत्सव' आरो श्री गोपालकृष्ण 'प्रज्ञ' के 'रोही दास' - हेनों गीति-नाट्यो आधुनिक काल में लिखलों गेलों छै।

आधुनिक अंगिका के अधिकांश गद्य-नाटक घोर आर्थिक संकट आरो सरकारी उपेक्षा के कारणें अमुद्रित रूपे में पड़लों होलों छै। हेनों नाटकों के मंचन समय-समय पर अवश्य होतें रहलों छै, मतरकि वैसिनी के मुद्रित रूप नैं होला के कारणें व्यवस्थित ढंगों सें वैसिनी के मूल्यांकन करबों मुश्किल छै। हेनों नाटकों में श्री राधाकृष्ण चौधरी के 'बलिदान', श्री उमेशजी के 'दलालों के जाल', डॉ० परमानन्द पाण्डेय के 'माँटी आरो सोना', श्री जगदीश पाठक 'मधुकर' के 'बखेरा', श्री अनिरुद्ध प्रसाद विमल के 'चमोकन' आरो 'मुखिया जी', श्री अश्विनी कुमार के 'जंगल रों हाँक' आरो 'डेगें-डेगें पेत', श्री मनोज कुमार 'पंकज' के 'घुरी चलों आपनों गाँव', श्री प्रदीप प्रभात के 'नया बिहान लाना छै', श्री जनार्दन के 'महात्मा बुद्ध', 'भगवान महावीर' आरो 'स्वामी विवेकानन्द', श्री अनिरुद्ध प्रसाद विमल के 'नदी रों मोड़', श्री जयप्रकाश जयी के 'अंगिया', 'आहुति' आरो 'हमरों समाज', श्री उदय आरो श्री ललन के संयुक्त लेखन में लिखलों 'फेरी के फेरा' आरनी यै लेली उल्लेखनीय छै कि ई-सब नाटकों के मंचन दर्शकों के बान्है में सफल सिद्ध होलों छै।

मतरकि सर्वश्री सुमन सूरो, सच्चिदानंद श्रीस्नेही, भारती, अनिरुद्ध प्रभास, प्रो० कमला प्रसाद 'बेखबर', डॉ० तेजनारायण कुशवाहा, प्रभाष चन्द्र झा 'मतवाला', पी० एन० जायसवाल, डॉ० विजय, विजेता मुद्गलपुरी आरनी रचनाकारों के पांडुलिपि के रूपों में पड़लों नाटकों के मंचनों, मंचों के अभाव के कारणें, नैं हुवें पारलें छै, जेकरों कारण अंगिका केरों अधिकांश गद्य-नाटक गोष्ठी में पठन-पाठन के चीज-भर बनी के रही गेलों छै।

तैयो, हेनों बात नैं छै कि आय अंगिका में आधुनिक नाटकों के सृजन के प्रति लेखकसिनी में उदासीनता छै, बल्कि ई बात बिना झिझक के कहलों जावें

सकै छै कि आधुनिक फिल्म आकि नौटंकी कें नंगई कें प्रति दर्शकसिनी में रुझान कें देखतें हुवें श्रेष्ठ नाटकों कें सृजन कें जग्घा में आय अंगिका में सामान्य नाटको लिखलों गेलों छै।

अंगिका गद्य-नाटकों कें प्रकाशन १९६० ई० कें बाद हुवें लागै छै। श्री नरेश पाण्डेय 'चकोर' कें 'किसान कें जगावों' आरो 'सर्वोदय समाज' कें प्रकाशन १९६१ ई० आरो १९६३ ई० में होलै। दोनों नाटक सामाजिक समस्या सें जुड़लों आरो सामाजिक जड़ता कें विरोध में नवचेतना कें समृद्ध करैवाला छेकै। किसान कें जगावों' एक अंकों कें आरो 'सर्वोदय समाज' तीन अंकों कें शिल्प सें गठित नाटक छेकै, जै में गीत-योजना कें परम्पराओ संयोजित छै। अंगिका गद्य-नाटकों कें बहुमुखी विकास में श्री नरेश पाण्डेय 'चकोर' कें भूमिका असंदिग्ध छै। १९६३ ई० आरो १९६४ ई० में 'चकोर' जी कें ही 'कोंर नैं तें डोंर की ?' आरो 'देश कें खातिर मजदूर कें त्याग' एकांकी प्रकाशित होलै। देशभक्ति सें प्रभावित ई दोनों एकांकी केरों प्रकाशन पटना सें प्रकाशित 'जन-जीवन' में करलों गेलों छेलै।

१९७० ई० आरो १९७१ ई० के 'अंग-माधुरी' में प्रकाशित प्रसिद्ध रेडियो-नाटककार श्री जनार्दन राय कें क्रमश: 'जात आरो भात' तथा 'उधो-माधो कें बात' कें प्रकाशन होलों छै, जे नाटक कें शिल्प में नैं होला कें बादो ई दोनों वार्ता संवादाधारित छै, यही सें नाट्य-कृति होय में शक नैं करलों जावें सकें। वार्ता में संवादों कें आयोजन सशक्त नाटकों कें संवाद छेकै।

अंगिका कें आधुनिक गद्य-नाटकों कें इतिहास मुख्यत: एकांकी नाटकों कें ही इतिहास छेकै आरो ई इतिहास कें समृद्ध करै में निर्विवाद रूपों सें श्री राधाकृष्ण चौधरी कें योगदान ऐतिहासिक रहलों छै। खास करी कें एकालाप शैली कें नाटकों कें आधुनिक अंगिका में लोकप्रिय करै के श्रेय राधाकृष्ण चौधरी जी कें ही छै। 'उद्‌गार' (१९७३), 'पछतावा' (१९७४) आरो १९७६ ई० में प्रकाशित 'पैरवी' हिनकों बहुलोकप्रिय एकालाप शिल्प कें एकांकी नाटक छेकै। 'पछतावा' में एकांकीकार नें हास्य-व्यंग्यों कें बीच नया समाजों कें परिवर्तित मनोविज्ञान कें जे ढंगों सें राखनै छै, ऊ नि:सन्देह चौधरी जी कें पकलों नाट्यानुभूति कें प्रमाण दै छै।

१९७७ ई० में श्री उमेश कें प्रसिद्ध प्रहसन 'तीरथ-जातरा' कें प्रकाशन होलै तें १९७९ ई० में श्री जगदीश पाठक 'मधुकर'-कृत 'राष्ट्र कें सपूत' ऐलै। 'तीरथ-जातरा' विशुद्ध हास-परिहास कें नाटक छेकै, जबेंकि 'राष्ट्र कें सपूत'

सिकन्दर आरो पोरस कें युद्ध-संवाद पर आधारित लघु ऐतिहासिक एकांकी। १९८२ ई० आरो १९८९ ई० में सामाजिक अभिशाप दहेज कें विषय लैकें श्री भुवनेश्वर भारती कें चार दृश्यों में विभाजित 'दहेज कें दहाड़' कें प्रकाशन होलै आरो १९८७ ई० में बहुचर्चित उपन्यासकार श्री अनिरुद्ध प्रभास कें ऐतिहासिक नाटक 'चम्पा कें राजकन्या' कें।

अनिरुद्ध प्रभास कें है नाटकों कें महत्व नैं खाली नाटक कें सुगठित शिल्प कें कारणें छै, बलुक तीर्थंकर महावीरकालीन अंग-जनपदों कें सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक आरो धार्मिक स्थितियो कें दर्शावै में ई पूर्णतः सक्षम छै। तीन अंकों में विभाजित 'चम्पा कें राजकन्या' अंगेदश कें राजकन्या वसुमति कें जीवन-कथा पर आधारित ऐतिहासिक नाटक छेकै, जेकरों पूर्णता में नाटककार नें आपनों कल्पनाओ कें कलात्मक सहयोग लेनें छै। फरू, पाँच दृश्यों में बद्ध श्री बैकुण्ठ बिहारी-कृत 'लहुवों सें महँगों सिनूर' एकांकी प्रकाशित मिलै छै। राजनीतिक-सामाजिक विसंगति कें लैकें १९९४ ई० में अनिरुद्ध प्रसाद विमल कें नाटक 'साँप' कें प्रकाशन भेलै, जेकरा में नाटककार विमल नें शैक्षिक, सामाजिक आर्थिक आरो धार्मिक विसंगति पर परिहासात्मक प्रहारों सें 'साँप' कें व्यंग्य-शैली दैकें अतिरिक्त हेकरा लोक आरो चौराहा नाटकों कें आधुनिक शिल्पों में गढ़लें छै। सामाजिक समस्यासिनी पर ही आधारित रेडियो-नाटकों कें संग्रह 'मुठिया चाउर' कें प्रकाशन १९९५ ई० में होलों छै, जेकरा में श्री आमोद कुमार मिश्र कें पाँच-टा रेडियो-एकांकी, क्रमशः 'मुठिया चाउर', 'राम-रहीम', 'फुसरी', 'भोज खाय कें चस्का' आरो 'निनान', संग्रहित छै।

हास्य-व्यंग्यों कें पाँच-टा एकांकी कें लैकें डॉ० अमेरन्द्र कें संग्रह 'पंचगव्य' कें प्रकाशन १९९७ ई० में होलों छै, जै में 'मतदान', 'दहेज', 'अंधविश्वास', 'प्रौढ़ शिक्षा' आरो 'नारी शिक्षा' विषयों पर आधारित एकांकीकारों कें क्रमशः 'करनी-भरनी', 'साथें-साथ', 'कलयुग रों सत्त', 'पुरानों भूत', 'नया इलाज', 'सा विद्या या विमुक्तये' आरो 'मुट्ठी में धूभ' एकांकी संकलित छै। १९९७ ई० में ही श्री सोहन प्रसाद चौबे कें लिखलों एकांकी 'शहीद सतीश झा' के प्रकाशनों भेलों मिलै छै।

जाहिर छै कि आधुनिक गद्य-साहित्यों में जत्तें एकांकी कें सृजन होलों छै ओत्तें संपूर्ण नाटकों कें नैं होलों छै। 'किसान कें जगावों', 'सर्वोदय समाज', 'चम्पा कें राजकन्या' आरो 'साँप' - येहें चार नाटक हेनों कृति छेकै जे नाट्य-भेद - 'नाटक' - कें भीतर आवै छै। बाकी सब एकांकी नाटकों कें ही

रूप राखैवाला छेकै।

यहू मे कोय शक नैं कि एकांकी-लेखन कें क्षेत्रों में अधिकांश अंगिका-नाटककार नें आपनों प्रौढ़ नाट्य-प्रतिभा कें परिचय देनें छै। एकांकी, जे कि मानव-जीवनों कें कोय एक रास्ता, एक चरित्र, एक कार्य, एक भावों कें कलात्मक अभिव्यंजना होय छै, ओकरों लें यहें काफी नैं छै कि एकरा में एक्के अंक होना चाहियों, बलुक नाटकों कें ई 'प्रकार' लें यहू जरूरी छै कि एकांकी उद्देश्य-प्रधान जरूर हुवें आरो ओकरों कथा-वस्तु विस्तृत नैं रहें। एकांकी कें कार्यारम्भ आरो कार्यान्त में कुछुवें-दूरी कें अन्तर रहै छै। एक उत्कृष्ट एकांकी कें पहचान ओकरों परिहास आरो व्यंग्यपूर्ण होय में भी होय छै। ई सर्वमान्य बात छेकै कि परिहास एकांकी कें ज्योति छेकै, जेकरों नियोजन एक सावधान नाटककारें आपनों एकांकी में अवश्य करै छै। कथा-वस्तु कें संक्षिप्तता, हास्य कें संयोग, पात्र-विस्तार कें अभाव आरो उद्देश्य कें उपस्थिति -- एक श्रेष्ठ एकांकी कें पहचान कहलों जैतै।

यै में कोय शक नैं कि आधुनिक युगों में कहानी नाखी एकांकी कें महत्व कें समझतें हुवें अंगिका नाटककारसिनी नें एकांकी-साहित्यों कें उत्कर्ष में काफी योग देने छै। खास करी कें सर्वश्री राधाकृष्ण चौधरी, आमोद कुमार मिश्र, जगदीश पाठक 'मधुकर', सत्यनारायण प्रकाश, अनिरुद्ध प्रसाद विमल, अश्विनी कुमार, बैकुण्ठ बिहारी, जनार्दन, खुशीलाल आरनी यै दिशा में विशिष्ट सजग एकांकीकारों कें रूपों में आवै छै।

ई-सब अंगिका एकांकीकारों कें एकांकी नाटकों में कोय-नें-कोय सामाजिक, आर्थिक, नैतिक, शैक्षिक आकि राजनीतिक उद्देश्य अवश्य विद्यमान छै। जहाँ श्री राधाकृष्ण चौधरी नें आपनों एकांकी कें एके दृश्य विधान कें साथें उपस्थित करने छै, वहाँ आरोसिनी एकांकीकारों कें रचना में ई दृश्य तीन सें लैकें पाँचो तक मिलै छै। कहै कें जरूरत नैं छै कि ई बहुदृश्य-विधानों सें कथा में वक्रता कें समायोजन सहज ही समाविष्ट होय गेलों छै। सर्वश्री जगदीश पाठक 'मधुकर', राधाकृष्ण चौधरी, अनिरुद्ध प्रसाद विमल, आमोद कुमार मिश्र, सत्यनारायण प्रकाश, मनोज कमार 'पंकज', अमरेन्द्र आरनी आपनों एकांकी में हास्य-परिहास लें अलग से कोय विदूषक कें नैं राखलें छै, बल्कि एकांकिये कें कोय पात्र, आपनों विदूषक-कृति सें, एकांकी मे परिहास कें माहौल गढ़लें छै। ईसिनी एकांकीकारों कें पात्र आपनों संस्कार-परिवेशों कें अनुसार संवाद बोलते पात्र छेकै, जे अधिक संख्या मे अभिजात-कुलों सें नैं, मध्यवर्गीय आरो निम्नवर्गीय

कुलों सें आवै छै।

आधुनिक समयों कें अंगिका साहित्यों में नाटकों कें विभिन्न प्रकारों कें प्रचलन धीरें-धीरें बढ़ी रहलों छै। प्रकरण, भाण, वीथी, प्रहसन आदि कें लोकप्रियता तें यहाँ काफी देखलों जावें सकै छै। नाटक लिखै कें ओर अनेक नाटककार प्रवृत्त होलों छै। नाटक, जे कि काव्य कें सब गुणों सें सम्पन्न होय छै, कें प्रकाशन आरो मंचन अंधकार में ही छै। हालाँकि आय 'नाटक' कें परिभाषा बदली गेलों छै, जेकरों लें पात्रों कें अलौकिकता, कुलीनता आरनी जरूरी नैं रही गेलों छै आरो यै में प्राय: तीन अंक कें होबों काफी छै। एकरों मोताबिक सर्वश्री नरेश पाण्डेय 'चकोर', अनिरुद्ध प्रभास, अनिरुद्ध प्रसाद विमल आरनी कें कुछेक नाटक प्रकाशित हुवें पारलों छै।

हेकरा सें ई विश्वास बढ़ै छै कि निकट भविष्य में, सरकारी मददों कें सम्पूर्ण अभाव में भी, अंगिका नाटककारसिनी नें सहयोगी आर्थिक आधारों पर जौंन ढंगों सें नाटक-प्रकाशन पर धेयान देनें छै, वै सें नैं खाली मौलिक नाटकों कें प्रकाशन होय जैतै, बल्कि अनुवादित नाटकों कें एक समृद्ध भंडारो अंगिका-साहित्य कें पास होतै। आय मौलिक नाटकों कें सृजन आरो प्रकाशन कें साथें-साथ अंगिका में संस्कृत आरो हिंदी नाटकों कें अनुवादों कें प्रवृतियो विकसित होलों छै। ई दिशा में श्री जयप्रकाश गुप्त नें भारतेन्दु कें 'भारत-दुर्दशा' कें सफल अंगिका-अनुवाद आरो प्रकाशन करीकें अनुवादित नाटकों कें नींव राखलें छेलै। ओकरों बाद जयशंकर प्रसाद -कृत 'ध्रुवस्वामिनी' कें अंगिका-अनुवाद अंगिका कें ही लोकप्रिय कवयित्री श्रीमती माधुरी जायसवाल द्वारा होलै। दोनों अनुवादित नाटक समय-साहित्य-सम्मेलन, पुनसिया (बाँका) सें प्रकाशित होलों छै। अप्रकाशित रूपों में पहिलों अनुवादित अंगिका नाटकों में शकुन्तला, यशोधरा, कामायनी, सुभद्रांगी आरनी प्रमुख छेकै। संस्कृत, हिंदी सें नाटक, काव्य, उपन्यास-आर कें अंगिका-अनुवाद आरो नाट्य-रूपान्तरों कें प्रकाशन जों कोय तरह सें संभव हुवें पारलै तें यहू में कोय शक नैं कि अंगिका भाषा कें आधुनिक गद्य-नाटकों कें सुदृढ़ता आरो इतिहास बढ़ियाँ सें रेखांकित हुवें पारतै।

आत्मपरक (आत्ममूलक) साहित्य

साहित्यों में व्यक्ति कें प्रधानता जबें स्वीकृत हुवें लागलै तबें आत्मपरक साहित्य-सृजनों पर जोर देलों जावें लागलै। आत्मकथा, सस्मरण, डायरी, जीवनी आरनी साहित्यं-विधा ओकरे परिणाम स्वरूप भेलै।

व्यक्ति कें प्रमुखता पर आधारित साहित्यों कें मूल्य कें लैकें केकरो मनों में निराशा हुऍं पारै छै ; मतरकि यहू बातों सें इन्कार नैं करलों जावें सकै छै कि आत्मपरक (आत्ममूलक) साहित्य-लेखक द्वारा आपनों आप-बीती कें उल्लेख होय छै। यही सें हेनों साहित्य-लेखकों कें जीवनवृतों कें प्रामाणिक जानकारी दै कें साथें-साथें लेखकों कें सफलता-असफलता कें कहानी जानी कें पाठकों कें अपना लें बहुत-कुछ सीखै कें मौका मिलै छै। यही सें आत्ममूलक या आत्मपरक साहित्यों कें विशिष्ट महत्वों सें इन्कार नैं करलों जावें सकै छै।

आत्म-कथा

हेना कें तें आत्मकथा, डायरी, संस्मरण-आर एक्के वर्गों कें साहित्य छेकै, तैयो सब्भै कें आपनों-आपनों अलग-अलग खूबी छै आरो यहें खूबी लै कें आत्ममूलक या आत्मपरक साहित्यों कें ई विविध रूप एक-टा विशिष्ट विधा बनी जाय छै।

आत्मकथा लेखकों कें आपनों जीवनों सें जुड़लों साहित्य-रूप छेकै, जै में लेखक आपना कें कुछ यै ढंगों सें प्रस्तुत करै छै कि पाठकों पर ओकरों व्यक्तित्वों कें विशेष प्रभाव पड़ें। यहाँ है बातों कें उल्लेख करी देबों आवश्यक छै कि आत्म-कथा आरो आत्म-चरित दुन्नों अलग-अलग तरहों कें शैली कें आत्मकथा छेकै।

आत्म-चरितों कें संबंध आत्म-विश्लेषणों सें होय छै, जेकरा में बुद्धि कें प्रधानता होय छै जबें कि आत्मकथा में जीवनों कें रोचक प्रसंगसिनी पर कलमों कें केंद्रित करलों जाय छै, जै सें रचना में रोचकता कें ज्यादा-सें-ज्यादा समावेश हुऍं पारें।

अंगिका में आत्म-चरित आरो आत्म-कथा शैली कें साहित्यों कें उदाहरणों कें अभाव छै। सच तें ई छेकै कि आत्मकथा-साहित्यों के निर्माण दिस ई भाषा कें रचनाकारों में कोय विशेष रुचियों नैं दिखै छै। १९९५ ई० कें पहलें जे कुछ सृजन होलों छै ऊ पुस्तक कें रूपों में नैं छै।

यहें बात जीवनी-साहित्यों कें संबंधों में कहलों जावें सकै छै। जीवनी-साहित्यो आत्मकथा नाखी कोय विशिष्ट व्यक्ति कें व्यक्तित्व-वर्णन-साहित्य छेकै। जों फर्क छै तें ई कि आत्मकथा लेखक द्वारा आपनों संबंध में कहलों रचना होय छै, मतुर जीवनी लेखक द्वारा कोय दोसरा कें जीवनों पर लिखलों साहित्य।

जहाँ तक अंगिका कें जीवनी-साहित्यों कें प्रश्न छै, ओकरों संख्या, आत्मकथा-साहित्यों सें अवश्य बेसी छै। यहो बात सही छेकै कि डॉ० अभयकान्त चौधरी कें आत्मकथा 'हमरों जीवन कें हिलकोर' (१९९५) -हेनों कोय महत्वपूर्ण जीवनी-पुस्तक आय तक अंगिका में प्रकाशित नैं मिलै छै। एक सौ बावन पृष्ठों कें ई आत्मकथा 'हमरों जीवन कें हिलकोर' दू भागों में विभाजित छै। बयालीस पृष्ठों कें प्रथम भागों में आत्मकथाकारों कें जन्म, परिवार, खानदान, नाता-रिश्ता आरनी कें उल्लेख छै। शेष पृष्ठों कें भाग-दू में आत्मकथाकारों कें शिक्षा, साहित्य, नौकरी आरो सार्वजनिक कार्यो कें लेखा-जोखा। ऐतिहासिक शैली कें ई आत्मकथा डॉ० चौधरी कें परिवार आरो जीवन-इतिहास कें स्वरूपों में राखै छै।

'हमरों जीवन कें हिलकोर' आरो 'नैहरा केरों ओलती आरो ऐंगन' कें छोड़ी कें अंगिका में हेनों कोय वैज्ञानिक ढंगों कें लिखलों आत्मकथा नैं दिखै में ऐलों छै जेकरों उल्लेख यहाँ हुवें पारें।

'नैहरा केरों ओलती आरो ऐंगन' श्रीमती जीवनलता कें एक विशिष्ट आत्मकथा-पुस्तक छेकै, जेकरा में आत्मकथा-लेखिका नें आपनों तीन पुस्तों कें जीवन-कथा कें राखने छै। यै पुस्तकों में सबसें बड़ों खासियत ई छेकै कि लेखिका श्रीमती जीवनलता नें नैतिक, अनैतिक कें नामों पर कुछ छुपावै-छोड़ै कें कोशिश नैं करनें छै। सौंसे पुस्तकों में एक औपन्यासिक -परिवेश छै, जे 'नैहरा केरों ओलती आरो ऐंगन' आत्मकथा कें रोचकता आरो औत्सुक्य प्रदान करतें रहै छै। विषय आरो परिवेशों के अनुकूल भाषाओ बनतें रहबों ई आत्मकथा कें एक आरो विशेषता छेकै।

जीवनी

अंगिका में जोंन जीवनी-साहित्य प्राप्त होय छै ऊ आपनों आकार कें लै कें दू रूपों कें छेकै ; एक तें छोटों-छोटों लेखों कें रूपों में लिखलों, दोसरों छोटों-छोटों पुस्तिका कें रूपों में लिखलों।

श्री प्रीतम कुमार 'दीप' -कृत 'नक्षत्र मालाकार' (१९७४), श्री रामरीझन रसूलपुरी - कृत 'राष्ट्रकवि डॉ० दिनकर : संक्षिप्त जीवनवृत्त' (१९७४), श्रीमती विनोदबाला सिंह-लिखित 'तीज त्योहार आरो भारतीय नारी' (१९८१), श्री उमेश - कृत 'भुवनेश जी' (१९८२), पं० शुद्धदेव झा 'उत्पल' - कृत 'लोक भाषा कें महाकवि भवप्रीतानंद ओझा' (१९८२), श्री महेन्द्र प्रसाद जायसवाल - कृत 'सब्भे

रों आदमी गंगाधर' (१९८२), डॉ० रमेश शर्मा 'आत्मविश्वास' - कृत 'अनन्त दास' (१९८६) आरनी छोटों-छोटों आकारों कें जीवनी-साहित्ये छेकै।

पुस्तिका कें रूपों में कुछ जीवनी-साहित्यों कें प्रकाशन-कार्य विशेष रूपों से श्री नरेश पाण्डेय 'चकोर' कें सत्प्रयासों सें संभव होलों छै, जेकरों लेखको हिनीयें छेकात। होनाकें तें १९८१ ई० मे डॉ० तेजनारायण कुशवाहा कें लिखलों 'महर्षि मेंहीं सें मिलों' अब तक कें प्राप्त जीवनी-साहित्यों में पहिलों कोशिश छेकै, जे कि पुस्तक कें रूपों में प्राप्त होय छै।

'महर्षि मेंहीं सें मिलों' नैं खाली महर्षि मेंहीं कें जीवनवृत्त सें संबंध राखै छै, बलुक हुनकों सम्प्रदाय, हुनकों विचार, हुनकों साधना आरनीयों सें संबंध राखै छै।

जीवन-साहित्य जीवन-चरितों कें परवर्ती संक्षिप्त नाम छेकै। हेनों साहित्य आपनों नायकों कें चरित्र सें संबंध राखै छै, जे कि आन्तरिक चरित्रो होय छै। यै लेली हेनों साहित्य में नायकों कें विचारों कें साथें संबद्ध लेखकीय टिप्पणी आरनी कें ऐतें रहबों भी सहज स्वाभाविक छै ; मतरकि जहाँ लेखकीय टिप्पणीयें प्रबल हुवें लागै छै वहाँ जीवनी-साहित्यो छूटें लागै छै। डॉ० कुशवाहा कें 'महर्षि मेंहीं सें मिलों' शुद्ध जीवनी-साहित्यों में नैं राखलों जावें सकें।

नि:संदेह १९८३ ई० में प्रकाशित श्री नरेश पाण्डेय 'चकोर'-कृत 'महात्मा भोली बाबा' ई दिशा में एक सराहनीय प्रयास कें प्रारम्भ मानलों जैतै। 'चकोर'-कृत अन्य जीवनी-साहित्य छेकै 'श्री उमेश जी' (१९८९), 'श्री भुवनेश जी' (१९८९), 'एक साहित्यकार-परिवार' (१९९०), 'करील जी' (१९९१), विनोद जी' (१९९३), आरो 'श्री गदाधर प्रसाद अम्बष्ठ' (१९९४)।

श्री नरेश पाण्डेय 'चकोर'-कृत 'महात्मा भोली बाबा' अंगिका में प्राप्त जीवनी-साहित्यों में सर्वाधिक विस्तृत छै, जेकरों एक कारण छेकै कि है पुस्तकों कें निर्माण महात्मा भोली बाबा कें निर्वाणोपरान्त भेलों छै। यै लेली हुनकों ओरी सें लै कें आखरी ताँय कें जीवन-चक्र आरो क्रियाकलापों कें वर्णन होय गेलों छै।

'चकोर' जी कें जे जीवनी-साहित्य जीवित व्यक्ति कें चरितों सें संबद्ध छै, ऊ स्वाभाविक रूपों सें आकार में लघु होबे करतै ; कैन्हें कि हेनों चरित-साहित्यों में सौंसे जीवनवृत्त ऐबे कहाँ करै छै ? होना कें तें 'चकोर' जी कें 'विनोद जी' स्वर्गीय कमला प्रसाद उपाध्याय पर केंद्रित होला कें बादो विनोद जी कें जीवन-चरित डेढ़े पृष्ठों में सिमटलों छै, बाकी में विनोद जी कें अंगिका काव्य प्रकाशित छै। एकरा सें अलग 'करील जी' आरो खास करी कें 'श्री गदाधर प्रसाद अम्बष्ठ'

हिनकों महत्वपूर्ण जीवनी-साहित्य छेकै।

वर्णित पात्रों कें साथ अति निकटता होला कें कारणें ई दुन्नों जीवनी-साहित्यों में संस्मरणों कें स्फुरण छै। संस्मरणात्मक स्पर्श होला कें कारणें नै खाली वर्णित व्यक्ति कें व्यक्तित्व ठीकों सें उभरलों छै, बल्कि यै से दोसरा कें अपेक्षा ई दुन्नो जीवनी-साहित्यों कें नगीच ज्यादा छै। यहें समय में श्री सुभाष चन्द्र 'भ्रमर' कें भी 'प्रो० परिमल : एक संघर्षशील व्यक्तित्व' आरो श्री उचित लाल सिंह कें 'कवि -: परिचय' शीर्षकों सें एक जीवनी-साहित्य प्रकाशित होलै।

१९९५ ई० में प्रकाशित डॉ० डोमन साहु 'समीर' कें निबंध-संग्रह 'समीक्षात्मक निबंध' आपनों शैली में साहित्यों में एक संयुक्त शैली कें पुस्तक मानलों जैतै। यै में संग्रहित गद्य-रचना कें डॉ० समीर नें 'समीक्षात्मक' कहने छै; मतरकि समीक्षात्मक निबंधों कें है संग्रहों में ओरी कें चार-टा निबंधों कें छोड़ी कें बाकी जीवनी-साहित्यों कें सीमा में आबै छै। वैसिनी निबंध छेकै - 'अंग-गौरव आचार्य दीपंकर श्रीज्ञान अतिश', 'अंगिका भाषा कें प्रारंभिक कवि - स्वर्गीय दर्शन दुबे', 'लोकप्रिय अंगिका जनकवि - सदुपाध्याय भवप्रीतानन्द ओझा', 'मन-वचन-कर्म सें अंगिकानिष्ठ - डॉ० लक्ष्मीनारायण सुधांशु', 'अंगिका सपूत - पं० बुद्धिनाथ झा 'कैरव' आरो 'अंगिका-प्रतिष्ठ - डॉ० माहेश्वरी सिंह 'महेश'।

यै-सब निबंधों कें निर्माण जीवनी-साहित्य कें शर्तों पर होलों छै। कहानी (कथा-साहित्य) सें भिन्नता लानै लें डॉ० समीर नें आपनों चरित-नायकों कें वर्णन ओरीये सें चमत्कार कें साथें नैं करलें छै, बल्कि शुद्ध जीवनी कें शर्तों कें अनुकूले नायकों कें आरम्भिक तथ्यों कें क्रमिक रूपों सें प्रस्तुत करने छै। तमाम प्रकारों कें जीवनी-साहित्यों कें उद्देश्य होय छै - विभिन्न तथ्य-स्रोतों कें माध्यमों सें चरित-नायकों कें विलक्षण गुण-प्रदर्शनों सें समाज कें बीच प्रेरणा-प्रकाश फैलैबों। ई-सब डॉ० समीर कें उपरोक्त निबंधों में देखलों जावें सकै छै। आचार्य दीपंकर श्रीज्ञान अतिश कें छोड़ी कें बाकी सब में जीवनीकार नें ऐतिहासिक शैली कें साथें कॉहीं तें संस्मरणात्मक शैली कें प्रयोगों सें जीवनी कें प्रामाणिक आरो सरस स्वरूप देलें छै आरो कॉहीं चरित-नायकों कें कृतित्वों कें उल्लेख सें हुनकों व्यक्तित्वों कें उद्घाटित करने छै। स्वर्गीय दर्शन दुबे आरो पंडित बुद्धिनाथ झा 'कैरव' शीर्षक जीवनी में जीवनीकार नें यहें शिल्प अपनैनें छै। 'समीक्षात्मक निबंध' कें सबटा उल्लिखित जीवनी आपनों संक्षिप्तता में अपेक्षित विस्तार कें समेटलें होलों वैज्ञानिक जीवनी कें उदाहरण छेकै।

संस्मरण

'संस्मरण' आत्मकथा आरो जीवनी कें बीचों कें साहित्य-विधा छेकै। संस्मरण आत्मकथा कें नगीच यै लेली छै कि याहूँ लेखक आपनों स्मृति कें आधार पर अपना सें जुड़लों बातों कें लिखै छै ; मतरकि दोनों में एक मूलभूत भेदो छै। आत्मकथाकरों कें दृष्टि बेसी करी कें आपन्है पर केंद्रित रहै छै, बाहरी बातों कें वें ओतनें-टा ग्रहण करै छै जतना-टा आपनों बातों कें प्रकट करै में सहायक होय छै ; मतरकि संस्मरणकार आपना सें अलग बाहरी दुनियाँ कें आपनों वर्णनों कें विषय बनावै छै, जे कि ओकरों अनुभूति कें प्रभावित करै छै।

जीवनीकार-हेनों संस्मरणकारों कें दृष्टियो बाहरी वस्तु पर केंद्रित होय छै, मतरकि जीवनी-लेखक-हेनों संस्मरणकार कें शैली ऐतिहासिक ढर्रा पर तथ्यों कें बटोरबों नैं होय छै। यहाँ वस्तु कें प्रभाव लेखकों कें अनुभवों पर की होय छै, ओकरे वर्णन रहै छै, जेन्हों कि निबंधों में होय छै। ई दृष्टि सें संस्मरण, आत्मकथा आरो जीवनी सें ज्यादा निबंध कें ही नगीच पड़ै छै। यहें कारण छेकै कि डॉ० डोमन साहु 'समीर' नें आपनों संस्मरण कें जीवनी कें निबंध कहनें छै।

अंगिका में संस्मरण-साहित्यों कें इतिहास दू दशक सें ज्यादा पुरानों नैं छै। यै में कोय शक नैं कि अंगिका कें दोसरों-दोसरों गद्य-विधा नाखी संस्मरण कें विकास में 'अंग-माधुरी'-ये कें विशेष सक्रियता पहिलें-पहल रहलै। येहो बात सही छै कि ई पत्रिका कें शुरूआती अंकों में कुछेक संस्मरणों कें प्रकाशन होलों होतै, मतरकि ऊ-सब उपलब्ध नैं होला कें कारणें वैसिनी कें उल्लेख यहाँ नैं हुवें पारी रहलों छै।

संस्मरण-साहित्य कें खेयालों सें 'अंग-माधुरी' कें मई-जून, ७४ -वाला अंक नि:संदेह ऐतिहासिक महत्व राखै छै। वै अंकों में मंजलों गद्यकार कें चार संस्मरण -- 'राजयोगी सुधांशु' (मधुकर गंगाधर), 'सच्चिदानंद-विग्रह सुधांशु जी' (श्रीरंजन सूरिदेव), 'डॉ० सुधांशु : एक संस्मरण' (चकोर) आरो 'एक संस्मरण' (जगदीश मिश्र) - प्रकाशित छै। अंगिका में संस्मरण-साहित्यों कें विधिवत् लेखन-प्रस्थान यहीसनी चार संस्मरणों कें बीचों सें होय छै।

यै में कोय शक नैं कि अंगिका के कहानी, आत्मकथा, जीवनी आरो निबंध-साहित्यों कें निर्माण में संस्मरणों कें बहुत बड़ों योग रहलों छै। यै सें अंगिका कें विभिन्न गद्य-साहित्य संस्मरण-साहित्ये होय कें बोध कराय छै। श्री उमेश, जगदीश पाठक 'मधुकर', 'गुरु जी' आरो रामावतार 'राही' कें व्यंग्य-कथा

तें संस्मरण-साहित्ये कें अंग बनी कें आवै छै।

मतरकि, आबें संस्मरणात्मक कहानी आकि जीवन सें अलग अंगिका कें संस्मरण-साहित्य आपनों स्वतंत्र अस्तित्वों में आबी चुकलों छै। डॉ० चौधरी कें 'अनुपेक्षनीय' (१९७४), डॉ० रामनंदन विकल' कें 'बाबा : एक संस्मरण' (१९९३), 'जागृति' कें 'नानी माय' (१९९४), श्रीमती ओमा प्रियंवदा कें 'श्री नरेश पाण्डेय 'चकोर' : संक्षिप्त परिचय' (१९८५), डॉ० आशुतोष प्रसाद कें 'मनों कें बोझ' (१९९७), श्री अशोक ठाकुर कें 'दुःख' (१९९७) सें हटी कें संस्मरणों कें स्वतंत्र-संग्रह दिस जोंन तरीका सें लेखकसिनी कें धेयान केंद्रित होय रहलों छै, वै सें ई भाषा में है विधा कें गद्य-साहित्यों कें प्रति काफी आस्था आरो समृद्धि कें प्रमाण मिलै छै। १९९७ ई० में श्री आमोद कुमार मिश्र कें संपादन में प्रकाशित 'याद आवै छै' हेनों संस्मरण-संग्रह छेकै। यै में निम्नांकित संस्मरणकारों कें संस्मरण प्रकाशित करलों गेलों छै -- डॉ० परमानन्द पाण्डेय (कुछ फूल, कुछ काँटों), श्री सदानन्द मिश्र (एक नजर इन्हौं), डॉ० तपेसर नाथ (डॉ० गौरी शंकर द्विजेन्द्र, यादों कें दर्पण में), डॉ० तेजनारायण कुशवाहा (उज्जैनी कें महाकालेश्वर), श्री सुमन सूरो (निर्णय नागार्जुन कें), श्री भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' (देशभक्त धर्मपिता), डॉ० अभयकान्त चौधरी (अंग-गौरव सतीश), श्री सच्चिदानन्द द्विवेदी 'श्रीस्नेही' (यही दिनों लेली), श्री नरेश पाण्डेय 'चकोर' (अंगिका कें उन्नायक अम्बष्ठजी), श्री कलानन्द झा (यात्रा कें रोमांच), डॉ० अमरेन्द्र (कर्णों कें कवच-कुंडल नाखी), श्री गुरेश मोहन घोष 'सरल' (जो रे तहिया), श्री अंजनी कुमार शर्मा (बम्बई कें टूर), श्री चन्द्रशेखर कर्ण (बडप्पन), डॉ० निर्मल (हुनकों यादों में), श्री नवीन चन्द्र शुक्ल 'पुष्प' (दृढ़ संकल्पी पं० गिरिधर शास्त्री 'भ्रमर'), आचार्य श्रीधर मिश्र 'विनोद' (न दैन्यं न पलायनम्), श्री छोटेलाल मंडल (भारतीय संस्कृति कें प्रतीक - महर्षि मेंहीं), डॉ० शैलजानन्द झा 'अंगार' (गुरु जी), श्री महेश प्रसाद सिंह 'आनन्द' (देवदूत), श्री सोहन प्रसाद चौबे (चुनावी संस्मरण), श्री राम शर्मा 'अनल' (सरलता कें प्रतीक माधवन जी), श्री मुरारी मिश्र (भूतों कें खोज), श्री छोटेलाल मंडल (जिनगी कें मोड़), डॉ० श्यामलाल आनन्द (बलिहारी वा गुरु की), विद्यावाचस्पति मथुरानाथ सिंह 'रानीपुरी' (याद विमला कें), श्री रघुवंश झा (हिमालय तक पीछा करूँगा), श्री रामावतार 'राही' (कालजयी पं० अवध भूषण मिश्र), डॉ० नवीन प्रसाद गुप्त (आशावरी देवी), श्री ओम प्रकाश पाण्डेय (यादों कें यार) आरो श्री आमोद कुमार मिश्र (हहरी गेलों छै)।

एकतीस लेखकों कें संग्रहित संस्मरणों में व्यक्ति-वृत्तान्त सें लैकें यात्रा-साहित्य तक समेटलों होलों छै। पहिल्हैं कहलों गेलों छै कि संस्मरण आत्मकथा आरो जीवनी कें बीचों कें साहित्य होय छै। यही सें पाश्चात्य साहित्यों में आत्मकथा आरो जीवनी कें संस्मरण-साहित्यों कें भी भेद मानलों गेलों छै। 'याद आवै छै' में आत्मकथात्मक संस्मरण (रेमिनिसेंसेज) आरो जीवनीपरक संस्मरण (मेम्बायर्स) दोनों कें सुन्दर रूप मिलै छै। सब संस्मरणों में लेखकों कें अनुभूति कें रास संस्मरणों कें रोचक बनैलें होलों छै। भावानुभूति आरो विचार कें ताना-बाना सें बनलों छै संग्रहों कें कै-एक संस्मरण निबंध कें स्वरूपों में भी उपस्थित छै। यही सें जों ओकरा संस्मरणात्मक निबंधो कहलों जाय तें गलत नैं होतै।

निबंध

निबंधो कोय वस्तु आकि वस्तु कें स्वरूप, प्रकृति आरनी पर लेखकों कें गद्यात्मक अभिव्यक्तिये होय छै। निबंधों कें कोय निश्चित स्वरूप नैं बतैलों जावें सकै छै, कैन्हें कि निबंध बंधनहीन होय छै। 'निबंध' कें सही अर्थ यहें लागै छै। यहें कारण छै कि अंगिका में आय-काल निबंध कें नामों पर जे कुछ लिखलों गेलों छै, ऊ सबकें निबंधे मानी कें निबंध कें सूची में समेटी लेलों गेलों छै। यै में साहित्येतिहासकारों कें की दोष ? निबंध-साहित्य कें संबंध में तें यहें कहलों गेलों छै कि यै में पाण्डित्य-प्रदर्शन नैं होय छै, स्वच्छन्दता होय छै (लेखक एक विषयों सें दोसरों विषयों पर फुदकें पारें)। यै में शिल्पगत प्रौढ़ता कें जग्घा में सरलता आरो आत्मीयता होय छै, आरनी-आरनी।

दरअसल, अनिबन्धो कें निबंध मानी लै कें पीछूँ निबंधों कें उपरोक्त लक्षणसिनी कें अभिधार्थ ग्रहण हुवें पारें। स्वच्छन्दता कें अर्थ, नैं तें उच्छृंखलता होय छै आरो नैं तें पाण्डित्य सें बचै कें मोह कें मतलब आपनों अल्पज्ञता कें प्रकटीकरण छेकै।

अंगिका में हेनों निबंधकार कें अभाव नैं छै जें निबंधों कें प्रौढ़ रूपों कें राखने छै। हेनों निबंधकारों कें एक सूची अंगिका-साहित्यों कें इतिहासों में देलों गेलों छै जे कि है प्रकारों कें छै -- सर्वश्री सुरेन्द्र मिश्र, डॉ० अभयकान्त चौधरी, रमेश चन्द्र झा, राजकुमार चौधरी, वागेश्वरी देवी, जगदीश नारायण वर्मा, स्व० गदाधर प्रसाद अम्बष्ठ, डॉ० तेजनारायण कुशवाहा, डॉ० परमानंद पाण्डेय, नरेश पाण्डेय 'चकोर', सावित्री मिश्रा, उमेश जी, मधुकर गंगाधर, जर्नादन राय,

गोपाल कृष्ण 'प्रज्ञ', कमला प्रसाद उपाध्याय, राधाकृष्ण चौधरी, जन्मेजय मिश्र, कमलेश्वरी प्रसाद तिवारी, द्रौपदी दिव्यांशु, पशुपति झा, राधाकान्त मिश्र, ओम् प्रकाश पाण्डेय 'प्रकाश', सच्चिदानंद सिन्हा, श्रीरंजन सूरीदेव, मदन मोहन प्रसाद सिन्हा, सुरेश प्रसाद यादव, अनिरुद्ध प्रभास, सुरेश मंडल 'कुसुम', विभाष चन्द्र झा, अनिल चन्द्र ठाकुर, पंकज कुमार चौधरी, डॉ० भूतनाथ तिवारी, महादेव झा, शंकर प्रसाद श्रीनिकेत, प्रद्योत कुमार चौधरी, अर्द्धेन्दु शेखर पाण्डेय, मंजुला देवी, जगदीश मिश्र, डॉ० कुमार विमल, कृष्ण मोहन मिश्र, चन्द्रमणि पांडेय, डॉ० फणिभूषण प्रसाद, मोहम्मद शमसुज्जोहा आरो उचितलाल सिंह।

नया समयों में निबंध-लेखन सिस अंगिका कें लेखकसिनी में पुष्ट अभिरुचि देखलों जाय रहलों छै। सर्वश्री देवेन्द्र, कुन्दन अमिताभ, विनोदबाला सिंह, डॉ० निर्मल कुमार सिंह, सुमन सूरो, अनिल चन्द्र ठाकुर, सुभाष चन्द्र भ्रमर, भुवनेश्वर सिंह 'भुवन', सुरेश मंडल 'कुसुम', महेन्द्र प्रसाद जायसवाल, आनन्दी प्रसाद ठाकुर, प्रीतम कुमार 'दीप', अश्विनी कुमार, डॉ० नीलम महतो, डॉ० डोमन साहु 'समीर', विवेकानन्द झा, डॉ० शिवचन्द्र झा, मीरा झा, डॉ० आत्मविश्वास, श्रीकेशव, डॉ० आशुतोष प्रसाद, सच्चिदानंद पोद्दार, श्रीस्नेही, आमोद कुमार मिश्र, महेश प्रसाद सिंह 'आनन्द', श्रीराम शर्मा 'अनल', विकास पाण्डेय, अचल भारती, आभा पूर्वे, डॉ० विनय प्रसाद गुप्त, भवेशनाथ पाठक, आरनी वै वक्ती कें उल्लेखनीय निबंधकार छेकात।

उल्लिखित सब निबंधकारों कें निबंधों में वैयक्तिकता कें गुण मौजूद छै, जे कि कोय भी निबंधों कें पहिलों कसौटी होय छै। जे निर्वैयक्तिक निबंध होय छै ओकरहौ में लेखकों कें अभिरुचि, अनुभव, विचार आरनी कैं होला सें वैयक्तिकता कें समावेश मिलै छै। वैयक्तिक आरो निर्वैयक्तिक अंगिका निबंधों कें साहित्य सचमुचे विपुल छै। यही सें यहाँ मात्र निबंधकारसिनी कें नामोल्लेख सें ही संतोष करै लें पड़ी रहलों छै।

आधुनिक अंगिका-साहित्यों में निबंध कें ऊ सब भेद प्राप्त होय छै जे कि मुख्यतया कथात्मक, वर्णनात्मक आकि चिन्तनात्मक निबंध वर्गों में आवै छै। कथात्मक निबंध पौराणिक आकि काल्पनिक कथा कें आधार बनाय कें लिखलों गेलों निबंध छेकै। कुमारी मृणालिनी चौधरी-कृत 'दुर्गा पूजा कें झाँकी' (१९७८), बूँटों कें नाक टेढ़ों कैन्हें ? (१९८१) निबंध कथात्मक वर्ग कें ही निबंध छेकै। मनुष्य आकि प्रकृति आरनी पर आधारित वर्णनात्मक निबंधो कम नै लिखलों गेलों छै, जे कि आपनों शैली में विवरणात्मक निबंधों कें कोटि कें निर्माण करै छै।

'बोलबम' (श्रीमती मंजुला देवी), 'गरीब देश' (अर्द्धेन्दु शेखर पाण्डेय), 'हौंर आरो गाड़ी' (डॉ० चौधरी/'चकोर'), 'तीज त्योहार आरो भारतीय नारी', 'बौंसी मेला' (श्रीमती विनोदबाला सिंह), 'श्रीराम कें प्रकृति-वर्णन' ('चकोर'), 'अंगिका लोक-गीतों में भारतीय संस्कृति के अवदान' (डॉ० निर्मल कुमार सिंह), 'अंगिका में शृंगार रस' (परशुराम ठाकुर 'ब्रह्मवादी') आरनी निबंध वर्णनात्मक आकि विवरणात्मक कोटि कें छेकै।

हेना कें तें डॉ० समीर, डॉ० निर्मल कुमार सिंह आरनी के निबंध आलोचनात्मक निबंध कें भी एक भेद बनावै छै, मतरकि रुझान आरो बहुलता कें दृष्टि में अंगिका कें चिन्तनात्मक निबंधों कें सृजन प्रचुरता सें होलों छै। सर्वश्री जन्मेजय-कृत 'कवि' आरो 'वन्देमातरम्', शशि भूषण पाठक-कृत 'सिनेमा आरो समाज', राधाकृष्ण चौधरी-कृत 'मुखौटा', देवेन्द्र -कृत 'कविता अमर छै', 'चकोर'-कृत 'सच्चा शरणागति कें रहस्य', भूतनाथ तिवारी-कृत प्रेम आरो संस्कार', अनिल चन्द्र ठाकुर-कृत 'मन-घटा में मनोहर छटा' आरनी निबंध अंगिका कें चिन्तनात्मक निबंध कें कोटि कें छेकै। अनिल चन्द्र ठाकुर जी नें 'मन-घटा में मनोहर छटा' - शीर्षक सें राजनीतिक नीयत, जीवन-मृत्यु आरनी विषय पर प्रभावी लघु निबंधों कें रचना करनै छै।

मतरकि यहाँ ऊ दू निबंधों कें चर्चा आवश्यक होतै जे कि अंगिका निबंधों कें स्वरूपों कें स्थिर करतें निबंध छेकै। 'समीक्षात्मक निबंध' (१९९५) में पूर्व-उल्लिखित निबंधों कें अतिरिक्त डॉ० समीर कें चार-टा आरो निबंध संग्रहित छै -- 'भाषा, साहित्य आरो लिपि', 'अंग-महाजनपद आरो विक्रमशिला विश्वविद्यालय', 'अंगिका भाषा आरो साहित्य' तथा 'सिद्ध कविसिनी रों रचनासिनी में अंगिका रों स्वरूप।'

दोसरों निबंध-संग्रह श्री विवेकानंद झा कें छेकै। ई संग्रहों कें शीर्षक छेकै 'नर सें नारायण होय कें जुदा-जुदा पथ'। 'आज' (पटना, ३० जून, १९९७) कें एक समाचारों सें ई ज्ञात होय छै कि है संग्रहों में निबंधकार झा जी नें भारतीय दर्शन में आध्यात्मिक-लौकिक सुखों कें जे अनेक मार्ग बतैने छै ओकरै पर अलग-अलग शीर्षकों सें छोटों-छोटों निबंधों कें निर्माण करलों गेलों छै।

सर्वमान्यता कें अनुरूप डॉ० डोमन साहु 'समीर' आरो श्री विवेकानन्द झा नें आपनों-आपनों निबंधों कें छोटों आकार दै कें विशेष खेयाल राखने छै। दोनों निबंधकारों में केन्द्रीय विषयों सें दूर भटकै कें प्रवृत्ति नै छै, बल्कि निबंधों कें मिजाजों कें अनुकूले छै। हाँलाकि डॉ० समीर कें निबंध-लेखन में स्वच्छंदता कें प्रवृत्ति मिली जाय छै। भले ही, निबंधों कें शीर्षकसिनीं निबंधों कें निर्वैयक्तिक

होय कें आभास करैतें रहें, मतरकि दोनों निबंधकारों कें निबंधसिनी में वैयक्तिक राग सें बँधलों गद्यात्मक अभिव्यक्ति छै। एकरों एकटा मुख्य कारण छेकै - वर्ण्य विषय आरो लेखक कें बीच अद्वैतावस्था। सबसें बड़ों बात कि दोनों निंबधकारो कें निबंधों में चिन्तन कें क्रमिक, विवेकपूर्ण, सुगठित आरो कलात्मक रूप मिलै छै। ऊ नि:संदेह अंगिका निबंध साथें निबंध कें स्वरूपों कें ठोस पहचान दै में सक्षम छै।

१९९७ ई० में डॉ० चौधरी कें एक गद्य-संग्रह 'लघु कथा आरो ललित निबंध' शीर्षकों सें ऐलों छै, जै में डॉ० चौधरी कें दू निबंध 'लारों' आरो 'हँकारों' प्रकाशित छै। ललित निबंध क़ें दृष्टि सें 'लारों' कें अपेक्षा 'हँकारों' श्रेष्ठ निबंध ठहरै छै। 'लारों' में लालित्य विषय-प्रतिपादन कें कारण नैं, अन्य बातों कें संस्मरण कें कारण छै। यही सें ई संस्मरण ज्यादा छेकै, निबंध कम।

अंगिका निबंध-साहित्यों कें संपूर्ण विकास लेली यै भाषा में अनुवादित निबंधों के प्रकाशनों जोरों पर दिखै छै। 'तीर्थ की छेकै ?', 'साधना कें आवश्यकता', 'मनुष्य कें चाह', 'आय मूर्ति बोलतै', 'कर्म आरो कृपा' आरनी अंगिका भाषा में अनुवादित हिंदी निबंध छेकै, जेकरों अनुवाद में श्री विद्यानंद किशोर नें आपनों कौशल कें अच्छा परिचय देलें छै।

१९९४ ई० में श्री प्रभात रंजन सरकार कें सैंतीस-टा हिंदी लघु निबंधों कें अंगिका-अनुवाद-संग्रह 'आयजकों समस्या' प्रकाशित होलों छै। यैसिनी लघु निबंधों कें अनुवादकर्ता छेकै श्री गुरु प्रसाद सिंह। सृष्टि, प्रकृति, सामाजिक शोषण, जातिवाद, विज्ञान, पूंजीवाद, ट्रेड यूनियन, कृषि, व्यापार, मानवताबोध, स्त्री-दशा, दहेज, सामाजिकता कें ह्रास, राष्ट्रवाद, भाषा, संस्कृति, आबादी-वृद्धि, दलगत राजनीति, लोकतंत्र, विश्व-बंधुत्व आदि विषयों पर लिखलों गेलों श्री प्रभात रंजन सरकार कें ई-सब निबंधों कें अनुवाद सें अनुवादक गुरु प्रभात सिंह जी कें विश्व-दृष्टि कें पता लगै छै। 'अंगप्रिया' (मार्च, १९९४) में छपलों श्री विकास पाण्डेय कें 'अंगिका-काहनी : विकास-कथा' अपनों विषयों कें सूचनाप्रद निबंध छेकै।

आय अंगिका में निबंध-साहित्यों कें सृजन लेली प्रबल रुचि मिली रहलों छै। तैयो ई कहै लें पड़तै कि जोंन अंगिका निबंधों कें जन्म अंग-जनपदों कें गौरव-गान आकि एकरों अस्तित्व-स्थापना कें चिंता सें संभव होलै ओकरा सें आभियों ई भाषा कें निबंधों कें मुक्ति नैं मिलें पारलों छै। अधिकतर विषयगत निबंधों कें सृजन कें पीछूँ ई मुख्य प्रेरणा आरो जोर रहलों छै जेकरों कारणें वैयक्तिक निबंधों कें निर्माण कें प्रवृत्ति कम उभरें पारलों छै। यहें कारण छै कि यहाँ लेखक (व्यक्ति) कें भावना, हर्ष, विवाद, सौन्दर्य कें ललक जोंन मात्रा मे उभरना चाहियों, ओत्तें नैं उभरें पारलें छै। वस्तु कें प्रति व्यक्ति (लेखक) कें जे

भावनात्मक अभिव्यक्ति होलों छै ऊ प्रत्यक्ष नै, प्रच्छन्न रूपों में छै, जब कि एक पूर्ण निबंध-विषय सें कौंही अधिक ई साहित्य-विधा में लेखक कें व्यक्तित्वों के प्रकाशन पैलों जाय छै।

शब्दचित्र (रेखाचित्र)

शब्दचित्र आकि रेखाचित्र कम-सें-कम शब्दों में एक निश्चित बिन्दु सें कोय विषय के प्रतिविम्ब खड़ा करै कें साहित्य-शैली छेकै। आपनों स्वरूप आरो रूपों से शब्दचित्र कहानी से बहुत भिन्न नैं होय छै। सच तें ई छेकै कि कोय कहानी कभी-कभी शब्दचित्र आरो कोय शब्दचित्र काहनी बनी कें आवै छै। हेनों रचना के संबंध मे कोनो एक निश्चित वर्गों में रखना एकदम कठिन होय जाय छै। शब्दचित्र मे जेना एक चित्रकार एकाधे रेखा खींची कें कोय विषयों कें स्पष्ट करी दै छै होनें कोय रचनाकार कुछुवे शब्दों कें बलों पर पात्र आकि घटना कें रूपायित करी दै छै। बिना रंगों कें या बहुतसिनी रेखा कें उपयोग कें बिना, कुछेक रेखा या कुछेक शब्दों कें सहारा सें चित्रांकन करबों निःसंदेह रेखाचित्र, आत्मकथा या जीवनी सें अलग किसिमों कें साहित्य छेकै, जे आपनों साम्य अधिक-से-अधिक कहानी साहित्यों सें राखै छै।

अंगिका मे शब्दचित्र कें प्रारम्भो है भाषा कें कहानी-संग्रह 'सात फूल' (१९६२ ई०) कें कहानी 'पाप लिखतौ' आरो 'रॉंगाधारी' में रेखाचित्र कें उत्कर्ष मे देखलों जावें सकै छै। 'पाप लिखतौ' में जहाँ वर्णन सें चित्र-विधान छै वहाँ 'रॉंगाधारी' मे सलाप-संयोजन सें।

श्री महेन्द्र प्रसाद जायसवाल के 'शनिचरा' केरों रचना श्रेष्ठ शब्दचित्रे कें उदाहरण छेकै। श्री उमेश, राधाकृष्ण चौधरी, जगदीश पाठक 'मधुकर', गुरु जी, रामावतार 'राही' के बहुने व्यंग्य-कथा व्यंग्यात्मक शब्दचित्रे कें उदाहरण छेकै। श्रीकेशव के 'काकी', महेन्द्र प्रसाद जायसवाल कें 'जिनगी कें सत्त', आभा पूर्वे कें 'नत्थूराम' आरनी कहानी शब्दचित्रो छेकै।

अंगिका मे शब्दचित्र-साहित्यों कें शुरूआत कथाकार श्री सुरेन्द्र प्रसाद यादव सें मानलों जैतै। १९८० ई० सें १९९० ई० कें बीच यादव जी नें अंगिका मे तीस सें अधिक शब्दचित्र लिखने छै। 'मगरी', 'समय-चक्र', 'स्वप्न कें समाधि', 'खाली गाहक भड़कावै छै', 'गाँव कें सोमन दा', 'भूत रों लँगोटी कें करिश्मा', 'शराब कें घाटी में', 'नकली कैदी', 'खड़ीसही', 'अबरी', 'अमीन-जमीन',

'सिरैतिन-कठैतिन', 'निशान', 'नारद मुनि', 'सुग्गा', 'सरोवर में विद्यालय', 'मधिया', 'विधवा रानी' आरो 'चैलिया राजा' आरनी सुरेन्द्र प्रसाद यादव जी कें प्रमुख रचना हिंदी में कहानी कें रूपों में १९९४ ई० में प्रकाशित होय चुकलों छै। कुछेक शब्दचित्र आपनों मूल रूपों में 'आंगी' कें कयेक अंकों में प्रकाशित होलों छै। हालाँकि हुनकों ई-सब शब्दचित्र 'अंगिका कहानी' कही कें छपलों छै।

यादव जी कें ई-सब शब्दचित्रों में शब्दचित्रों कें समस्त गुण सघनता सें उपस्थित छै। शब्दचित्रों कें पात्र आपनों कोय विशेष गुण कें लैकें बड़ी तीव्रता में पाठकों कें समक्ष आवै छै, जे कि शब्दचित्रों कें आपनों एक विशिष्ट पहचान होय छै। दोसरों ई कि यादव जी कें ई-सब कहानी में शब्दचित्र नाखी गंभीर कथात्मकता कें अभाव स्पष्ट छै। अंगिका में सुरेन्द्र प्रसाद यादव नि:संदेह एक कुशल शब्दचित्रकार कें रूपों में आवै छै, जेहनों कि महेन्द्र प्रसाद जायसवाल आरो श्रीकेशव जी।

श्रीकेशव कें सब्भे अंगिका कहानी कें एक विशेषता छेकै ओकरा में रेखाचित्रों कें पर्याप्त समावेश होबों। होना कें तें श्रीकेशव नें शब्दचित्र कही कें भी अंगिका में विपुल साहित्यों कें सृजन करने छै। मई, १९९७ ई० में श्रीकेशव कें पाँच-टा शब्दचित्र 'बुढ़वा पीपर', 'लाल बाबा', 'दुखनी दुरगा', 'महादेव' आरो 'भैंस दरोगा' कें प्रकाशन होलों छै। श्रीकेशव कें रेखाचित्र आरो कहानी में कोय विशेष अन्तर करबों मुश्किल छै। लेखक कें शब्दचित्र जों कहानी छेकै तें कहानी नि:संदेह शब्दचित्रो छेकै। 'भैंस दरोगा' शब्दचित्र कें स्वयं आकारे एकरा कहानी कें दायरा में लानी कें खाड़ों करै छै।

आधुनिक अंगिका गद्य-साहित्यों में उपन्यास, कहानी, नाटक, संस्मरण, शब्दचित्र, जीवनी, आलोचना आरनी कें अलावे 'डायरी' गद्य-साहित्यों कें लेखन आम होय रहलों छै ; मतरकि हेनों साहित्यों कें प्रकाशित रूप आभी तांय उपलब्ध नैं छै। गोष्ठीये मे यै तरहों कें गद्य-साहित्य कें सुनबों-सुनैबों केन्द्रित छै। हेकरों एक बड़ों कारण छेकै अर्थाभाव। एको टाका कें सरकारी सहयोग अंगिका कें नैं छै। आपनों-आपनों सीमित आय कें बलों पर अंगिका मे जौन पत्रिका कें प्रकाशन होय छै, पहिलें तें ओकरों उमिर बहुत कम होय छै आरो जै-टा अंक निकलें सकै छै, वै में गद्य कें विभिन्न विधा के समेटबों मुश्किले रहै छै। तैयो सरकारी उपेक्षा कें बादो, आपनों सीमित साधन आरो ताकतों कें बलों पर अंगिका मे जत्तें आरो जै रङों कें गद्य-साहित्य उपलब्ध छै, ऊ सचमुचे चौकावैवाला बात छेकै।

साक्षात्कार

शब्दचित्र नाखी साक्षात्कार साहित्यों कें अपूर्व विकास आधुनिक अंगिका गद्य मे देखलों जावे सकै छै।

अंगिका मे साक्षात्कार विधा कें विधिवत् विकास 'अंगप्रिया' कें प्रकाशन मे होय छै। 'अंगप्रिया' कें मई, १९८९ अंक में डॉ० परमानंद पाण्डेय साथें श्रीमती मीरा झा कें भेंट-वार्ता प्रकाशित होलों छै, जे कि अंगिका में एक अच्छा साक्षात्कार नाखी मानलों जैतै। १९८२ ई० कें 'अंगप्रिया' में श्री उमेश जी कें साथे श्रीमती मीरा झा कें ही भेंट-वार्ता प्रकाशित करलों गेलों छै। बाद मे 'अंगप्रिया' (१९९१) में श्री भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' साथें श्री विकास पाण्डेय कें भेंट-वार्ता, 'आंगी' (१९९६) में डॉ० डोमन साहु 'समीर' साथें श्रीमती आभा पूर्वे कें बातचीत कें अतिरिक्त १९९७ ई० में 'नई बात' (दैनिक, भागलपुर) मे महाकवि सुमन सूरो, डॉ० तेजनारायण कुशवाहा, डॉ० श्याम सुन्दर घोष, प्रो० कमला प्रसाद 'बेखबर', डॉ० मधुसूदन साहा कें साथें श्रीमती पूर्वे कें भेंट-वार्ता प्रकाशित होलै।

साक्षात्कार साहित्यों कें एक रूप 'परिसंवाद' कें भी प्रचलन आय अंगिका साहित्यों कें बीच होय रहलों छै। जून, १९८२ कें 'अंगप्रिया' में अंगिका भाषा-साहित्य पर आयोजित परिसंवादों कें आयोजक श्री ओंकारनाथ मिश्र नें वै मे श्री सत्येन्द्र नारायण अग्रवाल, डॉ० माहेश्वरी सिंह 'महेश' आरा श्री भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' सें पूछलों प्रश्नों कें उत्तर राखने छै।

नि:संदेह 'अंगप्रिया' कें माध्यमों सें संपादक सुधाकर जी नें जोन परिसंवादों कें सुन्दर परम्परा शुरू करनें छेलै ओकरों कोय मजबूत विकास बाद कें कोनो पत्रिका मे नै मिलें छै।

आलोचना

आलोचना, जे कि कोय कृति कें मूल्यांकन आकि परीक्षण होय छै, अंगिका मे नि:संदेह एक अत्याधुनिक गद्य-विधा छेकै। हेना कें तें कोय विद्वान् ई भाषा मे आलोचना कें सूत्रपात अंगिका कें रीति-साहित्य तक खींची कें पीछू लै जावें सकै छै, मतरकि उन्नैसमी शताब्दी कें पूर्व आकि होकरौ सें बहुत पहिनें लिखलों अंगिका कें रीतिकाव्यों मे आलोचना कें कोय स्वरूप नै मिलै छै। लक्षण

कें अभावों में खाली उदाहरणों कें कविता कें आधार पर ऊ-सब रीतिकाव्यों कें सैद्धान्तिक आलोचना कें अन्तर्गत राखबों न्याय -संगत नैं बुझावै छै।

अंगिका में आलोचना-साहित्यों कें विकास कें संधानों कें जरूरतो तभिये सें पड़ै छै, जबें सें अंगिका भाषा-साहित्यों कें पुनर्प्रतिष्ठा लेली १९६० ई० में सक्रिय आन्दोलनों कें जन्म होय छै। महापंडित राहुल सांकृत्यायन, डॉ० माहेश्वरी सिंह 'महेश', पं० गदाधर प्रसाद अम्बष्ठ, डॉ० लक्ष्मीनारायण सुधांशु, डॉ० वैद्यनाथ पाण्डेय, श्री राधा वल्लभ शर्मा कें बाद अंगिका भाषा-साहित्य लेली जन-चेतना जागृत आरो साहित्य-सर्जना करै कें काम डॉ० परमानन्द पाण्डेय, डॉ० तेजनारायण कुशवाहा, डॉ० अभयकान्त चौधरी, श्री नरेश पाण्डेय 'चकोर' आरनी साहित्यकार नें आगू बढ़ैबों शुरू करलकै ; मतरकि हिनकासिनी कें जे समीक्षा-साहित्य प्राप्त होय छै ओकरों भाष्य-भाषा हिंदी (खड़ी बोली) होला कें कारण पूरा-पूरा अंगिका कें आलोचना-साहित्यों में नैं राखलों जावें सकें। ई-सब कें अंगिका-साहित्यों में मानै कें पीछू कें कारण यहें छेकै कि हिनकासिनी कें आलोचना में उदाहरण अंगिका काव्ये कें छेकै। बाबा राहुल सांकृत्यायन द्वारा देखैलों गेलों रास्ता पर हाल तक लिखलों गेलों 'अंगिका काव्य में रस-व्यंजना' (१९७९), 'अंगिका में अलंकार' (१९८१), 'अंगिका कें महायात्रा-गीत' (१९८३), 'अंगिका लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन' (१९८४) आरनी आलोचना पुस्तकसिनी में ई विषय अबाध रूपों सें मिलै छै।

ई रडों कें आलोचना-विषयक भाषा-शैली ग्रहण करै के पीछू ढेरे कारण हुवें पारै छै। डॉ० डोमन साहु 'समीर' कें अनुसार, अंगिका कृति कें मूल्याकन में खड़ी बोली कें अपनैला सें एक तें अंगिका-साहित्यों कें समृद्धि कें पता विभिन्न भाषा-भाषी विद्वानों कें हुवें पारतै, दोसरों ई कि यै सें अंगिका कें सबध राष्ट्रभाषा हिंदी सें बनलों रहतै, कोनो विरोध कें भाव नैं दिखैतै।

प्राप्त सामग्री कें आधारों पर अंगिका मे आलोचना-साहित्यों कें विधिवत् लेखन १९७३ ई० सें ज्ञात होय छै। द्वितीय संस्करण कें 'पनसोखा' कविता-संग्रह में कृति कें साथे श्री जगदीश चन्द्र झा कें एक संक्षिप्त समीक्षा प्रकाशित छै। अंगिका में आलोचना कें सूत्रपात यहें परिचयात्मक आलोचना सें होय छै आरो ई मानना चाहियों कि ई भाषा में जे भी आरम्भिक आलोचना लिखलों गेलै ऊ अधिकांशत: परिचयात्मक रूपों कें ही छेकै। 'पंचरंग चोल' (१९७१) मे श्री सुमन सूरो कें, 'पछिया पुकारै छै' (१९८०) मे डॉ० अमरेन्द्र कें 'गुमसैलों धरती

(१९८४) में श्री सुमन सूरो कें, 'गुमार' (१९८४) में श्री सुमन सूरो, डॉ० परमानन्द पाण्डेय, डॉ० तेजनारायण कुशवाहा, श्री भुवनेश्वर सिंह 'भुवन', डॉ० माहेश्वरी सिंह 'महेश' आरो श्री राजकुमार कें, 'घैरकों' (१९८५) में श्री सुमन सूरो कें, 'चिंता' (१९८५) में 'उत्पल' जी कें, 'शनिचरा' (१९८६) में श्री सुमन सूरो कें, 'चम्पा कें राजकन्या' (१९८७) में डॉ० डोमन साहु 'समीर' कें, 'रूप-रूप प्रतिरूप' (१९८८) में श्री अनिल शंकर झा कें आरो अनिरुद्ध प्रसाद विमल कें कृति 'कागा की संदेश उचारै' कें मूल्यांकन परिचयात्मक आलोचना कें उदाहरण छेकै। 'आंगी' (जनवरी, १९९७) में डॉ० 'समीर' कें 'उध्वरेता' (अंगिका महाकाव्य) पर संक्षिप्त समीक्षा येहें ढंगों कें छेकै।

मतरकि बहुतविध रूप आरो विकास कें दृष्टि सें अंगिका आलोचना पिछलका डेढ़-दू दशकों कें अवधि में ही काफी विकास करी चुकलों छै। श्री सुमन सूरो कें 'अंग-माधुरी कें दस वर्ष' आरो 'अंगिका काव्य कें विकास रेखा' (१९८०), डॉ० अमरेन्द्र कें 'अंगिका कें आठमों दशक मे कविता-कहानी कन्नें ?' (१९८२), अमरेन्द्र कें ही 'भोर : सरङ सें धरती तक कें यात्रा' (१९८३), देवेन्द्र कें 'छाहुर, एक नया उपन्यास' (१९८३), 'पनसोखा में पावस, पावस में पनसोखा' (१९८४), 'सती-परीक्षा : स्वतंत्र भारत के रामायणी कथा' (१९८४), डॉ० तेजनारायण कुशवाहा कें 'किसान कें जगावों : एक समीक्षा' (१९८४), डॉ० परमानन्द पाण्डेय कें 'किसान देशों कें शान' (१९८४), डॉ० कुशवाहा कें ही 'अंगिका कें फेंकड़े और लोरियाँ' (१९८४), श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह कें 'कहानीकार चकोर' (१९८५), श्री सुरेश मंडल 'कुसुम' कें 'नाटककार चकोर' (१९८५), डॉ० अमरेन्द्र कें 'प्यारे उचितलाल की कहानी रहि जायगी' (१९८५) आरो 'आधुनिक अंगिका काव्य, एक प्रवृत्यात्मक सर्वेक्षण' (१९८५), श्री सुमन सूरो कें 'अंगिका भाषा आरो साहित्य' (१९८५), अमरेन्द्र कें 'छानबीन में छाहुर' (१९८६), 'चिन्तन-अनुचिन्तन में चिंता' (१९८७), 'अंगिका काव्य कें सौन्दर्य-बोध' (१९९१) आरनी कुछेक हेनों आलोचना छेकै, जेकरों प्रकाशन 'अंग-माधुरी', 'चम्पा', 'अंगप्रिया' में होलों छै।

श्री सुमन सूरो- कृत 'अंगिका भाषा आरो साहित्य' भाषा-साहित्यों पर समीक्षा-पुस्तक छेकै जें गवेषणात्मक आलोचना कें रूप लेलें होलों छै, जबें कि 'अंगिका कें आठमों दशक कें कविता-कहानी कन्ने ?' प्रगतिवादी आलोचना, 'भोर : सरङ सें धरती तक कें यात्रा' प्रभाववादी समीक्षा, 'पनसोखा में पावस, पावस मे पनसोखा' ऐतिहासिक समीक्षा, 'सती-परीक्षा : स्वतंत्र भारत कें रामायणी

कथा' मिथकीय आलोचना, 'प्यारे उचित लाल की कहानी रहि जायेगी' जीवन-वृतान्तीय आलोचना, 'छानबीन में छाहुर' मनोवैज्ञानिक आलोचना कें उदाहरण छेकै।

आधुनिक समीक्षा-पद्धति सें अलग अंगिका कें आलोचना-साहित्यों में सैद्धान्तिक आलोचना कें ही प्रमुखता मिलै छै, जै में लक्षण कें साथें उदाहरण कें भी संयोग राखलों गेलों छै। १९९१ ई० में अंगिका भाषा में लिखलों अंगिका कें पहिलों सैद्धान्तिक आलोचना 'रस-मीमांसा' कें प्रकाशन होलै। है पुस्तकों कें लेखक छेकै श्री गंगा प्रसाद राव। राव जी नें वैज्ञानिक दृष्टि कें अपनैतें हुवें है किताबों कें पहिलों अध्यायों में - भाव, विभाव, अुनभाव, संचारी आरो स्थायी भावों कें परिभाषा आरो भेद, दोसरों अध्यायों में दसों रसों कें परिभाषा, अंग-उपांगों कें परिभाषा आरो उदाहरण, तेसरों अध्यायों में विभिन्न रसों कें रसाभास, चौथों अध्यायों में रस-निष्पत्ति कें विभिन्न सिद्धान्त आरो पाँचमों अध्यायों में भावाभास, भाव-शान्ति, भावोदय, भाव-संधि आरो भाव-सबलता पर विस्तृत विवेचन करने छै।

'रस-मीमांसा' कें बाद १९९६ ई० तक अंगिका में कोय उल्लेखनीय आलोचनात्मक पुस्तकों कें अभाव मिलै छै। यै अवधि में निबंधकारों कें ही कुछेक आलोचनात्मक लेख लिखलों मिलै छै, जे कि आलोचना, आलोचना के आरो-आरो भेदों कें समक्ष राखै छै। डॉ० निर्मल सिंह कें 'एक संस्कार-गीत : एक व्याख्या' (१९९४) टीका-आलोचना छेकै तें श्री विकास पाण्डेय कें 'अंगिका कहानी : विकास-कथा (१९९४) प्रभाववादी आलोचना कें एक उदाहरण छेकै।

वहें समय में नैसर्गिक आलोचना कें भी प्रचलन रहलै। नैसर्गिक आलोचना में हेकरे अभिव्यक्ति होय छै कि कोय कृति अच्छा लागलै तें 'कैन्हें अच्छा लागलै', हेकरा पर यहाँ विचार नैं होय छै। हालाँकि ई नैसर्गिक आलोचना कें उदाहरण स्व० अनूपलाल मंडल आरनी कें पात्र-रूपों में लिखलों आलोचना 'अंग-माधुरी', दिसम्बर १९९३ ई० सें बहुत पहिलें अस्तित्व में मिलें लागलों छेलै।

'अंगप्रिया', १९९४ में सुमन सूरो कें आरो 'जइबै अंग-देश में' में श्री भवेशनाथ ठाकुर कें समीक्षा नैसर्गिक आलोचना कें ही उदाहरण छेकै। हेनों आलोचना कें अधिक लोकप्रिय बनावै में सर्वश्री महेन्द्र प्रसाद जायसवाल, रघुनन्दन झा 'राही', राजकुमार, राम शर्मा 'अनल' आरनी कें नाम विशेष रूपों सें लेलों जावें सकै छै।

नैसर्गिक आलोचना सें अलग परिचयात्मक आलोचना कें ही एक रूप

पुस्तक रिव्यू' कें भी प्रचलन अंगिका में पिछला कुछ वर्षों सें मिलें लागलों छेलै, मतरकि ओकरा 'रिव्यू' नै कहलों जावें सकें। पुस्तक-प्रकाशक कें नाम आकि ओकरों दाम साथें एक पंक्ति में प्रशंसा छापी देबों 'रिव्यू' कें स्वरूप नैं हुवें पारें छै। 'आंगी', १९९७ में 'अंगिका-हिंदी-शब्दकोश' पर श्रीमती आभा पूर्वे कें जे दुरुस्त पुस्तक - 'रिव्यू' प्राप्त होय छै, वै रडो कें 'रिव्यू' कें विकास ठीक ढंगों सें होलों नैं मिलै छै। आधुनिक समयों में हेनों आलोचनाओ कें बहुत जरूरत छै; कैन्हें कि आयकों भागमभाग के समयों में हेनों आलोचना एक निगाह में पुस्तकों के पूरा परिचय दै जाय छै।

अंगिका कें आलोचना-साहित्यों कें अन्तर्गत कृति-विशेष में प्रकाशित कृतिकारों कें आत्मकथ्यो आबै छै। हालाँकि हेनों आत्मकथ्य वाला आलोचनाओ, जे कि कृति कें रचना-प्रक्रिया आरो ओकरों ऐतिहासिक आकि जीवन-वृतांतीय आलोचना में भारी सहायक बनै छै, कें कमी अंगिका में रहलों छै। यै दिशा में बड़ों-सें-बड़ों कृतिकारों कें उदासीनता बेशक अखरैवाला बात छेकै। 'पंचफोरन', 'भोर ?' गेना', 'उध्वरिता', 'पंचगव्य' आरनी -हेनों कृतियों में संबद्ध कृतिकार नें आत्मकथ्य कें रूपों में आपनों कृति कें रचना-प्रक्रिया पर जोंन प्रकाश डालने छै, ऊ-सब अंगिका-आलोचना कें समृद्धिशाली विकास कें रेखांकित करै छै।

अंगिका के विभिन्न विधा कें साहित्यों कें विकास साथें आय ई भाषा कें आलोचना-साहित्यों में अपेक्षित विस्तार मिलें लागलों छै। खाली अंगिका-कहानी लैकें श्री विकास पाण्डेय कें आलोचना 'अंगिका कहानी : विकास-कथा' (१९९४) कें प्रकाशन ऐतिहासिक महत्व राखै छै।

१९९५ ई० में डॉ० डोमन साहु 'समीर' कें 'समीक्षात्मक निबंध' कें प्रकाशन होलों छै, जै में अधिकांश रचना तें विवरणात्मक निबंधों कें नगीच अधिक छै, मतरकि वै संग्रहों कें निबंध - 'अंगिका भाषा रों प्रारम्भिक कवि - स्वर्गीय दर्शन दुबे', 'लोकप्रिय अंगिका जनकवि - सदुपाध्याय भवप्रीतानन्द ओझा' आरो 'अंगिका-सपूत पंडित बुद्धिनाथ झा 'कैरव' जरूरे समीक्षात्मक निबन्ध छेकै। सस्मरण आरो समीक्षा कें संयुक्त रूपवाला आलोचना-पद्धति सें अंगिका में ललित समीक्षा के सुव्यवस्थित रूपों में प्रस्तुत करै में डॉ० समीर अग्रगण्य रूपों में आवै छै। डॉ० अमरेन्द्र कें 'अंगिका कहानी : दिशा, दशा आरो दर्शन' (१९९७) आरो डॉ० डोमन साहु 'समीर' कें 'श्री आमोद जी आरो हुनकों भोर ?' (१९९७), डॉ० नीलम महतो कें 'आधुनिक अंगिका कहानी रों विषय-संसार' (१९९७) आरनी

उत्कृष्ट आलोचना-लेख प्रकाश में ऐलों छै। डॉ० नीलम महतो कें ही लिखलों 'अंगिका-हिंदी कें लघुकथा रों रचना-संसार' (१९९७) तुलनात्मक आलोचना कें एक अच्छा उदाहरण छेकै।

परिचयात्मक आलोचनाओ कें क्रम अधिक विकसित रूपों में ऐलों छै। 'खोरना' में श्री देवेन्द्र कें, 'मुष्टियुद्ध' में श्री आमोद कुमार मिश्र कें, 'अंग-सागरी' में डॉ० तेजनारायण कुशवाहा कें आरो 'जइबै अंगेदश में' डॉ० रमेश मोहन शर्मा 'आत्मविश्वास', डॉ० तेजनारायण कुशवाहा आरो श्री आनन्दी प्रसाद ठाकुर कें आलोचना परिचयात्मक आलोचना कें विकास कें रेखांकित करतें होलों आलोचना छेकै।

१९९७ ई० अंगिका कें सैद्धान्तिक आलोचना कें समृद्धि कें दृष्टियो सें उल्लेखनीय वर्ष रहतै। प्रो० नवीन निकुंज कें 'भारतीय काव्य शास्त्र' कें प्रकाशन यही साल होलै। चालीस पृष्ठों कें ई समीक्षा-पुस्तक कें आलोचक नें काव्य-शास्त्र कें परम्परा, काव्य-प्रयोजन, हेतु आरो लक्षण, शब्दशक्ति, रस आरो भेद, अलंकार आरो भेद, छंद आरो प्रमुख छंद-भेद कें छों अध्यायों में बाँटी कें यैसिनी विषयों पर सरल विवेचना प्रस्तुत करने छै। १९९७ ई० में ही डॉ० अमरेन्द्र कें तीन-टा आलोचना-पुस्तकों कें प्रकाशन मिलै छै। हालाँकि पृष्ठ-संख्या कें दृष्टि सें ई तीनों पुस्तक लघुकाये छेकै, मतरकि अपनों विषय कें खेयालों सें बहुत अधिक सीमा तक पूर्ण कहलों जैतै। 'छंद-छौनी' में छंद कें पूरा व्याकरण कें साथें छंद-भेद आरो हिंदी में प्रचलित प्रमुख छंदों कें उदाहरणों अंगिका-काव्य सें ही लेलों गेलों छै। 'छंद-मौनी' में छंद कें व्याकरण कें साथें अंगिका कें कत्तेंनी लोक-छंदों कें लक्षण आरो उदाहरण प्रस्तुत करलों गेलों छै, जबें कि गजल रों पिंगल अरबी-फारसी छंद कें व्याकरण आरो संस्कृत छंद सें ओकरों साम्य देखैलों गेलों छै। फारसी छंद कें उदाहरणों अंगिकाये में राखलों गेलों छै। हिंदी-अंगिका-फारसी छंदों कें व्याकरण पर आलोचनाओ ई पुस्तक कें निर्माण सें अंगिका कें आलोचना-साहित्यों कें उत्तरोत्तर विकास आरो समृद्धि कें स्पष्ट होय छै।

होना कें तें ई बातों सें इन्कार नैं करलों जावें सकै छै कि अंगिका मे सैद्धान्तिक आलोचना कें जत्तें मजबूत आरो विस्तृत विकास हुवें पारलों छै होनों आलोचना कें आधुनिक रूप में विकास नैं हुवें पारलों छै। डॉ० परमानन्द पाण्डेय, डॉ० तेजनारायण कुशवाहा, डॉ० डोमन साहु 'समीर' आरनी कें जे आलोचना प्राप्त होय छै, वै में प्राचीन परम्परा कें ही निर्वाह पहिलें छै। नया पीढी कें

आलोचक डॉ० श्याम सुन्दर घोष, प्रो० कमला प्रसाद 'बेखबर', डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव, डॉ० कुमार विमल, प्रो० देवेन्द्र, डॉ० राजेन्द्र पंजियार, डॉ० बहादुर मिश्र, डॉ० सकलदेव शर्मा, डॉ० सुरेन्द्र झा 'परिमल', प्रो० विद्या सिंह, डॉ० तपेश्वर नाथ, डॉ० योगेन्द्र, प्रो० मनमोहन मिश्र, डॉ० शीतल अवस्थी, डॉ० मधुसूदन साहा, डॉ० सुरेन्द्र प्रसाद साह, डॉ० निर्मल कुमार सिंह, प्रो० कृष्ण किंकर सिंह, डॉ० मनाजिर आशिक हरगानवी, डॉ० नीलमोहन सिंह, श्री ध्रुवनारायण सिंह, श्री त्रिभुवन प्रसाद सिंह, डॉ० शंकर मोहन झा, प्राचार्या मीना रानी, डॉ० नीलम महतो आरनी आभी आलोचना लेली पूरा-पूरा सक्रिय नैं हुवें पारलों छै। गोष्ठी में पढ़लों गेलों अंगिका रचनासिनी पर अंगिका कें विद्वान् साहित्यकारों कें सुलझलों आधुनिक आलोचना अवश्य ऐतें रहलों छै। जरूरत ई बातों कें छै कि गोष्ठी में ऐलों आलोचना कें संग्रह हुवें, जेकरा सें अंगिका कें आधुनिक आलोचना-पद्धति पर प्रकाश पड़ें पारतै।

हिन्नें डॉ० डोमन साहु 'समीर' नें अंगिका में 'समीक्षा : एक नया शैली ललित समीक्षा' कें आपनों कलम सें बहुत आगू बढ़ैने छै। 'समीक्षात्मक निबंध' हिनकों हेनें निबंध आरो आलोचना कें सम्मिलित रूपवाला समीक्षा-संग्रह छेकै। संभवतः, डॉ० समीर कें निबन्धात्मक समीक्षा में संक्षिप्त जीवनी कें समावेश रचना-प्रक्रिया कें समझै में मददगार होवै कें दृष्टिये सें लेलों गेलों छै।

अंगिका कें आलोचना-साहित्यों कें वैभव बहुत कुछ हिंदी में पत्र-रूपों में लिखलों गेलों ऊ समीक्षासिनी पर निर्भर छै जे अंगिका भाषा कें आरंभिक प्रकाशित कृति पर नामी-नामी साहित्यकार-द्वारा लिखलों गेलों छै आरो जेकरों अनुवाद आरो प्रकाशन 'चकोर' जी नें 'अंग-माधुरी' कें अंकों में करने छै। श्री अनूपलाल मंडल, डॉ० विष्णु किशोर झा 'बेचन', श्री रामरीझन रसूलपुरी, श्री बाबूलाल मधुकर, महाकवि केदारनाथ प्रभात, श्री श्यामसुन्दर बादल, डॉ० अजित नारायण सिंह 'तोमर', श्री सकलदेव शर्मा, डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव, डॉ० कुमार विमल, डॉ० श्रीरंग शाही, बाबू वृन्दावन दास, डॉ० उदय नारायण तिवारी, श्री रमण शांडिल्य, पं० रामदयाल पाण्डेय, श्री कुलदीप नारायण राय 'झड़प', श्री गदाधर प्रसाद अम्बष्ठ, पं० हंसकुमार तिवारी, डॉ० लक्ष्मी नारायण सुधांशु, डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ० माहेश्वरी सिंह 'महेश', श्री जगदीश मिश्र आरनी कें अंगिका रूपान्तरित प्रतिक्रियात्मक समीक्षा अंगिका भाषा कें आलोचना-साहित्यों कें एक अंग छेकै, जे कि अधिकांशतः नैसर्गिक आलोचना आकि व्याख्यात्मक आलोचना कें रूपों में छै।

सुकवि 'भुवन' आरो नागार्जुन कें काव्य पर लिखलों गेलों समीक्षा डॉ० देवेन्द्र कें तुलनात्मक समीक्षा छेकै तें 'दू पाटन के बीच में' अंगिका कें दू कवि श्री सदानन्द मिश्र आरो 'सरल' जी कें काव्य पर लिखलों गेलों डॉ० अमरेन्द्र कें समीक्षा भी।

हिंदी में अनुवादित डॉ० अमरेन्द्र कें 'कागा की सदेश उचारै ! : अंगिका विरह-काव्य का विराम चिन्ह' अंगिका में निर्णयात्मक आलोचना आरो मनोवैज्ञानिक आलोचना कें उदाहरण छेकै। हिंदी में रूपान्तरित 'आधुनिक अंगिका काव्य का हिंदी व्याकरण' अंगिका में तुलनात्मक समीक्षा कें प्रवृत्ति कें प्रतिमान छेकै, जे में पहिलों बार हिंदी आरो अंगिका कें नामी कवि/कविता कें आमना-सामना राखी कें आधुनिक अंगिका कें प्रवृत्ति कें उजागर करलों गेलों छै।

आधुनिक 'समीक्षा'-पद्धति में मिथकीय आलोचनाओ एक प्रमुख भेद छेकै, जेकरों आधार युग कें अवचेतन सें छै आरो जे में आलोचक कृति में आच्छादित विम्ब कें माध्यमों सें कवि कें आधुनिक चिन्तन कें स्पष्ट करै छै। ई बात सही छै कि अभी अंगिका आलोचना कें समृद्ध विकास नैं हुवें पारलों छै। यहें कारण छेकै कि 'सती-परीक्षा : स्वतंत्र भारत रों रामायणी कथा' - हेनों एकाध श्रेष्ठ मिथकीय आलोचना कें छोड़ी कें दोसरों समीक्षा कें उदाहरण नैं मिलै छै। अवश्ये मार्क्सवादी आरो शैलीगत आलोचना कें दिस कुछेक नया आलोचकों कें धेयान मिलै छै, बहू में शैलीगत सें काँहीं ज्यादा मार्क्सवादी आलोचना कें प्रवृत्तिये उभरी कें ऐलों छै। प्रो० कमला प्रसाद सिंह, डॉ० देवेन्द्र, डॉ० विद्या सिंह, डॉ० नीलम महतो, डॉ० योगेन्द्र, प्रो० रामचन्द्र घोष, श्रीमती मीरा झा, श्री प्रेम प्रभाकर, श्री अचल भारती, श्री गिरिजा शंकर मोदी, प्रो० श्रीकेशव नारायण सिंह, श्री महेश सिंह आनन्द, श्री आमोद कुमार मिश्र, डॉ० बहादुर मिश्र, डॉ० मनाजिर आशिक हरगानवी, डॉ० महेन्द्र प्रसाद जायसवाल, श्री ओमप्रकाश पाण्डेय, प्रो० जनार्दन, श्री विकास पाण्डेय, प्रो० नवीन निकुंज, डॉ० लखन लाल आरोही, डॉ० अमरेन्द्र आरनी मुख्य रूपों सें मार्क्सवादी आलोचना कें अंगिका साहित्यों में ज्यादा तेज करने छै। होना कें तें श्री सच्चिदानन्द 'श्रीस्नेही', डॉ० तेजनारायण कुशवाहा, डॉ० मधुसूदन साहा, डॉ० श्यामसुन्दर घोष, प्रो० मनमोहन मिश्र आरनी कें आलोचना-साहित्यो में शिल्पगत आलोचना कें प्रवृत्तिये प्रखर छै।

१९९७ ई० में प्रकाशित श्रीमती जीवनलता कें 'तुलसी कें काव्य मे राम कें रूप आरो स्वरूप' अंगिका में व्यावहारिक आलोचना पुस्तक छेकै, जे मे आलोचक श्रीमती जीवनलता नें भारतीय आचार्य-वर्ग द्वारा निर्देशित सौन्दर्य कें

आधार पर तुलसी-काव्य मे राम कें वाह्य आरो भावगत सौन्दर्य कें विस्तार सें मीमांसा कें विषय बनैने छै। ई आलोचना-पुस्तक कें भाषा आरो व्याख्या सहज-सरल छै। ई कहलों जावें सकै छै कि श्रीमती जीवनलता कें 'तुलसी कें काव्य मे राम कें रूप आरो स्वरूप' अंगिका में हेनों पहिलों पुस्तक छेकै, जेकरों सीधे-सीधे संबध आलोचना सें छै आरो जेकरों समीक्षा-पद्धति में आलोचक नें समीक्षा कें विभिन्न प्रवृत्तियों कें ग्रहण करतें हुएँ महाकवि तुलसीदास कें सौन्दर्य-दृष्टि कें जाहिर करने छै।

ई साफ तौर सें कहलों जावें सकै छै कि अंगिका में हेनों आलोचना-पुस्तक लिखै/निर्माण करै कें सम्मान अंगिका लेखकों में दृष्टिगत नैं होय छै। हेकरों एक कारण येहें हुएँ पारै छै कि हेनों समीक्षा-पुस्तकों कें प्रकाशक कें अभाव छै। हिंदी में लिखित ई भाषा-साहित्यों कें आलोचना-ग्रन्थ हिन्ने-हुन्ने मिली गेला कें कारणें अंगिका-साहित्य पर जे भी महत्वपूर्ण आलोचना साहित्य प्राप्त होय छै, अंगिका में ओकरों अभाव छै।

अंगिका साहित्यकारों कें आलोचना खड़ी बोली हिंदी में आवै कें एक दोसरों कारण ई रहलों छै कि विभिन्न विश्वविद्यालयों में अंगिका साहित्य पर जे शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत करलों जाय छै, ओकरों भाषा खड़ी बोली कें होय छै। जबतक अंगिका साहित्य पर लिखलों जाय रहलों पी-एच० डी०, डी० लिट्० डिग्री वास्तें शोध-प्रबन्ध अंगिका भाषा में नैं आवै छै तब ताँय अंगिका कें आलोचना-साहित्यों कें अपेक्षित विशालता असंभवे रहतै। परंतु, है बात पूरा विश्वास कें साथ कहलों जावें सकै छै कि अंगिका में जोंन समीक्षा-पद्धति कें नींव बाबा राहुल सांकृत्यायन नें राखने छेलै ऊ आबें काफी फैली चुकलों छै। आबें भाष्य या समीक्षा लेली खाली अंगिका कें काव्ये कें नैं उठैलों जाय रहलों छै, बल्कि गद्य कें दोसरों-दोसरों विधा कें विकास साथें गद्य कें आरो-आरो विधा पर आलोचना लिखलों जाय रहलों छै , आरो अंगिका कें गद्य-साहित्यों पर लिखलों जाय रहलों नया आलोचना कें भाषा अंगिका छेकै, जे कि ई भाषा कें आलोचना-साहित्यों कें समृद्धि कें प्रति आश्वस्त करैवाला छेकै।

लोक-साहित्य (गद्य)

लोक-साहित्य कोय समाज कें आदिम मनोविज्ञान कें अभिव्यक्ति होय छै, जेकरा लोकवार्ता भी कहलों जाय छै। आदिम समाजों कें ई अभिव्यक्ति चाहे

धर्म कें क्षेत्रों में हुवें आकि विज्ञान कें क्षेत्रों में, सामाजिक रीति-रिवाजों कें लैकें हुवें आकि कला-विषयक, सब लोकवार्ता कें अन्तर्गत आवै छै। साहित्य-क्षेत्रों में ऊ-सब 'लोक-साहित्य' कहावै छै।

सामाजिक विज्ञानों कें विश्वकोषों में लोकवार्ता सें जे ज्ञान मिलै छै ओकरों अनुसार लोकवार्ता कें अन्तर्गत लोक-कला, लोक-दस्तकारी, लोक-उपकरण, लोक-वेश-भूषा, लोक-विश्वास, लोकाचार, लौकिक उपचार, लोक-गीत, लोक-कथा, लोक-संगीत, लोक-नृत्य, लोक-क्रीड़ा, लोक-चेष्टा, लोक-वाणी -आर कें गिनैलों गेलों छै। यहें लोक-साहित्यों कें तत्व छेकै, जेकरा लोगें आपनों-आपनों समाज सें परम्परा रूपों में सीखै छै। ई काँहीं लिखित रूपों में नैं होय छै। यहें लेली लोक-साहित्य लिखित साहित्य नैं, मौखिक साहित्य छेकै -- हेनों मौखिक साहित्य, जेकरा में आदिकालीन समाजों कें मनोविज्ञान काम करै छै। 'लोक' कें मतलबे होय छै, समाज कें हेनों वर्ग जे आभिजात्य समाजों कें संस्कार आरो शास्त्रीयता सें शून्य रहै छै, एक हेनों वर्ग जे आपनों परम्परा कें प्रवाह में जीतें रहै छै।

हेना कें तें लोक-साहित्य मौखिक साहित्ये होय छै, मतरकि आय-काल हेनों लोक-साहित्यों कें संकलन-प्रकाशनों जोरों पर छै। आयकों सभ्य समाज तैहा कें अविकसित समाजों कें विकास छेकै। यै लेली सामाजिक विकास कें गति समझै लें आय-काल लोक-तत्वों कें अध्ययनों पर काफी जोर देलों जाय रहलों छै।

यहू में कोय शक नैं कि अंगिका कें गाथा-काव्य भगैत, आनुष्ठानिक गीत आरनी कें संकलन आरो प्रकाशन तें काफी करलों गेलों छै, मतरकि लोक-गद्य-साहित्यों कें विपुल भंडारों कें संकलन आरो प्रकाशन दिस कम रुझान रहलों छै।

अंगिका लोक-कहानीसिनी कें संकलन आरो प्रकाशन तें अवश्ये होय रहलों छै, मतरकि ई भाषा कें लोक-कथा कें संकलन नैं कें बराबर हुवें पारलों छै। हेकरों एक कारण छेकै हेनों लोक-कथा कें संबंध गोपनीयता सें होबों। जीतिया, तीज आरनी कें कथा हेनें लोक-कथा छेकै, जेकरों प्रकाशन स्त्रीसिनी कोय लोक-विश्वास कें कारणें नैं करै छै। तैयो हेनों अवदान या निजन्धरी कथा कें संकलित करै में श्रीमती/सर्वश्री मीरा झा, जनार्दन यादव, सच्चिदानन्द 'श्रीस्नेही', खुशीलाल, मीना तिवारी, सरिता, सुहावनी, ज्ञानम् भारद्वाज, विद्यानन्द किशोर, शशिभूषण पाठक, आशुतोष घोष, माला सिन्हा, सुरेश मंडल आरनी कें कोशिश काफी प्रशसनीय छै।

हेना कें तें पूजा-कथा कें अवदानों सें अलग करतें हुवें ई कहलों जाय

छै कि पूजा-कथा कोय-नें-कोय आध्यात्मिक रहस्यों सें जुड़लों कथा होय छै आरो अवदानों कें संबंध कोय संत, कोय घटना, कोय व्यक्ति, कोय स्थान सें होय छै, पर ई नै भूलना चाहियों कि हेनों घटना, स्थान, संत आरनी कें कथाओ काँहीं-नें-काँहीं कोय रहस्यों सें जरूरे जुड़े छै। यही लें ई तरहों कें कथा कें निजन्धरी कथा कें भीतरे रखना ठीक होतै।

अंग-जनपदों में संत, घटना आरो स्थान कें लोक-अवदान बिखरलों पड़लों छै, जेकरों संकलन-प्रकाशन नै कें बराबर होलों छै। आनन्द मार्ग कें प्रतिष्ठापक श्री आनन्दमूर्ति जी नें आपनों प्रवचनों कें क्रम में हेनों कै-एक स्थल-कथा दिस संकेत करने छै, जे हुनकों 'प्रवचन-संग्रह' में संकेत कें रूपों में संग्रहितो छै, मजकि यै दिशा में कार्य आपनों सौंसे रूपों में बाकीये कहलों जैतै।

श्री प्रदीप प्रभात नें अंग-जनपदों कें कुछेक संत आरो घटना सें जुड़लों कयेक-टा अवदानों कें जे संग्रह करने छै ऊ आर्थिक संकटों कें कारणें पाण्डुलिपिये में राखलों छै। हेनोंसिनी अवदानों कें बहुत बड़ों भाग मौखिके रूपों में अंगिका कें यशस्वी गीतकार श्री भगवान प्रलय कें पासो सुरक्षित छै, जेकरों प्रकाशन होबों बहुत आवश्यक छै।

निजन्धरी अवदानों कें जे दू भेद (साहित्यिक आरो लौकिक) करलों गेलों छै वै में साधु-संतों कें कथा तें साहित्यिक अवदानों कें भीतर आवै छै, मजकि लौकिक अवदान जे कि कोय ऐतिहासिक पुरुषों कें रोमांचकारी वृतांत होय छै, होनों ऐतिहासिक व्यक्ति आरो घटनाओ कें कथा कें विपुल भंडार श्री जनार्दन यादव, डॉ० देशभक्त, डॉ० विजय बाबू, श्री फतह बहादुर सिंह, श्री विजेता मुद्गलपुरी आरनी कें पास मौखिक रूपों में सुरक्षित छै।

नया समयों में हेनों अवदान-साहित्यों कें साथें-साथें लोक-कहानियों कें संग्रह प्रकाशित कराय कें उत्साह अंगिका साहित्यकारों में बढ़लों छै। यहाँ संकेत करी देबों आवश्यक होतै कि लोक-कहानी/लोक-कथा कोय अवदान नैं छेकै। लोक-कथा एक हेनों वार्ता मानलों जाय छै जे पूरा-पूरा केकरो द्वारा केकरो सुनैलों जाय छै आरो जेकरों पीछूँ कोय-नें-कोय धार्मिक उद्येश्य अवश्य होय छै, मतरकि लोक-कहानी वै सें अलग सामान्य व्यक्ति, पशु-पक्षी आरनी कें कहानी होय छै।

हेनों कहानी कें प्रवक्ता भगवान् शिव कें मानलों गेलों छै। की है मानलों जाय कि अंग-जनपदों में लोक-कहानी कें समृद्ध भंडारों कें कारण छेकै

अंग देशों कें मंदराचल सें भगवान् शिव कें संबंध ?

ई तें अनुसंधान सें स्पष्ट होय चुकलों छै कि समस्त भारत आरो भारत सें बाहर जोंन संस्कृति कें फैलाव होलै ऊ अंग-जनपद्है के संस्कृति छेलै। यै में कोय आचरज नैं कि अंग देशों कें ई सांस्कृतिक फैलाव में हेकरों लोक-कहानी कें सम्पदाओ शामिल छेलै। लोक-वार्ता कें प्रसिद्ध विद्वान् जेन्फी नें तें ई सिद्ध करी देलें छै कि लोक-कहानी कें प्रस्थान-स्थल भारत छेकै। हुनी तें भारतीय कहानी कें विश्व-यात्रा कें क्रमबद्ध मार्गो निश्चित करी देलें छै।

अंगिका लोक-कथा आरो कहानीसिनी कें प्रकाशन विभिन्न भाषा/बोली में होला कें बादो अंगिका भाषा में ई आभी ताँय मौलिक रूपे में प्राप्त छै। श्री विद्यानन्द किशोर कें पूर्व हेनों कोय साहित्यकारों कें ठोस प्रयास नैं मिलै छै, जें अंगिका लोक-कथा-कहानी कें संग्रहित करी कें प्रकाशन करै कें बात सोचलें रहें। १९८५ ई० में श्री विद्यानन्द किशोर द्वारा संकलित-संपादित 'सात पट्टा हट्टा-कट्टा' नाम कें अंगिका लोक-कथा-संग्रहें नि:सन्देह ऐतिहासिक महत्व राखै छै। वै संग्रहों में सम्पादक जी नें सात-टा लोक कथा - 'आदमी कें देलें कुछ नैं, भगवानों कें देलै राज', 'महापंडित टिटही झा', 'भोपला कें करतूत', 'भटपुरैन', 'धूरे मरदे, काजी कही कें', 'मरदों कें फेरा' आरो 'सम्मति कें फोंल' - संग्रहित करने छै।

संग्रह आरो सम्पादन में संपादक किशोर जी नें लोक-तत्वों कें सुरक्षा कें खेयाल पूरा-पूरा राखनें छै। सातो-के-सातो कथा विभिन्न विषयों सें जुड़लों होला कें कारणें अंग-जनपदों कें मनोविज्ञान आरो सामाजिक स्थिति कें उजागर करै में समर्थ छै।

'चलों, खिस्सा कें गाँव' (१९९६) अंगिका लोक-कथा आरो कहानी कें दोसरों महत्वपूर्ण संग्रह छेकै। ई संग्रहों कें संकलन आरो संपादन अंगिका कें प्रिय कवयित्री श्रीमती मीना तिवारी नें करने छै। उन्नीस-टा लोक-कथा-कहानी कें है संग्रहों में श्रीमती मीना तिवारी नें अधिकांशत: हेनें लोक-कथा-कहानी संग्रहित करने छै जे कि अंग-जनपदों कें मौलिक प्राचीन संस्कृति -- लोक-विश्वास, रीति-रिवाज, लोक-प्रथा -आर कें समझै में बहुत सहायक छै, हालांकि लोक-कथासिनी में लोक-वार्ता कें एक मुख्य-तत्व, अंगिका कें लोकोक्ति-मुहावरा आरनी कें अभाव जरा खलै छै। जों ईसिनी कथा कें संग्रह ग्रामीण अनपढ़ लोगों कें बीच सें होतियै तें है संग्रहों कें मूल्य आरो ऐतिहासिक होतियै।

लोक-साहित्यों कें अभिव्यक्ति कें माध्यम आंचलिक भाषा या बोलीये होय छै आरो भाषा कें ई स्वरूप मुख्य रूपों सें मौखिक होला कें कारण

हेनों साहित्यों कें संग्रह में लिखित भाषा कें उपयोग सें लोक-साहित्यों कें मूल स्वरूप अवरुद्ध होय छै।

अंगिका लोकोक्ति-मुहावरा कें लैकें डॉ० अभयकान्त चौधरी कें 'अंगिका लोकोक्ति' (१९७३), डॉ० चौधरी आरो श्री 'चकोर' कें 'अंगिका लोकोक्ति आरो मुहावरा (१९९०) कें साथें डॉ० डोमन साहु 'समीर' - प्रणीत 'अंगिका-हिंदी-शब्दकोष' (१९९७) कें प्रकाशन यै दिशा कें भविष्य कें प्रति सब्भै कें आश्वस्त करै छै।

१९९० ई० में समय-साहित्य-सम्मेलन, पुनसिया (बाँका) द्वारा यै दिशा में कुछ कदम उठैलों गेलों छेलै। सम्मेलन कें ओरी सें एक मासिक गोष्ठी जारी करलों गेलों छेलै जे में स्थानीय ग्रामीण लोगों सें लोक-कथा-पिहानी-सुनै-सुनावै कें परम्परा चलैलों गेलों छेलै। श्री नारदी यादव कें सहयोग वै दिशा में अच्छा रहलै, मजकि दुर्भाग्य सें ऊ परम्परा अधिक दिनों ताँय नैं चलें पारलै।

बाँका जिला कें श्री परमानन्द 'प्रेमी' आरो अ० भा० अंगिका साहित्य-विकास-परिषद् सें डॉ० आत्मविश्वास उत्तरी अंग-जनपदों में अंगिका गद्य-लोक-साहित्यों कें संरक्षण में काफी सजग छै। जरूरत छै ई कार्यक्रमों कें आरो सक्रिय रूप दै कें।

लोकोक्ति-मुहावरा-आर

अंगिका केरों लोकोक्ति-मुहावरासिनी कें संग्रह अपना-आप में एक मनोरंजक कार्य नाखी होला कें कारणें लोकोक्ति-मुहावरा-पिहानी-फेंकड़ा ओगैरह कें संग्रह ई जनपदों में बहुत पुरानों काम रहलों छै। १९६६ ई० कें आस-पास बाँका (अलीगंज) - स्थित एक होमियोपैथ डाक्टर नें तें हमरा सें आपनों लुग अंगिका लोकोक्ति कें एक अप्रकाशित संग्रहों कें चर्चा करने छेलै जेकरा में सें कत्तें नी ठेठ लोकोक्ति-मुहावरा हुनी सुनैने रहौत।

अंगिका लोकोक्ति आरो मुहावरा कें प्रकाशन डॉ० अभयकान्त चौधरी कें पहिलों लोकोक्ति-संग्रह 'अंगिका-लोकोक्ति' (१९७३ ई०) में ऐलै। चौबीस पृष्ठों कें वै संग्रहों में लोकोक्ति-सब कें तीन भागों में राखलों गेलों छै -- एक भाग में एक-एक पंक्ति कें, दोसरा में दू-दू पंक्ति कें आरो तेसरा में कृषि-संबंधी लोकोक्ति राखलों गेलों छै।

फनू, डॉ० चौधरी आरो श्री नरेश पाण्डेय 'चकोर' कें संयुक्त संग्रह-संपादनों में कुछेक अंगिका लोकोक्ति कें प्रकाशन 'अंग-माधुरी' में सितंबर, १९९० ई० सें

शुरू होय कें मई, १९९२ ई० तक होलों छै जे कि वर्णानुक्रम में छै। हौ संयुक्त संग्रह-संपादनों सें पूर्व डॉ० मनोहर प्रसाद सिन्हा नें आपनों शोध-प्रबंध 'अंगिका लोकोक्ति और मुहावरे' पर भागलपुर विश्वविद्यालय सें 'डॉक्टर' कें उपाधि पाबी चुकलों छेलै। अंगिका लोकोक्ति आरो मुहावरा लोगों कें समक्ष राखै कें दिशा में डॉ० सिन्हा कें ऊ शोध-कार्य बड्डी ऐतिहासिक महत्व कें छेकै।

'अंगिकाँचल' कें मार्च, १९९४ कें अंकों में भी कुछेक कहावत आरो मुहावरा प्रस्तुत करलों गेलों छै। श्री 'चकोर' जी नें कुछेक 'फेंकड़ा और लोरियाँ' प्रकाशित करने छै जेकरों आपनों महत्व छै। पिहानी (बुझौवल) -संग्रह कें दिशा में काम होबों आभीं प्रतीक्षित छै।

अभिज्ञान-साहित्य

आधुनिक समयों में हेन्हौं साहित्य लिखलों जाय रहलों छै जेकरा साहित्य कें क्षेत्रों में शुद्ध रूपों सें नैं राखलों जावें सकै छै, तैयो ओकरों संबंध साहित्य सें अप्रत्यक्ष या प्रत्यक्ष रूपों सें होला कें कारणें ओकरा साहित्य कें इतिहास कें अध्ययन-क्षेत्रों सें बाहर नैं राखलों जावें सकै छै। अंगिका में हेनों अभिज्ञान-साहित्यों कें चौतरफा विकास लेली काफी सक्रियता पैलों जाय रहलों छै।

ई अलग बात छेकै कि आभी ताँय ई भाषा में इतिहास, भूगोल-आर विषयों कें जत्तें-टा साहित्य प्राप्त होय छै, ओकरों आपनों सीमा छै। इतिहास-भूगोल -आर कें हेनों अभिज्ञान-साहित्य सिरजै कें पीछूं एक्के मकसद रहलों छै कि अंगवासी कें आपनों इतिहास आरो जनपदों कें इतिहास-भूगोलों कें ज्ञान हुवें पारें। यही लेली हेनों साहित्य छोटों-छोटों लेखे कें रूपों में प्रकाशित होलों छै आरो वैसिनी लेखों में इतिहास-भूगोल एक विशेष भूखंडे सें खास करी कें जुड़लों मिलै छै।

(क) इतिहास-भूगोल

इतिहास-भूगोल से संबंधित अभिज्ञान-साहित्यों में सर्वश्री गोपाल कृष्ण 'प्रज्ञ' कें 'अथातो अंग जिज्ञासा' (१९७४) आरो 'चम्पानगरी' (१९७४), शंकर प्रसाद 'श्रीनिकेत' कें 'अंग रो संक्षिप्त इतिहास' (१९७४), तारिणी प्रसाद सिंह 'दीन' 'घोघा' (१९८०), 'प्रज्ञ' कें ही 'अंग राज्य' (१९७८), सुरेश मंडल 'कुसुम'

कें 'सुलतानगंज' (१९८१), शशिभूषण शीतांशु कें 'बिहारों कें महिमा' (१९८१), अवध भूषण मिश्र कें 'भागलपुर जिला : इतिहासों सें पैहनें' (१९८३), श्रीरंजन सूरिदेव कें 'वसुदेव हिण्डी में अंग-जनपद' (१९८४), इन्दुशेखर कें 'रजरप्पा कें यात्रा' कें अतिरिक्त आय हेनों अभिज्ञान-साहित्यों कें सृजन में प्रो० विनय प्रसाद गुप्त तथा सर्वश्री परशुराम ठाकुर 'ब्रह्मवादी', चन्द्रप्रकाश 'जगप्रिय', विजयेन्द्र, डॉ० आत्मविश्वास, जनार्दन यादव आरनी लेखको मुख्य रूपों सें सक्रिय छोंत।

(ख) भाषा, लिपि आरो व्याकरण

अंगिका में भाषा, लिपि आरो व्याकरण विषय पर पुस्तक लिखै लेली ओरियो से एगो विशेष प्रकार कें शैली अपनैलों गेलों छैं जे अंगिका आरो हिंदी (खड़ी बोली) कें संयुक्त प्रयोगों पर आधारित छै। संबद्ध लेखक वैयाकरण नें उदाहरण तें अंगिका में राखलें छै, मतरकि व्याख्या लें खड़ी बोली कें प्रयोग करने छै। संभवत:, ई विवेचन-शैली कें निर्वाह आभियों ताँय यै लेली प्रचलन में छै कि अंगिका कें भाषा, लिपि आरो व्याकरणों कें बात विस्तृत विद्वान-वर्ग तक पहुँचैलों जावें सकें।

अंगिका भाषा आरो व्याकरण पर लिखै कें कार्य तें संस्कृत-प्राकृत-काल में हेमचन्द्र (१०८८-११७२ ई०) सें ही शुरू होय छै, कैन्हें कि प्राकृत-व्याकरण तैयार करै लेली जे व्याकरण कश्मीर सें मँगवैलों गेलों छेलै ओकरों लेखकों कें संबंध सीधे अंग-जनपदों कें प्राचीन विक्रमशील विश्वविद्यालयों सें छेलै, जिनी अंगिका-प्राकृत कें आधार पर व्याकरण-ग्रंथ तैयार करनें छेलै। बाद में, हेमचन्द्र नें आपनों प्राकृत-व्याकरण कें निर्माण में वहें कश्मीरी पंडितों कें आंगी-प्राकृत व्याकरणों कें आधार बनैलें छेलै।

मतरकि अंगिका-प्राकृतों कें नाम लैकें विधिवत् भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन डॉ० कामेश्वर शर्मा के शोध-कार्य सें प्रारम्भ होय छै। हिनी सबसें पहिलें बिहार-विश्वविद्यालयों सें आपनों शोध-प्रबंध 'भागलपुर जिले की बोली' पर पी-एच० डी० कें उपाधि हासिल करने छेलै। अंगिका भाषा-व्याकरण साहित्य कें दृष्टि सें डॉ० माहेश्वरी सिंह 'महेश' कें 'अंगिका भाषा और साहित्य' एक ऐतिहासिक मूल्य कें अभिज्ञान-साहित्य छेकै। खाली यही लें नैं कि डॉ० 'महेश' कें ऊ अंगिका भाषा-पुस्तक १९५९ ई० में पहिलों दाफी प्रकाशित होय कें ऐलै, बल्कि वै में अंगिका कें ध्वनि आरो व्याकरण पर वैज्ञानिक ढंगों सें विचार करला

कें साथें-साथ पहिलों दाफी बिहार कें आरो-आरो बोली कें साथें अंगिका कें तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करलों गेलों छै। भविष्य में अंगिका आरो दोसरों बोली कें साथें तुलनात्मक अध्ययन कें नींव डॉ० 'महेश' कें ही भाषा-साहित्य में पड़ै छै। बाद में डॉ० शर्मा आरो डॉ० महेश कें भाषा-अध्ययनों कें आधार पर डॉ० सुकदेव सिंह द्वारा 'भोजपुरी और हिन्दी' (१९६७) ग्रंथ में पृष्ठ १७४ सें लैकें १८५ ताँय अंगिका व्याकरण पर विचार करलों गेलों छै। ओरी में खड़ी बोली में अंग आरो अंगिका के इतिहास-भूगोलों पर संक्षिप्त चर्चा छै।

१९६९ ई० में 'अंगिका का प्राचीन रूप' आरो 'अंगिका का संक्षिप्त व्याकरण' -शीर्षक सें 'अंगिका संस्कार-गीत' में प्रकाशित दू-टा भाषा-लेख नि:सन्देह उच्च कोटि कें छेकै। दू शीर्षक कें ई दोनों लेख 'प्रस्तावना' कें अधीन लिखलों गेलों छै।

यही 'प्रस्तावना' सें यहू ज्ञात होय छै कि ऊ दुन्नों अंगिका भाषा-साहित्यों कें प्रकाशन कें पहिलें श्री गदाधर प्रसाद अम्बष्ठ पंचतत्व-प्राप्त होय गेलों छेलात आरो हुनी आपनों जीवन-कालों में 'अंगिका व्याकरण' नामों कें अभिज्ञान-साहित्य कें निर्माण करने छेलात। पं० अम्बष्ठ कें समकालीन कें ई तें पता होबे करतै कि आखिर ऊ 'अंगिका व्याकरण' कहाँ कौनी रूपों में छै। आखिर, इतिहासकारद्वय कें 'अंगिका साहित्य का इतिहास' में हेकरों उल्लेख कैहें नी आबें पारलै! 'अंगिका-संस्कार-गीत' में पं० वैद्यनाथ पाण्डेय आरो श्री राधावल्लभ शर्मा द्वारा पं० अम्बष्ठ कें अंगिका व्याकरण कें उल्लेख कें बाद हठाते ओकरों उल्लेख बंद होय जैबों आश्चर्यजनक छै!

अंगिका भाषा आरो व्याकरण कें अपेक्षित समृद्धि तक लै जाय कें श्रेय डॉ० परमानन्द पाण्डेय कें विशेष करी कें रहलों छै। अब ताँय अंगिका व्याकरणों पर हिनकों तीन महत्वपूर्ण पुस्तक, 'अंगिका और भोजपुरी भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन' (१९७९), 'प्रथम अंगिका व्याकरण' (१९७९) आरो 'अंगिका भाषा' (१९८५) प्रकाशित होय चुकलों छै। एकरों अतिरिक्त हिनकों अनेक महत्वपूर्ण भाषा-लेखो प्रकाशित होलों छै, जेसिनी में 'अंगिका' (अंक २-४, १९७१) में प्रकाशित 'अंगिका ध्वनिग्राम' प्रमुख छै। आकाशवाणी, पटना सें प्रसारित श्री सीताराम यादव कें साथ हिनकों 'बिहार की प्रमुख बोलियाँ : कितना भेद, कितना साम्य' विषय पर भेंट-वार्ता आरो 'अंगप्रिया' (मई, १९८९) में प्रकाशित श्रीमती मीरा झा कें साथें अंगिका भाषा-वर्तनी पर हिनकों बातचीत

अंगिका भाषा-साहित्यों कें दृष्टि सें बहुत महत्वपूर्ण छै। आकाशवाणी, पटना सें प्रसारित भेंट-वार्ता कें प्रकाशन १९८४ ई० में होलों छै। 'अंगिका भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन' शोध-प्रबन्ध पर हिनका भागलपुर विश्वविद्यालयों सें डी० लिट्० कें उपाधि मिललों छै।

'अंग-तरंगिनी' कें 'प्रवेशांक' (९४) में पाण्डेय जी कें 'अंगिका ज्ञान-कौमुदी' कें एक अंश सम्पादक 'ब्रह्मवादी' जी नें प्रकाशित करनें छै। सम्पादके कें अनुसार, 'अंगिका ज्ञान-कौमुदी' नामों सें अंगिका-व्याकरण कें निर्माण करबों श्री उमेश जी नें १९६५ ई० में शुरू करनें छेलै, जेकरों समाप्ति हुनी १९७९ ई० में करलै छेलै। अंगिका आरो खड़ी बोली कें संयुक्त भाषा-शैली सें अलग हटी कें श्री सुमन सूरों नें १९८५ ई० में पहिलों दाफी 'अंगिका भाषा आरो साहित्य' कें निर्माण, ओरी सें आखरी ताँय, अंगिका भाषाये में करलें छै। अंगिका भाषा कें ज्ञान-प्राप्ति में ई एक सुन्दर प्रस्तुति छेकै। यै में हुनी अंगिका कें दुइ विशिष्ट ध्वनि लें नया लिपि-चिन्ह सुझैनें छै, जेकरों समर्थन करतें हुएँ १९८६ ई० नें 'वनपांखी' (दुमका) में श्री अचल भारती कें एक भाषा-लेख 'अंगिका की स्वर-ध्वनियाँ' शीर्षक सें प्रकाशित होलों छै।

अंगिका भाषा यै लेली आरो-आरो भाषा सें अलग आरो विशिष्ट छै कि यै में दुइ-टा विशिष्ट ध्वनि छै, जे कोय भाषा में शायदे मिलतें रहें। ई दुन्नों ध्वनि कें वैज्ञानिक आरो व्यावहारिक लिपि-चिन्ह की हुवें पारें, ई दिशा में डॉ० डोमन साहु 'समीर' कें भाषा-लेख 'अंगिका व्याकरण' आरो 'अंगिका भाषा-साहित्य' में एक ऐतिहासिक अध्याय कें योग छेकै। 'नवकल्प' कें अंक-१६ (जनवरी, १९८९) में प्रकाशित वै लेखों में डॉ० समीर नें अंगिका कें आवश्यक अंश कें छूतें हुएँ पहिलों दाफी अंगिका कें दुन्नों विशिष्ट ध्वनि -- प्रसृत ए-कार आरो प्रसृत अ/ओ-कार -- कें वास्तें क्रमशः ऍ = ॅ आरो ऑ = ॉ लिपि-चिन्हों कें प्रयोग द्वारा अपेक्षित मार्ग प्रशस्त करने छै। डॉ० समीर द्वारा प्रवर्तित दुन्नों विशिष्ट लिपि-चिन्हों कें साथें-साथ पूर्व-प्रचलित लिपि-चिन्हों कें अवैज्ञानिकता आरो श्री सुमन सूरो द्वारा प्रसारित लिपि-चिन्हों कें वैज्ञानिकता कें सवालों पर १९९१ ई० में सूरो जी कें एक वर्तनी-लेख 'अंगिका में वर्तनी की एकरूपता' कें शीर्षकों सें 'बाँस-बाँस बाँसुरी' (किताब) में प्रकाशित छै, जे कि पूर्व-प्रचलित आकि 'समीर' जी द्वारा स्थापित लिपि-चिन्हों कें मान्यता कें कमी दिस संकेत करै छै। हेना कें तें 'समीर' जी द्वारा प्रवर्तित लिपि-चिन्ह (ऍ = ॅ आरो ऑ = ॉ)

सर्वथा वैज्ञानिक आरो व्यावहारिक छै।

१९९१ ई० में ही डॉ० रमेश मोहन शर्मा 'आत्मविश्वास' के शोध-प्रबंध लोकगाथा 'बाबा बिसुरॉथ' में 'भाषा-सर्वेक्षण और अंगिका' कें उपशीर्षक सें एक लेख प्रकाशित छै, जे कि अंग-जनपदों के विभिन्न अंचलों में अंगिका कें उच्चारण कें स्थिति आरो अंगिका कें बोली पर वैज्ञानिक प्रकाश डालै में निःसन्देह अतिभाषिक महत्व कें छेकै। यहें कारणों सें एकरा एक स्वतंत्र लेख कें रूपों में 'अंग-तरंगिनी' (१९९४) में 'अंगिका भाषा का भौगोलिक सर्वेक्षण' आरो 'आंगी' (१९९४) कें 'भाषा-अंक' में लेखक कें शीर्षक सें ही प्रकाशित करलों गेलों छै।

१९९५ आकि १९९६ ई० कें बीच होलों पुस्तक-प्रकाशन संबंधी सूचना उपलब्ध नैं छै। तबें, श्री शंकर प्रसाद 'श्रीनिकेत' कें 'अंगिका व्याकरन' कही कें एक पुस्तिका कें प्रकाशन होलों छै। ई पुस्तिका कें महत्व यै में छै कि श्रीनिकेत जी नें अंगिका व्याकरण कें बात ओरी सें आखरी ताँय अंगिका भाषा में करने छै।

अंगिका भाषा, व्याकरण आरो लिपि कें लैकें खड़ी बोली में ही कै-एक महत्वपूर्ण लेखों कें प्रकाशन पत्र-पत्रिकाओ में होलों छै ; जेना डॉ० अमरेन्द्र कें 'आंगी अपभ्रंश ही अर्द्धमागधी' ('आंगी', जुलाई-अक्टूबर, १९९३) 'मध्यकालीन भारतीय आर्य-भाषाओं में अंगिका की स्थिति और स्थान' ('आंगी', जुलाई-सितम्बर, १९९४), 'बात बोलेगी, मैं नहीं बोलूँगा' ('आंगी', १९९४), श्री परशुराम ठाकुर 'ब्रह्मवादी' कें 'अंगिका भाषा का ऐतिहासिक एवं वैज्ञानिक अध्ययन' ('अंग-तरंगिनी', अंक २, १९९४)। 'अंग-तरंगिनी' कें अंक ३-४ (वर्ष १९९४-९५) तें पूरा-के-पूरा अंगिका भाषा-लिपिये पर केन्द्रित छै। यै में सम्पादक 'ब्रह्मवादी' जी कें चार-टा भाषा-लेख -- 'अंगिका भाषा : उद्भव और विकास', 'अंगिका भाषा की प्रागैतिहासिक खोज', 'अंगिका मूल भाषा है' आरो 'अंगलिपि' -- प्रकाशित छै। यैसिनी लेखों में 'ब्रह्मवादी' जी नें वैदिक अंगिका सें लै कें आधुनिक अंगिका कें व्याकरण तक पर विचार करने छै, जें कि अंगिका भाषा कें विभिन्न ढंगों सें शोध कें आयाम खोलै छै। अंग-लिपि कें अन्तर्गत अंगिका ध्वनि लें लेखक द्वारा आविष्कृत एक स्वतंत्र लिपि-चिन्ह कें चित्रों प्रकाशित छै।

'अंगिका वर्तनी' ('अंगिकॉचल', १९९४) कें अतिरिक्त 'अंगिकॉचल' कें ही अंक १३ आरो १४ कें सम्पादकीयो व्याकरण आरो एकरों लिपि-चिन्हें पर केन्द्रित छै। अंगिका वर्तनी-लेख सें ई ज्ञात होय छै कि ऊ अंगिका वर्तनी डॉ० आत्मविश्वास द्वारा रचलों अंगिका व्याकरणे कें अंश छेकै।

खड़ी बोली में लिखलों डॉ० अमरेन्द्र के 'अंग : भारत का इजराइल और अंगिका की विश्व-यात्रा' ('आगी', जनवरी, १९९६), 'शेष इतिहास की कथा' ('आगी', जनवरी, १९९७) आरनी अंगिका भाषा-लिपि के प्राचीनता आरो एकरों विविध विस्तृत रूपों के वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करतें लेख छेकै।

अपभ्रंश-साहित्यो में अंगिका-व्याकरण के स्वरूप-निर्धारण के लैकें जे अभूतपूर्व आरो ऐतिहासिक भाषा-अध्ययन डॉ० डोमन साहु 'समीर' द्वारा होलों छै, ओकरा से ई ऐतिहासिक तथ्य उभरी कें आबी गेलों छै कि हिंदी कें आरम्भिक अपभ्रंश-साहित्यों के भाषिक अध्ययन वास्तव में अंगिका-अपभ्रंशे कें भाषा-अध्ययन छेकै। 'सिद्ध-कवियो की रचनाओ में अंगिका का स्वरूप' हिनकों ई लेख सबसे पहिले आकाशवाणी, भागलपुर से प्रसारित होलों छेलै, जेकरों संशोधित प्रकाशन 'आगी' (जुलाई-सितम्बर, १९९४) में होलों छै। १९९५ ई० में प्रकाशित डॉ० समीर के पुस्तक 'समीक्षात्मक निबंध' में यही विषय पर पहिलें सें अधिक विस्तृत लेख अंगिका में लिखलों संग्रहित छै, जेकरों शीर्षक छेकै -- 'सिद्ध-कविसिनी रो रचनासिनी मे अंगिका रो स्वरूप'। यही पुस्तकों में डॉ० समीर कें एक आरो लेख संग्रहित छै -- 'अंगिका भाषा आरो साहित्य'। व्याकरण कें दृष्टि सें ई लेख निःसन्देह बहुत उपयोगी छै। कुछुवे पृष्ठों में प्रबुद्ध भाषा-शास्त्री डॉ० समीर नें लिपि कें साथ अंगिका-व्याकरण के ध्वनितत्व, रूपतत्व (संज्ञा, कारक, लिंग-भेद, वचन, सर्वनाम, क्रियापद, विधि-क्रिया, विशेषण, क्रिया-विशेषण, समुच्चय-बोधक, विस्मयादिबोधक शब्द) आरो शब्द-भंडार के वैशिष्ट्य कें गंभीरता सें उद्घाटित करने छै। हेकरे संक्षिप्त रूप 'अंगिका-हिंदी-शब्दकोश' (१९९७ ई०) में प्रकाशित छै।

सिद्ध-कविसिनी के काव्य-भाषा में अंगिका कें स्वरूपों पर 'समीर' जी के विस्तृत लेख 'सिद्ध-साहित्य, अंग-जनपद और अंगिका भाषा' हिंदी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग केरों 'सम्मेलन-पत्रिका' (भाग-८१ : अंक-४ : आश्विन-मार्गशीर्ष, १९१८ शक) में प्रकाशित होलों छै, जे कि हिनकों गंभीर अंगिका-भाषा-अध्ययनो के पारदर्शी प्रमाण छेकै।

फनू, डॉ० समीर द्वारा अंगिका भाषा में लिखलों 'अंगिका-व्याकरण' (१९९८ ई०), जेकरों प्रकाशन हिंदी अकादमी हैदराबाद (आ. प्र.) सें होलों छै, अंगिका अभिज्ञान-साहित्यों के एक अमूल्य निधि छेकै। वै में अंगिका-व्याकरणो पर सांगोपांग विवेचन करलों गेलों छै। अंगिका में प्रकाशित ऊ ऐन्हों पुस्तक छेकै जेकरों कोय जोड़ नै। ऊ आपनों विषय कें पहिलों उल्लेखनीय ग्रंथ छेकै।

सेवा-निवृत्त शिक्षा-पदाधिकारी डॉ० शिवचन्द्र झा कें लिखलों

'अंगिका-व्याकरण' (पाण्डुलिपि) आपनों सरलता आरो बोधगम्यता कें लेल एक उपयोगी कृति छेकै, जेकरों प्रकाशन प्रतीक्षित छै।

(ग) शब्दार्थ - संकलन आरो शब्दकोश

प्रो० डॉ० बैजनाथ चतुर्वेदी (सिकन्दराबाद) कें वक्तव्यों सें पता चलै छै कि जैन-विश्व-भारती (लाडनूँ, राजस्थान) सें जोंन 'देशी-शब्दकोश' प्रकाशित होलों छै वै में 'अंगविज्जा' कें शब्दो संग्रहित छै। जाहिर छै कि अंगिका शब्द, ओकरों रूप आरो अर्थो कें संग्रह-कार्य अतीत में ही शुरू होय चुकलों छेलै। बाद में पं० वैद्यनाथ पाण्डेय आरो श्री राधावल्लभ शर्मा द्वारा अंगिका-शब्दार्थ-संकलन कें जोंन काम 'अंगिका-संस्कार-गीत' में शुरू होलै ओकरा सें अलग कोय शब्दकोश बनावै कें कोशिश अंगिका में नैं होलों रहै। शब्दार्थ-संकलने कें सरल लीकों कें कुछू आगू बढैलों गेलै। यै में डॉ० परमानन्द पाण्डेय कें अंगिका-शब्दार्थ-संकलन •या डॉ० अभयकान्त चौधरी आरो श्री नरेश पाण्डेय 'चकोर' कें शब्दार्थ-संकलन (१९७४ ई०) ई दिशा में गिनैलों जावें पारै छै।

होना कें तें 'अंग-तरंगिनी' कें अंको में 'अंगिका-शब्दकोश' कें नामों पर कुछेक अंगिका-शब्द आरो वैसिनी कें अर्थ हिंदी में देलों गेलों छै, मतरकि पं० पाण्डेय आरो श्री शर्मा आकि डॉ० चौधरी आरो श्री 'चकोर' कें वैसिनी 'शब्दार्थ-संकलन' सही माने में कोय 'शब्दकोश' नैं छेकै। डॉ० चौधरी आरो श्री 'चकोर' भलें आपनों शब्दार्थ-संकलनों कें 'अंगिका-शब्दकोश' कहतें रहें मजकि ऊ छेकै कुछेक शब्दार्थ-संग्रह मात्र, जेन्हों कि पं० पाण्डेय आरो श्री शर्मा नें आपनों शब्दार्थ-संग्रहों कें 'अंगिका-शब्दावली'-भर कहलें छै। डॉ० चौधरी आरो श्री 'चकोर' कें तथाकथित 'अंगिका-शब्दकोष' में संग्रहित शब्दों कें व्याकरणिक पद-भेद नैं देखैलों गेलों छै जबें कि ऊ शब्दकोशो कें एक अनिवार्य अंश (शर्त) होय छै। एतने नैं, शब्दकोशों में तें संबद्ध शब्दों कें मूल रूप (प्रातिपदिक) देलों जाय छै, जेकरों उपेक्षा डॉ० चौधरी आरो श्री 'चकोर'-कृत पूर्वोक्त कृति में कै-एक शब्दों कें मामला में छै - अकचकाय, अकनाय, अकबकाय वगैरह शब्द प्रातिपदिक रूपों में नैं छै। एतन्हौ पर, वै में 'अ' अक्षर सें अशत 'छ' अक्षर तक्के कें एकारों सौ से दसे-पनरहे बेसी शब्द (प्रविष्टि) 'अंग-माधुरी' कें कुछेक अंकों में छपलों छै, किताबों कें रूपों में नै।।

वर्णवार शब्दक्रम तें पं० पाण्डेय आरो श्री शर्मा कें 'अंगिका-शब्दावली'

में छै. शब्दों कें संख्याओ सा[illegible] अठारों सौ कें आस-पास छै। कोय-कोय शब्दों कें व्युत्पतियो पर विचार करलों गेलों छै, तैय्यो हुनकासिनी ओकरा 'अंगिका-शब्दकोश' कहै कें बात नै करने छै।

१९९७ ई० में हिंदी अकादमी हैदराबाद (आ. प्र.) सें प्रकाशित 'अंगिका-हिंदी-शब्दकोश' अंगिका कें पहिलों वैज्ञानिक शब्दकोश छेकै, जेकरों प्रणयन प्रसिद्ध भाषा-शास्त्री डॉ० डोमन साहु 'समीर' द्वारा करलों गेलों छै। डॉ० चतुर्वेदी, डॉ० कुशवाहा आरनी नें भी एकरा अंगिका भाषा कें प्रथम शब्दकोश मानलें छै।

एक सौ छियत्तर पृष्ठों कें ई शब्दकोशों में सात हजार सें बेसी शब्द (प्रविष्टि) आरो एक सौ सें बेसी मुहावरा संग्रहित छै। डॉ० समीर नें, कोश-कला कें अनुसार, पहिलें शब्द, तबें ओकरों व्याकरणिक पद-भेद आरो अर्थ (हिंदी में) प्रस्तुत करने छै। अर्द्धविराम चिह्नों कें प्रयोगों सें कोय-कोय शब्दों कें एकों से बेसी अर्थो राखने छै। है शब्दकोशों में अंगिका कें आपनों विशिष्ट शब्दे कें प्रमुखता सें स्थान देलों गेलों छै, संस्कृत-हिंदी, अरबी-फारसी -आर कें जेसिनी शब्द अंगिका मे तनी-मनी बदललों रूपों में प्रयोगों में आवै छै वैसिनी कें तारक-चिन्हों सें निर्दिष्ट करी देलों गेलों छै। शब्दकोश-कला कें अनुसारे, प्रबुद्ध कोशकार डॉ० समीर नें शब्दसिनी कें खाली मानक रूपे कें नैं राखी कें ओकरों विभिन्न रूपान्तरों कें स्थान देने छै आरो शब्दसिनी कें अभिज्ञान में सरलता लेली है शब्दकोशों कें ओरीये में संकेताक्षर-सूची दै देलों गेला सें है शब्दकोशों कें पूर्ण वैज्ञानिक स्वरूप स्थिर होलों छै। साथें-साथ 'प्राक्कथन' में विद्वान् कोशकार नें अंग-जनपद, अंगिका भाषा आरो व्याकरण पर विस्तृत प्रकाश डालने छै जेकरों विशिष्ट महत्व छै।

अंगिका-शब्दकोशों कें अलावा 'अंग-माधुरी कें लेखक आरो कवि' -शीर्षक से एक रचनाकार-कोशो कें प्रकाशन शेखर प्रकाशन, पटना सें १९८६ ई० मे करलों गेलों छै। ओकरों संपादक श्री नरेश पाण्डेय 'चकोर' नें आधुनिक अंगिका-लेखकसिनी कें नाम, जन्म-तिथि, पता आरो 'अंग-माधुरी' में प्रथम रचना प्रकाशन-तिथि कें साथें अधिकांश लेखकों कें फोटोओ प्रकाशित करने छै। आधुनिक अंगिका-लेखक कें विकास कें समझै में है किताबों कें आपनों महत्व छै।

(घ) अन्यान्य अभिज्ञान-साहित्य

आधुनिक साहित्यों में इतिहास, भूगोल, भाषा-शास्त्र -आर लिखै कें अतिरिक्त कृषि, अर्थ, धर्म, चिकित्सा -आर विषयों कें लैकें साहित्य-सृजन होय रहलों छै। कृषि-साहित्य कें निर्माण में श्री मेवालाल शास्त्री आरो श्री मदन मोहन प्रसाद सिन्हा कें नाम विशेष रूपों सें आवै छै। १९६३ ई० में शास्त्री जी कें बेयालीस पृष्ठों कें किताब 'उत्तम खेती कें तरीका' कें प्रकाशन होलै। केतारी, मकई, धान, गहुम आरनी फसलों कें लैकें सिन्हा जी कें कै-एक लेख 'अंग-माधुरी' कें अक्टूबर-नवम्बर १९७१ ई० आरो १९७२ ई० कें अंकों में प्रकाशित छै। कृषि-साहित्य कें खेयाल सें श्री महादेव झा कें लिखलों 'घाघ केरों कहावत' 'अंग-माधुरी' (अप्रैल-मई, १९७३) में छपलों छै, जे बड़ी रोचक आरो उपयोगी छेकै।

मतरकि है कहै लें ही पड़तै कि अंगिका कें कृषि, धर्म आकि चिकित्सा-साहित्य प्रकाशित रूपों में नगण्य छै। 'आज' (पटना, २० जून, '९७) में प्रकाशित एक समाचारों सें ज्ञात होय छै कि द्वितीय अपर जिला एवं सत्र-न्यायाधीश श्री विवेकानन्द झा नें योग आरो अध्यात्म सें संबंधित एक आध्यात्मिक अंगिका-पुस्तक लिखने छै, जेकरों नाम विद्वान् लेखक नें 'नर से नारायण' बतैलें छै। आध्यात्मिक रहस्यों कें निबंधकार झा जी नें एत्तें सरल आरो साहित्यिक भाषा में राखलें छै कि प्रकाशन कें बाद बेशक ई साहित्य कें अमूल्य निधि सिद्ध होतै। श्री अनिल शंकर झा नें भी 'दुर्गा सप्तशती' कें अतिरिक्त उपनिषद्-पुराण कें गद्यात्मक अंगिका-अनुवाद पुस्तक तैयार करनें छै, जेकरा ई लेखक नें पढ़नें भी छै। 'नर सें नारायण' नाखी अंगिका कें अभिज्ञान-साहित्य (गद्य) आलोचक-पाठक नें दूर अज्ञात अवस्था में ही पड़लें होलों छै ; कहियो कोनो गोष्ठी केरों रिपोर्ट में वै संबंधों में कुछू जानकारी मिलै छै।

विज्ञान विषय कें लै कें कोय पुस्तक तें प्रकाशित नैं भेलों छै, मतुर 'अंगप्रिया' आरो 'पुरबा' कें संपादन सें सुधाकर जी नें हेनों अभिज्ञान-साहित्यों कें विकास लेली अवश्य पहल करने छै आरो हुनकों प्रेरणा सें विज्ञान-साहित्य-लेखन कें प्रोत्साहनों मिली रहलों छेलै। वही समय में 'कोलम्बिया - एक सफल अंतरिक्ष सटल' (जयप्रकाश) आरो 'देशी उपग्रह इन्सैट-१/बी' (ओंकार नाथ मिश्र) जेहनों विज्ञान-लेखो प्रकाशित भेलै।

'हाथ देखों, स्वस्थ रहों', १९८३ ई० (आर० पी० पंडित), 'हाथ कें रेखा,

जिनगी के लेखा-जोखा' (विवेकानन्द झा) हेनों ज्योतिष-ज्ञान कें साहित्यों आबी चुकलों छै।

पत्र-साहित्य

अंगिका भाषा कें साहित्यों में पत्र-साहित्यों कें प्रकाशन आरो संकलन दिस विशेष उत्साह नैं दिखै छै। 'अंग-माधुरी' सें लैकें 'आंगी' तक में ई उदासीनता साफ देखलों जावें सकै छै। 'अंगिकाँचल' कें सम्पादक डॉ० आत्मविश्वास कें झुकाव ई ओर अवश्य प्रशंसनीय छै। तैयो 'अंग-माधुरी', 'अंगप्रिया', 'आंगी' आदि कें माध्यमों सें अंगिका कें पत्र-साहित्य कें प्रकाशित करै दिस जे कदम उठैलों गेलों छै, ओकरों ऐतिहासिक महत्वों सें इन्कांर नैं करलों जावें सकै छै। डॉ० लक्ष्मीनारायण सुधांशु, पं० गदाधर प्रसाद अम्बष्ठ, डॉ० परमानन्द पाण्डेय, डॉ० तेजनारायण कुशवाहा, डॉ० डोमन साहु 'समीर', प्रो० कमला प्रसाद 'बेखबर', डॉ० सकलदेव शर्मा, श्री महेन्द्र प्रसाद जायसवाल, श्री चन्द्रप्रकाश 'जगप्रिय', श्री गुरेश मोहन घोष 'सरल', श्री अनिल चन्द्र ठाकुर, श्री अवधेश प्रधान, श्री जितेन्द्र कुमार 'देशभक्त', प्रो० रामवल्लभ साहु, प्रो० सुरेन्द्र शोषण, श्री पद्म पराग राय 'वेणु', श्री प्राण मोहन 'प्राण', डॉ० देशभक्त, श्री राजेन्द्र किशोर साह, श्री महेश चौरसिया आरनी कें अनेक हेनों पत्रों कें प्रकाशन 'अंग-माधुरी', 'अंगप्रिया', 'आंगी', 'अंगिकाँचल', 'अंग-तरंगिनी' में होलों छै जे अंगिका भाषा कें स्थिरता, विकास आरो शोध कें दिशा दिस इशारा करै छै।

अंगिका कें पत्र-साहित्यों कें लोकप्रियता आरो समृद्धि में पटना सें प्रकाशित 'आज' (हिंदी दैनिक) कें भूमिका नि:सन्देह ऐतिहासिक छै। १९९५ ई० कें पूर्वार्द्ध सें ही ई दैनिक में 'अंगिका कें पतरी' स्तम्भ कें शुरूआत करलों गेलों छै, जेकरों नियमित प्रकाशन हर रविवार कें होलों आवी रहलों छै। 'अंगिका कें पतरी' कें विशेष मूल्य यै लेली छै कि हेकरों द्वारा नैं खाली अंगिका भाषा आरो साहित्य कें नया-नया अभिज्ञान एक विस्तृत जन-समुदाय कें बीच हुवें पारलै, बल्कि अंगिका पत्रों कें राष्ट्रीय सामाजिक रूपो हासिल हुवें सकलै। नि:सन्देह विभिन्न बोली कें साथें अंगिका पत्र-साहित्यों कें एक संस्कार-स्वरूप दै में 'आज' (हिंदी दैनिक) कें योगदान महत्वपूर्ण मानलों जैतै।

तैयो ई भाषा कें पत्र-साहित्यों कें इतिहास तब ताँय पूरा नैं हुवें पारें जब ताँय पं० बुद्धिनाथ झा 'कैरव', डॉ० लक्ष्मीनारायण सुधांशु, श्री गदाधर प्रसाद

अम्बष्ठ, डॉ० डोमन साहु 'समीर' आरनी हेनों विद्वानों कें लिखलों महत्वपूर्ण पत्रों कें प्रकाशन संभव नैं होय छै। ई दिस काम करै कें बहुत जरूरत छै।

रिपोर्ताज

कुछ विद्वान् रिपोर्ताज कें भाव-साहित्य कें भीतरे राखै कें इच्छुक दिखै छै, मतरकि रिपोर्ताज कें संबंध रिपोर्ट सें ही होला कें कारण एकरा अभिज्ञान-साहित्यों कें अंतर्गति राखना ज्यादा वैज्ञानिक होतै। ई अलग बात छै कि रिपोर्ट कें विपरीत रिपोर्ताज में घटना या तथ्य कें साहित्यिक शैली में उतारलों जाय छै। यही सें ई रिपोर्ट नैं, रिपोर्ताज कहावै छै। रिपोर्ताज में वस्तुगत तथ्य कें शब्दचित्रों में परोसलों जाय छै।

अंगिका रिपोर्ताज-साहित्यों कें सही नींव डालै आरो विकास कें बहुत दूर लै जाय में श्री सुधाकर कें सम्पादन में 'अंगप्रिया' आरो 'पुरबा' कें उल्लेखनीय स्थान छै ; मतुर विधिवत् लेखन 'अंगप्रिया' सें ही होलों छै। हेना कें तें रिपोर्ताज-लेखन कें प्रारम्भ श्रीमती द्रौपदी दिव्यांशु कें 'डॉ० रामधरी सिंह दिनकर' (१९७४) सें ही होय जाय छै। जे काम कभी आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी नें 'सरस्वती' कें माध्यम सें हिंदी-साहित्य कें विकास लें करनें छेलै, 'अंगप्रिया' आरो 'पुरबा' त्रैमासिक कें माध्यम सें वहें काम श्री सुधाकर नें अंगिका रिपोर्ताज कें शुरूआती स्वरूप लें करनें छेलै। जनवरी' ८२ कें 'अंगप्रिया' में छपलों 'बाबा बैजनाथ धाम' (शिवशंकर पारिजात), 'एक गाँव सपना' (पी० एन० जायसवाल), 'शहरमुहाँ कसबा भागलपुर' (श्रीचन्द) आरो ८३ ई० कें 'पुरबा' कें 'प्रवेशांक' में प्रकाशित 'शहरों कें अर्थशास्त्र' (शिवशंकर पारिजात) आरो 'पवित्तर बाबाँ पूछै छै' (धीरेन्द्र छतहारवाला), 'फुटपाथों कें तिरसंकु' (रवीन्द्र) उल्लेख्य छै। 'पुरबा' ८३ ई० में प्रकाशित रिपोर्ताज अंगिका-साहित्यों में बिल्कुल नया अध्यायों कें यात्रा-कथा छेकै। 'अंगप्रिया' कें सम्पादन सें सुधाकर जी कें हटत्हैं एक देवशिशु कें बाढ़ पर रोक जेना लगी गेलै। अंगिका रिपोर्ताज कें पुनर्जन्म 'प्रभात खबर' (हिंदी दैनिक, पटना) कें ऐला कें साथें नया तेज आरो शक्ति कें साथें होय छै।

'प्रभात खबर' कें माध्यमों सें श्री कुंदन अमिताभ नें सर्वोत्कृष्ट रिपोर्ताज अंगिका भाषा कें देलकै। 'प्रभात खबर' (१५ दिसम्बर, १९९६ ई०) में प्रकाशित अमिताभ जी कें 'नया घर उठों, पुरानों घर बैठों' हेकरों उदाहरण छेकै। अन्य

रिपोर्ताजों में श्री दिलीप कुमार कें 'आभियों तें कुच्छू सोचों' ('आज', २४ अगस्त, १९९७), तें आबी गेलै नया साल' (श्री कुंदन अमिताभ : १० जनवरी, १९९७) आरो 'कहिया देखैतें मिलतै अंगिका सिनेमा ?' ('आज' : २ फरवरी, १९९७) छेकै।

१९९७ ई० कें 'प्रभात खबर' में प्रकाशित श्रीमती आभा पूर्वे कें 'कैहिया ऐतै ऊ बसन्त ?' रिपोर्ताज भी अंगिका कें रिपोर्ताज-साहित्यों कें अमूल्य निधि छेकै।

पत्र-पंत्रिका-साहित्य

आधुनिक समयों में अंगिका गद्य-साहित्यों कें विकास में जे अप्रत्याशित प्रगति होलों छै ओकरा में पत्र-पत्रिकासिनी कें भूमिका महत्वपूर्ण छै। ओकरों एक कारण छेकै मुद्रण कें सुविधा होबों। जदियो बेतरह महँगी कें चलतें प्रकाशनों में बड्डी बाधा पड़ी रहलों छै तैयों यै काल-खंडों में कत्तें नी अंगिका-पत्रिका कें प्रकाशन होतें रहलों छै। जखनी मुद्रण कें सुविधा नैं छेलै तखनीयों है दिशा में कयेक-टा हस्तलिखित पत्रिकासिनी सें काँहीं-काँहीं काम चली रहलों छेलै। 'बाथ' गामों सें वैन्हें एक-टा पत्रिका कें निकलै कें उल्लेख ऐलों छै।

अंगिका पत्रकारिता आरो गद्य-लेखन कें शुरूआत डॉ० परमानन्द पाण्डेय -संपादित 'अंगिका' नामों कें पत्रिका कें प्रकाशनों सें होलों छै, जेकरों प्रकाशन १९७० ई० में 'अंग-भाषा-परिषद्', पटना कें ओरी सें होलों रहै। आपनों चार अंकों कें चारे डेगों सें अंगिका-गद्य-लेखन कें फैलै में वै पत्रिका कें योगदान ऐतिहासिक रहलों छै।

मतरकि अंगिका गद्य कें सब्भे विधा कें विकास आरो विपुलता में 'अंग-माधुरी' बढ़ी-चढ़ी कें सक्रिय रहलों छै। है पत्रिका कें प्रकाशन शेखर प्रकाशन, पटना द्वारा दिसम्बर, १९७० ई० सें शुरू होलै जे कि श्री नरेश पाण्डेय 'चकोर' कें संपादनों में तखनीयें सें लगातार निकलतें आबी रहलों छै। 'अंग-माधुरी' कें माध्यमों सें अंगिका कें कत्तें नी कवि आरो लेखकों कें प्रकाश में आवै कें मौका आरो सहायता मिलतों छै। यै पत्रिका कें प्रकाशन सें जोंन रूपों में अंगिका कविता, कहानी, संस्मरण, शब्दचित्र, हास्य-व्यंग्य, निबंध, एकांकी, आलोचना आदि कें साहित्यों में आवै कें औसर मिलतै ऊ सचमुचे 'अंग-माधुरी' कें प्रकाशनों कें ऐतिहासिकता सिद्ध करै छै। संपादक 'चकोर' जी नें 'अंग-माधुरी' में 'चौबे जी

कें गप' आरो 'गुरु जी' हेनों स्तंभ चलाय कें अंगिका व्यंग्य-विधा कें समृद्ध कैने छै, यै में दू मत नैं।

१९७४ ई० कें दिसंबर में अखिल भारतीय अंगिका भाषा-सम्मेलन, सेमापुर (कटिहार) सें 'अंगदूत' पत्रिका कें प्रकाशन श्री शंकर प्रसाद 'श्रीनिकेत' कें संपादनों में होलै। एकरों प्रवेशांकों में संपादक जी कें लिखलों अंगिका-साहित्यों कें इतिहास पर एक-टा संक्षिप्त लेख प्रकाशित होलों छै। कविता, कहानी -आर कें भी स्थान वै में देलों गेलों छै ; मतुर प्रवेशांकों कें बाद 'अंगदूत' कें आरो कोय अंक प्रकाश में नैं आवे पारलै।

१९७९ ई० सें 'अंगप्रिया' (भागलपुर) केरों प्रकाशन अंगिका गद्य-विधा कें प्रौढ़ प्रस्तुति कें दृष्टि सें बड़ी ऐतिहासिक घटना नाखी छेकै। वै पत्रिका कें प्रवेशांकों कें प्रकाशन श्री कुमार भागलपुरी कें संपादनों में होलों रहै। ओकरों बाद श्री सुधाकर, श्रीमती मीरा झा आरो प्रो० देवेन्द्र कें संपादनों में 'अंगप्रिया' एक प्रौढ़ अंगिका-पत्रिका बनी गेलों छै। श्री सुधाकर जी नें वै पत्रिका कें माध्यमों सें जहाँ कहानी आरो आलोचना कें साथें-साथ भेंटवार्ता, रिपोर्ताज -हेनों गद्य-विधा कें अंगिका में लोकप्रिय बनैलकै वहाँ श्रीमती मीरा झा नें 'भाषा-अंक' आरो प्रो० देवेन्द्र नें 'कथा-विशेषांक' निकाली कें पुरानों आरो नया लेखकसिनी कें ध्येयान अंगिका गद्य-विधा दिस मोड़ै में सफल प्रयास करने छै। 'अंगप्रिया' अखिल भारतीय अंगिका साहित्य-कला-मंच, भागलपुर द्वारा निकलैवाली पत्रिका छेकै। अंगिका-साहित्यों कें विकास में एकरों विशेष हाथ छै।

श्री सुधाकर जीये कें संपादनों में अखिल भारतीय अंगिका विकास-मंच, भागलपुर कें ओरी सें 'पुरबा' त्रैमासिक पत्रिका कें प्रकाशन १९८० ई० में करलों गेलों छेलै, हालांकि अक्टूबर-दिसम्बर में प्रकाशित पहिलकों अकों कें बाद ओकरों कोय अंक प्रकाशित नैं होलै, मतरकि उच्च कोटि कें पत्रकारिता वास्तें 'पुरबा' नै भुलैलों जैतै। अंक देखला पर लागै छै कि सुधाकर जी अंगिका गद्य कें विकास लेली सक्रिय आरो सावधान रहलों छोंत। निबंध, कहानी, साहित्यिक लेख आरनी कें अतिरिक्त 'पुरबा' कें प्रवेशांकों में विज्ञान, अर्थशास्त्र, इतिहास, पर्यटन, सिनेमा आदि सें जुड़लों सामग्रियों कें प्रोत्साहन दै कें व्यवस्थित प्रयास वै अकों सें उजागर होय छै। परिचर्चा आरो पत्रादियो सें जहाँ ई अंक कसलों गेलों छै वोंही राष्ट्रीय स्तरों कें लेखकों कें साथें नया लेखकों कें जोड़ै के साधु संकल्प 'पुरबा' कें संपादकीय चिंता कें स्थिर करै छै।

अंगिका गद्यो के आरो आगू लै जाय में चम्पा-प्रकाशन, दुमका से प्रकाशित 'चम्पा' आपनो ढंगो से सक्रिय रहलै। वै त्रैमासिक पत्रिका कें प्रकाशन श्री सुभाषचन्द्र भ्रमर के संपादनों में दिसंबर, १९८२ ई० सें होबों शुरू होलों छेलै। वै पत्रिका के तीन अंकों में श्री उचितलाल सिंह कें 'कानै छै लोर', श्री सुमन सूरो के 'सती परीक्षा', डॉ० सुरेन्द्र झा 'परिमल' कें 'गुमसैलों धरती', श्री रघुनन्दन झा 'राही' के 'चिंता' - काव्यों कें प्रकाशनों कें अतिरिक्त प्रवेशांकों में श्री अनिरुद्ध प्रभास-लिखित उपन्यास 'छाहुर' आरो ओकरों बादों कें अंकों में हुनको 'चम्पा के राजकन्या' - जेन्हों मँजलों नाटको कें प्रकाशनों भेलों छै। 'चम्पा' त्रैमासिकों के ऐतिहासिक मूल्य यहू लें बहुत बनलों रहतै कि एकरा सें आधुनिक अंगिका-कृतिसनी के विस्तृत मूल्यांकनों कें बहाना सें अंगिका कें समीक्षा-साहित्यों कें एक खास ऊँचाई तक लै जाय कें प्रयास होलों छै। श्री उचितलाल सिंह के सौंसे काव्यों कें विवेचनों कें अतिरिक्त 'सती-परीक्षा' आरो 'चिंता' -जेन्हों प्रबंध-काव्यों पर नया ढंगों कें समीक्षा प्रस्तुत करलों गेलों छै, जें कि अंगिका के समीक्षा-साहित्यों कें दिशा-निर्देशो करै छै। भाषा-संगम, दुमका सें प्रकाशित 'वनपाँखी' में अंगिका कें सायें-सायें दोसरो भाषा कें रचना छपै छेलै।

अंगिका-समीक्षा-साहित्यों कें बल दै में समय-साहित्य-सम्मेलन, पुनसिया (बाँका) सें श्री अनिरुद्ध प्रसाद विमल आरो डॉ० देशभक्त कें संयुक्त संपादनों में 'समीक्षा' द्वैमासिकों कें प्रकाशनो शुरू करलों गेलों छेलै, मजकि एक्के अंकों कें बाद ओकरों प्रकाशन आगू नैं बढ़े पारलै। वै पत्रिका पर प्रकाशन-वर्ष छपलों नैं रहला के कारणें दोसरों-दोसरों प्रकाशनों कें आधार पर कहलों जावें सकै छै कि ई पत्रिका के प्रकाशन १९८४ ई० कें पहिनें होलों छेलै। लघु काया कें है पत्रिका में श्री सुमन सूरो के 'पनसोखा' पर डॉ० अमरेन्द्र कें समीक्षा आठ पृष्ठों में प्रकाशित करलों गेलों छै।

आधुनिक आरो प्राचीन अंगिका गद्य-साहित्यों कें प्रकाशन कें दिशा में 'आगी' (पत्रिका) कें भूमिका कें नजरअंदाज नैं करलों जावें पारै छै। जनवरी, १९९३ ई० सें अंगिका-संसद, भागलपुर सें प्रकाशित होय रहलों ई पत्रिका कहियो त्रैमासिक आरो कहियो अनियतकालीन रूपों में सक्रिय रहलों छै। डॉ० अमरेन्द्र कें संपादनों में है पत्रिका कें नौ अंक १९९७ ई० तक प्रकाशित होय चुकलों छै जबें कि एकरों सब अंक एक-एक विशेषांक छेकै। प्रवेशांकों में भारतेन्दु-कृत 'भारत-दुर्दशा' कें अंगिका-अनुवाद निकललैा के बाद अंक-४ में महाकवि प्रसाद-कृत

'ध्रुवस्वामिनी' कें अंगिका-अनुवाद प्रकाशित करलों गेलों छै। अंगिका गद्यों कें विकास आरो समृद्धि लेली 'आंगी' कें अंक-३ (जुलाई-अक्टूबर, १९९३ ई०) अंक-५ (अप्रिल-जून, १९९४ ई०), अंक-७ (जनवरी, १९९५ ई०), अंक-९ (अप्रिल, १९९६ ई०), अंक-१० (जनवरी, १९९७ ई०) आरो अंक-११ (जुलाई, १९९७ ई०) में क्रमशः श्रीमती आभा पूर्वे कें उपन्यास 'कचनार जबें कल्पतरु भेलै', श्री अनिरुद्ध प्रसाद विमल कें नाटक 'साँप', श्री केशव कें उपन्यास 'तुलसी-मंजरी', श्रीमती मीना तिवारी द्वारा प्रस्तुत 'अंगिका लोक-कथा', 'समकालीन अंगिका कविता-विशेषांक' आरो 'समकालीन अंगिका कहानी-विशेषांक' छपलों छै। अंक-६ (जुलाई-सितंबर, १९९४ ई०) 'अंगिका भाषा-विशेषांक' छेकै, जेकरा में हिंदी कें नामी-गिरामी भाषाविदों कें हिंदी में लिखलों अंगिका भाषा संबंधी लेख प्रकाशित छै। हिंदी-संसारों कें धेयान अंगिका भाषा-साहित्यों दिस आनै लें 'आंगी' कें विस्तृत 'संपादकीय' आरो समीक्षा में खड़ी बोली (हिंदी) में रखै कें खेयाल राखलों गेलों छै। देशों कें प्रतिष्ठित साहित्यकारों कें महत्वपूर्ण पत्रों कें प्रकाशन सें अंगिका भाषा-साहित्य दिस हिंदी-संसारों कें धेयान खींचै में 'आंगी' कें आपनों खास कोशिश छै।

अंगिका पत्रकारिता के दिशा में उत्तरी अंग-जनपदों सें डॉ० रमेश आत्मविश्वास कें संपादनों में अ० भा० अंगिका साहित्य विकास परिषद् (जयमंगल टोला, साहु परबत्ता) सें प्रकाशित 'अंगिकाँचल' कें आपनों अलग ऐतिहासिक महत्व छै। वै पत्रिका कें मार्च, १९९४ -अंक सें ज्ञात होय छै कि एकरों प्रवेशांक-वर्ष १९९१ ई० छेकै। तबें सें लै कें दिसंबर, १९९६ ई० ताँय है पत्रिका कें १५ अंक प्रकाशित होय चुकलों छै। अंक-१४ श्री रामकिशोर जी कें संपादनों में प्रकाशित छै। 'अंगिकाँचल' कें प्राप्त मार्च' ९४, जून' ९५, मई' ९६ आरो दिसंबर' ९६ कें अंकों कें आधारों पर कहलों जैतै कि है पत्रिका कें प्रकाशन उत्तरी अंग-जनपदों कें नया-पुरानों अंगिका साहित्य आरो साहित्यकारसिनी सें लोगों कें परिचित करावै में ऐतिहासिक भूमिका निभाय रहलों छै। एकरा में कविता-कहानी तें प्रकाशित होले छै, अंगिका भाषा पर लेखो छपलों छै जे कि अंगिका लेली 'अंगिकाँचल' कें उल्लेख्य योगदान छेकै।

खड़ी बोली (हिंदी) कें माध्यमों सें अंगिका भाषा आरो इतिहास पर शोध-कार्य करै कें दिशा में श्री परशुराम ठाकुर 'ब्रह्मवादी' कें संपादनों में प्रकाशित 'अंग-तरंगिनी' उल्लेखनीय छै। है पत्रिका कें 'संपादकीय' अंगिका भाषा

मे छोडी कें, आकि खडी बोली में लिखलों दोसरों लेखकों कें एकाध लेख छोड़ी कें, बाद-बाकी ओर सें छोर तक संपादक जी कें शोध-लेखों सें अँटलों होला कें कारणें, एक पत्रिका कें रूपों में आरो अंगिका भाषा-साहित्यों कें विकास में विशेष उल्लेखनीय नहियों रहला पर, अंगिका कें गौरवपूर्ण इतिहासों कें अनुसंधान आरो अंगवासी लोगों में आपनों इतिहासों कें प्रति अभिरुचि जगावै कें दिशा में 'अंग-तरंगिनी' कें भूमिका झुठलावें नै जावें पारें। है शोध-पत्रिका कें अंक-१-२ अगस्त-सितंबर, १९९४ ई० में प्रकाशित होलों छै। जनवरी, १९९५ ई० में प्रकाशित संयुक्तांक ३-४ में संपादक-लिखित "अंगिका भाषा की प्रागैतिहासिक खोज' एक चर्चित आलेख छेकै।

आर्थिक संसाधनों कें अभाव में निकलै आरो जल्दीये बंद होय जायवाला पत्रिकासिनी में योगेश-प्रकाशन, ईशीपुर (भागलपुर) सें 'अंग-धारा' (जेकरों दू अंक क्रमशः डॉ० तेजनारायण कुशवाहा आरो श्री योगेश कौशल कें संपादनों में निकललों रहै) ऐला कें अलावा जनवरी आरो अगस्त, १९९६ ई० में एक पत्रक 'चानन' कें दू अंक, 'हाँक' पत्रक कें दू अंक आरो 'जै अंगिका' कें एक अंक प्रकाशित होलों रहै। डॉ० अमरेन्द्र कें संपादनों में निकललों 'हाँक' एक पत्रक-कविता-अंक रहै जबें कि 'अनल' जी, 'राही' जी आरो राजकुमार जी कें संपादनों में आबैवाला 'चानन' में गद्य-पद्य दुन्नों कें राखै कें प्रयास होय रहलों रहै। 'श्रीस्नेही' जी कें संपादनों में प्रकाशित 'जै अंगिका' अर्धवार्षिकी कें प्रवेशांक-वर्ष जनवरी १९९५ ई० छेकै। 'बाल-गोपाल-अंक' कें नामों सें प्रकाशित 'जै अंगिका' में बाल-मनोविज्ञान सें जुड़लों कहानी, लेख -आर कें साथें अंगिका लोक-कथा गद्य-साहित्यों कें राखलों गेलों छै।

आधुनिक अंगिका गद्य-साहित्यों कें प्रचार-प्रसार में अंगिका-पत्रिकासिनी कें साथें लोकप्रिय दैनिक पत्रो कें भागीदारी अमूल्य होय छै। हेना कें तें दिसंबर, १९६४ ई० में भागलपुर सें प्रकाशित अंगिका भाषा कें 'अंगिका-समाचार' आरो 'अंग-वाणी' जेन्हों साप्ताहिक पत्रों कें ऐतिहासिक महत्व रहलों छै। शुरू में कुछ अंक निकलला कें बाद हेकरों प्रकाशन रुकी गेलै ; बादों में १९९५ ई० में 'अंगिका-समाचार' कें फनू सक्रिय करै कें कोशिश करलों गेलै, मतरकि एक-दू अंक निकलला कें बाद फनू नै देखलों गेलै।

हिंदी कें दैनिक पत्रसिनी में 'नई बात' (भागलपुर), 'आज' (पटना), 'हिन्दुस्तान' (पटना) आरो 'प्रभात खबर' (पटना) अंगिका लेली प्रमुख छै।

अंगिका कविता आरो अंगिका संबंधी समाचारों कें स्थान दै में 'नई बात', 'आज' आरो 'प्रभात खबर' कें ऐतिहासिक योगदान रहलों छै। 'नई बात' कें माध्यमों सें नै खाली श्रीमती आभा पूर्वे कें उपन्यास 'कचनार जबें कल्पतरु भेलै' कें धारावाहिक प्रकाशन करलों गेलै, बलुक १९९६-९७ ई० कें बीच डॉ० अमरेन्द्र कें अंगिका उपन्यास 'जटायु', श्रीमती पूर्वे कें 'गुलबिया', श्री मुद्गलपुरी कें 'हमें सुरमुख दास नै छेकियै', श्रीकेशव कें 'मरगांग' आरो 'अनल' जी कें 'पियाबामा' कें प्रकाशनों करलों गेलै। आधुनिक अंगिका साहित्यों कें प्रकाशन लेली 'नई बात' में रोजाना एक स्तंभों के व्यवस्था करलों गेलों छै जै में पहिलों बारी धारावाहिक रूपों में श्रीकेशव कें पाँच-टा शब्दचित्रों कें प्रकाशन १९९७ ई० में करलों गेलों छै।

'आज' (पटना) में हरेक रविवार कें 'अंगिका कें पतरी' कें नामों सें एक स्तंभ १९९५ ई० में जारी करलों गेलों छेलै, जेकरों प्रकाशन नियमित रूपों सें होय रहलों छेलै। वै में अंगिकाये में अंग-जनपदों कें इतिहास, भूगोल आरो साहित्यों कें बात लोगों कें सम्मुख राखै आरो अंगिका भाषा के प्रसार में काफी मदद मिललों छै। वै स्तंभों कें उपयोग जों कुछेक अंगिका साहित्यकारें खाली आपनों भजन गावै लेली नैं करतियै तें अंग-जनपदों कें एक बड़ों वर्गों कें वै स्तंभों में जुड़ै कें मौका मिलतियै। वैयक्तिक प्रशंसा कें कारणें वै स्तभों कें लोकप्रियता बाधित होय गेलों छै। एना कें तें 'आज' कें मंगलकारी 'रूपान्तर' स्तंभों में अंगिका कें श्रेष्ठ कविता कें स्थान मिललों ऐलों छै।

अंगिका रिपोर्ताज आरो ललित निबंध कें खेयालों सें 'प्रभात खबर' (पटना) इतिहासों कें नजरी सें कुछ बेसी महत्व राखै छै। 'अंगिका-सवाद' कें नामों सें जोंन स्तंभ 'प्रभात खबर' में शुरू करलों गेलों छै ऊ नियमित तें नै छै, मतरकि हौ स्तंभों के बादो अनदिन्हौं आपनों विशेषांकों में अंगिका रिपोर्ताज -आर प्रकाशित करी कें 'प्रभात खबर' अंगिका कें महत्व आरो प्रसार में मदद करी रहलों छै। 'प्रभात खबर' कें 'होली विशेषांक' (१९९७ ई०) में छपलों श्रीमती आभा पूर्वे कें 'कहिया ऐतै वसंत ?' रिपोर्ताज आरो ललित निबंधों कें सौंदर्य राखैवाला विशिष्ट गद्य-रचना छेकै। 'प्रभात खबर' कें माध्यमे सें, ओकरा सें पहिनें, श्री कुंदन अमिताभ कें कयेक-टा स्तरीय गद्य-रचना लोगों कें बीच ऐलों छै।

जबें 'नव भारत टाइम्स' कें पटना संस्करण प्रकाशन में ऐलों रहै तबें 'अंग-जनपद से' कें नामों सें एक-टा स्तभ वै में शुरू करलों गेलों छेलै, जेकरों

स्थायी लेखक छेलै नव भारत टाइम्से कें पत्रकार श्री वेदप्रकाश बाजपेयी। खड़ी बोली में आवैवाला हौ स्तंभ अंगिका-रचना सें जुड़लों रहला कें कारणें पाठकों कें बीचें बड़ी लोकप्रिय छेलै।

अंगिका भाषा-साहित्य आरो एकरो गौरवपूर्ण इतिहासों कें संपूर्ण प्रसार लेली आवश्यक छेलै कि एकरों साहित्य आरो इतिहासों कें खड़ी बोली (हिंदी) में राखलों जाय। यही उद्देश्यों सें अंगिका भाषा कें पुनर्जागरणों सें जुड़लों साहित्यकार श्री गदाधर प्रसाद अम्बष्ठ, डॉ० लक्ष्मीनारायण सुधांशु, डॉ० माहेश्वरी सिंह 'महेश', डॉ० डोमन साहु 'समीर' आरनी विद्वानें खड़ी बोली में अंगिका भाषा-साहित्यों पर आपनों-आपनों विचार प्रगट कैलकै। आयकों समयों में श्री जनार्दन यादव कें नाम यै दिशा में प्रमुखता सें लेलों जैतै, जिनकों 'अंगिका-लोक' आरो 'आधुनिक साहित्य' खड़ी बोली कें माध्यमों सें ऐलों छै। खड़ी बोली कें माध्यमों सें प्रकाशित पत्रिका 'संकल्प' (हैदराबाद), 'शैली' (फारबिसगंज), 'पश्यन्ति' (दिल्ली), 'साहित्य-भारती' (लखनऊ), 'नवकल्प' (गया), 'भोजपुरी-लोक' (लखनऊ) -आर में अंगिका भाषा-साहित्यों पर लेख छपलों करै छै। 'कंचन-लता' (राजस्थान), 'साहित्य-भारती' (लखनऊ) -जेन्हों पत्रिकाओं में अंगिका कविता कें स्थान देलों गेलों छै। यै दिशा में 'शिरीष कथा' (भागलपुर) आरो 'समय' (पुनसिया) -जेन्हों पत्रिकाओ कें योगदान ऐतिहासिक रहलों छै। 'शिरीष कथा' कें अंक-३ (जनवरी-फरवरी, १९८८) हिंदी में अनूदित अंगिका कहानी कें विशेषांक छेलै, जेकरा में सर्वश्री मधुकर गंगाधर, सुरेश मंडल 'कुसुम', वचनदेव कुमार (डॉ०), महेन्द्र प्रसाद जायसवाल, सुमन सूरो, कुमार विमल (डॉ०), अनुज शास्त्री, श्याम सुंदर घोष (डॉ०), भुवनेश्वर सिंह 'भुवन', सच्चिदानन्द धूमकेतु, विमल वर्मा, सुरेश मोहन मिश्र, अनिरुद्ध प्रसाद विमल, डॉ० सामवे, विजय, अश्विनी, गंगा प्रसाद राव आरो अमरेन्द्र (डॉ०) कें कहानी, अणु-कथा आरो व्यंग्य-कथा कें साथें-साथ स्व० अनूपलाल मंडल कें उपन्यास 'नया चाँद, नया सूरज' कें कथा संक्षेपों में ऐलों छै। वै अंकों में प्रख्यात समालोचक डॉ० विजयेन्द्र नारायण सिंह सें, अंगिका कथा-साहित्यों पर भेंटवार्ताओ प्रकाशित करलों गेलों छै। पत्रकार, कथाकार, संपादक आरो प्रकाशक श्री सदाशिव सुगंध नें वै अंकों कें रूप-सज्जा में काफी आर्थिक व्यय करलें छेलै। हिंदीयो लेखक कें रूपों में ख्यातिप्राप्त कथाकारों कें अंगिका कहानी लै कें निकाललों गेलों 'शिरीष कथा' कें हौ 'अंगिका-कथा-विशेषांक' नें हिन्दुस्तान भरी कें प्रमुख साहित्यकारों कें धेयान

अंगिका भाषा-साहित्य दिस टानलें छै।

सारांश कें रूपों में कहलों जैतै कि 'इलेक्ट्रोनिक मीडिया' कें सहारा में जों सर्वश्री यदुनन्दन सिंह, छैलबिहारी, तृप्ति शाक्या आरो अनुराधा पोडवाल नें अंगिका लोकगीतों कें देशव्यापी पहचान देलकै तें 'प्रिण्ट मीडिया' नें अंगिका काव्यों कें साथें-साथ अंगिका गद्यों कें विविध विधा कें आवै में ओतने औसर प्रदान कैलकै, जै सें अंगिका गद्य पिछलका दुइये दशकों में आपनों शिखर छूवै में सफल होय गेलों छै।

उपसंहार

अंगिका साहित्य केरों इतिहास कें विश्लेषण सें ई स्पष्ट होय छै कि ई भाषा कें साहित्य आपनों समय कें सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक -आर परिवेशों सें नाभिनालबद्ध होय कें आपनों स्वरूपों कें गढ़तें ऐलों छै। सिद्ध-कविसिनीं तें आपनों चर्यापदों में आपनों समयों कें समाजों कें सम्यक् स्वरूप खाड़ों करल्हें छै, हुनकासिनी कें बाद महाकवि विद्यापति नें हुनकासिनी कें काव्यरूपों कें स्वीकारतें होलों आपनों समय कें भक्तिपरक शृंगार कें उजागर करने छै। यहाँ ई बात स्पष्ट करी देबों जरूरी छै कि वि ापति कें जन्म-स्थान कें बारे में कुछ भ्रामक विचार प्रचारित-प्रसारित रहतें ऐलों छै। एक विचार एहो छै कि हुनकों जन्म उत्तरी भागलपुरों कें एक भाग सहरसा में होलों रहै जहां हुनकों पिता पं० गणपति ठाकुर ओईनवार वंशों कें राजा गणेश्वर जी कें सभासद रहै। येहें रङ महात्मा कबीर कें बारे में भी कयेक बात भ्रामक छै। सच पूछों तें कबीर कें काव्य-प्रवृत्ति बिल्कुल सिद्ध-कविसिनी कें काव्य-प्रवृत्ति कें अनुकृति छेकै। यही सें कबीर कें संबंध काशी > कासड़ी (कहलगाँव, भागलपुर) आरो मुद्गलपुर > मुदगर > मगहर > मुंगेर सें रहलों हुऐं तें कोय अतरज नै।

आधुनिक समयों में जे अंगिका-साहित्य प्रस्तुत होय रहलों छै उहू पर सिद्ध-कवि, कबीर -आरनी कें सामाजिक रूढ़ि पर व्यंग्यपूर्ण अभिव्यक्ति कें प्रभाव साफ-साफ देखलों जावें सकै छै। यही सें अंगिका-साहित्य केरों इतिहासों कें 'आदि अद्वैतकाल' आकि 'आधुनिक काल' में नैं विभाजित करी कें 'अंगिका साहित्य केरों अद्वैतकाल' कहबों बेसी मोनासिब लागै छै। ई जरूर छै कि कहियो कोय धारा भीतरी धारा होय गेलों छै आरो कहियो भीतरी धारा पर बाहरी धारा।

अंगिका साहित्य केरो आधुनिक अद्वैतकाल में ई भाषा के साहित्यकारसिनी सिद्ध-कवि आरो कबीर कें मुख्य रूपों सें वही स्वरों कें पकड़ने छै जे सामाजिक रूढि आरो अंधविश्वासों कें खिलाफ छै। ई स्वर जत्तें कविता में गूंजै छै ओतन्हैं गद्य-साहित्यों में। कवीश्वर ज्योतिरीश्वर ठाकुर नें 'वर्णरत्नाकर' लिखी कें अंगिका साहित्यों में जौंन गद्य-काव्य कें नींव राखने छेलै ओकरों पूर्णता आधुनिक अंगिका गद्य-लेखनों में देखलों जावें सकें छै।

आय खाली नाटके में नैं, बलुक कहानी, उपन्यास, निबंध, आत्मकथा, जीवनी, साक्षात्कार, शब्दचित्र औरनीयों में गद्य-विधा कें रचना ओतन्हैं मजबूती सें आबी रहलों छै। विधा कें साथें-साथ शैली-शिल्प कें आधुनिकतम रुखो अंगिका भाषा कें निरन्तर गतिशीलता कें प्रमाणित करै छै। दुर्भाग्य कें बात ई कि आय्यो अंगिका साहित्यों कें एक बड़ों भाग अप्रकाशिते छै। केन्द्रीय आकि राज्य-सरकारों कें कोय सरोकार अंगिका भाषा-साहित्य आरो अंग-जनपदों कें संस्कृति सें नैं छै। ई संबंधों में राजनीतिज्ञसिनी कें उदासीनता समझै में नैं आबै छै कि जे अंग-जनपद नें कभी सौंसे पृथ्वी कें जीती कें राज करलें छेलै - 'अंग समन्तं सर्वतः पृथ्वीं जयन परियाया श्वेन च मध्येनेज इति' - आरो महाकवि दिनकर जी कें अनुसार, 'अंगनें सौंसे विश्व में सांस्कृतिक उपनिवेश कायम करलें छेलै' ('संस्कृति कें चार अध्याय'), ऊ आय आपनों पुरुषार्थ सें चुकी रहलों छै। मजकि है बात याद रहना चाहियों कि कोय इतिहास राजनीतिज्ञे कें बलों पर नैं, संस्कृति-पुत्र साहित्यकारों कें रचना-कौशल सें युक्त होय कें सुस्थिर आरो सक्रिय रहै छै। अंगिका कें पक्षों में जहाँ एको-सें एक जोरगरों साहित्यकारों कें अलावा दिवंगता अंग-सवासिन वाणीमुक्ता चतुर्वेदी प्रतिभा मिश्र, प्रो० डॉ० बैजनाथ चतुर्वेदी, प्रो० डॉ० वसंत चक्रवर्ती, पद्मश्री डॉ० बी० वी० राजू प्रभृति युग-पुरुषों कें आशीर्वाद छै वहाँ एकरों साहित्य केरों इतिहास उज्ज्वल रहतै, एकरा में कोय दू मत नैं छै। इति शुभम्।

☆☆☆

पद्मश्री डॉ० बी० वी० राजू

पद्मश्री डॉ० भूपति राजू विरसम राजू का जन्म १५ अक्टूबर, १९२० ई० में पश्चिमी गोदावरी जिले (आन्ध्रप्रदेश) में एक समृद्ध कृषक-परिवार में हुआ। शिक्षा में उनकी विशेष अभिरुचि देखकर उन्हें हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी में तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने को भेजा गया, जहाँ से उन्होंने बी० एस-सी० (तकनीकी) की उपाधि प्राप्त की। तदुपरान्त वे अमेरिका के हार्वर्ड विश्वविद्यालय से पी-एच० डी० की उपाधि ले आये। फिर तो भारत में उन्हें अनेक सम्मान मिले। एफ० आई० ई० और एम० आई० पी० एच० ई० (भारत) के बाद उन्हें अमेरिका से एम० ए० आई० ई० ई० का सम्मान मिला। जवाहरलाल तकनीकी विश्वविद्यालय ने उन्हें डॉक्टर ऑफ साइन्स और भारत-सरकार ने पद्मश्री की उपाधियाँ प्रदान की।

डॉ० राजू का पारिवारिक जीवन सुख और संतोष से भरपूर रहा है। उनकी धार्मिक प्रवृत्ति की गृहिणी ने उन्हें किसी प्रकार का कष्ट न होने दिया जिससे उन्हें अनेक उद्योगों में परामर्श लेने और कुछ उद्योग स्थापित करने में बड़ी सहायता मिली। डॉ० राजू के समृद्धि के शिखर पर पहुँचने के बाद उनकी सहधर्मिणी का स्वर्गवास हो गया।

बिहारवासियों के साथ, विशेष कर ग्रामीण जनता के प्रति डॉ० राजू के हृदय में अगाध प्रेम है जिसका कारण यह है कि उन्होंने अपना सेवा-कार्य डालमियानगर के पास सोन नदी की घाटी में बसे जरबला गाँव के सीमेण्ट कारखाने से प्रारंभ किया था। सीमेण्ट के अलावा उन्हें कागज, पॉलीस्टर, रिफैक्टरी, चीनी मिट्टी के सामान आदि का प्रत्यक्ष अनुभव हैं। इन्हीं अनुभवों को लेकर वे हैदराबाद आये और श्रीविष्णु सीमेण्ट और रासी रिफैक्टरी नामक बड़े-बड़े कारखाने उन्होंने स्थापित किये। रासी सिन्थेटिक्स नामक कारखाने को भी जन्म दिया। तेलंगाना कागज कारखाना जब डूबने लगा तब उसे रासी सीमेण्ट में मिलाकर उसका उद्धार किया था। सीमेण्ट उद्योग विकास के वे भारत सरकार की ओर से पाँच साल तक अध्यक्ष रहे। इण्डोनेशिया, मलेशिया, नेपाल और भूटान सरकारों के तकनीकी सलाहकार भी वे नियुक्त हुए तथा आदिलाबाद, ताण्डूर और कड़प्पा सीमेण्ट कारखानों की स्थापना में सहायता दी। आज वे अपनी चार कम्पनियों के अध्यक्ष हैं।

पद्मश्री डॉ० राजू उद्योगवीर तो हैं ही, अनेक मंदिरों, पुलों और सड़कों का निर्माण कराकर जनहित के कार्यों के कारण धर्मवीर भी हैं। कला और साहित्य के प्रति प्रेम के फलस्वरूप वे आज अपनी ७८ वर्ष की आयु में सुप्रसिद्ध हैं।

भगवान उन्हें चिरायु करें।